मार्गदर्शक की खोज

जीवन सेवामय, उन्नत, प्रगतिशील, उपयोगी और सादगी-युक्त हो यह भावना, जबसे मैंने होश संभाला तबसे, अस्पष्ट रूप से मेरे सामने थी। इसीकी पूर्ति के हेतु, सामाजिक, व्यापारिक, सरकारी और राजकीय क्षेत्रों में कुछ हस्तक्षेप करना मैंने प्रारंभ किया। सफलता मेरे साथ थी। पर मुझे सदा यह विचार भी बना रहता था कि जीवन की संपूर्ण सफलता के लिए किसी योग्य मार्गदर्शक का होना जरूरी है। मैंने अपने विविध कार्यों में लगे रहने पर भी इस खोज को जारी रखा। इसी मार्गदर्शक की खोज में मुझे गांधीजी मिले और सदैव के लिए मिल गए।

• •　　　• •　　　• •

मार्गदर्शक की खोज में मैंने भारत के अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क स्थापित किया। महामना मालवीयजी, कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सर जगदीश चन्द्र वसु, लोकमान्य तिलक, आदि अनेक नेताओं तथा व्यक्तियों से मैंने कम-अधिक परिचय प्राप्त किया। उनके सम्पर्क में रहा। उनके जीवन का निरीक्षण किया। मेरी इस खोज में एक बात ने मेरे दिल पर सबसे बड़ा असर कर रखा था। वह थी समर्थ रामदासजी की उक्ति—"बोले तैसा चाले, त्यांची वंदावी पाउलें"। अनेक नेताओं से मेरा परिचय होने पर मुझे उनके जीवन में मेरे इस सिद्धान्त की प्राप्ति जिस परिमाण में होनी चाहिए, नहीं हुई। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के भिन्न-भिन्न गुणों का मुझपर असर पड़ा। सबके प्रति मेरी श्रद्धा और आदर भी बना रहा, पर अपने जीवन के मार्गदर्शक स्थान पर किसीको आसीन नहीं कर सका।

• •　　　• •　　　• •

जब मैं मार्गदर्शक की खोज में था तब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका में सेवाकार्य कर रहे थे। उनके विषय में समाचारपत्रों में जो आता उसे मैं गौर से पढ़ता था और यह स्वाभाविक इच्छा होती थी कि यदि यह व्यक्ति भारत में आवे तो उससे सम्पर्क पैदा करने का अवश्य प्रयत्न किया जाय।

जमनालाल-सेवा-ट्रस्ट ग्रंथमाला—१

बापू के पत्र

—बजाज-परिवार के नाम—

'पांचवें पुत्र को—बापू के आशीर्वाद'

संक्षिप्त संस्करण

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

की

प्रस्तावना-सहित

संपादक

काका कालेलकर

१९५७

अ० भा० सर्व सेवा-संघ-प्रकाशन

काशी

सब चिन्ता का अनुभव करते हैं। दूसरे साथी कौन है, कैसे हैं? डा० सुमन्त कैसे हैं? सरदार कहते हैं कि मेरी ही तरह दीवान मास्टर के दांत नहीं हैं। उसके क्या हालचाल हैं? कौन कौन हो, इसकी खबर नहीं है। पन्नालाल है, यह खबर गंगाबहन से मिली।

सभी साथियों को हमारे वन्देमातरम्। महादेव यहां पहुंच गए हैं, यह तो तुमने जान ही लिया होगा।

बापू के आशीर्वाद

: ८४ :

धुलिया मंदिर, ४-४-३२

पूज्य बापूजी,

आपका पत्र २६-३ को वीसापुर से लौटकर मुझे यहां दो तारीख को मिला। मैं वीसापुर से २४ तारीख को ट्रांसफर होकर यहां आगया। मैं तो वहीं रहना चाहता था; अधिकारियों से संबंध ठीक बंध रहा था।

मेरे कान का इलाज यहां ठीक चल रहा है। सुपरिन्टेंडेंट श्री कॉन्ट्रेक्टर खास ध्यान रखते हैं। अपने हाथ से दवा करते हैं। पहले से बहुत फायदा मालूम होता है। बम्बई में डा० मोदी को भी बताया था। उसने भी कहा था कि अंदर की सूजन पहले से बहुत कम है। यहां भी डा० मोदी का ही इलाज जारी है। इस तरह नियमित इलाज तो शायद बाहर नहीं कर सकता। इसलिए इस बारे में आप चिन्ता न करें।

भोजन में प्रातःकाल कांजी और दोपहर और शाम को साधारण 'सी' वर्ग का खुराक लेता हूं। वह मुझे अनुकूल पड़ा है। जरूरत पड़ने पर स्वास्थ्य के लिए खुराक में मामूली सुविधा हो सकती है। परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी, ऐसा विश्वास है। 'सी' वर्ग का अनुभव प्राप्त करने की मेरी बहुत दिनों की इच्छा इस बार सरकार ने अपने-आप पूरी की। इससे मुझे ठीक मानसिक शान्ति है। मैं ठीक उत्साह में हूं और आपके आशीर्वाद से [illegible] में सफलतापूर्वक उत्तीर्ण होऊंगा, ऐसी आशा है।

जमनालाल बजाज से
की ओर से
मार्तण्ड उपाध्याय,
द्वारा प्रकाशित

संक्षिप्त संस्करण : १९५७
मूल्य
सवा रुपया

प्रकाशकीय

महात्मा गांधी और स्व. जमनालालजी बजाज के संबंध कितने घनिष्ठ थे, यह किसीसे छिपा नहीं है। जमनालालजी ने इच्छा व्यक्त की थी कि उन्हें गांधीजी अपने पांचवें पुत्र के रूप में स्वीकार करें। गांधीजी ने ऐसा ही किया। गांधीजी के प्रति उनकी श्रद्धा-भक्ति तो थी ही, साथ ही उनकी कोई भी ऐसी प्रवृत्ति न थी, जिसमें जमनालालजी ने तन-मन-धन से सहायता न की हो।

गांधीजी ने समय-समय पर जमनालालजी तथा उनके परिवार को बहुत से पत्र लिखे थे। उनका संग्रह 'पांचवें पुत्र को—बापू के आशीर्वाद' पुस्तक में किया गया है। वे पत्र इतने उपयोगी हैं कि जो भी पाठक उन्हें पढ़ेगा, उसे लाभ ही होगा।

सामान्य स्थिति के पाठक भी इस पुस्तक से फायदा ले सकें, इस विचार से उसका यह संक्षिप्त संस्करण निकाला जा रहा है। पाठक स्वयं पढ़कर देखेंगे कि इससे कितनी मूल्यवान विचार-सामग्री प्राप्त होती है और मार्ग-दर्शन मिलता है।

हमें विश्वास है कि यह पुस्तक अधिक-से-अधिक हाथों में पहुंचेगी और प्रत्येक सेवा-भावी एवं देश-प्रेमी पाठक इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक के अध्ययन से लाभ उठावेगा।

—मार्तण्ड उपाध्याय

प्रस्तावना

इस देश में दत्तक पुत्र लेने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है; और इसी प्रथा के अनुसार सेठ जमनालाल बजाज को सेठ बच्छराज ने दत्तक पुत्र बनाया था। इस नये घर में आकर वह सेठ बच्छराज की संपत्ति के मालिक बने और व्यापार और कारबार भी उन्होंने बढ़ाया। इस तरह नये परिवार में उनको समृद्धि और यश दोनों मिले, पर जमनालालजी उतने से ही संतुष्ट नहीं हुए। स्वभाव से ही सेवा की ओर बचपन से ही वह झुके थे और इस तलाश में थे कि उनको कोई ऐसा मार्गदर्शक मिले, जो सार्वजनिक कामों में उनका पथ-प्रदर्शन किया करे। महात्मा गांधीजी का सम्पर्क उनके लिए इस इच्छा की पूर्ति का एक बड़ा साधन निकला। उन्होंने अपने जीवन को महात्माजी के सिद्धांत के अनुसार ढालने का सतत प्रयत्न किया और अपने को इस योग्य बनाया कि वह महात्माजी के पांचवें पुत्र बन सकें। महात्माजी ने लिखा है, "जमनालालजी मेरे पांचवें पुत्र बने। इस स्वेच्छा से गोद आये पुत्र ने कितना कुछ किया, इसका पता बहुत कम लोगों को होगा। मैं कह सकता हूं कि इसके पहले किसी मनुष्य को ऐसा पुत्र नसीब नहीं हुआ होगा।" इतने से ही हम समझ सकते हैं कि जमनालालजी स्वेच्छा से दत्तक पुत्र बनने की योग्यता किस हद तक प्राप्त कर सके थे। जहां तक मैं जानता हूं, महात्मा-जी ने और किसीके संबंध में ऐसी बातें नहीं कहीं। जमनालालजी का प्रत्येक शब्द अर्थ से भरा हुआ होता था। जो कुछ वह कहते या लिखते थे, उसमें इसका ध्यान रखते थे कि किसी शब्द के द्वारा कहीं कोई असत्य का आभास न निकलने पावे। ऐसे पांचवें पुत्र के साथ का पत्र-व्यवहार, जिसमें धार्मिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक सभी प्रकार की बातों की विशद चर्चा है, इस ग्रंथ में एकत्र करके छाप दिया गया है। पढ़ने वालों को जहां-तहां विनोद का मीठा रस भी मिलता है, जो महात्मा गांधी की खूबियों में से एक था। ऐसे पांचवें पुत्र के वर्धा आने के निमंत्रण और आग्रह को वह कैसे नामंजूर कर

सकते थे ? जव उन्होंने सावरमती छोड़ देने का निश्चय कर लिया तो सीधे वर्धा आ पहुंचे और वहांसे सेवाग्राम में जा वसे। यह प्रेम का ही आकर्षण था और वह प्रेम कुछ ऐसा वैसा नहीं था वल्कि वह आध्यात्मिक स्रोत से निकला था, जो वहुत त्याग और तप से ही जमनालालजी को मिल सका था। जमनालालजी कुशाग्र वुद्धि के साथ-साथ व्यवहार-कुशल भी थे और महात्माजी के शब्दों में "जमनालालजी ने विना किसी संकोच के अपने आपको और अपने सर्वस्व को समर्पित कर दिया था। मेरा शायद ही कोई ऐसा काम होगा, जिसमें उनका हार्दिक सहयोग न मिला हो और जो अत्यंत कीमती सावित न हुआ हो।" महात्माजी का उनपर अटल विश्वास था और जो भी काम वह जमनालालजी के सुपुर्द करते थे, पूरे भरोसे के साथ करते थे, क्योंकि उन्होंने महात्माजी के काम को अपना लिया था और अपनी सारी वुद्धि और शक्ति उसमें लगा देते थे। खादी का काम हुआ या छुआछूत मिटाने का काम हुआ, कांग्रेस का काम हुआ अथवा गोसेवा का, जिसमें वह पड़े, उसमें खुलकर और जी-जान से पड़े। जमनालालजी ने पैसे कमाये, यद्यपि महात्माजी से संपर्क के वाद उन्होंने कारवार औरों पर छोड़ दिया था और केवल सलाह-मशविरा देकर ऊपर से देखभाल कर लिया करते थे। महात्माजी दावे से कह सकते थे कि "जमनालालजी ने अनीति से एक पाई भी नहीं कमाई और जो कुछ कमाया, उन्होंने जनता-जनार्दन के हित में खर्च किया। एक पत्र में महात्माजी ने उनको यह लिखा था, "तुम पांचवें पुत्र तो वने ही हो, किन्तु मैं योग्य पिता वनने का प्रयत्न कर रहा हूं। दत्तक लेने वाले का दायित्व कोई साधारण नहीं है। ईश्वर मेरी सहायता करे और मैं इसी जन्म में उसके योग्य वनूं।" ऐसे सच्चे भक्त और पांचवें पुत्र के लिए स्वाभाविक था कि उसका शरीर महात्माजी की गोद में छूटे।

गांधी-साहित्य को यह पुस्तक एक नई देन है और उसके भंडार की इससे वृद्धि भी होती है।

भूमिका

पूज्य गांधीजी और जमनालालजी का सम्बन्ध पूरे पच्चीस साल का और अत्यन्त घनिष्ट था। हम यह भी कह सकते हैं कि एक तरह से अद्वितीय था। बचपन में उनके जन्मदाता ने जमनालालजी को गोद दे दिया था। प्रौढ़ अवस्था में उन्होंने स्वयं अपनेको महात्मा गांधीजी की गोद में अर्पण किया और महात्माजी ने उनको अपने पांचवें पुत्र के तौर पर स्वीकार किया। जमनालालजी ने न केवल अपने हृदय को, अपनी सम्पत्ति को और सेवा-शक्ति को गांधीजी के चरणों में अर्पित किया, बल्कि जहांतक हो सका, उन्होंने अपना सारा परिवार ही गांधीजी के हाथों में सौंप दिया। गांधीजी ने भी न केवल जमनालालजी की, बल्कि उनके सारे परिवार की, व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक चिन्ता अपने सिर पर ले ली। सचमुच यह सम्बन्ध अनोखा था।

गांधीजी आदर्शवादी महात्मा होते हुए भी व्यवहार-कुशल नेता थे। जमनालालजी अत्यन्त व्यवहार-कुशल व्यापारी और समाज-सेवक होते हुए भी आदर्श-परायण थे। इसीलिए इन दोनों अद्भुत बनियों का सम्बन्ध इतना घनिष्ठ हो सका।

बचपन में पिता का कुछ कड़ा रुख देखते ही धन-सम्पत्ति सबका मोह छोड़ने की तेजस्विता जिन्होंने बताई थी, उन्होंने लगातार पच्चीस वर्ष तक अपनी बुद्धि-शक्ति, हृदय-शक्ति और शारीरिक शक्ति गांधी-कार्य में लगाकर अपनी आत्म-निवेदन की, स्वात्मार्पण की श्रद्धा व निष्ठा भी बताई। ऐसे शिष्य को और उनके परिवार के व्यक्तियों को, गांधीजी ने जो अनेक पत्र लिखे थे, उनका यह संग्रह है।

इन पत्रों को पढ़ते और उनमें अवगाहन करते ऐसा अनुभव होता है, मानो हम पवित्र गंगाजी के प्रवाह में स्नान और पान कर रहे हैं। क्षण-क्षण हम उसकी पावनता और प्रसन्नता अनुभव करते हैं और पढ़ते-

ते उसमें से नया वल भी मिलता है । सन्त-चरित्र के श्रवण का जो
हात्म्य वताया है उससे भी वढ़कर सन्त-संवादों का होना चाहिए । और
पत्र तो मानो नित्य के लिखित संवाद ही हैं। इन पत्रों के साथ
म्वन्ध रखनेवालों में से आज श्री महादेवभाई नहीं हैं, राष्ट्रमाता कस्तूरवा
हीं हैं, इन पत्रों के प्रधान लेखक राष्ट्र-हृदय के नेता महात्मा गांधी भी
हीं हैं और उनके पंचम पुत्र, जो अपनी साधना के जरिये उनके उत्तम
 हुए थे, वह भी नहीं हैं । किन्तु इन चारों के साधक-जीवन की प्रेरणा
मारे पास है, जो इन पत्रों के अन्दर प्रतिविम्वित हुई है, और वह
र्घकाल तक दुनिया के अनेक देशों के और अनेक जमानों के श्रेयार्थियों
 कृतार्थ करती रहेगी ।

महात्माजी के जीवन के हम तीन प्रधान अंग मान सकते हैं। एक उनका
जनैतिक जीवन, जिसमें प्रधानतया सत्याग्रह की आत्मशक्ति और बलि-
न की दिव्य शक्ति प्रकट होती है। दूसरा उनका रचनात्मक जीवन, जिसके
रिये वह हिन्द-जैसे एक गिरे हुए, विस्खलित, निराश और अन्ध राष्ट्र को
नजीवन की दीक्षा देते रहे और मानो धीरे-धीरे उसकी सब हड्डियां
कट्ठी करके उसमें प्राण फूंकते गए। रचनात्मक कार्य केवल संस्था-रचना
 नहीं, राष्ट्रनिर्माण का कार्य था। रचनात्मक संस्थाओं के द्वारा असंख्य
र्यकर्त्ताओं को नए आदर्श की दीक्षा देना, कदम-कदम पर उनमें शुद्ध
ष्टि और अदम्य शक्ति का विकास करना, और उनके द्वारा सारे राष्ट्र में
या चारित्र्य और नया तेज पैदा करना, यह कोई सामान्य काम नहीं था।

महात्माजी के जीवन का तीसरा पहलू है, असंख्य व्यक्तियों के जीवन
 उनके व्यक्तिगत सवालों में, पारिवारिक सम्वन्धों में और व्यवहार की
नेक वातों में पिता और माता के हृदय से प्रवेश करना और पूरी आत्मीयता
 द्वारा असंख्य परिवारों की अखंड सेवा करते रहना।

सद्भाग्य से इन तीनों पहलुओं का परिचय हमें यहां इन पत्रों में मिलता
। और विशेष तो यह है कि जो पहलू हम या जगत के लोग अन्यथा नहीं
मझ सकते वह इस पत्र-संग्रह में विशेष रूप से प्रकट हो रहा है । इतिहास
ी दृष्टि से और आध्यात्मिक दृष्टि से, भी यह मसाला एक असाधारण
स्तावेज है ।

समय-समय पर जमनालालजी बापूजी को अपनी मानसिक स्थिति की रिपोर्ट देते थे और गांधीजी भी उन्हें उचित सलाह और प्रोत्साहन देते रहते थे। अगर यह सारा पत्र-व्यवहार अविकल रूप से मिल जाता तो आत्मोन्नति के मार्ग में सतत प्रयत्न करनेवाले तमाम विश्व के यात्रियों के लिए एक दिशादर्शक नक्शा हो जाता। आज भी जो कुछ हिस्सा यहां पर हमें उपलब्ध है, उसमें उपनिषत्काल के साधक और महर्षियों के संवाद की झलक और भव्यता पाई जाती है। नारद या प्रतर्दन राजा अपने गुरु के पास जाकर अपनी हालत बताते हैं और आगे का रास्ता पूछते हैं। वैसा ही वायुमंडल यहां दीख पड़ता है।

राष्ट्रभक्ति और सेवा का उच्च आदर्श और जीवन-शुद्धि का उत्कट-से-उत्कट जागरूक प्रयत्न एक साथ, एक धारा में चलते देखकर बापूजी के इस उत्तम शिष्य-पुत्र की जीवन-साधना पूरी-पूरी ध्यान में आती है। अखंड कर्मयोग और उसके साथ अंतर्मुख आत्मपरीक्षण और गुरुभक्ति के वातावरण का ध्यानयोग—यह सब आत्मोन्नति साधना के नये नमूने दुनिया के सामने पेश हुए हैं। यह सब पढ़ने के बाद निश्चय होता है कि जमनालालजी सचमुच गांधी-युग के दैवी संपद् के सर्वोत्तम नमूने थे। गांधीजी ने जमनालालजी को उनके आखिरी दिनों में जो आश्वासन दिया था वह पढ़ते ही अर्जुन को दिया हुआ श्रीकृष्ण का आश्वासन याद आता है—

मा शुचः संपदं दैवीं अभिजातोऽसि भारत।

—काका कालेलकर

सन् १९०७ से १९१५ तक इस खोज में मैं रहा। और जब गांधीजी ने हिन्दुस्तान में आकर अहमदाबाद के कोचरब मोहल्ले में किराये का बंगला लेकर अपना छोटा-सा आश्रम आरम्भ किया, तब उनसे परिचय प्राप्त करने के हेतु मैं तीन बार वहां गया। उनके जीवन को मैं बारीकी से देखता। उस समय वह अंगरखा, काठियावाड़ी पगड़ी और धोती पहनते थे। नंगे पैर रहते थे। स्वयं पीसने का काम करते थे। स्वयं पाक-गृह में भी समय देते थे। स्वयं परोसते थे। उनका उस समय का आहार केला, मूंगफली, जैतून का तेल और नीबू था। उनकी शारीरिक अवस्था को देखते हुए उनके आहार की मात्रा मुझे अधिक मालूम होती थी। आश्रम में प्रातः-सायं प्रार्थना होती थी। सायंकाल की प्रार्थना में मैं सम्मिलित होता था। गांधीजी स्वयं प्रार्थना के समय रामायण, गीता आदि का प्रवचन करते थे। मैंने उनकी अतिथि-सेवा और बीमारों की शुश्रूषा को भी देखा और यह भी देखा कि आश्रम की और साथियों की छोटी-से-छोटी बात पर उनका कितना ध्यान रहता है। आश्रम के सेवा-कार्य में रत और निमग्न बा को भी मैंने देखा। गांधीजी ने भी मेरे बारे में पूछताछ करनी आरम्भ की। धीरे-धीरे सम्पर्क तथा आकर्षण बढ़ता गया। ज्यों-ज्यों मैं उनके जीवन को एक समालोचक की सूक्ष्म दृष्टि से देखने लगा त्यों-त्यों मुझे अनुभव होने लगा कि उनकी उक्तियों और कृतियों में समानता है और मेरे "बोले तैसा चाले" इस आदर्श का वहां अस्तित्व है। इस प्रकार सम्बन्ध तथा आकर्षण बढ़ता गया।

.. .. ..

महात्माजी के कार्य में मैं अपने आपको विलीन हुआ पाने लगा। वह मेरे जीवन के मार्गदर्शक ही नहीं, पिता-तुल्य हो गए। मैं उनका पांचवां पुत्र बन गया।

.. .. ..

आज २४ वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया, जब से मैं महात्माजी के सम्पर्क में हूं। इन वर्षों में मैंने उनके जीवन के समस्त क्षेत्रों का अवलोकन किया। मैं उनके सहवास में घूमा, उनके आश्रम-जीवन में भी

शुश्रूषा में भाग लेता रहा। उनकी अनेक गहन मंत्रणाओं का मैं साक्षी हूं, और उनके सार्वजनिक कार्यों का भार मैंने शक्ति-भर उठाया। सारी अवस्थाओं में उनके अनेक गुणों का मुझपर असर होता ही गया। मेरी श्रद्धा बढ़ती गई। मैं अपने आपको उनमें अधिकाधिक विलीन करता ही गया। और आज तो वह मेरे आदर्श हैं और उनकी आज्ञा मेरा जीवनादर्श है। उनका प्रेम मेरा जीवन है।

.. .. ..

महात्माजी में अनेक अलौकिक गुण हैं। इस प्रकार के शब्दों से मैं अपने हृदय के सच्चे भाव प्रकट कर रहा हूं। पर विरोध की आशंका न करते हुए इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि उनमें मनुष्योचित गुणों का बहुत बड़ा समुच्चय है। मानवी गुणों के तो वह हिमालय हैं।...

महात्माजी में मैंने विरोधी गुण भी देखे हैं। उनकी अविचल दृढ़ता और कठोरता अगाध प्रेम और मृदुता की बुनियाद पर खड़ी है। उनकी पाई-पाई की कंजूसी महान् उदारता के जल से सिंचित है और उनकी सादगी सौन्दर्य से पोषित है।

.. .. ..

महात्माजी के प्रति अगर मेरा खाली आदर-भाव ही रहता तो उनके विषय में मैं कुछ विशेष लिख सकता, पर महात्माजी ने मुझे इस तरह से अपनाया है कि उनके प्रति मेरे मन में पिता और गुरु के समान ही भाव पैदा होता है।

बचपन से ही सार्वजनिक जीवन का प्रेम होने के कारण बहुत-से सरकारी प्रतिष्ठित कर्मचारी तथा देश के प्रख्यात नेतागण से मेरा परिचय हुआ। पूज्य लोकमान्य तिलक महाराज और भारतभूषण मालवीयजी जैसे महान पुरुषों का परिचय मेरे लिए लाभदायक हुआ। लेकिन, महात्माजी ने तो मेरी मनो-भूमिका ही बदल दी। मेरे मन में कई बार त्याग के विचार पैदा हुआ करते थे। उन्हें कार्य रूप में लाने का रास्ता उन्होंने बता दिया। उनका निर्मल चारित्र्य, शीतल तेजस्विता, गरीबों की कलक, मनुष्य-मात्र से सत्य-व्यवहार, अनुपम प्रेम और धर्म-श्रद्धा देखकर ही मेरा मन उनकी ओर खिचता गया। मेरे जीवन की त्रुटियां मुझे दिखाई देने लगीं एवं यह महत्त्वाकांक्षा बढ़ने

लगी कि इस जीवन में किस तरह महात्माजी के सहवास के योग्य वन सकूं।

.. .. ..

मेरी राय में आज भारत में गरीवों के साथ यदि कोई एक-जीव हुआ है तो वह महात्माजी हैं। महात्माजी मानो कारुण्य की मूर्ति हैं। गरीवों के कष्ट दूर करने में अमीरों के साथ भी अन्याय न होने पावे और भिन्न-भिन्न वर्गों के वीच द्वेषभाव तनिक भी पैदा न हो, इसकी वह हमेशा चिन्ता रखते हैं। इसी-लिए भारतवर्ष के सव धर्म, पन्थ और वर्ग के लोग उनको आत्मीयता की दृष्टि से देखते हैं। चातुर्वर्ण्य का तो मानो उनमें सम्मेलन ही हुआ है। भारतवर्ष पर उनका जो असीम प्रेम है उसके लायक यदि हम भारतवासी वनें तो भारत का उद्धार अवश्य हो जाय।

मेरी समझ में तो महात्माजी का सहवास जिसने किया हो या उनके तत्त्वों को समझने की कोशिश की हो, वह कभी निरुत्साही नहीं हो सकता। वह हमेशा उत्साहपूर्वक अपना कर्त्तव्य पालन करता रहेगा, क्योंकि देश की स्थिति के सुधरने में—स्वराज्य मिलने में—भले ही थोड़ा विलम्व हो, परन्तु जो व्यक्ति महात्माजी के वताये मार्ग से कार्य करता रहेगा, मुझे विश्वास है कि वह अपनी निजी उन्नति तो जरूर कर लेगा, अर्थात् अपने लिए तो स्वराज्य वह अवश्य पा सकता है।

.. .. ..

मुझे अपनी कमजोरियों का थोड़ा ज्ञान रहने के कारण मैंने वापू को 'गुरु' नहीं वनाया, न माना; 'वाप' अवश्य माना है। वह भी इसलिए कि शायद उन्हें वाप मानने से मेरी कमजोरियां हट जावें।

.. .. ..

जिस दिन मैं महात्माजी के पुत्र-वात्सल्य के योग्य हो सकूंगा वही समय मेरे जीवन के लिए धन्य होगा।"

—जमनालाल वजाज

पिता - पुत्र

पांचवें पुत्र को

जमनालालजी मेरे पांचवें पुत्र बने। इस स्वेच्छा से गोद आये पुत्र ने कितना-कुछ किया, इसका पता बहुत कम लोगों को होगा। मैं कह सकता हूं कि इससे पहले किसी मनुष्य को ऐसा पुत्र नसीब नहीं हुआ होगा

•• •• ••

जमनालालजी ने बिना किसी संकोच के अपने-आपको और अपने सर्वस्व को मुझे समर्पित कर दिया था। मेरा शायद ही कोई ऐसा काम होगा, जिसमें मुझे उनका हार्दिक सहयोग न मिला हो, और जो अत्यन्त कीमती साबित न हुआ हो।

•• •• ••

उन्होंने मेरे कामों को पूरी तरह अपना लिया था, यहांतक कि मुझे कुछ करना ही नहीं पड़ता था। ज्योंही मैं किसी नये काम को शुरू करता, वह उसका बोझा खुद उठा लेते थे। इस तरह मुझे निश्चिन्त कर देना मानो उनका जीवन-कार्य ही बन गया था।

•• •• ••

मेरी इच्छाओं की पूर्ति के लिए मैं आसानी से उनपर भरोसा कर सकता था, कारण कि जितना उन्होंने मेरे काम को अपना लिया था, उतना शायद ही और कोई अपना पाया होगा।

•• •• ••

उनकी बुद्धि कुशाग्र थी। वह सेठ थे। उन्होंने अपनी पर्याप्त सम्पत्ति मेरे हवाले कर दी थी। वह मेरे समय और मेरे स्वास्थ्य के संरक्षक बन गए। और यह सब उन्होंने सार्वजनिक हित की खातिर किया।

•• •• ••

वह बुद्धिशाली भी थे और व्यवहार-कुशल भी। वह अपनी जगह पर अद्वितीय थे।

••

वह जिस काम को हाथ में लेते थे उसमें जी-जान से जुट जाते थे।

• • • • • •

खादी के काम में उनकी दिलचस्पी मुझसे कम न थी। खादी के लिए जितना समय मैंने दिया उतना ही उन्होंने भी दिया। इस काम के पीछे उन्होंने मुझसे कम बुद्धि खर्च नहीं की। थोड़े में कह लीजिए कि अगर मैंने खादी का मंत्र दिया तो जमनालालजी ने इसको मूर्त्त-रूप दिया।

• • • • • •

जमनालालजी में छुआछूत को हटाने, साम्प्रदायिकता से दूर रहने और सब धर्मों के प्रति समान आदरभाव रखने की जो उत्कृष्ट वृत्ति है, वह उन्हें मुझसे नहीं मिली है। कोई भी व्यक्ति अपने विश्वास दूसरों को नहीं सौंप सकता। हां, यह हो सकता है कि जो विश्वास दूसरों में पहले से मौजूद हों उन्हें प्रकट करने में कोई सहायक हो सके; किन्तु जमनालालजी के उदाहरण में तो मैं यह श्रेय भी नहीं ले सकता कि मैंने उन्हें इन विश्वासों को प्राप्त करने या उन्हें प्रदर्शित करने में सहायता पहुंचाई है। मेरे सम्पर्क में आने से बहुत पहले ही उनके ये विश्वास बन चुके थे। और उन्होंने उनका अनुकरण करना शुरू कर दिया था। उनके इन आन्तरिक विश्वासों की बदौलत ही हम एक-दूसरे के सम्पर्क में आये और हमारे लिए इतने सालोंतक घनिष्ठ सहयोग के साथ काम करना संभव हुआ।

• • • • • •

जिसको राजकाज कहते हैं, उसका न मुझे शौक था, न उनको। वह उसमें पड़े, क्योंकि मैं उसमें था; लेकिन मेरा सच्चा राजकाज तो था रचनात्मक कार्य और उनका भी राजकाज यही था।

• • • • • •

वह एक ऐसी साधना में लगे हुए थे, जो काम-काजी आदमी के लिए विरल है। विचार-संयम उनकी एक बड़ी साधना थी। वह सदा ही अपनेको तस्कर विचारों से बचाने की कोशिश में रहते थे।

• • • • • •

जब कभी मैंने यह लिखा है कि धनवानों को सार्वजनिक हित के लिए अपनी सम्पत्ति का ट्रस्टी या संरक्षक बन जाना चाहिए, तो मेरे दिमाग में

अगर उनका ट्रस्टीपन आदर्शतक नहीं पहुंच पाया तो इसमें कसूर उनका नहीं था। मैंने जान-बूझकर उन्हें रोका। मैं यह नहीं चाहता था कि वह अपने उत्साह या आवेश में कोई ऐसा कदम उठायं, जिसके लिए ठंडे दिमाग से सोचने पर उन्हें अफसोस करना पड़े। उनकी सादगी खुद उनकी ही विशेषता थी।

.. .. ..

जहांतक मुझे मालूम है, मैं दावे से कह सकता हूं कि उन्होंने अनीति से एक पाई भी नहीं कमाई और जो कुछ कमाया उसे उन्होंने जनता-जनार्दन के हित में ही खर्च किया।

.. .. ..

जबसे वह पुत्र बने तबसे वह अपनी समस्त प्रवृत्तियों की चर्चा मुझसे करने लगे थे। अन्त में जब उन्होंने गो-सेवा के लिए फकीर बनने का निश्चय किया तो वह भी मेरे साथ पूरी तरह सलाह-मशविरा करके ही किया।

.. .. ..

त्याग की दृष्टि से उनका अन्तिम कार्य सर्वश्रेष्ठ रहा। देश के पशु-धन की रक्षा का कार्य उन्होंने अपने लिए चुना था, और गाय को उसका प्रतीक माना था। इस काम में वह इतनी एकाग्रता और लगन के साथ जुट गए थे कि जिसकी कोई मिसाल नहीं।

.. .. ..

होना यह चाहिए था कि मैं उनके लिए अपनी विरासत छोड़कर जाता, पर उसके बदले में वह अपनी विरासत मेरे लिए छोड़ गए।

.. .. ..

यह मैं कैसे कहूं कि उनके जाने से मुझे दुःख नहीं हुआ। दुःख होना तो स्वाभाविक था, क्योंकि मेरे लिए तो वही मेरी कामधेनु थे। लेकिन जब उनके कामों को याद करता हूं और हमारे लिए जो संदेश छोड़ गए हैं, उसका विचार करता हूं तो अपना दुःख भूल जाता हूं।

विषय-सूची

बापू के पत्र

पहला भाग

: १ :

मोतिहारी (जुलाई १९१७)

सुज्ञ भाई श्री जमनालालजी,

आपका खत और हुंडी १५००) की मिली है। मैं ऋणी हुआ हूं। आपका दान हिन्दी शिक्षा-प्रचार में ही रक्खा जायगा। यदि दूसरे कोई सिर्फ इसी काम के लिए भेज देंगे और कुछ धन बचेगा तो आपका दान दूसरे कार्यों में भी खर्चा जायगा। मेरा फिर वर्धा आने का होगा तो खबर दे दूंगा।[1]

आपका
मोहनदास गांधी

: २ :

अहमदाबाद, अगस्त १९१७

भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मिला है। मैं थोड़े दिनों के लिए यहां आया हूं। आपको चम्पारन आने का प्रयोजन नहीं है। कमिटी[2] का कार्य बहुत कर अभी समाप्त हो गया है।

आपका
मोहनदास गांधी

---

१. फाइल में प्राप्त जमनालालजी को लिखा गया गांधीजी का यह पहला पत्र है।

२. चम्पारन-जांच-कमेटी।

: ३ :

रांची, २५-९-१९१७

सुज्ञ भाई श्री,

आपका एक पत्र मुंबई में मैं रेल पर जा रहा था उस वखत मिला था। उस बारे में मैंने मेरे भतीजे को आपके पास जाने को कह दिया था। अब रामनारायणजी का पत्र आगया है। ये रखने-लायक देख पड़ते हैं। थोड़ी और हकीकत उनके पास से मंगवाई है। दो शिक्षक मनेर से मिले हैं। एक को रख लिया है। दूसरे की बात कर रहा हूं। दो मास के बाद ये आ सकेंगे। रामनारायणजी तीसरे होंगे। इतने से गुजारा हो जायगा।

आपका
मोहनदास गांधी

: ४ :

साबरमती, १०-३-१८

भाई जमनालालजी,

आपके खत का उत्तर देने में देरी हुई है। मैं यहां दो बड़े कार्य में गिरफ्तार हो गया हूं। मुझे क्षमा कीजिएगा। पुस्तकालय के लिए मेरा नाम रखना उचित हो तो वैसा कीजिए।

आपका
मोहनदास गांधी

: ५ :

साबरमती, मार्च १९१८

सुज्ञ भाई श्री,

आपका पत्र मिला है। मेरा नागपुर आने का मोकूफ रहा है। इस वखत तो यहां का कार्य मेरा सब क्षण ले लेता है। मजदूरों की हड़ताल[1] चल रही

१ देखिए 'एक धर्मयुद्ध'।

है और खेड़ा में[1] किसानों पर सरकार का जुल्म चल रहा है। दोनों कार्य भारी हैं।

आपका
मोहनदास गांधी

: ६ :

१९-६-१९१८

भाई श्री ५ जमनालालजी,

आपके आदमी को टिकट के पैसे मैंने आग्रहपूर्वक चुकाये। अगर मैं ऐसा न करूं तो आपको बिना संकोच के दूसरे काम न सौंप सकूं।

यहां आकर इमारती काम का हिसाब जांचा। मेरे पास २८,००० रुपये आये हैं। ४०,००० रुपये खर्च हो गए। अतिरिक्त खर्च आश्रम के दूसरे कामों के लिए जो रकम मिली उसमें से हुआ है। मेरी असली जरूरत अभी तो मकान आदि बनाने के लिए (रुपयों की) है। एक लाख का खर्च है। इसके लिए कुछ भेजने की आपकी इच्छा हो तो भेजिएगा।

मोहनदास का वंदेमातरम्

मेरी यात्रा का खर्चा उठाओ उसके बजाय खास जरूरी यह है।

मोहनदास

: ७ :

नड़िआद, ३०-६-१९१८

भाई श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मिला है। यदि रेलवे-खर्च के लिए जो रकम जमा की है वही रकम बांध काम के खर्च में दे सकते हो तो मेरी तकलीफ दूर होती है। दूसरे मित्रों को भी मैंने लिखा है। भाई शंकरलाल बेंकर ने रु० ४००० भेज दिये हैं। भाई अंबालालजी रु० ५००० भेज रहे हैं। इससे जो खर्च हो गया है उसमें मदद मिलती है। दूसरे दो मित्रों से भी आशा रखता हूं। यदि आप

१. देखिए 'खेड़ानी लड़त'।

२५००० रु० इस बांध-काम में दे दें तो मैं बहुत कर निश्चित हो सकता हूं। रेल खर्च की आवश्यकता नहीं है। यह खर्च साधारण आमदनी में से चलता है।

मेरे लिखने से देना ही चाहिये ऐसा नहीं समझना। यदि आप बेसंकोच बांध-काम में दे सकते हो तभी देना।

मोहनदास का वंदेमातरम्

: ८ :

नडिआद, १८-७-१९१८

सुज्ञ भाई श्री जमनालालजी,

मैं मुंबई से कल रात को आया। भ्रमण में रहने से पत्र आज तक नहीं लिख सका। आपका पत्र आने से मैं निश्चित हो गया हूं। भाई अंबालालजी ने रु० ५००० भेज दिये हैं और भाई शंकरलाल बेंकर ने रु० ४००० दिये हैं। जो भाई मेरी भिक्षा का अनादर नहीं करते हैं उनको मेरी जरूरयात सुनाने में मुझको संकोच लगता है, न सुनाना अशक्य होता है। इसलिए मेरी तीव्र इच्छा है कि जब मेरी भिक्षा स्वीकारने में हरज हो उस वखत अस्वीकार करने से मेरे पर अनुग्रह होगा।

आपका दर्द तो अब तद्दन नष्ट हुआ होगा।

आपका
मोहनदास गांधी

: ९ :

नड़िआद, २७-७-१८

भाई श्री जमनालालजी,

आपके प्रेमभाव से मैं लज्जित होता हूं। मैं इतने प्रेम के लिए लायक बनूं ऐसा चाहता हूं—प्रभुजी से मांगता हूं। आपकी भक्ति आपको हमेशा नीति मार्ग में आगे ले जायगी, ऐसी मैं आशा रखता हूं।

मारवाड़ में विद्या-प्रचार के कार्य की सफलता के लिए अच्छे व्यवस्थापक की आवश्यकता है।

भरती का कार्य[1] बहुत धीमा चलता है। करीब १५० तक हुए होंगे। किसीको अबतक भेजा नहीं गया है। गुजरातियों की एक बैटेलियन बनाने की तजवीज कर रहा हूं।

आपका
मोहनदास गांधी

: १० :

अहमदाबाद, २८-८-१८

भाई जमनालालजी,

आपका पत्र और ५००० रुपये की हुंडी मिली है। देरी होने से कुछ हानि नहीं हुई; मेरी तबीअत के लिए निश्चित रहना। दिन प्रतिदिन अच्छी होती जाती है। और थोड़े रोज तक बिछौने में रहना पड़ेगा। अशक्ति बहुत आगई है।

आपका
मोहनदास गांधी

: ११ :

शांतिनिकेतन, बोलपुर, १५-९-२०

प्रिय भाई साहेब जमनालालजी,

आपका तार मिला। बापूजी का स्वास्थ्य अबतक अच्छा नहीं है। खांसी पीछा नहीं छोड़ती है। आजकल में यहां से आश्रम को चले जायंगे, ऐसा विचार किया है, और यहां से फौरन जायंगे तो वर्धा से नहीं जाना होगा, वर्द्वान से जबलपुर लाइन पर से जाना होगा।

पंडित विशनदत्त शुक्लजी का मन कुछ दुविधा में पड़ा है, ऐसा मालूम होता है। उन्होंने एक पत्र लिख कर बापूजी को निवेदन किया है कि यदि उनका अन्तःकरण असहकार की कुछ बातें न ग्रहण करे तो क्षमा कीजिएगा। उनका पत्र तो उनकी अनुमति के बिना नहीं प्रसिद्ध होगा, ऐसी उन्हें खात्री दी गई है।

आपका सेवक
महादेव देसाई

---

१. पहले विश्व-युद्ध के समय गांधीजी खड़ा-जिले में रंगरूटों की भरती का काम कर रहे थे।

: १२ :

श्री हरि

वर्धा, २४-९-२०

पूज्य श्री बापूजी,

सविनय प्रणाम। आपका स्वास्थ्य अब ठीक होगा। आप बम्बई कब तक जावेंगे व आगे क्या प्रोग्राम (कार्यक्रम) है? आज डा० मुंजे नागपुर के कहने से आपको तार दिया है। वह श्री अरविन्द घोष को नागपुर-कांग्रेस के सभापति के लिए आग्रह करने पांडीचेरी गए हैं। अगर आप मुनासिब समझें तो श्री अरविन्द घोष को यह पद स्वीकार करने के लिए तार देने के लिए कहा है। संभव है आपने तार दिया होगा। कृपया लिखिएगा। आपकी राय से नागपुर कांग्रेस के सभापति किन सज्जन को होना चाहिए?

डाक्टर मुंजे आज मुझसे कहते थे कि कई मित्रों की राय है कि मैं स्वागतकारिणी सभा का सभापति बनाया जाऊं। इसपर वह मेरी राय पूछते थे। मैंने उन्हें कहा है कि मैं इस पद के लिए अपने को योग्य नहीं समझता हूं। कारण एक तो मेरा विद्याध्ययन बहुत कम है, दूसरे मैं अवस्था व अनुभव में भी कम हूं। इसपर उनको कहना पड़ा कि हिन्दी में तुम अपना भाषण पढ़ सकते हो। स्वामी श्रद्धानंदजी ने भी हिन्दी में भाषण दिया था। हिन्दी में भाषण ठीक होगा। व दूसरा कारण उन्होंने यह कहा कि इस प्रांत का व्यापारी वर्ग बहुत डरता है—खासकर मारवाड़ी समाज। वह पैसे देने को तैयार है, परन्तु आगे आना नहीं चाहता। अगर तुम हो जाओगे तो व्यापारी-समाज पर भी असर होगा व वह भी आगे आने लग जायगा—इस तरह इनका व और मित्रों का कहना है। मैं जहांतक सोचता हूं वहांतक मेरा मन मुझे इस पद के योग्य नहीं बताता। मैंने इस पद के लिए श्री शुक्लाजी के लिए सोच रखा है। परन्तु वह कौंसिल के लिए खड़ा रहना चाहते हैं। उन्हें असहयोग में अभीतक श्रद्धा नहीं है। इसलिए आप सब बातों का विचार-कर जो उचित समझें वह लिख भेजें। आपका पत्र आने पर मैं पूर्ण तौर से आपकी आज्ञा पर विचार करूंगा। पत्र ता० २९ तक पहुंचना चाहिए।

राय लिख भेजिएगा ।

आपका
जमनालाल बजाज

: १३ :

अहमदाबाद, २५-९-२०

जमनालाल,
वच्छराज, वर्धागंज,

अरविन्द घोष को तार दिया । स्वास्थ्य बहुत अच्छा है । गांधी

: १४ :

आश्रम, ता. २५-९-२०

कृपावंत भाई साहेब जमनालालजी,

आज पंडित बिशनदत्त शुक्लजी का पत्र आया है, वह आपको भेजता हूं । उनको आज एक तार भेज दिया गया है कि "जमनालालजी ने अपना पत्र प्रसिद्ध करने की इजाजत दे दी है और उसके मुताबिक मैं उनका पत्र ३० सितम्बर को प्रसिद्ध कर दूंगा । यदि आप चाहें कि वह भी प्रसिद्ध न हो तो जमनालालजी से बात करके उनको हमें तार भेज देने को कहिएगा ।" आपकी क्या राय है ?

आज आपका तार आया । उसका उत्तर भी भेज दिया है । पू० अरविन्द घोष को एक तार दिया गया है ।

बापूजी का स्वास्थ्य आजकल खूब सुधर गया है । खांसी थोड़ी-सी है । यहां खूब आराम करते हैं, और चार-पांच रोज और ठहरेंगे इतने समय में स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो जायगा ।

दो और तीन अक्तूबर को बापूजी मुंबई में होंगे । पीछे यू० पी० और बिहार का दौरा है ।

आपका
महादेव देसाई

: १५ :

आश्रम, २७ सितम्बर, १९२०

प्रिय भाई साहब,

आपका पत्र मुझे और महात्माजी को मिला । तार आपको भेजा गया

660

है। आपको अध्यक्ष-पद लेने की सम्मति दी गई है, उसका मुख्य कारण यह है कि कोई अयोग्य मनुष्य आ जाय वह इच्छनीय नहीं है। आप जो वय और अज्ञान (कम विद्याभ्यास) की दलील करते हैं वह उनको स्वीकार्य नहीं हैं। सिर्फ एक दलील थी—वह यह है कि वहांका वातावरण शायद आपके लिए संपूर्ण निर्मल न हो। लेकिन आज की स्थिति में वह भी बरदाश्त कर लेना होगा। बापूजी समझते हैं आप जरूर हिन्दी में व्याख्यान तैयार कर सकते हैं और उसका अच्छा अंग्रेजी अनुवाद करवाकर गेट पर बांट सकते हैं।

प्रणाम सह—

आपका
महादेव देसाई

: १६ :

१६-३-२२

चि. जमनालाल,

जैसे-जैसे मैं सत्य की शोध करता जाता हूं, मुझे प्रतीत होता है कि उसमें सबकुछ आ जाता है। प्राय: यह प्रतीत होता रहता है कि अहिंसा में वह नहीं है, परन्तु उसमें अहिंसा है। निर्मल अंत:करण को जिस समय जो प्रतीत हो वह सत्य है। उसपर दृढ़ रहने से शुद्ध सत्य की प्राप्ति हो जाती है। इसमें मुझे कहीं धर्म-संकट भी मालूम नहीं होता। लेकिन अहिंसा किसे कहें इसका निर्णय करने में प्राय: कठिनाई का अनुभव होता है। जन्तुनाशक पानी का उपयोग भी हिंसा है। हिंसामय जगत में अहिंसामय बनकर रहना है। वह तो सत्य पर दृढ़ रहने से ही हो सकता है। इसलिए मैं तो सत्य में से अहिंसा को फलित कर सकता हूं। सत्य में से प्रेम की प्राप्ति होती है। सत्य में से मृदुता मिलती है। सत्यवादी सत्याग्रही को एकदम नम्र होना चाहिए। जैसे-जैसे उसका सत्य बढ़ता है वैसे ही वह नम्र बनता जायगा। प्रतिक्षण मैं इसका अनुभव कर रहा हूं। इस समय सत्य का मुझे जितना खयाल है, उतना एक वर्ष पहले न था, और इस समय मैं अपनी अल्पता को जितना अनुभव कर रहा

मेरी दृष्टि में, 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' इस कथन का चमत्कार दिनों-दिन बढ़ता जाता है। इसलिए हमें हमेशा धीरज रखनी चाहिए। धैर्य पालन से हमारे अंदर की कठोरता चली जायगी। कठोरता के न रहने पर हममें सहिष्णुता बढ़ेगी। अपने दोष हमें पहाड़ जितने बड़े प्रतीत होंगे, और संसार के राई से। शरीर की स्थिति अहंकार को लेकर है। शरीर का आत्यंतिक नाश मोक्ष है। जिसके अहंकार का सर्वथा नाश हुआ है वह मूर्तिमन्त सत्य बन जाता है। उसे ब्रह्म कहने में भी कोई बाधा नहीं हो सकती। इसीलिए परमेश्वर का प्यारा नाम तो दासानुदास है।

स्त्री, पुत्र, मित्र परिग्रह सबकुछ सत्य के अधीन रहना चाहिए। सत्य की शोध करते हुए इन सबका त्याग करने को तत्पर रहें तो ही सत्याग्रही हुआ जा सकता है।

इस धर्म का पालन अपेक्षाकृत सहज हो जाय इस हेतु से मैं इस प्रवृत्ति में पड़ा हूं, और तुम्हारे समान लोगों को होमने में भी नहीं झिझकता। इसका बाह्य स्वरूप हिंद स्वराज्य है। उसका सच्चा स्वरूप तो उस-उस व्यक्ति का स्वराज्य है। अभी एक भी ऐसा शुद्ध सत्याग्रही उत्पन्न नहीं हुआ है। इसी कारण यह देर हो रही है। किन्तु इसमें घबराने की तो कोई बात ही नहीं। इससे तो यही सिद्ध होता है कि हमें और भी अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

तुम पांचवें पुत्र तो बने ही हो। किन्तु मैं योग्य पिता बनने का प्रयत्न कर रहा हूं। दत्तक लेनेवाले का दायित्व कोई साधारण नहीं है। ईश्वर मेरी सहायता करे और मैं इसी जन्म में उसके योग्य बनूं।[1]

शुभेच्छुक बापू के
आशीर्वाद

---

१. गांधीजी ने यह पत्र विचाराधीन (अंडर ट्रायल) कैदी की हालत में साबरमती जेल से लिखा था और इसे जेल सुपरिटेंडेंट ने १७-३-२२ को सही करके भिजवाया था।

: १७ :

सावरमती-जेल, १८-३-२२

भाई जमनालाल,

केवल आर्थिक दृष्टि से मैं कह सकता हूं कि यदि विदेशी सूत और कपड़ों का व्यापार करनेवाले अपने व्यापार को नहीं छोड़ेंगे और जनता विदेशी कपड़े के मोह को नहीं छोड़ेगी तो मुल्क की महाबीमारी—भूख—हरगिज हट नहीं सकती है। मेरी उम्मीद है, सब व्यापारी खद्दर और चरखा-प्रचार में पूरा हिस्सा देंगे।

आपका
मोहनदास गांधी

: १८ :

५-१०-२२

चि. जमनालाल,

कल मैंने मोहवश होकर रामदास के विषय में जल्दी में अपने विचार बताए। हम जुदा हुए उसके बाद मैं पछताया और देखा कि अपने को सावधान समझनेवाला मनुष्य भी किस प्रकार मुग्ध हो सकता है और कैसे विना विचारे बोल सकता है। कल मैंने पिता के रूप में अपने धर्म का पालन नहीं किया। मैं समझता हूं कि जबतक चि. रामदास अपने जीवन का आदर्श निश्चित नहीं कर लेता और अपनी इच्छा के मुताबिक स्थिर नहीं हो जाता, तबतक वह शादी करेगा तो पाप करेगा। मेरी प्रतिष्ठा के आधार पर नहीं बल्कि अपने गुणों के आधार पर वह शादी करे ऐसी उसकी इच्छा है। हम सब भी यही चाहें। इस कारण रामदास को कोई भी व्यवसाय पसंद कर लेना चाहिए। उसपर से लड़की देनेवाले माता-पिता विचार करेंगे और लड़की खुद भी समझेगी कि उसे कहां जाना है। इस कारण हम सबका और अब तो आप जो बाहर हैं उनका पहला काम रामदास को काम से लगाने में मदद करना है। रामदास को पढ़ने का लोभ हो तो भले पढ़े। अगर रामदास का बूढ़ा बाप आज बालक के समान अभ्यास कर रहा है, तो रामदास की जवानी तो अभी शुरू हो रही है। अगर उसे व्यापार में पड़ना हो तो पड़े और आश्रम में या राष्ट्रीय विद्यालय में उसका मन लगे तो वैसा करे।

हरीलाल के साथ रहना हो तो उसके साथ रहे। मेरी खास तौर से सलाह है कि किसी भी काम में एक साल रहकर अनुभव लेने के बाद ही रामदास सगाई का विचार करे।

धनिक माता-पिता की लड़की चरित्रवान् हो तो भी जबतक वह खुद गरीबी पसन्द न करे रामदास को ऐसे विवाह-बंधन में बंधना अपनेको दुःखी बनाना है और कन्या तथा उसके माता-पिता को दुखी करना है। सही रास्ता तो मुझे यह प्रतीत होता है कि गरीब-से-गरीब परिवार में से गुणवती कन्या खोज निकालनी चाहिए। ऐसी खोज में समय लगे तो कोई हर्ज नहीं।

बा के प्रति भी मैं गलत मोह में पड़ गया था। मैं मानता हूं कि उसके प्रति कसाईपन बरतने में ही मेरा धर्म है। माता-पिता को अपने स्वार्थ के लिए अपनी संतान की गतिविधि या इच्छा को न रोकना चाहिए। इसके विपरीत कल मैंने बा को उल्टे उत्तेजन दिया; पर मेरी सलाह है कि बा को तो कड़ुआ घूंट पीकर रामदास का वियोग भी संतोषपूर्वक सहन करना चाहिए। रामदास राजगोपालाचार्य जैसे चरित्रवान् के पास जाकर सुखी हो, इसके लिए बा को उसे आशीर्वाद देना चाहिए। उसमें ही बा का परम श्रेय है। उसके सद्गुणी पुत्र है, इसीमें वह संतोष माने। रामदास को उनका (राजाजी का) साथ मिले, यही उचित है।

तुम अपनी इच्छा से दूसरे देवदास बने हो। अब देखो कि यह कितना कठिन हो पड़ता है। सब लड़कों की इच्छाएं अब तुमको पूरी करनी हैं। ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। मैं तुम्हारे प्रेम के लायक बनने का प्रयत्न करता ही रहता हूं।

अब तुम्हारी धार्मिक भावना के बारे में —

ऐसा समझो कि अपवित्र विचार से जो मुक्त हो जाय उसने मोक्ष प्राप्त किया। अपवित्र विचारों का सर्वथा नाश बड़ी तपश्चर्या से होता है। उसका एक ही उपाय है। अपवित्र विचारों के आते ही उनके विरुद्ध तुरत पवित्र विचार खड़े कर दें। ईश्वर प्रसादी से ही यह संभव है। वह प्रसादी चौबीसों घंटे ईश्वर का नाम जपने से तथा वह ईश्वर अंतर्यामी है यह जान लेने से ही मिलती है। भले रामनाम जीभ पर ही हो और मन में दूसरे विचार आते रहें। जीभ से रामनाम इतना प्रयत्नपूर्वक लें कि अंत में जो जीभ पर हो

वही हृदय में भी प्रथम स्थान ले ले। फिर मन चाहे जितना मिथ्या प्रयत्न करे तो भी एक भी इन्द्रिय उसके वश में नहीं होने देनी चाहिए। जो मनुष्य मन जिधर ले जाय उधर इंद्रियों को भी जाने देता है उसका नाश ही होता है। परन्तु अपनी इंद्रियों को जो मनुष्य बलात् भी अपने कब्जे में रखता है तो यह आशा है कि वह किसी दिन अपवित्र विचारों पर भी अधिकार कर लेगा। मैं जानता हूं कि आज भी अगर मैं अपने विचारों के अनुसार अपनी इंद्रियों को खुली छोड़ दूं तो आज ही मेरा नाश हो जाय। अपवित्र विचार आयें तो उससे पीछे न हटें बल्कि अधिक उत्साहित हों। प्रयत्न करने का सम्पूर्ण क्षेत्र हमारे पास है। परिणाम का क्षेत्र ईश्वर ने अपने हाथ में रखा है। इसलिए उसकी चिंता मत करो। जब मन में अपवित्र विचार आवें यह भी समझो कि तुम जानकीबाई के प्रति बेवफा होते हो। और साधु पति अपनी पत्नी के प्रति बेवफा होता ही नहीं। तुम साधु हो। प्राकृत उपाय जानते ही हो। अल्पाहार ही करें। सिर्फ अपने सामने की जमीन पर निगाह रखकर ही चलें। आंखें मलिन होने की सम्भावना हो कि उसे फोड़ डालने जितना क्रोध उनपर करना चाहिए। निरन्तर पवित्र पुस्तकों का ही संग रखें। ईश्वर तुम्हारा सब प्रकार रक्षण करे।

शुभेच्छुक बापू के आशीर्वाद

: १९ :

श्रीहरि

वर्धा, २५-१०-२२

पूज्य श्री बापूजी,

सविनय प्रणाम। आपका पत्र मुझे यथासमय मिल गया था (जो कि पता बराबर नहीं था)। भाई रामदास व पूज्य बा को आपकी लिखी हुई सूचना पसन्द आई, उसके मुताबिक ही वे प्रयत्न करेंगे। मैं आश्रम दो रोज के लिए गया था। सब बातें खुलासेवार की थीं। भाई रामदास का पत्र इस पत्र के साथ है। उससे आपको खुलासा हाल मालूम हो जायगा। पू. मगनलाल भाई की व मेरी इच्छा है कि रामदास अभी आश्रम में रहकर कातना, पींजना, बुनना पहले सीख ले। उसके बाद जहां उसकी मर्जी हो वहां रहे। आशा है इसमें सफलता मिलेगी।

मेरे बारे में आपने जो रास्ते बतलाये उनका मैं उपयोग करूंगा और अवश्य उस मार्ग से लाभ पहुंचेगा। परंतु अभी तो यही लज्जा आती है कि मन की ऐसी हालत में मुझे आपका पुत्र बनने का क्या अधिकार था? मैंने आप-पर तो जवाबदारी डाल ही दी, परन्तु वास्तविक जवाबदारी मुझ पर है। आपके आशीर्वाद से ईश्वर जब यह ताकत दे देगा,उस रोज शान्ति मिलेगी। बाहर मन भटके तो बलात्कार से, इज्जत के डर से ही रोकना भाग पड़ता है; परंतु मेरी इच्छा तो यह है कि घर में रहकर भी मैं इससे (काम-वासना से) हमेशा के लिए मुक्त हो जाऊं। पर अभी तो सबसे कठिन यही बात मालूम होती है। परंतु परमात्मा पर श्रद्धा बढ़ने से अवश्य कोई दिन इसका तिट-कारा आवेगा ही; आप चिंता न करें। आपके पवित्र आशीर्वाद से कठिन-से-कठिन कार्य में भी अवश्य सफलता मिलेगी।

पूज्य मगनभाई, विनोबा आदि का प्रणाम स्वीकार करें। विनोबा को आपका संदेशा कह दिया है। उस माफक वह प्रयत्न रखेंगे। औरों को भी संदेशा—स्वास्थ्य आदि के विषय में कहे मुताबिक दे दिया है। कमला की माता और बच्चों का प्रणाम स्वीकारें। शंकरलाल भाई को प्रणाम कहें। इनसे मुझे खूब ईर्ष्या होती है। बाहर आने पर उनसे लड़ाई करूंगा। दोनों आश्रमों का कार्य संतोषकारक चल रहा है।

आपका

जमनालाल

: २० :

(जवाब दिया) ६-४-२४

चि. जमनालाल,

तुमने कानपुर जाने का इरादा छोड़ दिया यह ठीक किया है। अभी कमजोरी के सिवाय और भी कुछ है क्या ?

चिंचवड की संस्था को तुम जानते हो। उनका विरोध काफी हो रहा है। पैसे की तंगी बनी ही रहती है। मैं समझता हूं कि उन्हें मदद देने की जरूरत है। सोचता रहता हूं कि किस तरह दी जाय। कुल मिलाकर उन्हें १५००० रू. की जरूरत है। इतनी मदद मिल जाय तो फिर उन्हें बिल्कुल जरूरत न होगी और फिर न मांगे ऐसी प्रतिज्ञा करने के लिए वे लोग तैयार

। यदि तुम्हारा अनुभव मेरी तरह हो कि वे लोग इसके लायक हैं और
ुम्हारे पास सुविधा हो तो मैं चाहता हूं कि उनकी इतनी मदद तुम करो।

राजागोपालाचारी को फिर से दमे का दौरा शुरू हुआ है। मैं समझता
कि उन्हें नासिक की हवा माफिक आवेगी। यदि तुम्हारे पास सुविधा हो
उन्हें सेलम पत्र लिखो कि वह तुम्हारे पास आकर कुछ समय रहें। दवा
वह पूना के वैद्य की ही लेते हैं। वह वैद्य उनकी जांच भी कर सकते हैं।
ने उन्हें लिखा तो है कि जबतक तुम वहां हो तबतक वह नासिक रहने चले
ायं तो ठीक।

तुमको मालूम हुआ होगा कि पूना के वैद्य की दवा वल्लभभाई की मणि-
हन, मगनलाल की राधा और प्रो. कृपलानी की कीकीबहन के लिए शुरू
ी है। इसकी प्रेरणा करनेवाला देवदास है। इन वैद्य के संबंध में तुम्हारा
नुभव क्या है, सो लिखना। मालवीयजी कल काशी गए। हिन्दू-मुसलमान
संबंध में कुछ बातें हुईं। हकीमजी आये थे। उन्होंने भी इसी विषय में बातें
ीं। मोतीलालजी यहीं हैं, वह अभी रहेंगे। वह कौंसिल की बातें कर रहे
। सब बातों का विचार करता रहता हूं।

बापू के आशीर्वाद

: २१ :

अंधेरी, ३-५-२४

ाई जमनालालजी,

महात्मा भगवानदीन और पं. सुन्दरलाल यहां आये हैं। असहयोग
आश्रम के संबंध में और अन्य बातों के बारे में बातें करना चाहते हैं। पर मैंने
कह दिया है कि आपसे मिले बिना मुझसे कुछ नहीं हो सकता। मैंने उन्हें
आपके पास जाने की सलाह दी है। उनकी बातें सुनकर मुझसे कुछ कहना
या पूछना हो तो कहें।

मोहनदास के वन्देमातरम्

: २२ :

जुहू, मई–जून, १९२४

चि. जमनालाल,

तुमको दुःख हुआ उससे मुझे भी हुआ। मैंने उस खत में चिरंजीव

विशेषण का उपयोग नहीं किया क्योंकि वह मैंने खुला भेजा था। उसमें चि. विशेषण सब लोग पढ़ें, यह उचित होगा या नहीं इसका निर्णय उस समय मैं नहीं कर सका। इससे मैंने 'भाई' शब्द का प्रयोग किया। तुम चि. होने के योग्य हो या नहीं, अथवा मैं पिता का स्थान लेने लायक हूं या नहीं, इसका निर्णय कैसे हो ? तुम्हें जैसे अपने बारे में शंका है, वैसे ही मुझे अपने बारे में है। यदि तुम अपूर्ण हो तो मैं भी अपूर्ण हूं। पिता बनने से पहले मुझे अपने बारे में ज्यादा विचार करना था। तुम्हारे प्रेम के वश होकर मैं पिता बना हूं। ईश्वर मुझे इसके योग्य बनावे। यदि तुममें कमी रहेगी तो मेरे स्पर्श की वह कमी होगी। इसका मुझे विश्वास है कि हम दोनों प्रयत्न करते हुए अवश्य सफल होंगे। इतने पर भी यदि निष्फलता हुई तो वह भगवान, जो कि भावना का भूखा है और हमारे अंतःकरण को देख सकता है, हमारी यो यता के अनुसार हमारा फैसला करेगा। इसलिए जबतक मैं ज्ञानपूर्वक अपने अन्दर मलिनता को स्थान नहीं देता हूं तबतक तुमको चिरंजीव ही मानता रहूंगा।

: २३

चि. जमनालाल,

मैं इस वक्त ट्रेन में हूं। दिल्ली से वापस आश्रम जा रहा हूं। दिल्ली में समझौते की बातें चल रही हैं। मोतीलालजी का पत्र नहीं आया। तुम्हारे प्रान्त में शुद्ध रीति से जो हो वह होने दो। हम तटस्थ रहकर अपना काम करते रहें, इतना ही जरूरी है।

घनश्यामदास दिल्ली में नहीं थे। उनकी ओर से रुपये मिल गए थे। वे रुपये बिना खर्च के किस तरह तुम्हें भेजे जायं, यह लिखकर पूछने के लिए मगनलाल को कहा था। साथ में महादेव, देवदास और प्यारेलाल हैं।

बापू के आशीर्वाद

: २४ :

सितम्बर, १९२४

चि. जमनालाल,

तुम्हारा तार मिल गया और पत्र भी। बंबई, पूना और सूरत की यात्रा में लिखने को एक क्षण का भी समय नहीं मिला। आज सुबह आश्रम पहुंचा।

तुमको चोट लगी इससे मुझे बिलकुल दुःख नहीं हुआ।[1] मैं तो मानता हूं कि हम जैसे बहुतों को कदाचित बलिदान होना पड़े। जहर इतना ज्यादा व्याप्त हो गया है और अप्रामाणिकता इतनी ज्यादा फैल गई है कि कुछ शुद्ध व्यक्तियों के बलिदान हुए बिना इस आपत्ति से हमारा छुटकारा नहीं हो सकता। हो सके तो झगड़े की जड़ का पता लगाना। क्या कोई ऐसे समझदार हिन्दू या मुसलमान नहीं हैं जो समझें और झगड़े के कारणों को दूर करें?

मेरे निश्चय तुमने समझ लिये होंगे। बेलगांव में वोट (मतदान) से किसी भी महत्वपूर्ण बात का फैसला न करने का मैंने निश्चय किया है। झगड़े इतने बढ गए हैं कि फिलहाल तो हमको सत्याग्रह का वृहत् स्वरूप बंद ही रखना चाहिए। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारा ही नाश हो जायगा। एक भी बात सही रूप में नहीं समझी जाती। सबका अनर्थ; चारों ओर अविश्वास! इस समय तो हम खुद अपनी जगह कायम रहें और दूसरे जो कुछ करते हैं उसके साक्षी रहें। 'यंग इंडिया' के द्वारा तो मैंने बहुत-कुछ समझाया है। मुझे पता नहीं कि उसमें से कितने का अनुवाद 'नवजीवन' में आया होगा।

तुम्हारा हाथ बिल्कुल अच्छा हो गया होगा।

मौ. मुहम्मद अली का पत्र या तार आने तक मैं यहीं हूं।

बापू के आशीर्वाद

: २५ :

१०-९-१९२४

चि. जमनालाल,

तुम्हारा हाथ अब बिल्कुल दुरुस्त हो गया होगा। मेरा पहला पत्र मिला होगा।

मेरे चित्त में अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। उसका पूरा दर्शन इस समय के 'यंग इंडिया' में आवेगा। वोट लेकर हमें मेजारिटी (बहुमत) नहीं बनाना चाहिए, इतना मुझे अभी तो लगता है। बेलगांव में यदि हमको ज्यों-का-त्यों

---

१. जिस चोट का ऊपर के पत्र में उल्लेख है वह जमनालालजी को नागपुर में हिन्दू-मुस्लिम-दंगे के समय लगी थी। वह तांगे में बैठकर जा रहे

काम करने का अवसर नहीं मिले तो हमें अलग होकर जितना वन सके उतना काम करना चाहिए। मैं यह देख रहा हूं कि जो जहर अभी फैल रहा है वह इसके विना नष्ट नहीं होगा। इतना तो मानता हूं कि कैसे भी हो हम उसका मुकावला कर सकेंगे। दिल्ली जाने के लिए तार की राह देख रहा हूं। वहां जाना पड़ा तो हिन्दू-मुसलमान के विषय में कुछ रास्ता निकलने की सम्भावना है। अभी तक यह पता नहीं चला कि वहां दंगा कैसे हुआ ?

घटवाई के भाषण अभी देखे। यदि इसी तरह वोला हो तो मेरा धन्यवाद वेकार हो गया। इस भाषण में अहिंसा नहीं है।

वालकृष्ण आगया यह ठीक हुआ। अपनी इच्छा के अनुसार भले वहां रहे। इसके साथ जो पत्र है वह उसे दे देना। अक्टूवर में तुम भी आवोगे न ?

वापू के आशीर्वाद

: २६ :

दिल्ली, २८-१-२५

पू. भाईश्री,

यहांका कामकाज धीमे-धीमे चल रहा है। कमेटी ने सव-कमेटी वनाई। सव-कमेटी में एक दिन लोग खूब दिल खोलकर वोले। इसलिए सव-कमेटी में से अव एक खानगी सव-सव-कमेटी वनी है। हकीमसाहव के यहां उसकी वैठकें होती हैं। वापू, पंडितजी, सभी मौलाना (जफरअली सहित) और हकीमसाहव, इतने लोग रोज इकट्ठे होते हैं और शाम तक वातें चलती रहती हैं। वापू कुछ रास्ता निकालने का प्रयत्न कर रहे हैं। जो हो जाय सो सही।

गोरक्षा-समिति का काम ठीक हो गया। वापू ने अपने गोरक्षा के भाषण के अनुसार एक योजना वना ली है। वह सवको पसंद आगई है। अंतः अव इस काम को स्थायी रूप मिल जायगा। वापू को इस काम के लिए एक अच्छा मंत्री चाहिए। युवक, उत्साही, हिन्दी-अंग्रेजी आदि भाषाओं को जाननेवाला और

थे। रास्ते में झगड़ा होते देखकर उसे शांत करने उतर पड़े। उसमें किसी-के फेंके गए एक पत्थर की चोट उनके वाएं हाथ पर लगी और उनको अस्पताल ले जाना पड़ा था।

सबसे बढ़कर चरित्रवान्--हो सके तो ब्रह्मचारी--गो-सेवक चाहिए। आपकी निगाह में कोई है?

यहां ३१ तक तो रहना होगा ही। सेवक

महादेव के प्रणाम

: २७ :

शांतिनिकेतन, २९-५-२५

चि. जमनालाल,

तुम्हारा खत मिला। तुम कमिटी में आओगे, ऐसा अनुमान था और वहीं बातें कर लेंगे, यह मानकर पत्र लिखना स्थगित कर दिया था। नहीं आये, इसकी चिन्ता तो नहीं है। गिरधारी के पत्र से यह मान लिया था कि तुम अवश्य आओगे।

कालेज (गुजरात विद्यापीठ) के लिए जिस-तिस पर नजर डाला करता हूं; पर कोई नजर पर चढ़ता नहीं। जुगलकिशोर आजाय, तो एक तरह से फैसला हो सकता है। वह चरित्रवान तो है ही। उसके गिडवानी को लिखे गए पत्र से मुझे पूरा संतोष नहीं हुआ। अगर गिडवानी खुद आने की बात सोचे और आ सके तो ठीक ही है। इस समय और कोई नजर के सामने नहीं है। दक्षिण में कोई मिल जाय तो अच्छा—ऐसा तो मन में रहा ही करता है।

कालेज खोलने की क्रिया जून महीने में ही करनी चाहिए क्या? जून के अन्त में तो मुझे आसाम जाना है। उसके बाद फौरन बिहार जाना चाहिए। लेकिन अगर वर्धा फौरन आना चाहिए तो वहां आकर तब बिहार जाऊंगा। बिहार में एक महीना लग जायगा। मेरे वर्धा आने की बात लोगों ने सुनी है तबसे मुझे दूसरी जगहों में जाने की बात वे कहा करते हैं। नागपुर से, अमरावती से और अकोला से पत्र आए हैं। मुझे ऐसा लगता है कि जहां से मांग आये वहां हो आना इष्ट है। इस वर्ष अच्छी तरह भ्रमण कर लूं, इसे मैं अपना धर्म समझता हूं। अगर ऐसा करूं तो सी. पी. की यात्रा का क्रम तुम्हीं तैयार कर लो और हो सके तो साथ में रहो; शायद यह भी उचित होगा।

(१) मुझे वर्धा कब आना है?

(२) सी. पी. की यात्रा करनी या नहीं ?

(३) यदि करनी हो तो इसका क्रम तुम तैयार करोगे या कैसे ठीक होगा ? तुम साथ चलोगे या कैसे होगा ? इसका जवाब लिखना।

अभी जल्दी आश्रम में आ सकूं, ऐसा नहीं दीखता। बंगाल के बाद सी. पी. वगैरह जाना है। यह हो जाने पर ही आना हो सकता है। इसमें शायद सितम्बर का महीना आ जाय।

वर्किंग कमिटी की बैठक तो हुई ही नहीं, क्योंकि तीन ही सदस्य (हाजिर) थे—जवाहरलाल, डा. नायडू और मैं। अणे साहब आनेवाले थे, लेकिन नहीं आये। इसलिए अजमेर के बारे में कोई विचार नहीं हो सका। फिर भी इसके बारे में मुझसे मिलना हो तो मिल जाना। इस विषय में हमें घबराना नहीं है। मैं अर्जुनलालजी को खुद लिखने वाला हूं कि उन्हें जो कुछ कहना हो मुझे कहें।

वहां तुम सबकी तबीयत ठीक होगी। मैं ठीक हूं। आज शनिवार को बोलपुर में हूं। सोमवार तक रहूंगा। मंगलवार को कलकत्ते जाकर वहां से तीन दिन के लिए दार्जिलिंग जाऊंगा। बाद का कार्यक्रम आजकल में पक्का हो जायगा तब भेजूंगा।

बापू के आशीर्वाद

: २८ :

ग्वालगंज जाते हुए, १८-६-१९२५

चि. जमनालाल,

चि. मनहर से पत्र लिखाया और वह तुम्हारे पास है, यह जानकर मैं बहुत खुश हुआ। वर्किंग कमिटी में अपनी इच्छा से आओ, यह तो ठीक ही है। मुझे खास जरूरत होगी तो फौरन बुलवा लूंगा। आचार्य की खोज में तो हूं ही। सी. पी. को १६वीं जुलाई के बाद एक महीना दूंगा। मेरे पास नगर-कमिटी के, अमरावती के और अकोला के पत्र आये हैं—भेजनेवालों के नाम तो याद नहीं हैं। जहां जाना जरूरी हो वहां जाने का क्रम रखना। पहले तो एक सप्ताह वर्धा में शान्ति से बिताने का उत्साह है। वह तो दार्जिलिंग से भी अधिक शांति का समय मान लिया जाय। उसके बाद मुसा-

फिरी शुरू की जाय। यहां १६वीं जुलाई तक तो हूं ही। १८ को कलकत्ते से आसाम जाऊंगा। वहां से २ जुलाई को कलकत्ते लौटूंगा। तुमने तो सूत खूब काता!

बापू के आशीर्वाद

: २९ :

आश्रम, साबरमती, २४-११-२५

मुरब्बी जमनालालजी,

आपको यह जानकर दुःख होगा कि बापू ने पाठशाला के बालकों की मलिनता के लिए आज से ७ दिन का उपवास शुरू किया है। बालकों में यह पाप प्रवेश कर गया है, यह तो पहले मालूम हो गया था, परन्तु यह इतनी बड़ी मात्रा में फैल गया है, यानी २-३ बालकों को छोड़कर सभी इस पाप में फंस गये हैं, इसका पता बापू को अभी लगा। सबने अपना दोष कबूल किया।

इस उपवास के रहस्य की चर्चा मैं आपके साथ नहीं करूंगा। इसकी योग्यता या अयोग्यता के विषय में भी नहीं। अभी तो बापू का आग्रह है कि इस खबर को सुनकर आप दौड़े न आवें। मुझे इतना ही लिखने के लिए उन्होंने कहा है और उसके अनुसार आपको लिख रहा हूं।

इसके साथ लक्ष्मीदासभाई का पत्र भेज रहा हूं। इसमें जो सूचनाएं हैं उनपर विचार कर लें।

सेवक

महादेव के प्रणाम

: ३० :

आश्रम, साबरमती, २९-११-२५

मु. भाईश्री,

आपका पत्र मिला। विनोबा को तो कैसे बुलाया जाय? और उनके पहुंचने तक तो उपवास समाप्त हो चुके होंगे। अभी तो बालकोबा उनकी जरूरत पूरी कर देते हैं। बापू को कल कमजोरी तो इक्कीस दिन के उपवासों से भी ज्यादा थी; पर उसका कारण था एक-दो दिन की मेहनत। दो दिन से बोलना-चालना बन्द करके सभी तरह का आराम दिया जा रहा है—किसीको भी उनके पास किसी तरह की बात लेकर जाने की इजाजत नहीं है।

आज बापू की आवाज में ज्यादा ताकत है और कल हालत इससे भी ज्यादा अच्छी होगी ऐसी आशा रखें; और परसों तो पारणा का दिन है। भगवान करेगा तो सब मंगलमय होगा। चिन्ता कीजिएगा ही नहीं।

लि. स्नेहाधीन,
महादेव

: ३१ :

आश्रम, साबरमती, ३०-११-२५

मुरब्बी जमनालालजी,

आज सातवां दिन है। तबीयत अच्छी कही जा सकती है। आज तो मौन है, इसलिए शांति ही रहेगी। इसमें क्या ताज्जुब ? चरखा कातना तो चालू ही रहा। और किसी तरह का श्रम नहीं उठा रहे थे। आज सवेरे पूरी गीताजी का पारायण उनके समक्ष हुआ था। कल सवेरे सात बजे प्रार्थना के बाद पारणा होगा। पारणा की विधि, गत वर्ष जैसी दिल्ली में रखी गई थी, वही होगी। इस बार पू. विनोबाजी नहीं होंगे, यही कमी रहेगी। वर्धा आना तो निश्चित ही रहा।

लि. सेवक,
महादेव

आज हाथ में इतनी ताकत है कि उपवास के बारे में एक लम्बा लेख (उन्होंने), अपने हाथ से लिखा है। मौन था इसलिए दूसरे को तो लिखा नहीं सकते थे।

: ३२ :

आश्रम, १-१२-२५

मुरब्बी जमनालालजी,

बापू ने आज सुबह पारणा किया। इसकी खबर आपको तार से दे दी है। बापू की तबीयत अच्छी है। कमजोरी है। उपवास पूरा होने के समय की विधि इस प्रकार थी —

सुबह ७-३० बजे उपवास छोड़ा। पहले प्रार्थना हुई। उसमें इमाम-साहब ने कुरान की आयतें पढ़ीं और उनका अर्थ समझाया। उसके बाद

मिस स्लेड ने—जिसका नाम मीराबहन रखा गया है, यह आपको मालूम हुआ ही होगा—'लीड काइंडली लाइट' गाया; और अंत में बालकोबा ने उपनिषद् और गीता के श्लोक कहे तथा उनका विवेचन किया। उन श्लोकों का विषय विषयात्मा और मानसात्मा, महात्मा और शान्तात्मा का भेद था। इसके बाद बापू ने धीमे स्वर में दर्द और प्रेम से भरे कुछ वचन कहे। उनमें मुख्य वाक्य इस प्रकार थे—:

"बहुत चिन्तन और आत्ममंथन के बाद मैं मानता हूं कि मैंने भूल नहीं की। संभव है कि मेरी भूल मुझे न दिखाई देती हो, पर क्यों न दिखाई दे? मुझमें ममता है? दुराग्रह है? मलीनता है? क्या मैंने सत्य किसी समय नहीं देखा? ममता है तो सिर्फ एक बात की, और वह यह कि छलांग मारकर यदि ईश्वर तक पहुंचा जा सकता हो तो पहुंचना और उसमें विलीन हो जाना। ईश्वर का मतलब है सत्य। मलीनता को तो मैंने निकाल फेंका है, फिर मेरी भूल मेरी समझ में क्यों न आवे?

"आश्रम से मैंने बड़ी आशाएं रखी हैं। जब सारी दुनिया सोती होगी तब आश्रम जवाब देगा, ऐसी मेरी अभिलाषा है—जैसे फिनिक्स, द. अफ्रीका में हुआ था।

"पर यह आशा कैसे पूरी हो? चारित्र्य का पाया मजबूत और शुद्धि सम्पूर्ण होने पर। उसके लिए सात दिन के उपवास तो कुछ भी नहीं हैं। ऐसे उपवास—उससे भी कठिन—भविष्य में भी शायद करने पड़ें। अनशन भी करना पड़े। इनसे तभी बच सकता हूं जब मैं जंगल में भाग जाऊं। पर जंगल में मैं क्यों भाग जाऊं? मैं जन्म से तो वैश्य हूं, फिर भी कर्म से शूद्र, क्षत्रिय और ब्राह्मण हुआ हूं। मुझे तो शांत आत्मा बनना है।" इत्यादि।

उसके बाद सब चले गए। फिर ६-३० बजे बालकों की प्रार्थना हुई। बालकों से जो कहा गया वह बिलकुल सुनाई नहीं दिया, क्योंकि बापू की आवाज़ बिलकुल बैठ गई थी। किन्तु, बालकोबा और सुरेंद्र का आदर्श रखकर ...ो, २४ घंटे काम होता हो तो २४ घंटे काम करो, यह ध्वनि थी।

उसके बाद के समय का तो क्या वर्णन करूं! २१ दिन के उपवास छूटने की घड़ी से भी वह अधिक पावन थी, अधिक गंभीर और अधिक द्रावक थी। बापू का कंठ रुंध गया था। ७ बज गए, लेकिन उपवास

छोड़ने का मन किसी तरह नहीं हो रहा था। खाना किसी भी तरह नहीं रुचता था। स्थिर पड़े रहे। कौन जाने किस विचार में लीन, कौन जाने कितनी तीव्र वेदना से पीड़ित। देवदास को बुलाया। स्थितप्रज्ञ के श्लोकों का पाठ करने के लिए कहा। यह हो चुका। फिर शांत होकर लेट रहे। अन्त में ७-४० पर कुछ स्थिर होकर पारणा के लिए अंगूर और संतरे का रस मंगाया और हम सबकी जान में जान आई।

आज तबीयत अच्छी मालूम होती है। खूब काम किया फिर भी बहुत थकान नहीं मालूम देती। बोलते बहुत कम हैं। कल, दो-एक दिन शांति से बिताने के लिए, अम्बालाल सेठ के बंगले शाही बाग में रहने जायंगे।

लि. सेवक
महादेव हरिभाई देसाई

: ३३ :

अहमदाबाद, ४-१२-२५

जमनालाल बजाज
वर्धा

पूरा आराम वर्धा में ही सम्भव है। बापू

: ३४ :

आश्रम, साबरमती, ४-१२-२५

मुरब्बी भाईश्री,

आपका तार बापू को दिखाया था। उन्होंने कहा कि डूमस-संबंधी सुझाव शंकरलाल का होना चाहिए। मुझे तो पता ही नहीं था। शंकरलाल ने डूमस के लिए जोर दिया। लेकिन अपना पक्षपात मैंने वर्धा के लिए—आपके लिए और पूज्य विनोबाजी के सहवास के लिए—बताया और बापू ने भी कहा कि "मुझे जमनालालजी और विनोबा जितनी शांति दिलायेंगे उतनी दूसरा कोई नहीं दिला सकता।" इसलिए आज जो तार दिया है वह बापू के कहे अनुसार दिया है। बापू तो कहते हैं कि एक दिन बंबई ठहरे बिना यदि नवीं ता. को ही वर्धा पहुंच सकें तो अच्छा।

बापू को कहां रखा जाय, कहां अधिक-से-अधिक आराम तथा शांति

और विनोबाजी का सहवास मिलेगा, यह तो आप ही जानें और तय करें। वहां आयंगे यह निश्चित है।

आप आनन्द में होंगे। बापू आजकल अम्बालालभाई के यहां हैं। कल फिर आश्रम में आ जायंगे। तबीयत ठीक सुधरती जा रही है।

स्नेहाधीन महादेव के प्रणाम

: ३५ :

४-१२-२५

चि. जमनालाल,

विनोबा मुझे कहते थे कि यहां के उपवासों से मैं चिन्ता में पड़ जाऊंगा ऐसा तुमने समझा था। लेकिन मुझे चिन्ता बिलकुल नहीं हुई; यही नहीं, बल्कि उससे मुझे आनन्द हुआ। भाई भन्साली के उपवास केवल उनके शौक के लिए थे। वह इन दिनों भारी तपश्चर्या कर रहे हैं। भाई किशोरलाल ने सिर्फ व्यक्तिगत, और अपने विकार दूर करने के लिए किये थे। मगनलाल के बतौर प्रायश्चित्त के थे और वह ठीक ही थे।.... ने उन्हें धोखा दिया। इसका उपाय उनके पास, सिवाय इसके कि वह कष्ट सहन करें, दूसरा नहीं था। इसका असर उस कुटुम्ब पर अच्छा हुआ है। किशोरलाल, भन्साली और मगनलाल तीनों की तबीयत अच्छी है। अब इसमें मेरे लिए चिन्ता का कोई कारण नहीं है।

मेरी तबियत अच्छी रहती है। अब मैं ४ सेर (१ सेर=८० तोला) दूध पीता हूं और ८ बिसकिट, खा लेता हूं, जो जमनाबहन ने बनाकर भेजे हैं। नियमित रूप से घूमता-फिरता हूं। अतः मेरे संबंध में बिलकुल चिन्ता न करें।

इसके साथ चि. मणि का पत्र तुम्हारे पढ़ने के लिए भेजता हूं। उसे लौटाने की जरूरत नहीं।

कमला के विवाह के संबंध में कोई खबर अभी नहीं है क्या?

बापू के आशीर्वाद

: ३६ :

आश्रम, साबरमती, मार्च, १९२६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। २२वीं तारीख को मैं यहां से रवाना हो सकूंगा,

इस आशय का तार मैंने तुम्हें भेजा है। उसके पहले निकल सकना सुविधा-जनक नहीं है। और अभी तो यहां गर्मी के बदले ठंडक रहती है, ऐसा कहा जा सकता है। इस बार भी मेरा वजन आधा पौंड बढ़ा है। इससे अब १०४ पौंड तक हो गया है। आराम तो खूब ले रहा हूं। हकीम-साहब को लिखे हुए तुम्हारे पत्र का मसविदा मैं पढ़ गया हूं। यह ठीक है। इसके साथ उसे वापस भेज रहा हूं। मेरे साथ बहुत करके प्यारेलाल, महादेव, सुब्बैया, प्यारअली, नूरबानू बहन और उनका नौकर होंगे। प्यारअली का इरादा तो किराया देकर अलग रहने और अपनी रसोई करा लेने का है। अगर तुम्हें हाल में बम्बई रहने की जरूरत न हो तो तुम मेरे साथ मसूरी में रहो, यह मुझे जरूर अच्छा लगेगा। कितने ही काम तो तुम्हारे रहने पर जरूर कर लेंगे। लेकिन अगर काम के सिलसिले में बम्बई या कलकत्ता जाना हो तो मैं तुम्हें खासतौर से रोकना नहीं चाहूंगा। इसलिए अन्तिम निर्णय तो अपनी सुविधा देखकर तुम्हें ही करना होगा।

गुरुकुल का काम तुमसे ठीक सध रहा है, ऐसा लगता है। राजगोपाला-चारी को अपने आश्रम की बहुत झंझट है। इसलिए उन्हें तुरन्त जाना होगा। अब्बास तैय्यबजी घूमने के लिए तैयार हो सकें, ऐसी संभावना है। मणिलाल रंगून से आ गए हैं। परन्तु वह तुरन्त घूमने के लिए निकल सकें, ऐसा नहीं लगता। उन्हें अब थोड़ा समय रेलवे के नौकरों के लिए भी देना पड़े, ऐसी बात है। इसलिए वह अभी तुरन्त भ्रमण नहीं कर सकते। यहां से मंगलवार को रवाना होंगे।

बापू के आशीर्वाद

: ३७ :

आश्रम, साबरमती, १९-३-२६

चि. जमनालाल,

मसूरी के विषय में आज मुझको बड़ा उद्वेग होता रहा है। यहां या और कहीं जाने का मन ही नहीं होता। मेरी तबीयत के लिए हवा-फेर की जरूरत नहीं है। मुझे आराम की जो जरूरत है, वह तो यहां ठीक से मिल जाता है; और यहां का जो थोड़ा कामकाज देख सकता हूं वह मेरे लिए दवा का काम

दे देता है। आश्रम न छोड़ने के बहुत से कारण हैं। आश्रम छोड़ने से हानि हो सकती है। इसलिए यदि मुझे विचारपूर्वक बंधन-मुक्त कर दें तो मैं छूट जाना चाहता हूं। यदि तुम यह मानते हो कि मसूरी जाना ही चाहिए तो मैं अवश्य जाऊंगा। पर आज जो मानसिक उद्वेग हुआ है वह तुमको लिखना उचित समझकर लिखा है। शंकरलाल के साथ भी बातचीत करूंगा।

सतीश बाबू कल आये हैं। डा० सुरेश शनिवार को आयेंगे।

मणिबहन तुम्हारे साथ रहना नहीं चाहती। उसे अपनी गुजराती अच्छी कर लेनी है। फिर भी मदालसा को जानकीबहन के पास ही रहना चाहिए। काफी समय आश्रम में रहेगी तो योंही बहुत-कुछ सीख लेगी।

कन्या-गुरुकुल को बारीकी से जांचकर मुझे लिखना। यह भी लिखना कि उसमें कितनी कन्याएं हैं।

बापू के आशीर्वाद

: ३८ :

आश्रम, साबरमती २४-३-२६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। हकीमसाहब का भी मिल गया है। हकीमसाहब को आज नीचे लिखे अनुसार तार भेजा है —

"पत्र के लिए धन्यवाद। आप मित्रगण जो भी इन्तजाम करेंगे, अनुकूल होगा।"

अब तुम जो तय करो सो सही। मसूरी जाने के पहले मुझे कहीं और जगह रखना चाहो तो वैसा कर लेना। बाकी मैं तो सीधे मसूरी जाने के लिए भी तैयार हूं। वहां सर्दी ज्यादा होगी, इसकी कोई बात नहीं। इतनी तो बर्दाश्त हो जायगी।

बापू के आशीर्वाद

: ३९ :

आश्रम, २५-४-२६

० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। गवर्नर का जवाब आया है कि अभी मेरे वहां

जाने की जरूरत नहीं है। वह अब जून महीने में नीचे उतरें तब जाऊं तो ठीक होगा। इसलिए महाबलेश्वर के जंजाल से तो छुट्टी मिली।

लालाजी के साथ मैंने उनकी शिकायत के बारे में कुछ बातचीत तो की ही थी, पर मेरे पास तो उन्होंने इन्कार ही किया। रोग की जानकारी है, इसलिए जब आयंगे तो इलाज तो कर ही लेंगे।

मोतीलालजी के साथ प्रसंग आने पर बात कर लूंगा। मैं मानता हूं कि इस सम्बन्ध में कोई अड़चन नहीं आयगी। देवदास को अभी यहां से बाहर भेजने की इच्छा नहीं होती। उसका शरीर फिर अच्छी तरह सुधरने लगे तभी यहां से निकलना ठीक रहेगा। अगर यूरोप जाना हो तो क्या किया जाय और किनको साथ ले जाया जाय, यह विचार तो करना ही रहा। अभी तो ऐसी भावना है कि महादेव और देवदास साथ आवें। इस दृष्टि से भी हाल में देवदास का यहां रहना ठीक होगा। जाना हो तो जुलाई महीने के प्रारम्भ में निकलना होगा। मुझे अभी कोई जवाब नहीं मिला है।

बापू के आशीर्वाद

:४०:

अहमदाबाद, ३०-४-२६

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र मिला।

१. आल इंडिया कांग्रेस कमेटी में आने के सम्बन्ध में बापू कहते हैं —

"इच्छा न हो तो न आवें। रत्नागिरि जरूर हो आवें। यदि इच्छा हो जाय तभी आवें।"

२. बेलगामवाला के बारे में उनकी सलाह उन्हींके शब्दों में लिखता हूं: "मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं; परन्तु बेलगामवाला को तुम मदद कर चुके हो। उन्होंने ठीक कुरबानी की है। इसलिए यदि तुमको इसमें हिस्सा लेने की इच्छा हो ही और मशीनरी सचमुच इतनी ही कीमत की हो और मारगेज अच्छा मिल सके तथा तुम उधार रुपये लगा सको तो मैं नाराज नहीं होऊंगा। अथवा कम-से-कम तुम्हें उलाहना तो नहीं दूंगा।

"परन्तु इसकी सिफारिश करने के लिए मैं तैयार नहीं हूं। अतः सब

बातों का विचार करके तुम जो निर्णय करोगे उससे मैं सहमत हो जाऊंगा।"

हार्निमेन के आदमी को जो कहा सो ठीक है। मगनलालभाई को आश्रम की चीजों के बारे में संदेशा दे दिया है।

साहेबजादा घर गए हैं। छोटूभाई के साथ क्या हुआ सो कुछ नहीं बताया।

बापू का फिनलैंड जाना अनिश्चित है। बापू ने स्वीकृति तो लिख दी है, परन्तु कई शर्तें लगा दी हैं। वे लोग मंजूर करेंगे तो जाना संभव हो सकता है। शर्तें ये हैं: पोशाक अपने ढंग का ही रक्खेंगे, सिर्फ मौसम के लिए ही कुछ फेरफार करना जरूरी होगा तो करेंगे; भोजन में बकरी का दूध और फलाहार; भाषण नहीं करेंगे, मगर विद्यार्थियों के साथ बातचीत करेंगे; पासपोर्ट की सारी व्यवस्था वही लोग करेंगे और उसमें किसी प्रकार की शर्तें न होनी चाहिए। ये सब वे लोग मंजूर करेंगे तो बापू जाएंगे। उनका जवाब नहीं आया है। साथ जानेवाले तो दो हैं—अभी तो देवदास और मेरे नाम की चर्चा है, आखिर में जो चला जाय वह सही। और जाने से पहले वल्लभभाई जैसे कुछ चमत्कार कर दें तो उसका भी खयाल करना पड़ेगा।

स्नेहाधीन सेवक
महादेव के प्रणाम

: ४१ :

आश्रम साबरमती, ८-५-२६

चि० जमनालाल,

आखिर महाबलेश्वर तो जाना ही पड़ेगा। आज सर चुनीलाल मेहता का पत्र आया है। वह गवर्नर ने ही लिखाया है, और उसमें सूचित किया गया है कि हो सके तो गवर्नर से महाबलेश्वर में ही मिल लिया जाय। उनके साथ ही रहने का भी आमंत्रण दिया है और आग्रह किया है। इसलिए यहां से गुरुवार को रवाना होने का इरादा रखता हूं। इतने में देवदास का आपरेशन तो हो ही चुका होगा। आज तार की राह देख रहा हूं। महाबलेश्वर जाने में बंगले की तजवीज़ नहीं करनी होगी। मोटर का क्या करना उचित होगा और तुमको साथ आना है या नहीं, इसका विचार कर लेना।

बापू के आशीर्वाद

: ४२ :

आश्रम, साबरमती, रविवार, मई, २६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। आज शाम तक तुम्हारा तार आने की आशा रखूंगा। मुझे कोई चिन्ता नहीं है। बा को कहना कि रामी की लड़की को बिल्कुल आराम है। बा का सन्देश मुझे मिला था। मणिबहन और छोटी काशी (बहन) रसोई करती हैं। आज रामी की मौसी कुमीबहन आई हैं; उसे लेने के लिए कान्ति और मनु स्टेशन गए थे। बा इधर की चिन्ता न करें।

रामेश्वरप्रसाद, उसकी माताजी आदि कल यहां आए। आज उधर के लिए रवाना हो रहे हैं। महाबलेश्वर जाने के बारे में मेरा पत्र तुम्हें मिल गया होगा। महादेव को तो वहीं रुकना पड़ जायगा। महादेव को कोई भी सामान वहां लाना हो तो मुझे जतला दे। ओढ़ने के लिए कुछ खास लेना होगा, ऐसा मैं मानता हूं। ऐसा लगता है कि वहां तीन दिन रुकना होगा—शनि, रवि और सोम। मंगलवार को वहां से चलकर सिंहगढ़ में काका से मिलने की बात भी मन में है। और हो सके तो देवलाली भी हो आया जाय। ऐसा करने से शायद दो दिन और लग जायं। मंगलवार को सुबह चलकर १०-११ बजे सिंहगढ़ पहुंच सकते हैं। और सिंहगढ़ से उसी दिन शाम को उतरकर देवलाली जाना संभव हो सके, तो जायें, यह भी मन में आता है। लेकिन अगर देवलाली जाने की जरूरत नहीं है, ऐसा महादेव को लगता हो, तो देवलाली जाने की बात छोड़ देने का विचार भी मन में रहता है, क्योंकि अगर देवलाली एक-दो दिन न रहा जाय, तो वहां जाने में कुछ नहीं है, ऐसा विचार भी मन में आता है। अभी तो मथुरादास को इसके बारे में कुछ नहीं लिखता हूं। महादेव की सलाह पर इसका तय करने का विचार किया है। पूना से मोटर का बन्दोबस्त तुम कर लोगे न? सवेरे १०॥ बजे ट्रेन पूना जाती है। अगर ऐसा हो तो देवदास[1] को देखकर १०॥ बजे की ट्रेन में बैठ जाना और उसी रात महाबलेश्वर पहुंच जाना ठीक होगा। पूना से दो मोटरों का इन्तजाम हो तो अच्छा रहेगा, ऐसा लगता है।

---

१. श्री देवदासभाई का अपेंडिसाइटिस का आपरेशन हुआ था।

आपरेशन का टेलीफान अभी-अभी वल्लभभाई की ओर से मिला। ईश्वर-कृपा।

बापू के आशीर्वाद

: ४३ :

सोमवार, १७-५-२६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा और महादेव का—दोनों के पत्र मिले। मैं तो निश्चिन्त ही था और हूं। क्लोरोफार्म में कुछ जोखिम तो होती ही है। वह तो चाहे जिस आपरेशन के लिए उपस्थित ही रहता है। देवदास को कहना कि अभी भी दुख होता हो तो घबराए नहीं। कितने ही रोगियों को दर्द रहता है। पर वह दो दिन का होता है। यह (पत्र) मिलने तक तो दुख बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

महादेव का भेजा हुआ तर्जुमा मिल गया है। यह और वालजी का तर्जुमा मिलाकर अब (२॥ बजे) तक सत्रह कालम (मेटर) तैयार हो गया है। इसलिए अब पत्र लिखने बैठा हूं।

तुम्हारी इन्दौर-यात्रा मुल्तवी रहने की मैं जरूरत नहीं देखता। महाबलेश्वर में तो कुछ भी होने वाला नहीं है। इन्दौर में तो काम है। यहां से मैं किसे (साथ) लाऊंगा, यह निश्चय नहीं किया। कोई एक होगा। बहुत करके तो सुब्बैया ही होगा।

मैं पहली ट्रेन से आऊंगा। मुझे रेवाशंकरभाई के यहां ले जाना। देवदास की तबीयत ठीक होगी तो नहा-खाकर उसे देखने जाऊंगा। नरम हुई तो सीधे स्टेशन से ही देखने चला जाऊंगा। पूना तो उसी दिन जाना चाहिए, उसमें मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी। उसी रात यानी शुक्रवार को ९ बजे महाबलेश्वर पहुंच जाने का इरादा है। रेवाशंकर भाई को खबर दे देना।

तुम्हारा परिचय है तो भी मेहता को मोटर के लिए न लिखा होता तो ठीक होता। वह सरकार की ओर से बन्दोबस्त करें तो ठीक नहीं होगा। पर अब कोई फेरफार न करना।

तुम देखोगे कि शुक्रवार ही को महाबलेश्वर पहुंच जाने से गवर्नर को मिलने के लिए दो ही दिन तो रह जा ंगे। मंगलवार को सवेरे वहां से चल देना चाहिए।

बापू के आशीर्वाद

: ४४ :

आश्रम, साबरमती २३-५-२६

चि० जमनालाल,

मसूरी आ जाओ तो अब्बास तैयबजी के मकान की बात न भूल जाना, यह उन्होंने मुझे याद दिलाने के लिए लिखा है। तुम अब भी वहां हो तो उनसे संवेदना प्रकट करने को मिल आना। उनका पता इस प्रकार है:—

मार्फत : मि. एम. बी. तैयबजी, फ्रेंच रोड, चौपाटी।

वह एक ज्ञानी पुरुष है। मेरे तार के जवाब में लिखते हैं कि उन्हें मौत का धक्का जरा भी नहीं लगा।

भाईलालजी का आपरेशन झटपट में हो गया और सुन्दर रूप से हुआ जान पड़ता है। देशबन्धु-कोष का हिसाब तैयार करा लेना।

बापू के आशीर्वाद

: ४५ :

आश्रम, साबरमती, १०-६-२६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम भी वहां लम्बे समय तक रह सको, ऐसा मैं चाहता हूं, और घूम-फिरकर शरीर को अधिक मजबूत बना लो। जो चक्कर वगैरह आता है, वह बिल्कुल बन्द हो जाना चाहिए। उसके लिए मुख्यतया खुली हवा और कसरत ही सही इलाज है। तुम्हारे लिए कम-से-कम दस मील की कसरत हमेशा होनी चाहिए। यह जरा भी अधिक है, यह बात मैं नहीं मानता। चर्खा-संघ-समिति की सभा २६वीं को है। इसलिए तबतक तो तुम्हारा यहां आने का सवाल नहीं उठता। दिल्ली और रामपुरा-आश्रम में अब भी रुकने का लोभ न करो, यह ठीक है। मसूरी में जितने दिन बिता सको, उतने दिन बिता दो, ऐसा चाहता हूं। लक्ष्मीदास को कहना कि मुझे समय-समय पर पत्र लिखता रहे। तबीयत खूब सुधार ले। मणि को लेकर बेलाबेन आज शाम को आयंगी।

बापू के आशीर्वाद

: ४६ :

आश्रम, साबरमती, १६-७-२६

चि० जमनालाल,

जोशी गिरजाशंकरवाली जमीन, जिसको लेने का हमारा विचार था, वह आज ले ली गई होगी। जमीन कुल मिलाकर १९ बीघा है। उसमें से आखिर की एक बीघा वह अपने पास रखना चाहता है। १८बीघा और मकान २१ हजार में लिया जायगा। वह अथवा उसका किरायेदार रहे, तो वह हमारे कुंए में से पानी का उपयोग कर सकता है। जब वह बीघा बेच दे तो पानी का उपयोग बन्द हो जायगा। बेचने के पहले पंचनामा करे, उतनी कीमत में लेने की छूट हमें होगी। बयाना के रूप में पांच हजार रुपया देना है। और बाकी १६ हजार एक महीने के अन्दर। किसके नाम जमीन लेनी है, यह खाली रखा है। मुझे तीन बातें सूझती हैं—(१) आश्रम के नाम, (२) गोरक्षा खाते, (३) तुम्हारे नाम। तुम लेना चाहो तो भले ही तुम ले लो। मेरा विचार यह है कि आश्रम के नाम ली जाय और डेरी के लिए अथवा चमड़े का काम करने के लिए इस्तेमाल करनी हो तो की जाय। यह भी हो सकता है कि आश्रम की किसी दूसरी जमीन में डेरी, चमड़ा-विभाग वगैरह के काम किये जायं, और जमीन रहने और खेती करने के काम में लाई जाय। अभी तो मकान की खेंच बहुत बड़ी है, जिस तरह लेनी हो, उसी तरह सही; परन्तु रुपयों का बन्दोबस्त तो तुम्हें वहीं करना होगा।

जुगलकिशोरजी और घनश्यामदासजी को इसके बारे में मिलना हो तो मिल लेना। चौमासा बीत जाने पर कुछ और मकान बनवाने तो पड़ेंगे, ऐसा लगता है। रुपयों के लिए क्या करना होगा और किस नाम से दस्तावेज लिखाया जाय। इस विषय में तार देना। यहां बरसात बहुत अच्छी हुई है। लगभग रोज ही बाढ़ आ जाती है।

हिन्दू-मुस्लिम फसाद वहां रोज बढ़ता ही जाता है। इसका उपाय निकाल सको तो निकालो। मुझे सविस्तर हकीकत लिखना।

बापू का आशीर्वाद

: ४७ :

सोमवार, जुलाई, १९२६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा तार मिला है। इसीलिए यह पत्र काशी से लिखता हूं। गत सप्ताह एक पत्र कलकत्ते को लिख दिया था। गिरजाशंकर जोशीवाली जमीन २१०००) में ली है। फुटकर सामान का लगभग १०००) के अन्दर और लगेगा। जमीन १९ बीघा है। उसमें से एक बीघा उनके लिए छोड़ देना है। ५०००) बयाने के रूप में दे दिये हैं। एक महीने के अन्दर १६०००) देना चाहिए। अब सवाल यह है कि जमीन किसके नाम लिखाई जाय ? तुम्हारे, आश्रम के अथवा गोरक्षा के ? मुझे ऐसा लगता है कि आश्रम के नाम ली जाय। पीछे जिस काम के लिए इस्तेमाल करनी हो, उसके लिए करें। पर इस बात में मैं तुम्हारी इच्छा के अनुकूल होना चाहता हूं। चाहे जिस नाम ली जाय, पर रुपयों का इन्तजाम तुम्हें करना होगा। बिड़ला-बंधुओं के साथ बातचीत करनी हो, तो करना। क्या करना है, इसके लिए तार देना। रुपया जितनी जल्दी दिया जा सके, उतनी जल्दी देने को मैंने कहा है। इसलिए उसका भी बन्दोबस्त तुरन्त हो जाय, ऐसा करना।

कलकत्ते के दंगे की बात सुनकर जानकीबहन कुछ घबराती हैं। मैंने शांत कर दिया है।

बापू का आशीर्वाद

: ४८ :

३०-७-२६

चि. जमनालाल,

तुम्हारा देवदास के नाम का पत्र पढ़ा। जो तूफान आया है, उसकी मुझे आशा नहीं थी। मगर आ जाने दो। उसीमें धर्म की परीक्षा है। जब तुम्हारे पास तोहमतनामा (दोषपत्र) आ जाय तो मुझे भेज देना। मैं उसका जवाब तैयार कर दूंगा। उसमें जो परिवर्तन करना हो वह कर देना। मतलब यह कि हमें पूरे विनय का पालन करना है। जाति को अधिकार है कि जो व्यक्ति उसके नियम का उल्लंघन करता है, उसका बहिष्कार करे। तुमने जो कुछ

किया है, उसमें न तो शरमाने की, न पछताने जैसी कोई बात है। जाति में तुम्हारा प्रभाव कम होगा, पैसा प्राप्त करने की तुम्हारी शक्ति अवश्य कम होगी। परन्तु उसकी मैं कोई चिन्ता नहीं करता। तुम्हारे लिए भीख मांगने का समय आ जाय तो भी हर्ज नहीं। धर्म रहे और भिक्षुक होना पड़े तो वह स्वागत-योग्य है। अन्त में जब जाति तुम्हारे धर्म और विनय को पहचान लेगी, तब स्वतः नम्र बन जायगी। जातियों में सुधार तो होने ही चाहिए। वे आसानी से हो सकेंगे।

अण्णा को प्रेस लेने के लिए ८००० रुपये और अभी भेजने की जरूरत है। वे यहां आये थे। उन्हें प्रेस लेने की सुविधा कर देनी चाहिए। यदि घनश्यामदास ने ५००० रु. दुबारा न भेजे हों तो उन्हें याद दिला देना। वे आ जायं तो वही भेज देना और ३००० रु० उसमें और जोड़कर भेज देना। दूसरे महीने में यह काट लेना।

बापू के आशीर्वाद

: ४९ :

आश्रम, साबरमती, १०-८-२६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। घनश्यामदास का भी मिला। तुम्हारा तार भी मिला था। सीकर गए सो ठीक हुआ। अब वहां से यहां आने का जो विचार किया है, वह कायम ही रखना। घनश्यामदास लिखते हैं कि तुम्हारी तबीयत भी ठीक नहीं है। यह पढ़कर मैं चौंका हूं।

बाकी मिलने पर।

बापू का आशीर्वाद

: ५० :

१७-१०-२६

चि० जमनालाल,

गिरधारी कहता है कि तुम्हारी तबीयत अभी भी अच्छी नहीं हुई है। यह बात ठीक नहीं। तुम्हें कहीं भी जाकर स्वस्थ हो ही जाना चाहिए। तुम्हें एकान्त में जाना चाहिए। अच्छी हवा चाहिए और साथ में योग्य साथी होना

चाहिए । व्याधि शारीरिक एवं मानसिक है । काम का बोझ ज्यादा नहीं उठाना चाहिए ।

कमला की कोई चिन्ता करने का कारण नहीं है । दूसरों की तरह उसे भी बुखार है । वह तो वर्धा, बम्बई सभी जगह जाने को तैयार ही है । पर जबतक उसकी तबीयत अच्छी नहीं हो जाती, तबतक भेजने की इच्छा और जरूरत भी नहीं है । मैं उससे मिलता रहता हूं । चिन्ता तो कमला की सास के बारे में रहती है, क्योंकि वह बहुत घबराती है; पर वह अच्छी तो हो ही जायगी ।

टहलना बराबर चालू रखा है न ? सुबह-शाम दोनों वक्त (घूमने) निकलना ही चाहिए ।

बापू के आशीर्वाद

: ५१ :

८-११-२६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला । इलेक्शन (चुनाव) के बारे में मैं तो भूल ही गया था । तुम्हें जैसा ठीक लगे, वैसा करने में कोई हर्ज नहीं है । मुझसे तो इसमें भाग नहीं लिया जा सकेगा, इसलिए मैंने तो सबको 'न' ही लिख दिया है । तुम्हें बहुत जगह जाना पड़े, यह तो मैं पसंद नहीं करता । इससे तुम्हारी तबीयत को धक्का लगेगा ।

बा की तबीयत तो एकदम अच्छी हो गई है । इससे चिन्ता का कारण नहीं है । मेरे आने के समय क्या होता है, वह देखता हूं । उम्मीदवार तो बहुत होंगे, लक्ष्मीदास को खास हवा बदलने के लिए साथ लाना चाहता हूं ।

बापू के आशीर्वाद

: ५२ :

साबरमती, २१-११-१९२६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला । तुम दीर्घायु होवो और तुम्हारी पवित्रता में वृद्धि होवे । इस जगत में बिना दूषण के तो कोई भी नहीं है । हम उसे दूर करने का

प्रयत्न ही कर सकते हैं। वह प्रयत्न तुम कर रहे हो। प्रयत्नशील की दुर्गति नहीं है, ऐसा भगवान् का आश्वासन है।

अब तो ४ ता. को मिलेंगे। ताप्ती व्हेली होकर आने का विचार कर रहा हूं। शास्त्रीयार कल आ रहे हैं। बापू के आशीर्वाद

: ५३ :

मौनवार, १६-१-२७

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला है। तुमको गोंदिया और अमरावती के भंडारों के बारे में तार दिया है। मुझे गोंदिया आना होगा तो आ सकूंगा। ३१ की रात को पटने से रवाना होना है। पहली को बम्बई मेल मुगलसराय में मिलेगी। उसी दिन जबलपुर पहुंचना होता है। इससे दूसरी तारीख को गोंदिया पहुंचना संभव है। दूसरी को सवेरे भुसावल तो आयगा ही।

अब मणिलाल के बारे में। मैंने इसके बारे में किशोरलाल को पत्र लिखा है। वह तुम्हें पढ़ा देने को लिखा है। मेरी तात्कालिक सूचना यह है कि सुशीला का नाम लिये बिना गोमती अथवा विजयलक्ष्मी पूछे कि उसका विवाह करने का विचार है या नहीं। किशोरलाल के पत्र से मालूम होता है कि कोई बहन अभी शादी करने को तैयार हो, ऐसा नहीं लगता। अगर ऐसा ही हो, तो हम उसको कैसे ललचायें? अगर कोई तैयार हो भी, तो शायद सुशीला हो, ऐसा किशोरलाल मानते हैं। इसीलिए विवाह के बारे में उसकी इच्छा जान लेने के बाद ही आगे बढ़ा जा सकता है। इस दरम्यान में उस तरफ़ तो आऊंगा ही। उस समय और ज्यादा सूझ पड़ेगा।

यहां तेज रफ्तार से यात्रा हो रही है। ठीक है। ज्यादा प्रबन्ध होगा। आज राजेन्द्र बाबू के गांव में हैं।

जानकीबहन के मसे फिर से नरम हैं; तो भी उसे दिखाकर, डाक्टर कहे उस मुताबिक करना उचित लगता है। मैं चाहता हूं कि डाक्टर को दिखाने में देर न करो।

विनोबा की तबीयत ठीक होगी। शिवाजी की तबीयत की खबर भी जानना चाहता हूं। बापू के आशीर्वाद

: : ५४ : :

अंबोली, सोमवार, अप्रैल, २७

चि० जानकीबहन,

तुम्हारे पास से देवदास को आना पड़ा यह मुझे अच्छा नहीं लगा। परन्तु वह नहीं रह सकता था, यह मैं समझ सकता हूं। अब कदाचित थोड़े ही दिनों में वह वहां आ जायगा।

तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है ? वहां कुछ शक्ति बढ़ रही है ? कुछ तकलीफ होती है ?

चि० कमला की पढ़ाई कुछ चल रही है। तुम खुद न लिखकर कमला से एक लम्बा पत्र मुझे लिखवाओ। मेरी तबीयत की चिन्ता नहीं होनी चाहिए। अभी तो ठीक रहती है। परन्तु बूढ़े तो मृत्यु के किनारे ही बैठे होते हैं न ? अतः किसी-न-किसी बहाने उन्हें पुराना मन्दिर छोड़ना ही चाहिए और इच्छा हो तो नए मन्दिर में बसें और बंदीवास छोड़ना ही हो तो स्वतंत्र रहकर वायु में वास करें। परन्तु बहुत काल तक जेल में रहनेवाले को जैसे जेलखाना अच्छा लगने लगता है, वैसा ही हाल हमारा भी है। देहाध्यास के कारण देह छोड़ना अच्छा नहीं लगता। मुझे अच्छा लगता है कि नहीं, यह तो मैं नहीं जानता। मेरी बुद्धि को इसमें अच्छा लगने जैसा कुछ भी दिखाई नहीं देता। परन्तु आवरण के सामने बुद्धि बेचारी दीन हो जाती है। अतः सच्ची बात का पता तो मरते समय लगेगा।

तुम्हारे पास अभी कौन है ?

बापू के आशीर्वाद

: ५५ :

सोमवार

चि० जमनालाल,

इसके साथ राजेन्द्र बाबू का पत्र है। मैंने तो उन्हें लिखा है कि वह केस लेना हो तो भले ही लें, पर बैजनाथजी को एक बार वहां लिखने के बाद यह वापस नहीं लिया जा सकता। मुझे इस पत्र से दुःख हुआ है।

बापू के आशीर्वाद

: ५६ :

१९२७

चि० जमनालालजी,

तुम्हारा पत्र मिला है। भाई घनश्यामदास के दोनों पत्र वापस भेजता हूं। उनके वचन पर मुझे विश्वास है, इसलिए वह पुनर्विवाह करें, ऐसा भय नहीं है।

तुम बेलगांव में २५-२६ तारीख को हाजिर हो और आश्रम में ११ को हाजिर रहो, ऐसी मेरी इच्छा है। दोनों ही जगहों में काम बहुत हैं। आश्रम में ९ से १३ तक रहा जा सके तो रहने जैसा है। बाद में घनश्यामदास गुरुकुल के समय में रहना चाहता है, उस समय भी रहना हो तो रहे। बाक़ी तुम्हारे अन्य कामों की सुविधा पर निर्भर है।

कमला क्या करती है? उसके बारे में मुझे चिन्ता होती है। इसका मतलब यह नहीं कि तुम भी चिन्ता करने लग जाओ। पर उसके पढ़ने का कोई प्रबन्ध हो तो शायद वह ठिकाने लग जाय। भले ही वह अंग्रेजी ही जी भर के सीखे।

बापू के आशीर्वाद

: ५७ :

१०-२-१९२७

चि० जमनालाल,

तुलसी मेहरजी कहते हैं कि उनकी रुई के बारे में अपना जो अभिप्राय है, तुम्हें लिखूंगा, उसीके अनुसार तुम करने का इरादा रखते हो। मैं स्टेशन जा रहा हूं, इसलिए इतना ही लिखता हूं।

मेरा मत यह है कि जितना घाटा आये, वह चरखा-संघ से दिया जाय अथवा आश्रम से। तुम्हें जो ठीक लगे कि चरखा-संघ में से देकर कौंसिल की सम्मति बाद में ली जाय तो वैसा कर लेना। नहीं तो आश्रम के नाम लिखाकर रुपया दिला देना।

उसके पास तीन सौ हैं। वह रेल के एक डब्बे में भराने जा सके, इतनी रुई बोरों में पैक की हुई चाहता है। इसमें ८०० रुपये से अधिक खर्च न हो तो उतना दिला देना। ३०० अलग गिने जायं।

अगर थोड़ी रुई भेजने से रेल-किराया कम हो तो कम भेजना उचित समझता हूं। तुलसी मेहरजी पचास बंगाली मन चाहता है, क्योंकि उसका खयाल है कि ५० मन या २५ मन का रक्सौल तक किराया एक ही पड़ेगा। अगर ऐसा ही हो तो ५० मन देना ही उचित मालूम होता है। इसमें अब कुछ लिखना बाकी रह जाता हो तो जैसा ठीक लगे, वैसा करना। तुम्हें जंचे वही मेरा अभिप्राय समझ लेना।

बम्बई जाओ तो मेरा जो सामान, पुस्तकें, कपड़े आदि हैं, लेते जाना। वहां जाकर डाक्टर की सलाह हो तो आपरेशन तुरन्त करा डालना।

बापू के आशीर्वाद

: ५८ :

बुधवार, फरवरी, २७

चि० जमनालाल,

चि० गोमती वहां आ गई हैं, इसलिए अब उसे और किशोरलाल को वापस अकोला आने का सवाल नहीं रहता। नाथ वहां हों तो जान लेना कि वे विवाह-विधि क्यों नहीं करेंगे। उसके हाथ से विवाह-विधि[1] सम्पन्न हो और उन्हें उसमें कोई दिक्कत न हो तो मुझे यह अच्छा लगेगा।

जानकीबहन की शस्त्रक्रिया (आपरेशन) हुई हो अथवा किसी और कारण से तुम न आ सको तो मुझे इसमें कोई हर्ज नहीं है, ऐसा मैं मानता हूं।

यहां से आज रात को ही संगमनेर जाना है।

बापू के आशीर्वाद

: ५९ :

शनिवार, फरवरी, '२७

चि० जानकी बहन,

तुमने शस्त्रक्रिया[2] बड़ी हिम्मत से कराई। इससे मुझे आश्चर्य नहीं

---

१. श्री मणिलाल गांधी व सुशीला मशरूवाला का विवाह १९२७ में हुआ था। इसमें उसीका उल्लेख है।

२. श्री जानकीबहन के मसों का आपरेशन ११-२-२७ को हुआ था।

हुआ। अगर तुम हिम्मत हार जातीं तो आश्चर्य होता। तुममें मैंने हमेशा हिम्मत ही देखी है। वह सदा कायम रहे। जल्दी अच्छी हो जाना तो फिर नियमों का खूब पालन करके बीमार पड़ना ही नहीं। मुझे शरीर और मन से मजबूत बहुत-सी बहनों की जरूरत है।

बापू के आशीर्वाद

: ६० :

शनिवार, फरवरी, १९२७

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला है। लालाजी की मांग स्वीकार करने की तुम्हारी इच्छा को रोकने का मेरे पास कोई कारण नहीं था, इसीलिए तार नहीं दिया।

जानकी बहन की खबर मुझे अब फिलहाल रोजाना पोस्टकार्ड से मिलती रहे, ऐसा चाहता हूं।

सतीश बाबू का लड़का अनिल गुजर गया। वह गिरिडीह में हैं। उनका पता है—होम विला, गिरिडीह। परन्तु खादी-प्रतिष्ठान के पते पर लिखना सही-सलामत (सेफ) है। दोनों पर यह सख्त आघात हुआ है। मैंने आश्वासन का लम्बा तार भेजा है।

मैं बम्बई ५ तारीख को पहुंचूंगा, यह अब तो निश्चित हुआ।

बापू के आशीर्वाद

: ६१ :

त्रिचनापल्ली,
२०- -(?)

जमनालाल,
पूना।

अगर मीराबहन अब भी वहां हों तो उससे कहो कि जल्दी न करें। मैं बिल्कुल ठीक हूं। हमारे भय की प्रतिध्वनि से भगवान की आवाज अक्सर पहचानी नहीं जा सकती। इस तेजी से बढ़नेवाली गर्मी में उसके कमजोर स्वास्थ्य को देखते हुए उसका यहां आना एक बाधा है। वह चेतावनी के बावजूद आना चाहे तो भले ही आये।

बापू

: ६२ :

साबरमती, ३-३-२८

जमनालाल बजाज,
वर्धा।

अगर जरूरी हुआ तो दिल्ली जा सकते हो। तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी है। नैतिक कारणों से कल से दूध लेना शुरू कर दिया है।

बापू

: ६३ :

श्रीहरि

वर्धा, ८-१-२९

पूज्य श्री बापूजी,

हम सबलोग कल शाम को यहां पहुंच गए। चि. कमल को डा. कर्नल चोपड़ा ने जो रिपोर्ट दी है उसमें मलेरिया और क्रानिक डिसेंट्री (पुरानी पेचिश) बतलाई है। उनकी इच्छा इन्जेक्शन देकर इलाज करने की थी। आपने इन्जेक्शन के लिए मनाही की थी। अब एक इच्छा तो यह होती है कि उसका इलाज यहां करा लिया जावे; दूसरे आपके बताये मुताबिक उसे मद्रास की ओर ले जाया जाय। केवल डर इस बात का है कि अगर वहां उसे ज्वर वगैरह हो गया तो थोड़ी चिन्ता रहेगी; दूसरों को कष्ट होगा।

कांग्रेस की वर्किंग कमेटी ने जो प्रस्ताव पास किये वे आपके पास आवेंगे ही। दारू-निषेध की कमेटी श्री राजगोपालाचारी व जयरामदास की बनाई गई हैं।

अस्पृश्यता-निवारण में श्री राजगोपालाचारी, राजेन्द्र बाबू व मेरा नाम रक्खा है।

विदेशी कपड़े के बहिष्कार का भार आपके ऊपर छोड़ा गया है।

कांग्रेस-संगठन में श्री पंडितजी, जवाहरलाल व मेरा नाम रक्खा गया है।

स्वयंसेवक दल—श्री जवाहरलाल।

राजपूताना कांग्रेस कमेटी रद्द (खारिज) कर दी गई है। फिर से चुनाव—

श्री मोतीलालजी जिसे मुकर्रर कर सकें, उसकी निगरानी में—करने का निश्चय किया गया है।

वर्किंग-ट्रेजरर—वर्किंग कमेटी ने कांग्रेस का वर्किंग ट्रेजरर मुझे बनाया है। किस परिस्थिति में मुझे यह काम स्वीकार करना पड़ा, उसका हाल उचित समझें तो रेवाशंकरभाई को लिख देवें जिससे उनके मन में कोई ग़ैरसमझ न हो।

चर्खा-संघ की यू. पी. की एजेंसी के बारे में बात करने के लिए भाई जवाहरलाल से कलकत्ते में मैं मिला। अभी तो एजेंट की जगह उनका नाम रहे और इस काम के लिए जहांतक हो सकेगा, वह सहायता भी देते रहेंगे। आर्गेनाइज़र श्री कृपलानीजी रहें इस आशय का एक तार भाई शंकरलालजी को दे दिया था। आज खुलासेवार पत्र भी लिख दिया है। एजेन्सी-संबंधी बातों के साथ इंडिपेंडेंस लीग के संबंध की भी बातें चल पड़ीं। उनकी बातों से मालूम पड़ता था कि अपनी पार्टी से वह थोड़े असंतुष्ट हैं। उनके साथ किस-किस तरह के आदमी हैं और किन-किन कारणों से वे साथ दे रहे हैं, यह सब परिस्थिति थोड़े में मैंने उनको कही थी। इसपर उन्होंने कहा कि वह इलाहाबाद जाकर इस बारे में और अधिक विचार करेंगे।

श्री घनश्यामदासजी से भी मेरी बातें हुई थीं। उन्होंने एक लाख रुपये देने का जो वादा किया था, उसके संबंध में उनका कहना है कि यह रकम एक साथ देने में उन्हें सुभीता नहीं रहेगा। ३०,००० जनवरी में, २०,००० फरवरी में, २५,००० मार्च में और २५,००० अप्रैल में। इस तरह से वह रकम भेजेंगे। इनमें से जनवरी के ३०,००० तो मैं अपने साथ लेता आया हूँ। यह रकम गांधी-सेवा-संघ के खाते में जमा कर ली जायगी और जैसाकि निश्चय हो चुका है, इसमें से तो १५००० चर्खा-संघ की मारफत श्री गांधी आश्रम मेरठ को दे दिये जावेंगे, और बाकी १५००० राजपूताने में खादी-कार्य के लिए ईयर मार्क रहेंगे। फरवरी के २०,००० भी गांधी सेवा-संघ के खाते में जमा कर लिये जावेंगे। बाकी ५०,००० की रकम या तो गांधी सेवा-संघ के खाते जमा करके आपकी इच्छानुसार काम में लाई जाय या सत्याग्रह-आश्रम के खाते जमा की जाय। जैसा आप लिखेंगे, वैसी व्यवस्था कर दी जायेगी।

जमनालाल बजाज

: ६४ :

आश्रम, साबरमती, २-६-२९

चि० जमनालाल,

रुखी के विषय में संतोक के साथ बात कर ली है। गुजराती गिनती के हिसाब से वर्ष दिवाली को पूरा होता है। इसलिए जो इस वर्ष विवाह करना हो तो असाढ़ महीने में करना चाहिए, क्योंकि सन्तोक कहती है कि बाद में शादी हो ही नहीं सकती। असाढ़ में करना बहुत जल्दी गिना जाता है। इसके सिवा संतोक का आग्रह है कि बनारसी, विवाह होने के पहले, गुजराती सीख ले। इसलिए वह कहती है कि अगर अगले साल विवाह हो तो जेठ महीने में विवाह किया जाय। इसलिए यह एक साल की बात हुई। रुखी इस दरमियान अधिक अभ्यास कर ले, सन्तोक के मन में यह लोभ तो है ही। और यह अच्छा लोभ है। इससे मुझे ऐसा लगता है कि अब इस बात को हम ज्यादा न छेड़ें। अगले वर्ष लग्न है या नहीं, यह जान लेने की तजवीज मैं कर रहा हूं। आज पूछने पर मालूम हुआ कि अगले वर्ष विवाह है।

(नकल पर से) बापू के आशीर्वाद

: ६५ :

आश्रम, साबरमती, २-५-३०

चि० जानकीबहन,

मदालसा का पत्र आज मिला है। तुम्हारा पत्र मिलने की मुझे याद नहीं है। मुझे रोष किस बात पर चढ़े? वहां आप काम में जुट गई हो, ऐसा लगता है। इसलिए वहां पेरिनबहन के साथ काम करें, यह मुझे अच्छा लगता है। बापू के आशीर्वाद

: ६६ :

य० मं०,[1]
२७-७-३०

चि० जानकीबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। अब उत्साह क्यों न होगा? अब तो भाषण करती

१. यरवड़ा-मंदिर याने यरवड़ा सेंट्रल जेल, पूना।

हो, अखवारों में भी नाम आता है। समय-समय पर जब जानकीवाई वजाज का नाम अखवारों में देखता हूं तो उससे ऐसा ही लगना चाहिए न कि जमनालाल और हम सब भले ही जेल गए और वहीं रहें! मुझे तो विश्वास था ही कि तुम्हारे दिखाई देनेवाले अविश्वास के पीछे पूरा आत्म-विश्वास था। ईश्वर उसमें वृद्धि करे। कमलनयन को जल्दी नहीं करनी है। खादी उत्पत्ति के काम में अभी भले लगा रहे। टुकड़ी[1] के वाहर निकलने पर वालजीभाई को लिखें। वापू के आशीर्वाद

: ६७ :

२१-९-३०

चि० जानकीवहन,

तुम वहुत चंट मालूम होती हो। ज्यों-त्यों करके पत्र लिखने से वच निकलना चाहती हो। और यदि भाषण करते-करते हाकिम–'डिक्टेटर' वन जाओगी तो फिर मुझ जैसे के तो वारह ही वज जायंगे न? मालूम होता है जमनालाल ने नासिक में अपना धंधा ठीक जमा लिया है। यह तो मैं जानता ही था। उनके पंजे से कोई छूट ही नहीं सकता। मदू पहले तो पत्र लिखती थी, अव तुम्हारी तरह ही आलसी हो गई है। ऐसी ही आलसी वनी रही तो तुम्हारे पास से उसे हटा लेने का हुक्म जारी करना पड़ेगा। अव शरीर कैसा है? ओम उपद्रव करती है या नहीं? वापू के आशीर्वाद

: ६८ :

कलकत्ता, २५-१२-३०

पूज्य श्री वापूजी,

विहार में काम अच्छा है। चंपारण के कुछ भागों में करवंदी में सहन कर रहे हैं। अव कलकत्ते रहकर कुछ वंगाल में जाते-आते रहना, मारवाड़ियों में प्रवेश, खद्दर, पड़दा-वहिष्कार आदि का काम करना है। कृष्णदासजी, आपके सेक्रेटरी, कहते थे दम में दम रहेगा तवतक काम करना है, कर सके तो। पूछते थे वापूजी को लिखना ठीक है कि नहीं। मैंने कहा—अपनी भाषा में लिखते हैं। यहां के व्यापारी अच्छी परीक्षा ले रहे हैं। नासिक में तवीयत

---

१. धारासना के नमक डिपो पर धावा करनेवालों की टुकड़ी।

अच्छी है, मन लग रहा है। कमला, मदू विहार में मेरे साथ थीं—३० दिन में ४० गांव। घनश्यामदासजी मुसाफरी छोड़ नियमित कातते हैं। इधर आ जावें तो बहुत हो सके। मेरी तबीयत संभालती हूं। जानकी के प्रणाम

: ६९ :

१८-१-३१

चि० जानकीबहन,

तुमने बहुत दिनों पर पत्र लिखा, इसलिए कृपा की, यही कहना चाहिए न ? कलकत्ते का काम मुश्किल है; पर तुम्हारे लिए कठिन नहीं है। घनश्यामदासजी काम में ठीक योग दे रहे हैं। बापू के आशीर्वाद

: ७० :

बोरसद, ८-५-३१

चि० जमनालाल,

कर्नाटक के भाई-बहनों से कहो कि उन्होंने युद्ध में तो अच्छा हिस्सा लिया ही है, ऐसे ही अब रचनात्मक कार्य में भी करें। खद्दर में बहुत करने का बाकी है, विदेशी वस्त्र का बहिष्कार खद्दर ही के लिए है। यदि बहिष्कार से, गरीबों की सेवा, हेतु नहीं है तो कम-से-कम मैं तो उसमें ऐसा तन्मय न बन सकता, जैसा आज हूं।

कर्नाटक एक अलग सूबा बनना चाहिए, इस बारे में कुछ कर्नाटकी भाई बहुत फिकर करते हैं। वे क्यों फिकर करते हैं ? महासभा ने तो कानडी भाषा बोलनेवालों का एक सूबा बना ही रक्खा है और पूर्ण स्वराज्य में ऐसा ही होगा।

लिंगायत इ. सब इकट्ठे हुए हैं, इसलिए धन्यवाद, और ऐसा ही होना चाहिए। मोहनदास

: ७१ :

बोरसद, १८-६-३१

चि० जमनालाल,

शा० मंगलदास हरिलाल गांधी, ठि० फणसवाडी २री गली, दादी-शेठ अगियारी लेन, हरिलाल माणेकलाल गांधी का माला। यह भाई शा०

हरिलाल माणेकलाल गांधी के लड़के हैं। भाई हरिलाल सूरजबहन के धर्मपिता के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके पास सूरजबहन की सारी रकम है। इनकी स्थिति अभी बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती। सूरजबहन कहती है कि एक समय हालत बहुत अच्छी थी। मैंने भाई हरिलाल को लिखा है कि विधवा बाई के रुपये किसी खानगी पेढ़ी में नहीं रखने चाहिए। इसलिए उनको इंडिया बैंक में रखकर उसकी रसीद सूरजबहन के नाम भेज दें। इसका जवाब साथ में है। संभव है कि रुपये बिलकुल खतरे में न हों। पर मैं चिन्ता में पड़ गया हूं। तुम भाई मंगलदास को अपने पास बुलवा लेना अथवा उनसे मिल लेना और पूछ लेना। सारे हाल जान लेना और रुपये बैंक में रखे जा सकें तो रखवा देना। सूरजबहन के नाम से रखवाने हैं। इनके यहां सूरजबहन के गहने वगैरा भी हैं। उन्हें भी अपने कब्जे में ले लेना। अथवा उनकी जो सेफ डिपाजिट की रसीदें हैं वे ले लेना। इस वक्त तो तुमको सूरजबहन के पत्र की जरूरत नहीं पड़ेगी। परन्तु जरूरत हो तो मुझे तार दो तो मैं भेज दूंगा। परन्तु भाई मंगलदास से तो तुरन्त मिल लेना।

उन अंग्रेज भाइयों से मिलने के लिए २४ ता० को वहां आना है। वल्लभभाई साथ होंगे।

बापू के आशीर्वाद

: ७२ :

चि. जमनालाल,

बोरसद, २०-६-३१

तुम्हारा भेजा भगतसिंह-संबंधी प्रस्ताव पढ़ लिया। देव ने भी तुम्हारे कहने से भेजा था। मुझे यह प्रस्ताव बिल्कुल पसंद नहीं आया। 'आज' शब्द से इस प्रस्ताव का मूल्य बदल गया। 'आज' बढ़ाने से ऐसी ध्वनि निकल सकती है कि आज भी सभा को अहिंसा पर विश्वास नहीं है। जो अहिंसा को शाश्वत धर्म नहीं मानते हैं उन्हें भी 'आज' बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है।

वहां २४ को नहीं, बल्कि २५ ता. गुरुवार को, आना है। मैं तो गुजरात मेल से आऊंगा। उस समय इस विषय में अधिक चर्चा करनी हो तो कर लेना।

इसके साथ चुंडे महाराज के संबंध में पत्र है, उसे पढ़ लेना और कुछ छानबीन करने जैसी हो तो करना।

राजेन्द्रबाबू को फिलहाल बिहार जाने का विचार छोड़ देना चाहिए। राधिका वहां आई है?

बापू के आशीर्वाद

: ७३ :

बम्बई, ९-८-३१

प्यारी बहन जानकीबहन,

मैंने सुना है कि तुम्हारी तबीयत अभी तक ठीक नहीं हुई। अभी तो तुमको बहुत काम करना है, इसलिए जल्दी अच्छी हो जाओ, और तबीयत के लिए फल वगैरा लेना पड़े तो लेना चाहिए। यह कुछ मौज-शौक के लिए तो खाना नहीं है। अगर तुम अपनी तबीयत नहीं सुधारोगी तो मुझे दुःख होगा। जरूरी इलाज करके अब जल्दी अच्छी हो जाओ।

बहन कमला परसों यहां आई थी। मीटिंग में भी हमारे साथ गई थी। उसकी तबीयत अच्छी है। यहाँ से रवाना होने का हमारा अभी कोई निश्चय नहीं है। सब मजे में हैं।

बा के आशीर्वाद

: ७४ :

१०-८-३१

पूज्य श्री बापूजी,

आपके पास जिन तीन बहनों की दयाजनक हालत की खबर आई है, यानी जो अब्सकाण्डर (फरार) हैं, उनके बारे में बातचीत हुई, वह मैं प्रश्नोत्तरी के रूप में यहां लिखता हूं। अगर यह बराबर न हो तो आप सुधार दें।

प्रश्न १ :—क्या आप इन तीनों बहनों को, या तीनों में से जो आना चाहे उसको, आपके साबरमती-आश्रम में रखने को तैयार हैं?

उत्तर :—हां, खुशी के साथ मैं उन्हें आश्रम में रखने को तैयार हूं। परंतु आश्रम में आने के पहले उन बहनों को मेरा विचार बराबर समझ लेना चाहिए।

प्रश्न २ :—आपका क्या विचार है?

उत्तर :—मेरा पहला कर्त्तव्य यह होगा कि इन बहनों के आश्रम में आने के साथ ही मैं सरकार को इत्तिला दूं और उसमें जो बहनें आवेंगी उनका नाम, परिचय लिख भेजूं।

प्रश्न ३ :—अगर आप सरकार को इत्तिला देंगे तो वह उन्हें उसी वक्त गिरफ्तार कर उनपर मुकदमा चालू कर देगी।

उत्तर :—हां, यह भी हो सकता है। बहनों को इस बात के लिए—जोखिम के लिए—तैयार होकर ही आश्रम में आना चाहिए।

प्रश्न ४ :—तब आश्रम में आने से उन बहनों को क्या लाभ हो सकता है ?

उत्तर :—संभव है शायद सरकार मेरे लिखने पर ये जबतक आश्रम में रहेंगी और अपना भविष्य का व्यवहार आश्रम-जीवन के साथ मिलाने की कोशिश रखेंगी, तुरन्त उनपर कार्रवाई न भी करे।

प्रश्न ५ :—क्या सरकार उनसे जो-जो मामले बने हैं उनकी बातें जानने को मजबूर नहीं करेगी ?

उत्तर :—सरकार जरूर जानना चाहेगी, परंतु मैं सरकार से भी कहूंगा और बहनों से भी कि वह दूसरे किसीका नाम न बताकर अपने हाथ से जो गुनाह या भूल हुई हो वही कबूल करें।

प्रश्न ६ :—याने बहनें सब प्रकार की जोखिम उठाने की तैयारी करके आवेंगी तो ठीक रहेगा।

उत्तर :—हां, अगर बहनें सब प्रकार की जोखिम उठाने की तैयारी करके ही आवेंगी तो ठीक रहेगा।

यह ठीक है। मो. क. गांधी जमनालाल बजाज

१०-८-३१

: ७५ :

चि० जमनालाल, अहमदाबाद, २२-८-३१

तुम्हें पत्र लिखाने का समय ही नहीं मिलता। अभी दाहिने हाथ को तकलीफ नहीं देता हूं, इस वजह से लिखने का काम कम होता है। बाएं हाथ से जितना लिखा जाता है, लिखता हूं। कल पत्र भेजे थे सो मिले होंगे। अस्पृश्यता के लिए कांग्रेस, कांग्रेसवालों और उनके द्वारा अथवा प्रेरणा से जितने रुपये खर्च किये गए हों उनका हिसाब तैयार करने की बड़ी आवश्यकता है। कुछ तो मेरी जबान पर है। तुमको भी याद होना चाहिए। यह भार तुम पर डालना है। जहां से मंगाना हो मंगाकर ये आंकड़े इकट्ठे कर लेना। उसमें फिर कुछ रह जायगा तो मैं याद कर लूंगा। मैंने बीस लाख का हिसाब लगाया है। मेरी समझ से यह कम ही है, अधिक नहीं। तिलक-फंड में कुछ रुपये तो इस काम के लिए 'ईयर मार्क' थे। तुम्हारे पास तिलक-फंड का जो

हिसाव है उसमें से यह मिल जायगा।

अलमोड़ा की जमीन के संवंध में कुछ हुआ? कुछ न हुआ हो और जल्दी हो सकता हो तो उसे जल्दी कर लेना मैं जरूरी समझता हूं।

जानकीवहन और वालकृष्ण के क्या हाल हैं? अखवारों में वड़ी गलतफहमी हुई और अनेक प्रकार की वातें आने लगीं तो कल वाइसराय को तार दिया था। उसका उत्तर अभी नहीं आया। तार की नकल इसके साथ भेजता हूं। पट्टणीजी कल आ रहे हैं। कुछ होगा तो सूचना दूंगा।

वापू के आशीर्वाद

: ७६ :

अहमदावाद, २२-८-३१

चि० जानकीवहन,

मुझ पर दया करके ही तुमने पत्र नहीं लिखा और मदु को तथा ओम् को भी नहीं लिखने दिया न? मुझे दया नहीं चाहिए, पत्र चाहिए। क्या अव कुछ तवीयत सुधरी? खुराक क्या चालू है?

वापू के आशीर्वाद

: ७७ :

किंग्स हाल, वो' ई० ३, २५-९-३१

प्रिय जमनालालजी,

पिछली वार जव मैंने आपको पत्र लिखा था उसके वाद फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी में वापू के उस दूसरे भाषण के सिवा, जिसने कि हमारे व ब्रिटिश हल्कों में एक सनसनी-सी फैला दी, और कोई विशेष घटना नहीं हुई है। सदानन्द ने लगभग सम्पूर्ण भाषण तार से भेज दिया था, जिसे आपने पढ़ ही लिया होगा। यदि न पढ़ा हो तो 'यंग इंडिया' में देख लें, जिसके लिए मैं भाषण का पूरा विवरण भेज रहा हूं। वापू ने राजा-महाराजाओं से पूरी तौर पर वातचीत कर ली है और उन्हें साफ-साफ वता दिया है कि वे उनसे क्या अपेक्षा रखते हैं। भाषण का रूप सर्वसाधारण ही हो सकता था, और एक अपील के रूप में उसे पेश किया गया था, क्योंकि यही वापू का तरीका है। पर हमें कुछ देशी-राज्य-मित्रों की ओर से घवराहट से भरे तार आये हैं। भाषण का वह हिस्सा

जिसमें परोक्ष चुनावों का जिक्र था, कई मित्रों को पसन्द नहीं आया। पर उसमें न तो कोई डरने की बात थी और न सिद्धांत से झुकने की, यह शास्त्रीयार के इस कथन से जाहिर होता है—"तो गांधीजी चाहते हैं कि उनकी कांग्रेस के अनोखे संविधान को भारत के विधान का आदर्श मान लिया जाय।"

बापू ने अर्विन के साथ आज बहुत देर तक बातचीत की। मुझे तो बापू से मिलने का जरा भी मौका नहीं मिला और इस पत्र को डाक में डालने और आज शाम को मेंचेस्टर के लिए रवाना होने से पहले उनसे मिलना संभव नहीं दीखता। इधर जो फेडरल स्ट्रक्चर कमेटी की बैठकें जारी हैं वहां बैठ कर लम्बे लेक्चर सुनते-सुनते दिमाग थक जाता है। और बापू को बहुत-से लोगों से मिलना भी पड़ता है। गरज यह कि बापू बड़े ही व्यस्त रहते हैं और कई बार तो क्षणभर के लिए भी उनसे मिलना मुश्किल हो जाता है। वे बहुत थकावट महसूस करते हैं और चन्द दिनों के आराम की उन्हें सख्त जरूरत है। आराम कब मिल सकेगा भगवान् ही जाने। पर मुझे यकीन है, यह वक्त जल्दी ही आने वाला है, क्योंकि बापू अपनेको बिलकुल एकाकी महसूस कर रहे हैं और दूसरी पार्टियों से मदद मिलने की उन्हें कोई उम्मीद नहीं रह गई है। मसलन्, रुपये के प्रश्न पर और उसके संबंध में स्टेट सेक्रेटरी के वक्तव्य के मामले पर किसीने उनका साथ नहीं दिया और उन्हें अपना हल अकेले ही जोतना पड़ा। सप्रू, रंगस्वामी, अयंगार, मि० जिन्ना सभी तो वहां मौजूद थे; पर सभी सर सैम्युअल होर के वाक्चातुर्य से प्रभावित हुए मालूम देते थे। ऐसी हालत में कोई क्या उम्मीद करे?

फिर मुसलमानों की बात लीजिए। बापू की शौकतअली और आगाखां से दो बड़ी निराशापूर्ण मुलाकातें हुई। आगाखां की हार्दिकता का अभाव तो शौकत अली के लिए भी स्पष्ट था। जिन्ना कहीं बेहतर थे; पर उनका खयाल था कि बापू को उनके मित्रों की ओर से कोई कठिनाई न होगी। निजी तौर पर जिन्ना को अन्सारी के लिए कोई उज्र नहीं है। पर उनके इंतजार में और पंद्रह दिन हम यहां कैसे रुकें? और यदि हमें मुसलमानों की सारी मांगें मान ही लेनी हैं तो फिर अंसारी के लिए क्यों रुका जाय? बाद में आ कर वे उसकी पुष्टि कर दें। मानो बापू की कुछ देने-दिलाने की मंशा नहीं थी और महज

अंसारी की आड़ ले रहे थे। सच तो यह है कि वे लोग अंसारी को नहीं चाहते, मगर बापू तो इस बात पर तुले हुए हैं कि वे अंसारी के पीठ पीछे कुछ नहीं करेंगे। बापू प्रयत्न करेंगे कि अंसारी मुसलमानों की मांगें मान लेवें। पर अगर ये लोग उनके लिए नहीं रुक सकते, तो बापू भी वे मांगें अंसारी की ओर से मंजूर नहीं करेंगे। अतएव इस संबंध में सफलता की आशा बहुत कम दिखाई देती है।

जहां तक मुख्य प्रश्न का सवाल है, वे लोग स्वतंत्रता के प्रश्न पर इस बातचीत को तोड़ कर सारी दुनिया के सामने हमें लज्जित करने की कोशिश करेंगे। पर बापू भी इस बात पर तुले हुए हैं कि संरक्षणों (सेफगार्ड्स) की चर्चा पहले हो और उसीकी रोशनी में आजादी की बातचीत। मजदूर दल के पार्लमेन्ट के सदस्यों से बापू मिले। एक और मीटिंग में तीनों दलों के पार्लमेन्ट के सदस्यों से भी उनकी मुलाकात हुई। इस भेंट में अनुदार दल के लगभग सभी प्रमुख सदस्य गैर-हाजिर थे। भाषण के अंत में बड़ी दिलचस्प चर्चा हुई जिसका बड़ा अच्छा असर पड़ा। मि० होरेबिन अगले हफ्ते स्कारबरो में होनेवाली मजदूर दल की बैठक में बापू को ले जाने का इंतजाम कर रहे हैं। नेशनल लेबर क्लब में उनका सत्कार भी होगा। मजदूर-दल के सदस्य, जिनमें बहुत से बापू से मिल चुके हैं, बड़ी सहानुभूति रखते हैं। आम मजदूर को तो बापू के प्रति सच्ची श्रद्धा है और वह उनसे जब भी मिलता है, अत्यन्त प्रेमपूर्वक मिलता है; परन्तु मध्यम वर्ग के अंग्रेजों की मनोवृत्ति पर अभीतक कोई असर नहीं पड़ा है।

सप्रेम आपका

महादेव

: ७८ :

८८, नाइट्स ब्रिज,

एस० डब्ल्यू० आई, १३-११-३१

प्रिय जमनालालजी,

बापू की सर सैम्युअल होर से आखिरी बातचीत होगई। अब उन्हें बापू से कोई उम्मीद नहीं रह गई है। उन्होंने यह मान लिया कि प्रान्तीय स्वशासन की बात, जिसके बारे में बापू सोच रहे थे, उनके दिमाग में कभी

नहीं थी। उनके हिसाब से दरअसल उसमें और आजादी में केवल नाम का ही फर्क था। अतः उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। "अब हम मित्रों की तरह जुदा हों। आप मुझे समाचार देते रहिए। मुझे घटनाओं की सरकारी तौर पर तो जानकारी हमेशा मिलती रहेगी, पर मैं चाहता हूं कि इस बारे में आपके विचार भी मालूम होते रहें। पर आज तो यह मान लें कि हमारा मत नहीं मिल रहा है।" इसीके बाद ही बापू ने अल्प संख्यक कमेटी में अपना वह धड़ल्ले का भाषण दिया। उन प्रहारों के सामने रैम्जे मैकडा-नाल्ड भी छोटा लगने लगा और एकबारगी उसे अपने अहंकार को पी लेना और अपनी रोब गांठने एवं अपमान करने की वृत्ति को भुला देना पड़ा। इसका प्रभाव बहुत ही अच्छा पड़ा और हम आशा करें कि वह दिलों की सफाई करनेवाला भी साबित होगा।

किन्तु परिणाम क्या ? परिणाम तो यह कि वह महाशय अब हमारे मत्थे दोष न मढ़ सकेंगे। 'न्यू स्टेट्समैन' के सुन्दर लेख को पढ़ लीजिए। उसके संपादक ने कुछ दिन पहले एक घंटे तक बापू से बातें की थीं और वह इस बातचीत से स्पष्टतः बहुत लाभान्वित हुआ दीखता है।

जनरल स्मट्स भी बापू से मिले। उनका व्यवहार असाधारण रूप से अच्छा था। उन्होंने कहा कि बापू ने अपने पक्ष को इस कुशलता से पुष्ट किया है कि यदि उन्हें खाली हाथ लौटना पड़े तो वह एक भारी विपत्ति की बात होगी। हिन्दुस्तानियों ने स्वशासन करने का अपना अधिकार सिद्ध कर दिया है, और अब उनके पथ में कोई बाधा नहीं रहने दी जा सकती। उन्होंने इसमें अपनी सहायता देने की इच्छा भी प्रकट की। इसके बाद वे दो बार प्रधान मंत्री से मिले भी और कुछ साम्प्रदायिक हल लेकर आये, जोकि उन्हें एक अच्छा मध्यम मार्ग जंचा और बापू की सहमति प्राप्त कर उन्होंने इसे फिर प्रधान मंत्री के सामने पेश किया। उसमें कोई सार नहीं है, और उसका कोई खास नतीजा भी निकलने वाला नहीं है। पर उनकी गाढ़ मित्रता और सहयोग की भावनाओं से सभी को अचरज व आनन्द हुआ।

कुछ मित्र, जिनमें वेजवुड बेन, लोथियन, चर्च के कुछ उच्चपदस्थ व्यक्ति और दूसरे लोग भी हैं, कुछ-न-कुछ हल निकालने का जी-तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं। बापू ने आज अर्विन को एक तार भेज कर यह सूचना दी थी कि

चूंकि सम्मेलन अव टूटने ही वाला है, उन्होंने वापस जाने का निश्चय कर लिया है, वशर्तेकि अर्विन कोई दूसरी सलाह न दे। एक घंटे के भीतर ही उनका जवाव आया कि वे वापू से मिलने कल आ रहे हैं।

(यहां एक पेरेग्राफ छोड़ दिया गया है)

हम मार्सेल्स से २७ को या जिनोवा से २९ को रवाना होने की आशा करते हैं। वापू को वदनाम करने के लिए यहां के अखवारों ने प्रान्तीय स्व-शासन का जो भूत खड़ा किया है, आशा है आप उससे चिन्तित न होंगे। वापू इस प्रकार की किसी भी वात को कभी स्वीकार नहीं कर सकते थे। यहां के मित्रों की घवराहट को कम करने के लिए उन्होंने प्रधान मंत्री को एक पत्र लिखा है और 'न्यूज़ क्रानिकल' को भी एक लम्वी मुलाकात दी है।

आपका,
महादेव

: ७९ :

८८, नाइट्स व्रिज, एस० डव्ल्यू० आई०,
१३-११-३१

मुरव्वी जमनालालजी,

राउंड टेवल-सम्वन्धी अटकलें दैनिक अखवारों में इतनी अधिक आती हैं और राउंड टेवल कान्फरेंस के वाहर की वापूजी की हलचलों के सम्वन्ध में यंग इंडिया में मैं इतने विस्तार से लिखता हूं कि आपको अलग पत्र नहीं लिखे। वल्लभभाई और जवाहरलाल को लिखे कुछ पत्र आपको देखने को मिले होंगे, ऐसा मैंने मान लिया है। आज का वापू का जवर्दस्त भाषण तो वहां के अखवारों में आगया होगा। पूरा भाषण 'यंग इंडिया के' लिए भेज रहा हूं। अव तो राउंड टेवल की उत्तर-क्रिया शेष रह गई है, यह कहूं तो हर्ज नहीं।

वमनजी वापू से मिले थे। उनके पास जो रकम लेनी वाकी है वहलग भग १।। लाख हो जायगी। उसे अव 'चर्खा संघ' और 'देश सेविका संघ' को देने के लिए वह राजी हो गए हैं। इनसे आप जरूर मिलें और दोनों संस्थाओं के वारे में सारी वातें करें और उन्हें उनका परिचय दें। उनके मन में इनकी

कमेटियों में आने का लोभ है। बापू ने कहा है कि कमेटी में आने के लिए जो पात्रता चाहिए उसे प्राप्त करें। चर्खा-संघ के लिए तो पात्रता प्राप्त करना इनके लिए अशक्य है, परन्तु बापू का खयाल है कि देश-सेविका-संघ की प्रवृत्ति में इनको चालक बना सकते हैं। इनसे मिलकर सब बातें कर लें और उनकी रकम के विषय में भी ठीक-ठाक कर लें।

पूज्य बापू की तबीयत, यहां के अत्यन्त काम के बोझ को देखते हुए, कह सकते हैं कि असाधारण रूप से अच्छी रही है। सर्दी काफी पड़ती है परन्तु शिमला से जरा भी अधिक नहीं। सब लोग कहते हैं कि इस समय इंग्लैंड में बापू के कदमों के साथ-साथ हिन्दुस्तान की हवा भी आई है।

बापू की यूरोप में मुसाफिरी करने की .... [१]

महादेव देसाई

: ८० :

८८ नाइट्स ब्रिज, लंदन,
२-१२-१९३१

पूज्य जमनालालजी,

यहां पूर्णाहुति हो चुकी है। आज पार्लमेंट में बहस होगी। कल बापूजी दुनिया को अपनी राय सुना देंगे।

अब नया काम मुसलमानों को संतोष देने का है। उनके यहां के कृत्य ऐसे हैं कि उसके लिए किसी दूसरे देश में उनको सजा मिलती। लेकिन पूरी कौम-की-कौम को सजा नहीं दी जाती। मैं तो समझता हूं कि अब हिन्दुओं को—और बापूजी को खास—उनकी मांगों को स्वीकार कर लेनी चाहिए और इस प्रकार उनको पूरा संतोष दे देना चाहिए। इसका असर कभी बुरा न होगा। यहां मालवीयजी ने इस मामले में कमजोरी दिखलाई। बापूजी कहते थे कि अगर सिक्खों ने और मालवीयजी तथा डा० मुंजे ने सब कुछ उनके हाथ में छोड़ दिया होता तो वह समझौता करा लेते। समझौते का असर चमत्कारिक होता। लेकिन अब भी आप जैसे लोग मुसलमानों को

---

१. श्री महादेवभाई का यह पत्र इतना ही (अधूरा) मिला है।

सन्तोष दिलाने का वायुमण्डल पैदा कर सकते हैं। जुगलकिशोरजी बिरला के कई तार बापूजी के पास आये कि आप जैसा चाहें समझौता मुसलमानों के साथ कर डालिए, हिंदू आपके साथ रहेंगे। लेकिन नहीं हुआ।

अंग्रेज तो जहांतक हो सकेगा अपनी हुकूमत जारी रक्खेंगे। लेकिन आम अंग्रेजों पर बापूजी का बड़ा प्रभाव पड़ा है। यहां भी प्रार्थना के समय वैसी ही भीड़ रहती है जैसी देश में। अंग्रेज मर्द-औरत बड़ी भावना से आते हैं और प्रार्थना में सम्मिलित होते हैं। इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। बापूजी के साथ पुलिसवाले तो रहते ही हैं—सादे वेश में। जेब में पिस्तौल रखते हैं। एक पुलिसवाला बापूजी की मोटर में आगे की तरफ बैठता है और दूसरे दो पुलिस वाले अलग मोटर में रहते हैं। उनकी गाड़ी आगे-आगे रहती है। लन्दन में सड़कों पर कभी-कभी बहुत देर तक गाड़ियां रुकी पड़ी रहती हैं। लेकिन पुलिस की गाड़ियों में एक खास घंटी रहती है जिसको बजाने से सड़क का पुलिसवाला फौरन तमाम रास्ता खोल देता है। बापूजी के लिए इस घण्टी का काफी उपयोग किया जाता है। ये पुलिसवाले भी प्रार्थना में शामिल होते हैं और कभी-कभी अपने कुटुम्ब के लोगों को भी ले आते हैं। उनको भी बापूजी के लिए बड़ी भक्ति है।

यहां आने के पहले हफ्ते में मीराबेन और बापूजी के नाम कई गुस्से से भरे खत आये थे—कुछ तो बहुत ही खराब थे। कुछ लोगों ने कई गंदी-गंदी पुरानी पतलूनें भेजी थीं। लेकिन उसके बाद वायुमण्डल साफ हो गया और अब एक भी अपमानजनक पत्र नहीं आता।

लेकिन हम सुनते हैं कि देश में हालत बिगड़ रही है। बापूजी को उसी की ज्यादा चिन्ता है। अगर वहां हालत न सुधरी तो जाते ही सत्याग्रह शुरू कर देंगे। बंगाल में नया आर्डिनेंस हुआ है। उसके जवाब में बापूजी बड़ा आन्दोलन उठाना चाहते हैं। यहीं से उसको रद्द कराने की मांग शुरू कर दी है। उसकी जड़ें अभी से हिलने लग गई।

एक चित्र मेरा और प्यारेलाल का भेजा है। दूसरा एक चित्र बापूजी का भी भेजा है। वह चित्र कई मित्रों को भेजा है। उसका दाम श्री घनश्याम दासजी ने दिया है। आपने उन्हें चित्रों के लिए लिखा था। उन्होंने मुझसे कहा है, मैं और भी भेजने का यत्न कर रहा हूं। श्री जानकीबाई को प्रणाम।

यह पत्र चि० मदालसा इ० को दिखा दीजिएगा। एकाध वात उनके मतलव की भी है।

आपका
देवदास

: ८१ :

य० मं०, २९-१-३२

चि० जानकीवहन,

मैं तुम्हारी ओर नजर ही कर सका। एक शव्द भी वोलने का समय न मिला। भला अव लिखने का वक्त तो है ही। अव तुम भी जवतक छूट मिले तवतक लिखना। कमलनयन किस जेल में है? उसकी क्या खवर है? मदालसा, ओम पत्र लिखें। तवीयत कैसी रहती है?

सरदार मेरे साथ हैं, यह तो जानती ही हो। हम मजा करते हैं। खाना, सोना और टहलना।

वापू के आशीर्वाद

: ८२ :

यरवड़ा-मंदिर, जनवरी-फरवरी, १९३२

चि० जानकीवहन,

क्यों? हिम्मत कायम है क्या? मदालसा कैसी है? कमलनयन की चिन्ता न करना। किसी प्रकार की चिन्ता ही न करना, इतना तो विनोवा के पास गीता सुनकर सीख गई हो न?

वापू के आशीर्वाद

: ८३ :

यरवड़ा-मंदिर, २६-३-३२

चि० जमनालाल,

तुम्हें और अन्य साथी-कैदियों को लिखने की छूट आज मिल गई है। इसलिए मुझे जवाव देने की छूट अव तुम्हें भी मिलनी चाहिए।

अपनी तवीयत और खुराक का विस्तृत समाचार तुरन्त देना। हम

श्री जानकीदेवी का स्वास्थ्य बीच में नागपुर-जेल में बिगड़ गया था। इससे कुछ चिन्ता रहती थी। परन्तु अब सुधरने की खबर मिली है। उनको 'ए' वर्ग दिया गया है। चि० कमलनयन 'सी' वर्ग में हरदोई-जेल में हैं। वजन कम होने की खबर मिली है। झाड़ू इ० निकालने का काम उसने लिया है। मेरी बहन केसरबाई, गुलाबचन्द और गुलाबचन्द की भौजाई तथा अन्य लोगों को भी जेल का अनुभव मिला है। मुझे बाहर की कोई चिन्ता नहीं है। मैं तो बीसापुर भी रहने को तैयार था, और वहां रहना पसन्द भी करता। मैंने यह बात वहां के अधिकारियों से भी की थी। परन्तु कान की बीमारी को निमित्त बनाकर मुझे यहां भेज दिया गया है। मुझे बीसापुर की जेल का दृश्य कांग्रेस कैम्प की याद दिलाता था---याने चारों ओर जेल की दीवारों की जगह पानी, पहाड़ इत्यादि दिखाई देते थे। खान-पान की व्यवस्था वहां ठीक है। गरमी और धूप में काम की बड़ी तकलीफ़ थी। अधिकारियों से इस बारे में बातचीत हुई थी। इस बारे में मेरी सूचना उन्होंने स्वीकार की थी। वहां होता तो आशा थी कि तकलीफ दूर करने में सफलता मिलती। कम-से-कम दोपहर को धूप के वक्त अन्दर चर्खा, तकली, पिंजण आदि का काम दिलाने की आशा तो थी ही। अधिकारियों से जो बात-चीत इस बारे में हुई थी, वह आते समय मित्रों को बता दी थी। संभव है कि कुछ फैसला हो गया हो।

बीसापुर में मुझे आराम देने के लिए और कान के इलाज का कारण बताकर बैरक में से अस्पताल में ले गए थे। परिणाम में सुधार का एक और क्षेत्र मुझे मिला। कई एक सुधार सुपरिन्टेंडेंट ने मंजूर किये थे। आशा है अब वे अमल में लाये गए होंगे। सुपरिन्टेंडेंट मि० विवन को तो आप जानते ही हैं। डिप्टी जेलर मि० सेक्सटन पिछले साल नासिक में थे। जेलर मि० एलिस पिछले साल रत्नागिरि में थे। बीसापुर रहता तो वातावरण सुगम बनाने में उसका सहकार हासिल करके अपनी कसौटी करता। परन्तु वह बात तो अब होने से रही। डा० सुमन्त के बारे में आपने पूछा है। उनको पीछे से 'बी' क्लास मिला था, इसलिए वह नासिक भेजे गए थे। मुझे मिले थे। दूध इ० का खुराक उन्हें मिलता था। उनका स्वास्थ्य ठीक था। दीवान मास्टर से मिलना-जुलना होता था। गोकुलदास तलाटी, फूलचन्द शाह,

मामा फड़के भी वहीं थे। आश्रम में से गोडसे, पन्नालाल जवेरी, विट्ठल आदि थे। विद्यापीठ से त्रिकमलाल शाह और कई एक विद्यार्थी थे। वैसे ही दरबार साहब के दोनों पुत्र, ललित मोहन, रोहित, श्री सरलादेवी के भाई आदि भी वहां थे। बम्बई से एस० के० पाटिल, ईश्वरभाई पटेल आदि थे। प्रायः सब आराम में हैं।

यहां पर विनोबा, प्यारेलाल, गोपालराव, और उनकी पत्नी शान्ता-बहन, दास्ताने, मीर जफरुल्ला, द्वारिकानाथ हरकरे, गुलजारीलाल, खण्डुभाई, राजाराव, पुरुषोत्तमदास त्रिकमदास, ककल भाई, वर्धा आश्रम से भाऊ, दत्तु और साबरमती-आश्रम से पांडुरंग हैं। वैसे ही अहमदाबाद और पूर्व खान देश के भी कई एक कार्यकर्त्ता हैं। उनसे ठीक परिचय हो रहा है। यह परिचय तथा भायखला और वीसापुर में बम्बई के मित्रों से हुआ परिचय जीवन में ठीक उपयोगी होगा, ऐसी आशा है। ५० के करीब बहनें यहां हैं। विनोबा के कारण नैतिक वातावरण सुन्दर बना है। अधिकारियों का व्यवहार ठीक है। विनोबा व मेरे साथ ठीक प्रेम और सहकार का व्यवहार है। हम सब ठीक तौर पर समय का उपयोग करते हैं। सहकार से जेल-नियम के मुताबिक यथावश्यक सुधार धीमे-धीमे हो रहे हैं। विनोबा को 'बी' वर्ग दिया है। उनका घी, दूध आदि के त्याग का प्रयोग जारी है। वजन कम होकर ९० रत्तल हुआ था। वजन बढ़ाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। आज-कल माधवजी की खुराक एक रत्तल दूध, चार छोटे केले और एक पपीता है। गुलजारीलाल की तबीयत सुधर रही है। आजकल उसे गेहूं की रोटी और एक पौण्ड दूध मिलता है। तकली और पींजण की व्यवस्था है। व्यक्तिगत तौर पर दो-एक चर्खे भी चलते हैं। रिषभदास वीसापुर गया है।

आपकी खबर यहां के कमिश्नर मि० क्लेटन से शुक्रवार को मिली थी। उससे भी जेल के सम्बन्ध में एक-आध सुधार की बात हुई थी। आप तथा सरदारजी मेरी चिन्ता न करें। हम सब लोगों का आप और आपके साथियों को प्रणाम।

: ८५ :

यरवड़ा-मंदिर, ९-४-३२

चि० जमनालाल,

तुम्हारे पत्र की हम सब राह देख रहे थे। पत्र संपूर्ण है। वहां का खान-पान माफिक आगया है, यह बड़े संतोष की बात है। जानकीबहन और कमलनयन के सम्बन्ध में मुझे समाचार मिल चुके थे। विनोबा यदि व्रत लेकर न बैठ गए हों तो मैं समझता हूं कि उन्हें दूध लेने की जरूरत है। वहां भी उनका काम तो सख्त मालूम होता है। उसको करते रहने के लिए दूध की जरूरत है, ऐसा मेरा खयाल है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि वनस्पतियों में ऐसी वनस्पति जरूर है जो दूध की आवश्यकता को पूरा करती है और दूध के दोषों से मुक्त है; परन्तु ऐसी वनस्पति को खोज करने की योग्यता जिन वैद्यों में है उन्हें इसका खयाल नहीं है। हम जैसों की शक्ति के बाहर की बात है, या फिर इस एक ही वस्तु के पीछे पड़ जाना चाहिए। परन्तु मेरी निश्चित राय है कि ऐसा नहीं हो सकता। अतः जो धर्म सहजप्राप्त होगया है उसीको पकड़ रखना हमारा कर्त्तव्य है। मुझे यह खयाल बना ही रहता है कि विनोबा को अपना वजन इतना ज्यादा कम न होने देना चाहिए।

वहां तुम्हारे पास बढ़िया समाज जम गया मालूम होता है। तुम्हारे 'क' वर्ग की मुझे ईर्ष्या होती है। जब तुमको यह वर्ग मिला तो मुझे बहुत खुशी हुई थी। तुम्हारा स्वास्थ्य उससे कुछ खराब होगा, ऐसी शंका मुझे कभी नहीं हुई। खुद अपनी और अपने पड़ौसियों की तबीयत का जतन करने की तुम्हारी क्षमता के विषय में मेरे मन में कभी शंका आई ही नहीं; और जो अनुभव तुमको मिल रहे हैं, वे दूसरी तरह तुम कभी प्राप्त नहीं कर सकते थे।

प्यारेलाल से कहो कि कुसुम के द्वारा उनके लिखे पत्र का पूरा जवाब मैं दे चुका हूं। इसलिए यहां कुछ नहीं लिखाता। वह जवाब कदाचित इससे पहले उसे मिल जायगा। न मिले तो मुझे खबर कर देना। हम तीनों मजे में हैं। अभी दो महीने हुए कि मैं रोटी, बादाम, खजूर, एक साग और नीबू लेता हूं। उससे अच्छा रहता है। रेच-पिचकारी की बिलकुल जरूरत नहीं रहती। 'आश्रम का इतिहास' लिख रहा हूं। बहुत-सा समय पत्र लिखने में

जाता है। इस छोटे-से मंडल में तुम्हारे सम्बन्ध में तो दिन में कितनी ही वार वातें होती हैं। सवको हम सवके यथायोग्य कहना। जव-जव लिख सको तव-तव लिखते रहना।

वापू के आशीर्वाद

: ८६ :

यरवड़ा-मंदिर, २४-४-३२

चि० जानकीवहन,

मुझे पत्र लिखना। तुम्हारी तवीयत खराव क्यों रहती है? क्या खाती हो? फल वरावर खाना चाहिए। तवीयत सुधारनी चाहिए। जमनालालजी को, कमलनयन की या और किसीकी फिक्र की जरूरत नहीं। कुछ पढ़ना होता है क्या? साथ किसका है?

हम तीनों मजे में हैं। तुम्हारी याद वहुत वार करते हैं।

वापू के आशीर्वाद

: ८७ :

१५-८-३२

चि० जानकीवहन,

कितना अभिमान? जेल में हो आई तो अव पत्र ही नहीं लिखोगी? जैसे तुम्हीं अकेली जा सकती थी न! तवीयत कैसी है? कमलनयन कहां है? उसको मैंने खत लिखा है। ऐसा मालूम नहीं होता कि वह उसे मिला हो।

वालकृष्ण कहां है? उसका इधर कोई खत ही नहीं। मलादसा भी मानो सो गई हो। शिवाजी तथा राधाकृष्ण के वारे में लिखना। छोटेलाल को पत्र लिखा है, उसका भी जवाव नहीं। इन सवकी आशा तुमसे रखता हूं।

हम तीनों मजे में हैं।

वापू के आशीर्वाद

: ८८ :

य० मं०, २०-८-३२

चि० जानकीमैया,

खूब ! आखिर पेंसिल से दो सतरें लिखने की तकलीफ की तो ! जेल जाकर भी आखिर आलस्य नहीं गया न ? 'अ' वर्ग देने में ही भूल हुई। 'क' वर्ग देकर खूब काम कराना चाहिए था। आलस्य का तो ठीक, परन्तु अब शरीर की हालत ठीक कर लेना। विनोबा के शिकंजे में खूब फंसी हो। पत्र बराबर नहीं आयंगे तो सजा मिलेगी। पुरानी कमली, जिसपर तुमने खादी सीकर फिर से नई बनाई थी, वह राजमहल में हो आई, यह बात मैं कह चुका हूं न ? यहां तो वह है ही। अभी तो बहुत चलेगी।

बापू के आशीर्वाद

: ८९ :

वर्धा, अगस्त, १९३२

पूज्य बापूजी,

आपका कार्ड ता. १५-८ का मिला था। उसमें आपने शिवाजी वगैरा की खबर मंगवाई थी। उसका उत्तर पहुंच गया होगा।

आपका पत्र ता. २०-८-३२ का मिला। ओम कहती है कि बापूजी को विशेष काम नहीं होगा जिससे बड़े-बड़े विशेषण लगाते हैं। मेरा 'ए' क्लास आपको खटकेगा, यह मैं जानती ही थी। आप 'क' वर्ग के लिए इच्छा रक्खें या उससे भी नीचे के वर्ग के लिए। अगर आप मुझे रसोई सिखाना चाहते हों, तो यह तो हो सकता नहीं। और यहां वर्धा तहसील की १०० बहनें होने के कारण दूसरी मेहनत करना चाहूं तो भी आलस्य में ही समा जाती हूं। लेकिन मुझे तो एक ही भय था कि कहीं 'क' की खुराक से मर जाती तो ?

आप आलस्य-आलस्य कहते हैं, पर २० पुस्तकें जो जिन्दगी में नहीं पढ़ी थीं, सो पांच मास में पूरी कीं ! यहां आते ही दूसरी जेल में फंस गई। ता. ४-८-३२ को छूटी और ता. ७-८ को हिन्दी-साहित्य की प्रथमा परीक्षा का फार्म भर दिया। ओम, प्रह्लाद, उसका छोटा भाई श्रीराम,

परीक्षा में बैठने वाले थे ही। कमल को भी फंसा दिया। मुझे तो आप वहीं से आशीर्वाद दें, जिससे मैं पास हो जाऊं।

आप दूसरों को कहते हैं कि दया करो और अपने बीमार हाथ से कितना काम लेते हैं। आपने विनोबा के संड़से में आने का लिखा सो तो ये कांटे आप ही के बोये हुए हैं। लेकिन एक नई खबर सुनाती हूं कि विनोबाजी भी अब मेरे संड़से में आने लगे हैं। वह भी आज आपको पत्र देने वाले हैं।

आपने जीर्ण कमली की याद कराई सो ऐसे काम तो बिना आलस्य के ही हो सकते हैं ना?

राधाकृष्ण, मदनमोहन ता. १३ तक छूटनेवाले हैं। आप मरने के सिवाय मुझे चाहे जो सजा करें।

मेरी तबीयत ठीक है। कमल का वजन बिना कोशिश के ही सपाटे से बढ़ रहा है। ४४ पौंड गया था, सो ३५ तो भर आया, अब न बढ़े तो अच्छा है।

जानकी का प्रणाम

: ९० :

य. मं, १९-९-३२

चि. जानकीमैया,

'क' वर्ग का खाना खाकर मरने का भय तुम जैसों को होता है, इसीसे बिना खाये जीने का रास्ता मैंने पकड़ा है। कल से यह देख लेना। खा-खाकर तो सारा संसार मरता है। 'अ' वर्ग का खाकर कितना जी लोगी, यह देख लेंगे। परन्तु अनशन करते-करते जीने की कला कैसी? एक शर्त है जरूर। तमाम मैयाओं को जोगन बनकर बाहर निकलना पड़ेगा और अस्पृश्यों को स्पृश्य बनाकर खुद भी ईश्वरी शक्ति होने का दावा साबित करना पड़ेगा। इतना करना और फिर 'अ' वर्ग का ही खाना खाती रहना। परन्तु यदि कोई 'अ' वर्ग का न दे तो 'क' वर्ग के खाने से भी संतोष मानना।

परन्तु मान लो कि जोगनों का भी कोई बस न चला तो भले ही यह मिट्टी का पुतला टूटकर अभी गिर जाय। मैं तो जीनेवाला ही हूं। जबतक एक भी मैया मेरा काम करती होगी, तबतक कौन कहेगा कि मैं मर गया? भले ही आत्मा की अमरता-संबंधी गीता का तत्त्वज्ञान हम छोड़ दें। जो अमरता

मैंने बताई है वह तो हम चर्म-चक्षुओं से भी देख सकते हैं। इसलिए खबरदार जो जरा भी घबरा गईं तो ! शोभित होना और शोभित करना। तन, मन, धन ईश्वर को सौंपकर सुखी होना व रहना। नखरेबाज ओम को और ज्ञानी मदालसा को आज नहीं लिख सकूंगा।

यह तुम सबके लिए है, ऐसा समझना। तुम्हारा सौभाग्य अखंड रहे।

बापू के आशीर्वाद

: ९१ :

चि. जमनालाल,

तुम परेशान बिलकुल न होना। तुमको तो नाच उठना चाहिए कि जिसको तुमने पिता का स्थान दिया, वह तुम्हारे प्रिय काम के लिए पूर्णाहुति देता है। तुम्हारे लिए तो यह उत्सव ही होना चाहिए।

जानकीमैया के साथ मेरा विनोद चल रहा है। सरदार, महादेव तुमको याद करते हैं। बापू के आशीर्वाद

: ९२ :

यरवड़ा-मंदिर, २-११-३२

चि. जमनालाल,

तुम्हारे कान के बारे में डरानेवाली खबर पाकर आज तार किया है, वह मिला होगा, ऐसी उम्मीद रखता हूं। जवाब की राह हम देख रहे हैं। तुम्हारा विस्तृत पत्र भी आना चाहिए। डा. मोदी के पास से खबर तो मंगाई है। तुम्हारी खुराक में थोड़ा-बहुत हेर-फेर सुझाता हूं। केले की कोई जरूरत नहीं। पपीते की भी अभी कोई जरूरत नहीं देखता। इस समय तुम्हारी खुराक में से दाल निकाल देनी चाहिए और हरी द्राक्ष (अंगूर) अथवा मौसम्बी, सन्तरा बढ़ा देना चाहिए। दूध अधिक लिया जा सके तो अच्छा होगा। बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं आया। तबीयत का ठीक विवरण लिखना।

मणिलाल कैसे हैं ? दूसरे साथियों के बारे में भी लिखना। हमारी गाड़ी चल रही है। मणिलाल, सुशीला, तारा, सुरेन्द्र, सीता कल आ गए। सुशीला अब ठीक हो गई है। कुछ दिन डोसीबाई के अस्पताल में रहना पड़ा था, यह तो मालूम होगा। बापू के आशीर्वाद

: ९३ :

य. मं., ८-११-३२

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र अभी मेरे हाथ लगा, सुना और उसका जवाब लिखा रहा हूं। तुम चाहते हो वे सब आशीर्वाद टोकरियों भर तुम्हारे जन्मदिवस पर तुम्हें मिलें। जो मृत्यु चाहे जब छोटे-बड़े, गोरे-काले, मनुष्य-पशु, या दूसरे सबके लिए आने ही वाली है, फिर उसका डर क्या ? और उसका शोक भी क्या ? मुझे तो बहुत बार ऐसा लगता है कि जन्म की अपेक्षा मृत्यु अधिक अच्छी चीज होनी चाहिए। जन्म से पहले माता के गर्भ में जो यातना भोगनी पड़ती है, उसे तो मैं छोड़ देता हूं। परन्तु जन्मते ही जो यातना शुरू होती है, उसका तो हमें प्रत्यक्ष अनुभव है। उस वक्त की पराधीनता कैसी है ? और वह तो सबके लिए एकसी होती है। जबकि मृत्यु में, यदि जीवन स्वच्छ हो, तो पराधीनता जैसी कुछ नहीं रहती। बालक में ज्ञान की इच्छा नहीं होती और न उसमें किसी तरह ज्ञान की सम्भावना ही होती है। मृत्यु के समय तो ब्राह्मी स्थिति की सम्भावना है। इतना ही नहीं बल्कि हम जानते हैं कि बहुत लोगों की मृत्यु ऐसी स्थिति में होती है। जन्म के माने तो दुख में प्रवेश है ही जबकि मृत्यु सम्पूर्ण दुःख-मुक्ति हो सकती है। इस प्रकार मृत्यु के सौंदर्य के विषय में और उसके लाभ के विषय में हम बहुत-कुछ विचार कर सकते हैं और इसे अपने जीवन में सम्भवनीय बना सकते हैं। इस प्रकार की मृत्यु तुमको प्राप्त हो, ऐसे आशीर्वाद और ऐसी कामना में जो कुछ भी इष्ट हो, वह सब आ गया। इस इच्छा में हम दोनों साथी हैं, ऐसा समझो। तुम्हारे स्वास्थ्य के संबंध में सबकुछ जानने के बाद भी जो विचार मैंने बताये हैं, उनपर मैं दृढ़ हूं। तुमको अपने खर्च से भोजन प्राप्त करने की छुट्टी मिल सके तो उसे प्राप्त करने में कोई दोष नहीं समझता। शरीर को एक अमानत समझकर यथासंभव उसकी रक्षा करना रक्षक का धर्म है। मौज-मजे के लिए गुड़ की एक डली भी न मांगो, न लो; परन्तु औषधि के तौर पर महंगे-से-महंगे अंगूर भी मिल सकें, तो प्राप्त करने में कोई बुराई नहीं दिखाई देती। इसलिए ऐसे भोजन-पान को ग्रहण करने में उद्वेग पाने की आवश्यकता नहीं। ऐसी ही स्थिति में दूसरों को भी ऐसा खाना दिलाया जा सके तो दिलाना चाहिए। मेरी

दृष्टि में जितने गेहूं मिलते हैं, उतने खाने की जरूरत नहीं। गुड़ को बिल्कुल छोड़ देना उचित मानता हूं। तुम्हारे शरीर को गुड़ की जरा भी आवश्यकता नहीं। इसके बदले निर्दोष शहद लेना अधिक अच्छा है। परन्तु जबतक मीठे फल मिल सकते हैं, उसकी भी जरूरत नहीं। दूध में किसी भी प्रकार का मीठा मिलाना दूध को पचाने में हानिकारक है। दूध की मात्रा बढ़ाना अच्छा है। जैतून के तेल की जगह मक्खन लेते हो, यह ठीक ही है। यहां जो जैतून का तेल मिलता है, वह हमेशा शुद्ध नहीं होता। ताजा तो मिलता ही नहीं, और मक्खन में जो विटेमिन होते हैं, वे जैतून के तेल में नहीं होते। साग में हरी सब्जी होनी चाहिए। आलू वगैरह लगभग रोटी का स्थान लेते हैं। इनमें स्टार्च होता है। तुमको स्टार्च की कम-से-कम जरूरत है। और जितनी होगी, वह सब गेहूं से पूरी हो जायगी। दाल हर्गिज मत लो। मक्खन यदि काफी ले लो तो दो पौंड दूध काफी है। इसके घटाने-बढ़ाने का आधार वजन के ऊपर है। वजन के स्थिर हो जाने तक, और हजम होता रहे, तबतक, मक्खन की अथवा दूध की या दोनों की मात्रा बढ़ाते जाना चाहिए। तरकारियों में लौकी (कद्दू) भिन्न-भिन्न प्रकार की सब्जियां, फूल गोभी, पत्ता गोभी, बिना बीज की सेम, बैंगन इन सबकी गिनती अच्छी हरी सब्जियों में होती है। गेहूं का आटा चोकर मिला हुआ होना चाहिए। यदि गेहूं बिल्कुल साफ करके पीसा गया हो तो उसका कोई भी अंश नहीं फेंकना चाहिए। फल में ताजे अंगूर, मौसमी, संतरे, अनार, सेव, अनन्नास लेने योग्य हैं। आजकल जो प्रयोग अमेरिका में हो रहे हैं, उससे मालूम होता है कि एक ही साथ बहुत-सी चीजें नहीं मिला देनी चाहिए; फल अकेला ही खाने से उसका गुण अधिक-से-अधिक हमें मिलता है। और भूखे पेट खाना तो सर्वोत्तम है। अंग्रेजी में कहावत भी है कि सुबह का फल सोना है और दुपहर का चांदी है, इसलिए पहला खाना अकेले फल का होना चाहिए। सुबह गर्म पानी पियो तो हर्ज नहीं। तुमको चौबीसों घंटे खुली हवा में रहने की इजाजत मिल सकती हो तो लेनी चाहिए। खुली हवा में रोज धीमे-धीमे प्राणायाम कर सको तो अच्छा है। रात की सर्दी से डरने की बिल्कुल जरूरत नहीं। गले तक अच्छी तरह ओढ़ लिया हो और सिर पर और कान पर कपड़ा लपेट लो तो फिर कोई हानि नहीं। चौबीसों घंटे शुद्ध-से-शुद्ध हवा श्वास के लिए फेफड़ों में जाय, यह अति

आवश्यक है। सुबह की धूप सहन हो सके तो इस तरह शरीर को खुली हवा में जितना खुला रख सको, उतना रखना चाहिए। इस सबकी चर्चा डा. कन्ट्राक्टर के साथ कर लेना और फिर जो उचित मालूम हो, सो करना।

माधवजी की गाड़ी तो ठीक चल ही रही होगी। वहां जो साथी रहते हों और जो आवें उन्हें आशीर्वाद और हम तीनों का यथायोग्य। अस्पृश्यता के सम्बंन्ध में यहां जो कुछ चल रहा है, वह शायद तुम जानते होगे। तुमको जो विचार सूझे, वह मुझे लिख सकते हो। उन्हें भेजने की इजाजत तुमको वहां से मिल सकेगी। बापू के आशीर्वाद

: १४ :

यरवड़ा-मंदिर, २२-११-३२

चि. जानकीबहन,

तुम्हारे पत्र के उत्तर में विनोद तो बहुत-सा करना था, पर अब वक्त ही कहां है। कमलनयन की बात कहनी भूल गया, यह अब लिखता हूं। कमलनयन को अंग्रेजी पढ़ने की बड़ी हविस है। उसे शिक्षा का वातावरण चाहिए। इसलिए मुझे लगता है कि उसे कोलम्बो जाने दो। वहां अंग्रेजी खूब सीख लेगा। जगह पास की पास और दूर की दूर। बच्चे साथ रखने से ही अच्छे रहते हैं, यह सिद्धांत रूप में नहीं मान लेना चाहिए। लंका के न्यूरेलिया स्थान में रहे तो वहां का जलवायु सुन्दर मिलेगा। और मैं मानता हूं कि वहां पढ़ने की सुविधा अच्छी है। तुमको कुछ भी चिन्ता करने का कारण नहीं रहे। इस विषय में मुझे लिखना हो तो लिखना।

जमनालालजी के बारे में बिल्कुल चिन्ता न करना। खबर आये तो मुझे देती रहना। इस संबंध में मेरा पत्र-व्यवहार चल रहा है। मदनमोहन को अलग पत्र नहीं लिखता। बापू के आशीर्वाद

: ९५ :

यरवड़ा-मंदिर, २६-११-३२

चि. जमनालालजी,

तुम्हारे यहां पहुंच जाने की बधाई अभी-अभी आई ।[1] मुसाफिरी की थकावट तो नहीं आई होगी। यहां डाक्टर जो फलादि खाने को दें, वह खाना। खांसी कैसी है ? मिलने की इजाजत लेने का प्रयत्न कर रहा हूं । हम सब मजे में हैं।

बापू के आशीर्वाद

: ९६ :

यरवड़ा-मंदिर, ७-१२-३२

चि. जमनालाल,

अपनी तबीयत के समाचार आज ही देना । तुमसे मिलने की तजवीज कर रहा हूं । अप्पा का मामला फिलहाल तो सुलझ गया है, अर्ध उपवास और पूर्ण उपवास स्थगित हो गए हैं । पूरे प्रश्न का निर्णय हो जायगा । मैंने दो पौंड वजन फिर से प्राप्त कर लिया है ।'आश्रमवासियों के प्रति' खोज कर भेजूंगा । और कुछ चाहिए तो मंगा लेना। कमलनयन को सीलोन भेजने की पूरी आवश्यकता है । कमलनयन लिखता है कि जानकीदेवी भी अब तो अनुकूल हैं। वहां का जलवायु उसे जरूर माफिक आयगा। अंग्रेजी का शौक पूरा हो जायगा । हिन्दुस्तान का वातावरण इस समय उसे शांत नहीं रहने देगा। सीलोन में शांत रह सकेगा। वह घर का घर और बाहर का बाहर है। जब इच्छा हो, तब लौट आ सकेगा । अंग्रेजी का अध्ययन बहुत अच्छी तरह हो सकेगा। अनेक दृष्टियों से मुझे यह प्रयोग बहुत पसंद है। अपना विचार

---

१. जमनालालजी को भी यरवड़ा-जेल में ही तबादला करके लाया गया था । चूंकि उनको गांधीजी से अलग रखा गया था, अतः वहां भी उनका पत्र-व्यवहार चलता रहा ।

२. अप्पासाहब पटवर्धन ने जेल में भंगी का काम मांगा था । उस समय कुछ समझौता होकर उनका उपवास स्थगित हो गया था । पर बाद में अप्पासाहब की मांगें पूरी न होने पर गांधीजी ने भी उनके साथ २२ दिसम्बर को उपवास शुरू किया । वह दो दिन तक चला । बाद में मांगें पूरी होने का आश्वासन मिलने पर पूर्ण हुआ ।

लिखें। उसके वाद उसे भेजने की तजवीज करूंगा। एक-दो जगह लिखना पड़ेगा।

घनश्यामदास कल गए। तुमसे मिल सकना सम्भव नहीं था। देवदास अभी यहीं हैं। राजेन्द्रवावू की तवीयत अच्छी नहीं कह सकते।

वापू के आशीर्वाद

: १७ :

यरवड़ा-मंदिर, (मिला ११-१२-३२)

चि. जमनालाल,

तुम्हारे दोनों पत्र मिल गए। मेरी व्यस्तता की कोई सीमा नहीं और कमलनयन के वारे में मेरे विचार भिन्न होने से लिखने की जल्दी नहीं थी, इसलिए मौका मिलते ही सवसे पहले पत्र लिखने का सोचा था। आज लिखना ही था कि तुम्हारा दूसरा पत्र आगया। इससे ऐसा मालूम होता है कि तुम्हारी तवीयत गिरी है। परन्तु मुझे ऐसा भय नहीं मालूम होता। मवाद फिर से निकला, यह तो अच्छा ही हुआ। कृत्रिम उपायों से मवाद वन्द हो जाय, तो कुछ लाभ नहीं। पेट में आंव जैसा लगता है, इसका कारण तो यह हो सकता है कि कोई खास चीज खाने में आगई हो। इधर एक-दो दिन से रोटी ठीक नहीं होती थी। तुम रोटी का टोस्ट वनाकर खाओ तो शायद ज्यादा अच्छा होगा। दांत तो मजवूत हैं ही। रोटी खूव चवानी चाहिए, यह तो जानते ही होगे। यहां से टोस्ट वनाकर भेज सकते हैं, क्योंकि डवल रोटी हमारे यार्ड से ही वहां जाती है और रोटी वनाने में थोड़ा-वहुत मेरा हाथ है। अतः टोस्ट वनाने में कोई कठिनाई नहीं आवेगी। यदि तीन दफा खाते हो तो टोस्ट ताजे भी वना-कर भेजे जा सकते हैं।

व्यापार-संवंधी भेंट-मुलाकात में वहुत वक्त देते हो, यह भी इस समय न करना ही उचित है। डाक्टर मोदी के कहे अनुसार पूर्ण आराम की आव-श्यकता है। वहुत वोलना भी अच्छा नहीं है। अतः यहां की आवहवा से पूरा फायदा उठाने के लिए आराम करना, कम वोलना वहुत जरूरी है।

तुम्हारे वारे में कर्नल डोइल ने काफी समय तक वातचीत की है; परसों ही वातें कीं। उनकी सलाह यूरोप जाने की ही थी; परन्तु मुझे तो इसकी कोई

जरूरत मालूम नहीं होती। इस देश में प्राप्य सहायता से जो कुछ हो सकता है, वह करके शांत रहना। परन्तु तुम्हारी इच्छा विलायत जाने की हो तो मुझे जरूर सूचित करना। तुमसे वार-वार मिलने की जो मांग मैंने कर रखी है, उसका जवाव भी आजकल में आना चाहिए।

अव कमलनयन के विषय में। कमलनयन को दक्षिण अफ्रीका भेजने के लिए खास इजाजत लेनी चाहिए। वहां उसके लिए अध्ययन का कोई सावन नहीं है। अंग्रेजी स्कूल या कालेज में उसको स्थान नहीं मिलेगा। हिन्दुस्तानियों के लिए एक अच्छा कालेज है, परन्तु हमारी दृष्टि से उसमें कुछ भी नहीं है। खानगी-अध्ययन की सुविधा भी कम-से-कम है। फिनिक्स तो जंगल है। वहां जाने से उसको छापेखाने में ही लगा रहना पड़ेगा। अतः किसी भी दृष्टि से दक्षिण अफ्रिका का विचार करने जैसा नहीं है। जव कि सीलोन में इससे उलटा है। वहां जितने भी स्कूल हैं, उनमें से किसीमें भी कमलनयन जा सकता है। न्यूरालिया की आवहवा तो उत्तमोत्तम है। सृष्टि-सौंदर्य वहां से अच्छा शायद ही कहीं हो। वहां जान-पहचानवाले भी काफी मिल सकते हैं। वर्नार्ड आलूविहारी तो घर का ही आदमी है और वहुत विद्वान है, चरित्रवान है। मेरे साथ ही विलायत से आये थे और सीलोन के प्राचीन महाकुटुम्वों में से हैं। वहां अगर ठीक न मालूम हो तो तुरन्त वापस भी वुला सकते हैं। समय-समय पर पत्र-व्यवहार भी हो सकता है। इसलिए मेरी दृष्टि से कमलनयन की अंग्रेजी पढ़ने की अभिलाषा पूरी करने के लिए हमारे सिद्धांतों के अनुकूल जगह सीलोन ही है। खुद कमलनयन को भी अच्छी मालूम होती है। परन्तु तुमको यदि वह ठीक न मालूम दे तो अभी तो भले वर्धा ही रहे। यदि वर्धा में उसे संतोष मिलता हो, तो कहने की कोई वात ही नहीं। संतोष नहीं है, ऐसा उसकी वात से और उसके पत्र से मालूम हुआ, इसलिए यह प्रश्न उपस्थित हुआ है।

मणिलाल का वुधवार को जाना मुल्तवी रहा। अतः अव तो फिर २९ तारीख को ही जा सकता है।

छगनलाल जोशी मेरी मदद के लिए कल यहां आ पहुंचे हैं। इससे मेरा काम हल्का तो नहीं होगा, परन्तु जो हमेशा अधूरा रहा करता था, उस में फर्क पड़ जायगा।

वापू के आशीर्वाद

य. मं. १५-१२-३२

: ९८ :

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। कमलनयन के बारे में समझा। पूना में उसका इन्तजाम नहीं हो सकता। वकील के साथ उसके बारे में बातचीत हो ही गई थी। इतने बड़े लड़के को वहां नहीं रखते। सुविधा भी नहीं। विशेष बात तो इस विषय में जब मिलेंगे, तब कर लेंगे। तुमको फाउन्टेन पेन की स्याही की जरूरत थी। हमारे पास स्वदेशी स्याही थी। भाई कटेली को इसका पता था, अतः उसमें से तुम्हारे लिए एक दवात भेजी है। हमारे पास तो उसका भंडार भरा पड़ा है।

यहां की डबल रोटी में जो शक्कर होती है,उसके स्वदेशी होने की संभावना है। क्योंकि पूना में विदेशी शक्कर बहुत कम आती है। परन्तु यदि विदेशी हो तो भी मैं इसमें दोष न मानूंगा, क्योंकि यह शक्कर खमीर उठाने के लिए डाली जाती है। अर्थात् खमीर के साथ मिलकर उसमें से एक नया ही पदार्थ पैदा हो जाता है—जैसे अमुक गैस अमुक मात्रा में मिलकर पानी पैदा होता है। इसलिए रोटी खानेवाले के लिए यह नहीं कह सकते कि वह गेहूं और शक्कर दो पदार्थ खाता है। खमीर उठाने के लिए तीन चीजें काम में लाई जाती है—महुडां, शक्कर और नमक। महुडां विदेशी होता है, इसलिए मेरी दृष्टि से विदेशी शक्कर त्याग करने वाले के लिए भी रोटी निर्दोष मानी जा सकती है। इतने पर भी यह जानने के बाद अन्तिम निर्णय तो तुमको ही करना है। यहां जो चपाती बनती है, वह यदि तुमको माफिक आती हो तो मुझे डबल रोटी का आग्रह करने की आवश्यकता नहीं।

तुम्हारी मुलाकात के बारे में अभी कोई उत्तर नहीं आया।

आपरेशन के लिए अभी विलायत न जाने के बारे में स्थिति समझी। खुद मुझे तो ऐसी दहशत नहीं है। हजारों आदमियों के कान बहते हैं। और उन्हें कुछ भी दूसरा उपद्रव नहीं होता। यह सब भाग दिमाग के पास है, इसलिए अन्तिम परिणाम आ सकता है, इस विचार से डाक्टर स्वयं चौंक जाते हैं और बीमार को भी डरा देते हैं। इसलिए इस देश में जितनी मदद मिल सकती हो, उतने से ही सन्तोष मानने में मुझे संकोच न होगा। परन्तु यह बात अभी

तो अप्रस्तुत है। शांति होने के बाद इसका मार्ग अपने आप सूझ जायगा।

मेरी कोहनी जैसी थी, वैसी ही है। वजन १०३ है, तबीयत कुल मिलाकर ठीक है।

इसके साथ जानकीबहन का पत्र भेजता हूं। उसमें कमलनयन के विषय में जो कुछ लिखा है, वह देख लेना। मैंने जवाब में लिखा है कि कमलनयन के साथ मास्टर और रसोइया जाय, यह मैं कभी मंजूर नहीं करूंगा। ऐसा करने से बाहर जाने का लाभ वह खो देगा। साथ में यह भी लिखा है कि तुम्हारे साथ इस संबंध में बातचीत चल रही है।

बापू के आशीर्वाद

: ९९ :

यरवड़ा, १-१-३३

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। स्टेटमेंट का आखिरी पन्ना टाइप हुआ। वैसी ही प्रति (नकल) तुम्हारे पास भेज दी गई थी। अखबारवालों को तो उसी समय दी जा रही थी। तुम्हारे हाथ में यह परसों आई। समाचार-पत्रों में कल आई। उपवास मुल्तवी रहा, इतनी ही खबर स्टेटमेंट के अगले दिन निकली। और स्टेटमेंट तैयार होते ही भेज दिया गया। इसलिए कहीं ढील नहीं हुई कही जा सकती। इसका गुजराती (अनुवाद) होते ही भेज दूंगा।

पत्र तो तैयार होते जाते हैं, त्यों-त्यों भेजे जाते हैं। स्टेटमेंट की नकल करने की जरा भी जरूरत नहीं थी। जिसको नकल चाहिए, उसकी पूर्त्ति मैं कर सकूंगा।

राजा और बा तथा शंकरलाल आज बम्बई रवाना हो गए होंगे। राजाजी आज रात की ट्रेन से मद्रास जायंगे।

मणिलाल और सुशीला ने आपसे मिलने का प्रयत्न तो किया, पर वह निष्फल गया। वे बुधवार को रवाना हो गए।

कल दस बजे हम मिलेंगे। मेरा तो मौन होगा, इसलिए तुम्हें जो कहना हो कहना। हम घंटे-डेढ़ घंटे बैठ सकेंगे। जवाब देना होगा तो वैसी बातें मैं नोट करता जाऊंगा।

बापू के आशीर्वाद

: १०० :

यरवडा-मंदिर, १५-२-३३

चि. जानकी वहन,

जमनालाल का अभिप्राय यही है कि ओम को अलग करना ही चाहिए। उनकी तीसरी सूचना यह है कि ओम को वारुताई के पास रख देना। वारुताई ठीक संभाल रखने वाली है। लेकिन अगर उसमें तुम्हें आपत्ति हो तो अपनी इच्छा के अनुसार आश्रम में अथवा शारदा-मन्दिर में रखा जाय। इन तीन में से एक जगह तुरन्त पसंद करके खवर भेजना। तीनों में वारुताईवाली जगह तुम्हें ज्यादा अच्छी लगेगी, ऐसा जमनालाल का खयाल है और उन्हें खुद को भी यह अधिक अच्छी लगती है।

केसरवहन के वारे में तो जुदा कर देने का प्रवन्ध जमनालाल यहां से निकलने पर तुरन्त करने का विचार रखते हैं।

ऐसी वातों में कर्त्तव्य-पालन करने के विपय में ढील न करना।

वापू के आशीर्वाद

: १०१ :

चि. जानकीमैया, २६-३-३३

वाह! मेरे पत्र का जवाव तक न देना? मेरा इतना ज्यादा डर है? हरिजन को देते हुए जी दुःख पाता हो तो ऐसा लिखो। मुझे संतरे भेजते हुए थैली खुल जाती है, किन्तु हरिजन के लिए वन्द रहती है क्या?

वापू के आशीर्वाद

कल जमनालाल वम्वई गए। वहां डाक्टर मोदी उनकी जांच करेंगे। शरीर तो अच्छा है। तुम्हारे और खुद अपने संतोप के लिए ही गए हैं।

: १०२ :

य. मं., ८-४-३३

चि. जमनालाल,

सेठ पूनमचन्द रांका से जितनी जल्दी मिल सको, मिलना उचित है। उनसे कहना कि उनके उपवास सत्याग्रह की नीति के विरुद्ध हैं। और मैं समझता हूं कि किसी भी तरीके से उनका वचाव नहीं हो सकता। कैदियों

के वर्गीकरण के विरुद्ध सभी लोग नहीं हैं। जिन कैदियों को 'अ', 'ब', वर्ग मिलता है, वे सब 'क' वर्ग की ही स्थिति में नहीं जाते। जिन्हें ऊंचे वर्ग में रखा जाता है वे उस वर्ग की सुविधाओं को लेने के लिए बाध्य नहीं हैं। जो इस सुविधा से लाभ उठाते हैं, अपनी इच्छा से ही उठाते हैं और उसका त्याग करने के लिए सेठ पूनमचंद उन्हें मजबूर कैसे कर सकते हैं ? उनके लिए उपवास कैसे कर सकते हैं ? वह खुद चाहे जिस सुविधा का त्याग करें, यह दूसरी बात है। यह वर्गीकरण मुझे खुद पसंद नहीं है, किंतु उसमें फेरफार कराने का मार्ग उपवास हर्गिज नहीं है। मुझे आशा है कि सेठ पूनमचंद अपना हठ छोड़ेंगे। उनको यह भी जानना चाहिए कि जबतक वह अपनेको सत्याग्रही मानते हैं तबतक वह उसकी मर्यादाओं को पालन करने के लिए बंधे हुए हैं। सत्याग्रह के प्रणेता के नाते उसकी मर्यादा स्थिर रखने का मुझे कुछ तो अधिकार होना चाहिए। इस दृष्टि से भी उन्हें मेरी सलाह मानना उचित है। ईश्वर तुमको सफलता दे।

बापू के आशीर्वाद

: १०३ :

यरवड़ा-मंदिर, १२-४-३३

चि० जमनालाल,

कमलनयन का पत्र पढ़ने के बाद मुझे ऐसा लगा है कि वर्धा से मुक्त हुआ जा सके तो तुम्हें एकदम पहाड़ पर चले जाना चाहिए। मुझे तो महाबलेश्वर अधिक अच्छा लगता है। डेढ़ महीना पूरा मिल सकता है। पीछे पंचगनी आ जायं अथवा और कहीं जाना हो तो जाया जा सकता है। कान बहने की हालत में नीचे नहीं रहा जा सकता।

बापू के आशीर्वाद

: १०४ :

यरवड़ा-मंदिर, १६-४-३३

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। होम्योपैथी पर मुझे अधिक विश्वास नहीं है। पर तुम्हारे लिए पहाड़ जाना स्थगित नहीं रखा जा सकता। अलमोड़ा का विचार मुझे पसंद है। अलमोड़े में भी होम्योपैथिक डाक्टर रहता है। पर इस

दर्द के लिए पहाड़ी हवा और दूध, मक्खन, फल, समूचे गेहूं के आटे की रोटी, और सब्जी के बाद दवा की जरूरत बहुत कम रहेगी। अलमोड़ा जाकर अधिक काम में न जुट जाना। छोटेलाल साथ जा सके तो ले जाना। उस हरिजन भाई के लिए (कोशिश) करूंगा।

बापू के आशीर्वाद

: १०५ :

य. मं., ७-५-३३

चि. जमनालाल,

तुम्हारे दो पत्र एक साथ मिले। तार भी मिला। तुम वहां रह गए हो, यह मुझे बहुत अच्छा लगा है। इसी तरह निश्चिन्तता से रहो। मैं मानता हूं कि उपवास निर्विघ्नता से समाप्त हो जायंगे।

तुम्हारे दर्द के लिए किसी वैद्य या हकीम की सलाह लेना भी उचित मालूम होता है। कान में से बहुतों को पीप निकलकर बन्द भी हो जाता है। इससे डरने की कोई वजह नहीं; खान-पान का ध्यान रखो तो काफी है। गाय सामने आई हो और उसके थन साफ करके साफ हाथ से दुहा जाय, तो वह दूध ताजा ही पियो। खाने में ध्यान रखो। अंटशंट कुछ न खाओ, दाल नहीं, मसाले नहीं, कच्ची सब्जी कुछ-न-कुछ चाहिए। टमाटर, सलाद, अच्छी वस्तु है। कच्चे प्याज खाने का डा. देशमुख का खास आग्रह है।

जानकीबहन का समय किस तरह बीतता है? घूमती-फिरती है? ओम क्या पढ़ रही है? प्रभुदास क्या करता है?

शांति रुइया को समवेदना का पत्र लिखा है। राधाकृष्ण ने खबर दी थी। तुमको पत्र भेजे जाते रहेंगे।

बापू के आशीर्वाद

: १०६

२-७-३३

चि. जमनालाल,

ज्ञान के संबंध में तार दिया है, सो मिला होगा। छगनलाल का पत्र इसके साथ है। इससे मैं समझता हूं कि ज्ञान वहां नहीं आई। ज्ञान ने स्वीकार कर लिया, यह किस तरह हुआ, यह यदि तुम जान सके हो तो मुझे बताना।

१२ ता. वाली मीटिंग के लिए तुमको वरवस आने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। अपनी राय भेजना चाहो तो भेज दो। जरूरत होगी तो पढ़ लूंगा अच्छा तो यह हो कि वह श्री अणे. को भेज दो।

कमला के लिए भी आन की जरूरत नहीं। जो कुछ हो सकता है, वह बरावर होता रहेगा। मैं पूछताछ करता रहता हूं। कमलनयन आता-जाता रहता है। जानकीदेवी से भी मिला था। कमला भी मिल गई। वह अभी वच्ची ही है। खूब लाड़-प्यार में पली है, इसलिए अपनी जिम्मेदारी का भान कम है। इसमें उसका कसूर नहीं। जैसे हम, वैसी ही हमारी संतति। हमारे अन्दर उत्तरोत्तर जो फेरफार हुआ करते हैं, उनतक हमारी संतति नहीं पहुंच सकती है। हरिलाल का उदाहरण सोलह आने है। वह सब मर्यादाएं लांघ गया। उसने ये सब प्रत्यक्ष रीति से तोड़ दीं। मैंने मन से भोगों को भोगा और बाह्यन्द्रियों पर धीरे-धीरे अधिकार प्राप्त किया। यदि मन को भी अन्त में वश न कर सका होता तो मिथ्याचारी में मेरी गिनती आसानी से होती। परन्तु मुझमें जो फेरफार हुए, उनका स्पर्श हरिलाल को कैसे होता? बीच में यह व्याख्यान ही होगया।

तुम शरीर को सम्हालकर सब काम करो। प्रभुदास यदि वहां आया हो तो उसके क्या हाल हैं? अब क्या खोजोगे?

विनोबा, बालकृष्ण और छोटेलाल की तबीयत कैसी रहती है?

राधिका आगई। अब देवलाली है। केशू अभी यहां है, शान्त है। अभी किसी निश्चय पर नहीं पहुंच सका। पहुंच जायगा। उसे काफी समय दे रहा हूं। लक्ष्मीनिवास की पत्नी सुशीला ने ५००० रुपये हरिजन-सेवा के लिए दिये, उसका तुमने क्या फैसला किया?

देवदास, लक्ष्मी रणछोड़दास के बंगले में रहते हैं। राजाजी घनश्यामदास के साथ। मेरी तबीयत ठीक हो रही है। रोज तीन बार करके ४५ मिनट घूमता हूं। वजन ९७ पौंड तक पहुंच गया है। और बढ़ेगा। अब मेरी चिन्ता करने की कोई बात नहीं रहती।

नारणदास का पुरुषोत्तम बहुत करके यहां आयगा और डा. दिनशा के यहां नैसर्गिक उपचार की शिक्षा लेगा।

वहां का तुम्हारा काम कब पूरा होगा?

गिरधारी फिर आज गिरफ्तार होगा। कल छूटा था। उसे हैदराबाद जाने का हुक्म है। उसने उसे नहीं माना।

तुम्हारा खान-पान आदि ठीक चल रहा होगा। मुझे सविस्तर लिखना।

बापू के आशीर्वाद

आज १० से ११-३० तक हरिजन-सेवकों के साथ बातचीत की।

: १०७ :

१७-७-३३

चि. जमनालाल,

मुझे जरा भी फुरसत नहीं रहती। इससे लिखने की इच्छा होते हुए भी नहीं लिख सकता। आश्रम को लिखे पत्र की नकल इसके साथ है। मेरे विचार इस तरह उड़ते रहते हैं। आखिर कहां जाकर ठहरेंगे, यह पता नहीं। मेरा आजकल में ठिकाना लग जायगा तो फिर एसे विचार का आदान-प्रदान नहीं हो सकेगा। परन्तु तुम तो विचार करने लग ही जाओगे। जो ठीक लगे, वैसी सलाह नारणदास को देना। मेरा पत्र विनोबा पढ़ेंगे ही, उनको लिखने का समय मिला ही नहीं। और आज मिलने की आशा नहीं।

कमला के उपवास चल रहे हैं। संभवतः आज छूटेंगे। मेहता ध्यान रखते हैं। मुझे रोज रिपोर्ट देते हैं। उपवास में खूब हिम्मत रखी है।

तुम्हारा शरीर ठीक रहता होगा।

तुम्हें कूद तो पड़ना ही है। परन्तु जल्दी न करो। शरीर को ठीक-ठाक करके आना।

बापू के आशीर्वाद

: १०८ :

एलिसब्रिज, २१-७-३३

चि. जमनालाल,

इधर तुम्हारा कोई पत्र नहीं। मैंने आशा रखी थी। पूना से लिखा मेरा पत्र मिला होगा। आश्रम की आहुति देने के संबंध में बातचीत कर रहा हूं। लगभग निश्चित जैसा है। आज निश्चय हो जायगा। इस आहुति की नकल करने की जरूरत नहीं। इसको आदर्श मानकर जो अपना आचरण बनाना चाहें वे जरूर बनायंगे। वर्धा-आश्रम के संबंध में भी फिलहाल साबरमती का

अनुकरण करने की आवश्यकता नहीं। समय मिला तो विशेष लिखूंगा।

अब्दुल गफ्फारखां का लड़का, जो विलायत में था और वहां से अमेरिका गया था, मुझसे पूना में मिला था। अभी बम्बई में है। अमेरिका के शक्कर के कारखाने में काम सीख कर आया है। कितना सीखा है सो तो भगवान जाने। खुर्शेदबहन वगैरह की सलाह है कि वह शक्कर के किसी कारखाने में फिलहाल काम करे तो अच्छा। तुम्हारे कारखाने में उसे आजमा देखो। उसने मुझपर अपनी होशियारी की छाप नहीं डाली। भलमनसाहत की डाली है। अभी तो कहता है कि जैसा आप कहेंगे, वैसा करूंगा। इस समय तो उसे वेतन देने की बात नहीं है। एक महीने के बाद यदि वह काम में कुशलता बतावे तो वेतन ठहराया जा सकता है। अभी तो उसके लिए रहने-खाने का इन्तजाम करना पड़ेगा।

मेरी तबीयत ठीक है। रणछोड़भाई के यहां ठहरा हूं। आश्रम रोज जाता हूं। आज मीराबहन से मिलने की आशा रखता हूं। इजाजत के लिए तार दिया था, सो वह मिल गई है।

बापू के आशीर्वाद

: १०९ :

२२-७-३३

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। प्रश्न तो सब ठीक हैं। भरसक जवाब देता हूं। आश्रम सौंप देने में मतलब तो यह है कि जो वस्तु अन्त में उन्हें लेना ही है वह उन्हें सौंप देना अधिक अच्छा। प्रति वर्ष लगान के लिए माल उठा ले जायं, उससे तो शौक से सारी जमीन ले लें। फिर हजारों लोग बिना इच्छा के बर्बाद हो गए तो सत्याग्रह के नाम से परिचित होकर आश्रम खुद सारा त्याग करे, यह इष्ट है और धर्म भी मालूम होता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि अभी से वहां के आश्रम को भी ऐसा ही करना है। इससे उल्टा मुझे लगता है कि वहां से जो-जो व्यक्ति निकल सकें उससे संतोष मान लें। विनोबा तो अब नहीं निकल सकते। उन्हें हरिजन-सेवा के लिए रहना है। महिला-आश्रम का उपयोग पूरा करना चाहता हूं। वहां बच्चे भी आवें क्या? कितनी ही बहिनें तो वहां आयंगी ही। नीला नागिनी और अमलाबहन का प्रश्न है ही।

उन्हें वहां भेजे विना दूसरा उपाय नहीं है। दोनों से हरिजन-सेवा का काम लेना ही है। अभी तो दोनों को तैयार होना है। नागिनीदेवी का पुरुषों से संबंध कम होना चाहिए। जंगम संपत्ति यदि सरकार न ले तो कहीं खुले में रखेंगे। गायों का प्रश्न वड़ा है। विचार कर रहा हूं।

तुम्हें अभी कूद पड़ने की जल्दी नहीं करनी है। समय आने पर कूदना। इतना व्योरा काफी है न? वड़ी व्यस्तता में लिख रहा हूं।

वापू के आशीर्वाद

: ११० :

पूना (मिला, २६-८-३३)

चि. जमनालाल,

तुम्हारा तार मिला। तुम मानते होगे कि मुझे वड़ी साज-संभाल की जरूरत पड़ती होगी। वात यह है कि खाने के सिवा और कोई अधिक संभाल करने का सवाल नहीं रहता। इस वार शक्ति क्षीण नहीं हुई है। आठ दिन में हो भी नहीं सकती थी। जितनी गई है, उतनी तुरन्त आ जायगी। इसलिए छोटेलाल को भेजने की कोई जरूरत नहीं थी, पर अव आता है तो छोटेलाल को भारी संतोप होगा। इतनी ही वात से मुझे संतोप मिल जायगा। इसके सिवा मीरावहन मेरे पास हैं, यह तो जानते होगे। व्रजकृष्ण तो जहां भी होता है, वहीं से आकर हाजिर हो ही जाता है। इसलिए वह भी है ही। दूसरी मदद भी वहुत मिलती है। तुम्हारी तवीयत अच्छी होगी। जो नये लोग आये हैं, उनके जो अनुभव तुम्हें मिले हों, लिखना। तुम्हारा केस पूरा हुआ? रामदास का कैसा चलता ह? केशू का क्या हाल है?

वापू के आशीर्वाद

: १११ :

२८-८-३३

चि० जमनालाल,

मुझे शक्ति ठीक आती जा रही है। ज्ञान से मिलने की तीव्र इच्छा है। वह मुझे मिल जाय तो अच्छा हो। उसका पता लिखना।

कमला को तो सुन्दर लाभ हुआ लगता है। महामारी का भय न रखकर अव यहीं रहने की सूचना जानकीवहन को दे दी है।

वापू के आशीर्वाद

: ११२ :

३०-८-३३

चि० जमनालाल,

तुम्हारे तार का जवाव दिया है। तुरन्त आना अच्छा तो वहुत लगता है, पर आया नहीं जा सकता। वम्वई होकर आना ठीक लगता है। वहां के वातावरण की जानकारी करनी है। वहां का हरिजन-काम भी जरा मन्दा-सा है। उसमें तेजी लाई जा सके तो लानी है।

मेरी तवीयत ठीक होती जा रही है। खुराक ठीक लेता हूं। अपनी तवीयत संभालना। नीला और अमला के पत्र साथ हैं। नीला जरा अव्य-वस्थित हुई लगती है।

वापू के आशीर्वाद

: ११३ :

मिला ४-९-३३

चि० जमनालाल,

नीला फिर रास्ते से भटक गई है। उसके पत्रों से उसकी अव्यवस्था स्पष्ट झलकती है। इतने दिन हिंदूधर्म की धुन थी, अव ईसाई-धर्म की लगी है। इसमें भी यदि निश्चय हो तो अच्छी वात है, परन्तु मुझे ऐसा नहीं लगता। उसकी कल्पना-शक्ति उसे इधर-से-उधर झकझोरा करती है। मौन लेने से उसका मन अधिक चक्कर खा गया जान पड़ता है। साथवाला पत्र पढ़कर उसे दे देना और फुरसत मिल जाय तो उससे वात भी कर लेना। अथवा विनोवा करें। द्वारकानाथ से कुछ हो सकता हो तो वह आश्वासन दें।

मेरा तार तुमको मिला होगा। तुम्हारे साथ वात तो करनी ही है। परन्तु मैं तुमको यहां घसीटना नहीं चाहता। पहले तो ऐसा ही लगता था कि वम्वई थोड़े दिन रहकर वर्धा जाऊं, परन्तु दो-तीन दिन से कुछ अनिश्चितता आ गई है। कदाचित वहां आकर वम्वई जाना ठीक होगा। लेकिन देखता हूं। जवाहरलाल छूट गया है, सो उससे मिलना भी जरूरी है; पर वह मुलाकात तो वर्धा में भी हो सकती है। आखिर तो जो होना होगा वही होगा। इसलिए मैं कोई योजनाएं नहीं वनाता।

मेरा शरीर ठीक होता जा रहा है। दो पौंड दूध, साग और फल लेता हूं।

बापू के आशीर्वाद

: ११४ :

पूना, ६-९-३३

जमनालाल बजाज,
वर्धा।

लखनऊ व बनारस जाना अनावश्यक है। दस दिन के लिए पहाड़ पर तुरन्त हो आओ। जवाहरलाल यहां शायद शनिवार को पहुंचेंगे। मैं बम्बई अगले सप्ताह जाऊंगा और एक सप्ताह ठहरूंगा। वर्धा २३ से पहले नहीं पहुंच रहा हूं। मैं बिल्कुल ठीक हूं। अखबारों की रिपोर्टों पर विश्वास न करना।

बापू

: ११५ :

१७-९-३३

चि० जमनालाल,

अखबारों में सब देखा होगा। जानबूझकर तुम्हें तफसील से नहीं लिखा था। इस समय तुमपर कोई भी बोझ डालने में संकोच होता है। चिखलदा[1] से झट उतरना पड़ा, यह भी अच्छा नहीं लगा। अब तो मिलेंगे तब बातें करेंगे। मुझे भी आराम की जरूरत ठीक-ठीक रहने वाली है। गजानन की बहू गोपी बहुत करके मेरे साथ ही होगी, और किसन नाम की एक बहुत अच्छी बहन है, उसे भी साथ आने का निमंत्रण दिया है। उसका शरीर ठीक था; पर अब जरा लड़खड़ाया है। इन सबका बोझ अपने स्वभाव के अनुसार तुम उठाओगे, यह जानता हूं; पर बोझ-रूप न हों, ऐसा करने की कोशिश करूंगा।

बापू के आशीर्वाद

जवाहरलाल आज रात को लखनऊ जा रहा है, शायद बाद में वर्धा आवे। जानकी आगई होगी।

---

१. चिखलदा, मध्य प्रदेश का एक 'हिल स्टेशन'—पहाड़ी-स्थान है।

: ११६ :

वर्धा, १६-१०-३३

पूज्य बापूजी,

चित्त की बड़ी दुविधा में यह खत आपको लिख रहा हूं। कानून के सविनय-भंग के ऊपर और कांग्रेस के कार्यक्रम पर पूरा विश्वास होते हुए भी मैं अभी तक जेल में पहुंचा नहीं हूं। इसका मुझे बहुत रंज है। मैं ता. १९-४-३३ को जेल से छूटा, तब मेरे कान की व्याधि खतरनाक गिनी जाती थी। उसका यथासम्भव इलाज करके मैं शरीर का स्वास्थ्य ढूंढता अलमोड़ा गया। इधर आपने २१ दिन के उपवास किये, जिसके साथ सत्याग्रह का आन्दोलन तीन महीने के लिए स्थगित रहा। उन्हीं दिनों मुझे एक अत्यन्त जरूरी कौटुम्बिक प्रकरण में बहुत दिनों तक गवाही देनी पड़ी। आपने भी मुझे आज्ञा दी थी कि अच्छा शरीर लेकर ही जेल जाना चाहिए। इन्हीं दिनों में पूना की खानगी कान्फरेंस हुई और सामुदायिक सत्याग्रह का रूपान्तर व्यक्तिगत सत्याग्रह में हुआ।

मैं जानता हूं और मानता भी हूं कि ऐसी हालत में, जिनका सविनय भंग पर अटल विश्वास है, ऐसे लोगों को तो इस वक्त अन्य कामों का लोभ छोड़कर खसूसन जेल में ही जाकर बैठना चाहिए। मैंने ऐसा निश्चय भी किया था। लेकिन शरीर और मन का स्वास्थ्य जितना चाहिए उतना नहीं सुधरने के कारण दिल में कुछ कमजोरी-सी आगई और इसी कारण मैंने गुरुजन और मित्रगणों के कुछ दिन ज्यादा बाहर रहने के आग्रह को मान लिया और १२ नवम्बर तक बाहर रहने की अवधि निश्चित की।

डा. मोदी ने हाल ही में मेरा कान देखकर कहा कि हालांकि प्रगति अच्छी हुई है, तो भी रोग निर्मूल होने के लिए और भी उसकी संभाल अनिवार्य है; तब ही खतरा दूर होगा।

मेरा विश्वास मुझे कहता है कि व्यक्तिगत सत्याग्रह के आज के दिनों में जिसका शरीर कुछ भी चलता है उसको तो जेल में ही जाना चाहिए। लेकिन जेल में कान का दर्द फिर बढ़ने का डर रहता है। जेल जाकर 'ए' या 'बी' क्लास में रहना, इस बात को मैं पसंद नहीं करता। क्योंकि वर्गों का भेद देश को नुकसान पहुंचाता है। लेकिन मिला हुआ क्लास छोड़कर तबीयत की

वजह से वही सुविधायें मांग लेना, यह भी अच्छा नहीं लगता। इस कमजोरी की हालत में शरीर और मानसिक स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने का विचार कर रहा हूं।

मेरे जैसी हालत में मुझे वर्किंग कमिटी से त्यागपत्र देना चाहिए था। मैं मानता हूं कि जिसका विश्वास सविनय भंग पर और कांग्रेस के प्रोग्राम पर नहीं, उसे कांग्रेस में कोई जवाबदारी का स्थान नहीं लेना चाहिए। इसी तरहसे इन दोनों पर पूरा-पूरा विश्वास होते हुए भी मेरे सरीखे जो लोग केवल तबीयत सुधारने के कारण जेल जाना टालते हैं, उनको भी जवाबदारी का स्थान छोड़ना चाहिए। मैं देखता हूं कि तबीयत सुधारने के वास्ते मुझे और भी कुछ समय देना चाहिए। ऐसी हालत में मेरा वर्किंग कमिटी का मेम्बर और कांग्रेस का खजानची रहना सर्वथा अनुचित है। मुझे इस्तीफा देना ही योग्य था। इसलिए अभी मेरा यह इस्तीफा आपकी सेवा में भेज देता हूं।[1] तुरन्त कोई दूसरा खजानची न मिले तो नया खजानची नियुक्त होने तक मैं वह काम वर्किंग कमिटी का सदस्य न रहते हुए करूंगा।

इसका अर्थ यह नहीं कि कांग्रेस के कार्यक्रम को यथाशक्ति पूरा करने के मेरे कर्त्तव्य से मैं मुक्त हूं।

मेरे इस्तीफे से कांग्रेसवालों में कुछ गैर-समझ फैल जाने की सम्भावना है, यह मैं जानता हूं। लेकिन देश के कामों में स्वच्छता रखने की आवश्यकता अधिक है और अन्त में उससे लाभ ही होगा।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

---

१. इस बारे में गांधीजी ने सरदार वल्लभभाई पटेल को ता. २३-११-३३ को रायपुर से लिखे पत्र में यह उल्लेख किया था, "जमनालालजी का त्यागपत्र उसकी शांति के लिए भी अनिवार्य था। दूसरों के लिए भी उचित ही था। उससे वातावरण बहुत स्वच्छ हुआ है। जमनालालजी पर से बोझा उतरा है और उन्हें नया बल मिला है। अधिक तो नहीं लिखूंगा। लेकिन उनके इस निर्णय की योग्यता के बारे में किसी प्रकार की शंका न करना।"

660

: ११७ :

वर्धा, २५-१०-३३

प्रिय भगिनि,[1]

आप बहनों से परदा तुड़वाने के लिए कलकत्ता जा रही हैं, इसलिए धन्यवाद। परदा वहम ही नहीं है; उसमें मुझे पाप की बू आती है। परदा किससे रखें? क्या पुरुषमात्र विषयासक्त रहते हैं? क्या स्त्री अपनी पवित्रता बगैर परदा नहीं रख सकती है? पवित्रता मानसिक बात है, सभी पुरुषों में सहज होनी चाहिए। यदि इस बुद्धि-प्रधान युग में स्त्री धर्म की रक्षा करना चाहती है तो उसे दरिद्रनारायण की सेवा करनी होगी, शिक्षण लेना होगा। दरिद्रनारायण की सेवा करने का अर्थ खादी-प्रचार, कातना इत्यादि, हरिजनसेवा का अर्थ अस्पृश्यतारूप कलंक धोना। ये दो बड़े भगवान के कार्य (हैं)। और विद्या पाने का कार्य परदा रखने के साथ कभी नहीं चल सकता है।

परदा रखकर सीता रामजी के साथ जंगलों में भटकी होंगी? सीता से बड़ी पवित्र स्त्री जगत में कभी हुई है? बहनों से कहो परदा तोड़ो, धर्म रखो।

आपका
मोहनदास गांधी

: ११८ :

१५-११-३३

चि. जमनालाल,

श्री सालपेकरजी के स्मारक के बारे में भाई हरकरे मुझसे मिले हैं। सालपेकर-स्मारक हरिजन-सेवा-निधि नाम से फंड खोला जाय और उसमें धन इकट्ठा किया जाय तो उसके संबंध में मेरे नाम का इस्तेमाल हो। लेकिन इसमें तुम्हारी सम्मति और मदद हो, तभी ऐसा किया जाय, ऐसा मैंने कहा

---

१. श्री जानकीदेवी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की अध्यक्षा होकर कलकत्ते गई थीं, तब गांधीजी ने उनके मार्फत उपरोक्त संदेश वहां की बहनों के लिए भेजा था। यह पत्र कलकत्ते के 'दैनिक विश्वमित्र' के ता० २९ अक्तूबर, १९३३ के अंक से लिया गया है।

है। इसमें कम-से-कम ५०००) मिलना चाहिए। यह पर्स (थैली) रूप में मुझे छिन्दवाड़ा में दी जाय। इसकी एक छोटी कमिटी बना दी जाय और इस धन का उपयोग वह हरिजन सेवा-कार्य में मुझसे पूछ कर करे। यह ठीक लगे तो भाई हरकरे को बताना। बापू के आशीर्वाद

: ११९ :

रायपुर, २६-११-३३

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

शहद के बारे में द्वारकानाथ को लिखा है। कोई संग-साथ के योग्य जहां का साथ मिले, वहां बोतल भेज दें, ऐसा लिखा है।

जबलपुर में पांचवीं तारीख को वर्किंग कमिटी मिलने वाली है, ऐसा जवाहरलाल लिखते हैं। तुम्हारी हाज़िरी की आशा वह रखते हों, ऐसा लगता है। आने का मन होता है? नहीं ही हो, तो चला लूंगा। इच्छा हो तो आना। इसका यह मतलब है कि सातवीं के बदले तीसरी या चौथी तारीख को वहां से छूटना होगा। यह सही है, कि वहां इतने दिन गंवाना, मुझे अच्छा नहीं लगता।

मथुरादास कल यहां आता है। किसलिए यह खबर नहीं है।

ओम् की बुद्धि बहुत तेज देखता हूं। सादी तो है ही। शरीर अच्छा है। उसे यहां अच्छा लगता है। उसे थोड़ा-थोड़ा लिखने का काम भी सौंपता हूं। सोती मेरे निकट ही है। नींद की शक्ति अच्छी है। सभीको प्यारी हो गई है।[1]

जानकीमैया को कुछ शांति मिली क्या? कमला का ठीक चला है। फिरती है? मदालसा, वत्सला, समय किस तरह बिताती हैं? इसके साथ मणिलाल का पहले का पत्र भेजता हूं। इसे फाइल करना। उसमें गोसेवा-संघ की बातें हैं और जेवरात की सूचना है। बापू के आशीर्वाद

---

१. गांधीजी का हरिजन-दौरा ७-११-३३ को वर्धा से शुरू होकर २९-७-३४ को बनारस में पूरा हुआ। जमनालालजी की तीसरी लड़की ओम् इस दौरे में उनके साथ थी।

: १२० :

३१-१२-३३

चि. जमनालाल,

कलकत्ते से लिखा तुम्हारा पत्र मिल गया। लेकिन उससे यह नहीं समझ सका कि तुम सतीशबाबू से मिले या नहीं। मिले तो होगे। यह भी नहीं लिखा कि तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है। अब लिखना। शिवप्रसाद बच गए, यही बड़ी बात समझनी चाहिए। यात्रा ठीक तरह चल रही है। मेरा शरीर सोचा था, उससे ज्यादा काम दे रहा है। इसलिए चिन्ता करने का जरा भी कारण नहीं है। ओम् की गाड़ी ठीक चल रही है। वह ऐसी नहीं है जो किसीको अपने लिए चिन्ता करने दे। मंत्रिपद के लिए धीरे-धीरे तैयार हो रही है। इतनी जागरूकता अभी नहीं आई कि मुझे पूरा संतोष हो, परन्तु शरीर को खतरे में डालकर उसपर चाप चढ़ाना नहीं चाहता। आसानी से जितना काम कर सकती है, उतना ही लेता हूं। किसन मेरे साथ है, यह तो तुम जानते ही होगे। बहुत भली लड़की है। ओम् के साथ खूब घुल-मिल गई है। इसका शरीर जेल में छीज गया, नहीं तो अच्छी मजबूत थी और मन चंचल था। यात्रा से उसको फायदा हुआ मालूम होता है। इस बार मेरे साथ मलकानी है। इनके विषय में तो पूछना ही क्या। मेहनत कर रहे हैं। दामोदर ठीक काम दे रहा है। वह मंजा हुआ है। अन्त्यज खाते से रुपये दिल्ली भेजने थे, सो भेज दिये क्या? गोशीबहन को प्रतिमास कुछ भेजते रहना होगा। वह भी किसी खाते से निकालकर देना। मथुरादास जितने कहें, उतने देना। बम्बई से पूरी रकम उनको मिलनी चाहिए थी, परन्तु उन लोगों ने नहीं दी। अब मैं पत्र-व्यवहार करूंगा, परन्तु इस बीच उसे रुपया अवश्य मिलना चाहिए।

बापू के आशीर्वाद

ता. क. बुधवार, सुबह प्रार्थना के पूर्व—

जानकीबहन तुम्हारे क्रोध के बारे में लिखती हैं सो क्या बात है? उसमें तथ्य हो तो उसे निकाल देना। ओम् से पूछा तो वह भी कहती जरूर है कि मदनमोहन को भी तुम कभी-कभी रुलाते हो।

तारा तो अच्छा काम देने वाली है ही। उसका शरीर अच्छा रहेगा तो वह मंज जायगी। डा. शर्मा (दिल्ली) का तार है। उसने अपनी संपत्ति-

१० हजार में वेची है और ऋणमुक्त होगया है। अब वह आश्रम में आना चाहता है। अपनी पत्नी के साथ आवेगा। उसको मैंने सुझाया है कि वह तुमको लिखे। उसे अपनाने की आवश्यकता है। जंच जाय तो अच्छा, नहीं जंचा तो चला जायगा।

बापू के आशीर्वाद

: १२१ :

२१-४-३४

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

मिदनापुर में जो कुछ चल रहा है, वह मुझे व्याकुल बनाता है।

ओम्, किसन की जोरदार जोड़ी बन गई है। खुश रहती है। उदास होना किसे कहते हैं, यह तो ओम् जानती ही नहीं। बारह घंटे सो सकती है। इसमें मैं कोई हर्ज नहीं देखता। किसी तरह के खास शौक उसे नहीं दिखाई देते। खाने में जो हो सो सही। देखना है, कैसी निकलती है।

मेरा तो चल रहा है।

जवाहरलाल को ४०००) साथियों के भरण-पोषण के लिए न भेजे हों तो भेज देना।

बापू के आशीर्वाद

: १२२ :

३०-१-३४

चि. जानकीबहन,

यदि दिमाग की कमजोरी के कारण जमनालाल को गुस्सा आता हो तो उसमें शिकायत की क्या बात? बीमार के गुस्से पर भला कोई ध्यान देता है? बीमार की चिढ़ तो हमेशा पी ही ली जाती है। या केवल विनोद के लिए मुझे पत्र लिखा है? मदालसा से कहना कि वह मुझे भूल गई मालूम होती है। ऐसा नहीं चल सकेगा। ओम् मजे में है।

रामकृष्ण कैसा है? तुम्हारी तबीयत कैसी है? बाली का ध्यान रखना।

बापू के आशीर्वाद

: १२३ :

कूनूर, ३०-१-३४

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने गोंदिया तार दिया था और वर्धा भी दिया है। जबतक राजेन्द्रबाबू खास तौर पर तुमको नहीं बुलावें तबतक अंगीकृत कार्य को हरगिज नहीं छोड़ना। राजेन्द्रबाबू बिना विचारे नहीं बुलावेंगे। मैंने भी अपने बारे में यही वृत्ति रखी है। मुझे इस विषय में कोई संदेह नहीं है कि तुम्हारा अंगीकृत कार्य जल्दी से नहीं छूट सकता। तुम्हारे गए बिना जहां काम नहीं चल सकता हो, वहीं जा सकते हो। ऐसी हालत मुझे अभी नहीं दिखाई देती। राजेन्द्रबाबू के बुलाने पर आश्रम के छूटे हुए लोगों को भेजा है। कई लोगों के जाने का तार आज आगया है। उनमें भी सुरेन्द्र को नहीं भेज रहा हूं। क्योंकि वह तुम्हारे पास काम कर रहा है। उसकी जरूरत न हो तो उसे भेज सकते हो। जाय तो गर्म कपड़े साथ ले जाय। परन्तु उसकी वहां जरूरत न हो तो अभी उसके जाने की जरूरत नहीं। स्वामी को जानें का तार दिया है। ओम् का ठीक चल रहा है।

बापू के आशीर्वाद

: १२४ :

२-२-३४

चि० जमनालाल,

कमलनयन के संबंध में पत्र और उसका लेखन पढ़ा। वह यहां का क्रम पूरा करना चाहता है और हिन्दी की मध्यमा पूरी करना चाहता है। मैं इतना सुधार चाहता हूं। हिन्दी का संपूर्ण क्रम पूरा करके अन्तिम परीक्षा दे। अंग्रेजी अधिक पक्की करे, संस्कृत सीख ले और फिर इंगलैण्ड नहीं, बल्कि अमेरिका जाय। वहां पढ़ने की सुविधा तो सुन्दर की ही जा सकती है। अमेरिका में थोड़ा समय बिताकर पूरी मुसाफिरी कर ले। इस तरह प्राप्त हुआ अनुभव उसको बड़ा उपयोगी होगा। उसकी बुद्धि अधिक परिपक्व हो जाने पर वह अधिक पढ़ सकेगा। यह अच्छा है कि उसे परीक्षा का मोह नहीं है। पाश्चात्य देशों को देखने की उसकी इच्छा को मैं नहीं रोकना चाहता। यहां से ज्यादा पाथेय ले जाय, यह जरूरी मानता हूं।

सुरेन्द्र को किस काम में लगाया है ?

अमलाबहन को साबरमती भेजने का निश्चय कर लिया है। वहां नहीं जमा तो देख लेंगे।

बापू के आशीर्वाद

: १२५ :

२१-५-३४

चि० जमनालाल,

एलविन का पत्र पढ़ गया। उसे अलग डाक से लौटा रहा हूं। टिकट-खर्च बचाने के लिए। इनकी संस्था देखने के बाद इन्हें मदद देनी पड़ेगी, ऐसा लगता है। उनके पास जो रुपये आते हैं, वे कहां से ? वह गायन सिखाते हैं सो किस तरह ? उनके साथ शामराव के अलावा और कौन है ?

ऐसा मालूम होता है कि उनको मांसाहार किये बिना गति नहीं है। इनकी ऐसी श्रद्धा नहीं है कि दूध-फल पर निर्वाह हो सके। परन्तु वह कुछ भी खायं, इस कारण उनकी मदद बन्द करने का कोई प्रयोजन नहीं है। परन्तु कताई बन्द हो जाय या हलकी पड़ जाय तो यह सहन नहीं किया जा सकता। यदि कताई में उनका विश्वास न हो तो छोड़ देना चाहिए। मैं यह नहीं कहता कि वह कातें तभी मदद दी जाय, परन्तु आशय यह है कि वह सत्य की रक्षा करें। देखना इतना ही है कि काम सब स्वच्छ हो। एलविन सीधे-भोले हैं, इसलिए खुद को धोखा दे सकते हैं। इसीलिए इस बात की आवश्यकता है कि मित्र लोग उनकी देखभाल करें।

डा० अन्सारी की पार्टी को[1] निश्चय हो गया होगा। जबतक इसका स्पष्टीकरण न हो जाय, तबतक उसमें दिलचस्पी अवश्य लेना। राजा भी दिलचस्पी लें। मालवीयजी को अन्दर लाने के बाद मदद भी देनी होगी और यह भी देखना होगा कि वह नुकसान भी न करने पावें। विलम्ब या जल्दी करके वह नुकसान पहुंचा सकते हैं।

जुलाई तक का कार्यक्रम तो देख लिया न ? इसके अनुसार कार्य करने से बहुत जगह मुलाकातें मिल सकेंगे।

बापू के आशीर्वाद

---

१. डा० अन्सारी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने कौंसिल-प्रवेश के लिए पार्लमेंट्री बोर्ड बनाया था।

: १२६ :

२७-५-३४

चि० जमनालाल,

मैंने मान लिया है कि डा० सुरेश बनर्जी तुम्हें संभाल लेंगे।

तुम्हारे पत्र और तार का जवाब दे चुका हूं। तुम्हारे पास यात्रा का क्रम तो है ही। वर्धा उतरने का मन में तो बहुत होता है; पर उतरा नहीं जा सकेगा। मुसाफिरी का क्रम जम जाने पर फिर उसीके मुताबिक चलना ठीक लगता है।

तुम्हारी तबीयत सँभल रही होगी। एलविन के बारे में मेरा पत्र मिला होगा।

मालवीयजी पूना में वर्किंग कमिटी की बैठक करने को लिखते हैं। मेरी तारीखों के दरमियान हो तो मुझे तो दोनों समान हैं। बम्बई में स्ट्राइक (हड़ताल) चल रही होगी तो मुझे वहां रहना ही अच्छा नहीं लगेगा। पर यह तो अप्रस्तुत बात लिख डाली। बम्बई १४ से १८ तारीख तक तो रहना ही है।

ओम की गाड़ी ठीक चल रही है। उसे अनुभव-ज्ञान काफी मिल रहा है। पर पढ़ने में आलस्य काफी है। बापू के आशीर्वाद

: १२७ :

१७-७-३४

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे ऊपर एक ओर तो जिम्मेदारियां और दूसरी तरफ कान की बीमारी। इन दोनों से मैं घबरा जाता हूं। अब वल्लभभाई छूट गए हैं, इसलिए एकाध महीने में भार कुछ हलका होगा। जितना हो सके निश्चिन्त रहो तो बस है। विहार का जो हो सके सो करना। कितनी ही बातें तो योंही चलेंगी। मैं मिलूंगा तब अधिक खुलासा करूंगा। महेन्द्रबाबू के मामले में तो तुम्हीं जो कर सकोगे सो ठीक होगा। उसमें मेरी चोंच नहीं डूबेगी। बिहार के हिसाब का तो मालूम होगा।

आश्रम की निन्दा का लेख भेजा सो पढ़ गया। उसका कोई जवाब नहीं हो सकता। आश्रम को सुरक्षित रखेंगे तो कुशल ही है। इसका फैसला करेंगे। गंगाबहन और प्रेमा को भले ही लिखो। शायद ही वे आयें। और उसे अब नए रस पैदा हुए हैं। बहुत तानकर खींचने में सार नहीं है।

प्यूटो के पत्र आते रहते हैं। वह तुम्हें मिलने के लिए व्याकुल है।

मैं ठीक हूं। मेरे उपवासों से डरना नहीं है। इसके बिना नहीं चलेगा, यह तो स्पष्ट है। बापू के आशीर्वाद

: १२८ :

जानकीबहन को कहो कि ऐसी झूठी हठ न करें। बहुत करके तो म आपरेशन के समय वहां पहुंच जाऊंगा। दो-चार दिन में ताकत आ जायगी। मेरा आना न हो सके तो कोई बात नहीं। पर (आपरेशन का) लम्बा टालने की जोखिम नहीं उठाई जा सकती। मुझे तो आज ही तार करना है। ईश्वर की कृपा हुई तो हम दोनों ही वहां हाजिर होंगे। पर इसके लिए आपरेशन नहीं रोका जाना चाहिए।[1]

: १२९ :

वर्धागंज, १३-८-३४

जमनालालजी,

बम्बई

मैं बिल्कुल ठीक हूं। पत्र सुना और उसपर ध्यान दिया। मेरा निश्चित मत है कि आपरेशन डाक्टर द्वारा निर्धारित तारीख पर ही होना चाहिए—और बातों का खयाल नहीं किया जाना चाहिए। निश्चित तारीख की सूचना तार से दो। बापू

---

१. जमनालालजी के कान का आपरेशन तय करने के बारे में सोमवार ता० १३-८-३४ को गांधीजी ने उक्त सूचना दी थी।

: १३० :

वर्धागंज, १४-८-३४

जमनालालजी,

बम्बई ।

बापू ने प्रार्थनमय और सबको आनन्द देनेवाले वातावरण के बीच जानकीबहन के हाथ गरम पानी और शहद लेकर उपवास समाप्त किया । इस मौके पर विनोबाजी ने तुकाराम के वे भजन गाए जो आध्यात्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति के सम्बन्ध में थे । उसके बाद शिवाजी ने भी भजन गाया और बालकोबा ने 'हरिनो मारग' गाया । इसके पश्चात डा० दत्त ने कोरिन्थियन के प्रेम की शक्ति-सम्बन्धी पद्य सुनाए । अमतुस्सलाम ने कुरान की आयतें पढ़ीं । अणे ने अपनी कविता का पाठ किया । तब आपका तार बापू के हाथ में दिया गया । रामधुन के बाद अनशन समाप्त हुआ । बापू भावातिरेक के कारण कुछ न बोल सके । उनकी रात आराम से नहीं गुजरी और उन्हें चक्कर आते रहे । ब्लडप्रेशर (रक्तचाप) उपवास की पूरी अवधि में सबसे अधिक १९० और १०० रहा; नाड़ी ७२, टेम्परेचर (शरीर का तापमान) ९८ और वजन ९४ पौंड ।[1]

महादेव

: १३१ :

चि. जमनालाल,

१५-८-३४

उपवास के बाद यह पहला पत्र लिख रहा हूं । मजे में हूं । आज दूध लिया है । ब्लडप्रेशर अच्छा है । इसलिए मेरी चिन्ता न करो । जानकीबहन जबतक रहना चाहें तबतक उन्हें रहने दो । ओम् को ज्यादा दिन तक वहां रखने की शायद जरूरत न हो । महादेव और मदनमोहन आवें तो आने दो । उनका

---

१. अजमेर में अस्पृश्यता-निवारण के सिलसिले में हुई सभा में एक सनातनी स्वामी लालनाथ पर किये गए हमले के कारण दुखी होकर गांधीजी ने यह उपवास किया था। इस सभा में गांधीजी उपस्थित थे । यह उपवास वर्धा में ७ से १४ अगस्त तक हुआ था ।

जाना मुझे आवश्यक मालूम हुआ है। भले ही लौट सकें तो वह कल वापस लौट आयें। यहां परेशानी नहीं होगी। अतः हृदय में राम को अंकित करके क्लोरोफार्म लेना। सब कुशल है। ईश्वर को तुमसे अभी बहुत सेवा लेनी है। बहुत अर्पण कराना है।

बापू के आशीर्वाद

: १३२ :

१६-८-३४

चि० जमनालाल,

आपरेशन का तार अभी-अभी मिला। जानकीमैया के ऊपर से चिन्ता का पहाड़ उतरा। मेरी चिन्ता न करना। मुझे आराम है। खाना खाया जाता है। मैं जल्दी से वहां दौड़ आऊं, ऐसा नहीं है। पूरी ताकत आये बिना अन्यत्र कहीं भी न जाऊंगा। इसलिए निश्चिन्त रहकर स्वास्थ्य-लाभ करना।

बापू के आशीर्वाद

: १३३ :

चि० जमनालाल,

१९-८-३४

तुम्हारी गाड़ी ठीक चलती जान पड़ती है। घाव भरने के सम्बन्ध में अधीर न होना। समय पर अपने-आप भर जायगा। काम करने की चिन्ता में कतई न पड़ना। बातचीत बिल्कुल नहीं की जा सकती। कुछ खास कहना हो तो लिखकर कहा जाय। इस नियम का पालन करने से बहुत फायदा होने की सम्भावना है।

यहां की चिन्ता बिल्कुल न करना। मुझे कोई तकलीफ नहीं देता। बहुत काम नहीं करता हूं। वजन ९६ हो गया है। तुम्हें आश्रम की चिन्ता कतई नहीं करनी है। मदनमोहन वहीं रहे।

बापू के आशीर्वाद

यह तो सवेरे ४ बजे लिखा गया था। उसके बाद कमलनयन आया। जिस बाजू में जख्म है, उधर करवट लेकर न सोना अच्छा होगा, ऐसा डाक्टर कहते हैं; तो सुख-दुख से एक करवट अथवा चित्त होकर सोना ही अच्छा है।

: १३४ :

२०-८-३४

चि० जमनालाल,

कल विनोवा के रवाना होने के बाद डा० जीवराज का बहुत अच्छा तार मिला। उससे मालूम हुआ कि फिर खून की शिकायत नहीं हुई और दर्द भी कम हुआ था। फिर भी ठीक हुआ जो विनोवा वहां डुबकी लगाने चले गए। उनके जाने में कारण कमलनयन है, यह तो जाना होगा। कमलनयन खुद तुम्हारी शनिवार के दिन की तकलीफ देख कर घवड़ा गया; इससे यहां पहुंचते ही महादेव के द्वारा उसने मुझे कहलाया। मैंने सूचना का स्वागत किया और विनोवा को खबर भेजी। वह तुरन्त तैयार हो गए। मदालसा की भी इच्छा हुई, परन्तु वह तो भक्त है न? इसलिए विनोवा की मंशा देखकर रुक गई। उसका संयम उसे फलेगा। रह गई सो ठीक हुआ। अब यदि दर्द मिटा हो और चित्त शान्त हुआ हो तो विनोवा को जल्दी मुक्त कर देना। परन्तु जरूरत हो तबतक वह भले ही वहां रहें। यहां का तंत्र व्यवस्थित हो रहा है। विनोवा उसीमें रात-दिन व्यस्त रहते हैं।

विद्याभ्यास-सम्बन्धी तुम्हारी प्रतिज्ञा का पालन अवश्य होगा। तुमको आश्वासन देने के लिए इतना लिख दिया है। इसकी चर्चा विनोवा के साथ करने की जरूरत नहीं। इस समय तुमको इस बात की साधना करनी है कि तुम्हारा शरीर जल्दी अच्छा हो जाय। यहां की अथवा दूसरी और कोई भी चिन्ता अपने ऊपर लेने की जरूरत नहीं। मेरी तो बिल्कुल ही न करना, क्योंकि मेरी गाड़ी अच्छी तरह चल रही है। राधाकिसन और शिवाजी बहुत अच्छी तरह पहरा दे रहे हैं। तुम बहुत नहीं बोलते होगे। डाक्टर जो छूट दे उसका उपयोग कंजूसी से करने में ही हित है। डा० जो चाहें वह अगर धर्म-विरुद्ध न हो तो करना चाहिए। हमारी इच्छा के अधीन होकर कोई छूट दे तो वह दूसरी बात है।

बापू के आशीर्वाद

: १३५ :

२१-८-३४

चि० जमनालाल,

तुम्हारे बारे में कल तो सुन्दर खबरें ही मिलती रहीं। शाम को डा० जीवराज और डा० रजबअली का संयुक्त तार मिला। अब अगर इसी तरह प्रगति जारी रहे तो बहुत जल्द आराम हो जाना चाहिए। लेकिन जल्दबाजी नहीं करनी है। जैसा चलता हो वैसा भले ही चले। काम में जुटने की जल्दी न करना। ओम् से कहना कि आज वहां से डाक बिल्कुल नहीं आई। शायद आज तार आयगा।

डा० रजबअली को मेरा वन्देमातरम् वगैरह कहना। वह जितना ध्यान दे रहे हैं उसके लिए मैं क्या कहूं? डा० जीवराज के लिए एक पुर्जा साथ है।

बापू के आशीर्वाद

: १३६ :

चि० जमनालाल,

२३-८-३४

तुम्हारा, ओम् का, जानकीमैया का तथा मदनमोहन का पत्र मिला। विनोबा से समाचार जाने और अभी-अभी डा. शाह का तार भी मिला। इससे अब तो ऐसा ही मानना चाहिए कि थोड़े दिन में ही जख्म भर जायगा। परन्तु तुम हवाई किले न बांधना। वहां का सब काम धीरज के साथ पूरा करना। किसी तरह की जल्दी नहीं है। चिन्ता भी नहीं है। यहां राधाकिसन सब बात का ठीक इन्तजाम कर लेता है। और मेरी रखवाली तो वह तथा और दूसरे कई लोग कर रहे हैं।

जिस वाक्य के साथ 'विनोद' लिखना पड़े उसे क्या विनोद कहेंगे! जानकी मैया चिल्ल-पुकार मचा दे यह अच्छा या तुम मन में सबकुछ दबाकर सपने देखते रहो यह अच्छा? जानकीमैया चिल्लपों मचा देती है तो इससे हम समझ जाते हैं कि उसे बड़ा दुःख है और तुम मन में समझ लेते हो तो हम लोग धोखे में पड़ जाते हैं। कहो अब कौन बढ़कर है?

बापू के आशीर्वाद

: १३७ :

२५-८-३४

चि. जमनालाल,

मैं देख रहा हूं कि तुम्हारा काम ठीक अश्ववेग से चल रहा है। बीमार लोग तो बादशाही ही भोगते हैं न ? बीमारी का यही आस्वाद है। पर जब बीमारी बेचारे दरिद्रनारायण के भाग में आती है तो उसके भाग उतना स्वाद नहीं आता।

इसके साथ डा० शाह का पत्र है। ओम् का तो है ही।

यहां सब ठीक चल रहा लगता है।

बापू के आशीर्वाद

: १३८ :

चि. जमनालाल, वर्धा, ८-९-३४

तुम्हारे पत्र आते रहते हैं और खबर तो मिलती ही रहती है। ईश्वर का पूरा अनुग्रह मालूम होता है कि डाक्टरों की धारणाओं से भी जल्दी जख्म भर रहा है। जल्दी बिल्कुल न करना। जख्म पूरा भर जाने पर ही वहां से निकलना है। सिंहगढ़ का विचार मुझे पसन्द है। मेहता की मदद भी मिलती रहेगी। सिंहगढ़ की हवा तो उत्तम है ही। पानी खूब हलका है, इससे पूरा लाभ मिलेगा। दूर भी नहीं कह सकते।

बात-चीत ज्यादा न करना। करना भी पड़े तो पूरी आवाज से नहीं, बल्कि बहुत धीमी आवाज से। आवाज निकालने का असर कान पर पड़े बिना रहता ही नहीं।

दाल-भात छोड़ने से जरूर लाभ होगा। दूध पर अधिक आधार रखना। दही खट्टा बिल्कुल नहीं होना चाहिए। जैसे-जैसे इजाजत मिलती जाय कसरत खूब बढ़ाते जायं। चिन्ता तो बिल्कुल मत करना। ऐसा करने से कान के फायदे के साथ दिमाग भी तरो-ताजा हो जायगा।

मालवीयजी आज आ गए। राधाकान्त भी साथ है। आसफअली और खलीक आ गए हैं। और लोग कल आयंगे।

खानभाई खुश रहते हैं। रोज सुबह घूमते हैं और शाम को ४ से ५

बजे का समय देता हूं। धीरे-धीरे बातें हो रही हैं।

मेरे सम्बन्ध में पगली की बात तो सुनी होगी। उसमें मैं तुमको नहीं डालना चाहता। बाद में जब बिल्कुल अच्छे हो जाओ तब जो टीका करनी हो सो करना। मुझे तो लगता है कि तुमको यह सब अच्छा लगेगा।

ओम् मेरे पास ही रहती है। आवश्यक मदद करती है। सच पूछो तो एक या दो लड़की का काम चार या पांच लड़कियों में बँट गया है। इससे सबके हिस्से में थोड़ा-थोड़ा आता है। और प्रभावती कहां ऐसी है जो दूसरों को बहुत करने दे। फिर मदालसा तो अपना हिस्सा बँटाने आती ही है।

राधाकिसन तुम्हारे सुझावों के कारण इतना चिन्तित रहता है कि मुझ पर ठीक-ठीक पहरा रखते हुए भी घबराता रहता है। मैं जल्दी तो उठ ही जाता हूं। अधिक सोने की जरूरत नहीं रहती और मेरा काम निपट जाता है तो मन हलका रहता है। वजन अब धीरे धीरे ही बढ़ेगा। खुराक में वृद्धि करने की गुंजाइश नहीं। जो है उससे धीरे-धीरे बढ़ेगा। वही ठीक है। ताकत बढ़ती रहती है। दिन में सो लेता हूं। रात को ८ बजकर ४५ मिनट पर और ज्यादा-से-ज्यादा ९ बजे चारपाई पर चला ही जाता हूं। इस तरह मैंने अपनी तबीयत के बारे में उलहना मिलने जैसी बात नहीं रक्खी। तुम्हारे आने तक और उसके बाद भी यहीं रहूंगा। बिना कारण यहां से खिसकना नहीं है।

एंडरूज फिर रविवार को आ रहे हैं।

कुमारप्पा २० दिन की छुट्टी लेकर आये हैं। इनको फिर तुरन्त वापस भेज दूंगा। यहां मंगलवारको आवेंगे।

कन्याओं का ठीक चल रहा दीखता है। विनोबा ही सबकुछ देखा करते हैं। इसलिए मुझे किसी में हाथ डालने की जरूरत नहीं रहती।

बापू के आशीर्वाद

आसाम के बारे में लिखना रह गया। वहां कांग्रेस के लोगों को जानते हो तो उन्हें आसाम के रुपये भेज देना। यदि न जानते हो तो ज्वालाप्रसाद को भेज देना। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी वहां काम करती है। उसमें यह रकम मिलाई जाय। तुमको जैसा उचित लगे वैसा करना।

: १३९ :

सितम्बर, १९३४

चि० जमनालाल,

माधवदास वांकेभाई को ५००) दिये थे, यह तुम्हें याद होगा। उसे तो मिल गए। उनमें से ३२५) ठक्कर बापा के पास से उस वक्त दिलाये थे, बाकी के दुकान से लिये जान पड़ते हैं। अब ठक्कर बापा को यह ३२५) पहुंचा देने चाहिए। यह हुंडी उसे भिजवा देना। विवरण में "गांधी कोष ३२५, बम्बई, दिये थे। उसका हिसाब चुकता"—लिखा देना।

बापू के आशीर्वाद

राजेन्द्रबाबू सोमवार या मंगल को आ रहे हैं। तभी एंडरूज़ भी।

: १४० :

वर्धा, २७-९-३४

चि० जमनालाल,

वल्लभभाई खबर देते हैं कि तुम...में कपड़े की मिल का सौदा करना चाहते हो।[1] तुम यानी तुम्हारी कम्पनी। मुझे इससे आघात तो पहुंचा ही। जो इतनी गहराई तक खादी में उतरे हैं वह मिल के मालिक बनेंगे, यह बात अनहोनी-सी लगी; फिर भी मैं निश्चय नहीं कर सका कि क्या लिखूं। इतने में कल जानकीमैया आई। मध्यमा की परीक्षा दे चुकी हैं इससे मन हल्का है। उन्होंने जब से यह सुना है तबसे उन्हें भी चैन नहीं पड़ी है। वह पूछती हैं कि यह बला किसके लिए? लड़के भी पसंद नहीं करते। नौकर कहते हैं कि अब तो घर की ही मिल होगी, इसलिए सेठजी खादी पहनने को थोड़े ही कहेंगे? यह कार्य किसीको पसंद नहीं है, इसलिए

---

१. जमनालालजी कई कारणों से (जिनमें एक मुख्य कारण यह भी था कि मजदूरों की स्थिति गांधीजी के आदर्श अनुसार रखकर मिल का संचालन क्यों न किया जाय) अपनी कंपनी की तरफ से एक कपड़े की मिल का सौदा करने को किसी प्रकार राजी हो गए थे। पर उनके मन में दुविधा बनी रही। जमनालालजी की डायरी से पता चलता है कि मिल न लेने का अंतिम निर्णय इस पत्र के पहुंचने से पहले ही वह कर चुके थे।

मिल का विचार छोड़ देना। यदि सौदा हो गया हो तो नसीब में आ पड़ा यह समझकर करना। भागीदारों को लेना हो तो वे भले लें। यदि तुम धंधा ही चाहते हो तो बहुत-से व्यवसाय पड़े हैं। परोपकार के लिए ज्यादा कमाना चाहते हो तो परोपकार के बिना हम चला लेंगे। ओम् कहती है कि "आप कांग्रेस के लिए धन चाहते हैं। क्या इसलिए काकाजी को मिल खरीदने की प्रेरणा कर रहे हैं?" इन सबको क्या जवाब दूं? यदि हो सके इस विचार के छोड़ देने की खुशखबरी तार से देना

बापू के आशीर्वाद

: १४१ :

चि० जमनालाल, वर्धा, ५-१०-३४

तुम्हारे पत्र मिले। मिल की झंझट स अच्छे बचे। इस बाघ के डर से यहां जानकीमैया और बालकों के मन का सुन्दर अनुभव मिला। सब व्याकुल हो गए थे, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। यह वृत्ति कायम रहे, ऐसी आशा हम सदा करें।

जबतक डाक्टर वहां से बिलकुल मुक्त न करें तब तक वहां से हिलना ही नहीं है।

जितनी हो सकेंगी उतनी बातें यहां करेंगे। बाकी कांग्रेस में और उसके बाद। कांग्रेस के बाद तो फिलहाल वर्धा ही लौटना होगा। कांग्रेस के बाद तुरन्त नई बात करने का कुछ सोचा ही नहीं है। इसका विचार तो यहीं होगा।

यहां का चल रहा है। कमला को पत्र लिखते रहते होगे? आजकल तो वहां खुर्शेद बहन हैं। उनको लिखो तो भी चलेगा।

बापू के आशीर्वाद

: १४२ :

चि. जमनालाल, ७-११-३४

तुम्हारी चिट्ठियां आती रहती ह। कान का काम पूरा हुआ, ऐसा नहीं समझना चाहिए। मुझे और अधिक विवरण भेजना। अच्छा ही हुआ कि तुम वहां समय पर पहुंच गए।

दिमाग पर काम का बोझ न पड़ने देना। काम की दृष्टि से तुम्हारा

वम्बई रहना मुझे अच्छा नहीं लगता । सैंकड़ों लोग वहां आते-जाते रहते होंगे । किसी भी तरह की चिन्ता में घिरना ही नहीं ।

महिलाश्रम के विचार में न पड़ना । उसके बारे में मैं विचार कर रहा हूं । राधाकिसन तो उसमें गुंथ ही गया है । भागीरथी के साथ बातें की हैं । फिर करूंगा । उस (संस्था) की गिरावट का तो सवाल ही नहीं है ।

ओम् के बारे में मुझे कुछ चिन्ता रहती है । जो करो वह उससे पूछ कर करना । इसके साथ उसका पत्र है ।

२७वीं तारीख को गांधी-सेवा-संघ की सभा की बात अबतक तय ही है न ? उसमें फेरफार करना हो तो करना । अगर वहां ज्यादा रुकना पड़े और डाक्टर एक सप्ताह की छुट्टी दे तो यहां आकर वह मीटिंग कर लेना ।

टहलने जाते हो क्या ? खाने में सावधानी है ? गड़बड़ चीजें खाते हो तो छोड़ देना । यह हजम करने में दिमाग की शक्ति काफी परिमाण में क्षय हो जाती है । खुली हवा और कसरत करना बहुत आवश्यक समझना । नींद तो बराबर आती होगी ।

खानसाहब के लड़के गनी को शुगर फैक्टरी में काम करने की इच्छा हुई है । अभी तनखाह की बात नहीं है । उसे तो गढ़ने-गढ़ाने की ही बात है उसे कहीं अनुभव दिलाया जा सके तो दिला देने की जरूरत है । विचार करके लिखना ।

बापू के आशीर्वाद

: १४३ :

चि० जमनालाल

१२-११-३४

तुम्हारे कान का मामला लम्बा जा रहा है, यह मुझे अच्छा नहीं लग रहा है । मैंने डाक्टरों को खत लिखे हैं ।

जयप्रकाश बीमार जान पड़ते हैं । वह प्रभावती को अहमदनगर ले जाना चाहते हैं । अगर वह जाय तो अभी ही जाय, यह आश्रम की दृष्टि से ज्यादा अच्छा है । इसलिए अगर जयप्रकाश की इच्छा हो और तुम छुट्टी दो तो विनोबा से इजाजत लेकर उसे वहां भेज दूं । आज भी वह पूरी तौर से काम में जुट गई है ।..

बापू के आशीर्वाद

: १४४ :

१९-११-३४

चि० जमनालाल,

तुम्हारी वर्षगांठ का पत्र मिला। तुम्हारा कल्याण ही है। तुम्हें बहुत जीना है, खूब सेवा करनी ही है। वर्धा के बगीचे के बदले राधाकिशन के पास से सस्ती जगह की खबर प्राप्त हुई है। वह चलने जैसी है।

बापू के आशीर्वाद

: १४५ :

२२-१२-३४

चि० जमनालाल,

तुम्हारे कान के विषय में अभीतक कोई खबर क्यों नहीं? किशोरलाल और गोमती ने बिस्तर पकड़ लिये हैं। गोमती ठीक है। किशोरलाल को अभी बुखार है, मगर उतार पर है। उद्योग-संघ को बगीचे में ले जाने की तैयारियां हो रहीं हैं। मकान के ऊपर दो कोठरियां बनाने की तजवीज है। एक बनाने की बात राधाकिसन ने की थी। अब दो की चल रही है। लगभग दो हजार के खर्च का सवाल है। ऐसा जरूरी नहीं है कि यह किया ही जाय। इसका सही उपयोग तो चौमासे में होगा। दिन में तो मैं नीचे पड़ा रह सकता हूं। रात को अवश्य ऊपर सोने जाऊंगा। ऊपर की कोठरियां तो भविष्य की दृष्टि से ही बनानी चाहिए। बात निकली तो मुझे 'हां' कहने का प्रलोभन हुआ। तुम इनकार कर दोगे तो काम बन जायगा और दो हजार रुपया बच जायगा। पर अब वे कहां तुम्हारे रहे हैं। यह लिखते समय मन में यह विचार आ जाता है कि ऊपर मकान बनवाने को फिलहाल मुझे ही दृढ़तापूर्वक मना करना चाहिए। ऐसा ही होगा। इसलिए ऊपर का लिखा रद समझना।

स्वरूपरानी की ओर से कृष्णा फिर धीमे-से प्रभा की मांग कर रही है। मैंने तो लिखा है कि प्रभा इस तरह काम में लग गई है कि उसे मुक्त नहीं किया जा सकता; परन्तु वहां से किसी दूसरी बहन को

भेज सकते हैं। उसको एक साथिन चाहिए और मैं मानता हूं कि ऐसी कोई बहन मिल सकेगी। तुम्हारी हिम्मत पड़े तो तुम स्वरूपरानी को तसल्ली देना। नहीं तो यह बात मुझ तक ही रहने देना।

बापू के आशीर्वाद

: १४६ :

वर्धा, २४-१२-३४

चि० जमनालाल,

गंगाधर राव के बारे में तुम्हारा पत्र मिला है। यह सवाल मुश्किल है। मुझे ऐसा लगता है कि इस तरह पैसा नहीं दिया जाना चाहिए। पर गंगाधर राव के साथ बात किये बिना निर्णय नहीं दे सकता। मैं उन्हें लिखता हूं। इसी आशय का पत्र जायगा।

गंगाधर राव का पत्र इसके साथ वापस भेजता हूं।

कान पूरी तौर से दुरुस्त करा लेना।

कमलनयन की कोलम्बो जाने देने की बात से तो वाकिफ होंगे ही।

अब्दुलगनी के बारे में खानसाहब से बात की है। वह गनी को लिखेंगे। खर्च जो होगा वह खुद देने को कहते हैं। गनी को उसके टान्सिलस के कारण दिल्ली बुलाया है। खानसाहब वहां जा सकेंगे या नहीं, यह निश्चित नहीं है। पंजाब में भी नहीं जा सकते, ऐसा हुक्म है। दिल्ली जाते हुए कुछ पंजाब के स्टेशन बीच में आते हैं, उनमें से होकर गुजर सकते हैं या नहीं, यह सवाल है। पंजाब-सरकार को तार किया ह।

मदनमोहन हो तो कहना कि अपना सरहद का अनुभव लिख भेजे। मेरे साथ बात ही नहीं हो सकी।

बापू के आशीर्वाद

यह हुक्म रद हो गया, ऐसा तार आज आगया।

: १४७ :

२६-१२-३४

चि. जमनालाल,

तुम इस समय दो कोठरियां वनवाने का आग्रह न रखना। मैंने सोच समझकर ही मना किया है। सवकुछ ट्रस्ट ही है न? कौड़ी-कौड़ी करके वचाने से ही वरकत रहती है। भले ही खानगी दुकान हो या दरिद्र-नारायण की। दरिद्रनारायण की दुकान में तो और भी अधिक सावधानी चाहिए। मगनलाल स्मारक का मसविदा नहीं वना सका। भरसक कोशिश तो करूंगा।

अभ्यंकर वच जाय तो वड़ा अच्छा हो। उनसे जव मिलो तो कहना कि मैं उन्हें वहुत याद करता हूं।

खानसाहव मेरे साथ दिल्ली आ रहे हैं। मेहर तो साथ होगी ही। मेहर का भी ठीक चल रहा है। आजकल यहां आनंद के पिता और वैकुंठ मेहता हैं। आनन्द के पिता दुनिया की यात्रा करके आये हैं। उद्योग-संघ में वहुत दिलचस्पी लेंगे। वापू के आशीर्वाद

: १४८ :

दिल्ली, ७-१-३५

चि० जमनालाल,

दिल्ली की ठंड ज्यादा काम करने के वदले थोड़ा काम करने देती है और 'काम तो' आ पड़ा है ढेर-सा। अभ्यंकर को तुमने लिखा, वैसा ही हुआ है। उसका अभाव जरूर खटकेगा।

तुम्हारा कान विल्कुल ठीक होने में काफी समय लगता दिखाई देता है। नहीं आ सके तो कोई हर्ज नहीं। कान के ठीक होने में रुकावट होनी ही नहीं चाहिए। जवतक सीलोन में मलेरिया का जोर चल रहा है तव तक कमलनयन को वहां नहीं भेजा जा सकता।

ओम् का कान वहा करता है। मैंने गत सप्ताह वम्वई जाकर दिखाने के लिए तार किया था। वह अभी तक वहां आई नहीं लगती। उसे वुलाकर दिखा दो तो ठीक हो।

लाली का तो चल पड़ा।

मेहर का कठिन है। जब से आई तब से डा० अन्सारी के यहां ही है। एक दिन मुंह दिखा गई थी। आश्रम के प्रति घृणा पैदा हुई है। यहीं छोड़ जाना पड़ेगा। यह ठीक है कि डा० साहब की धर्मपत्नी आ रही हैं। शायद उनके साथ रहेगी। मेरी इच्छा तो २२ तारीख को वर्धा पहुंचने की है। २९ वीं को तो जरूर ही पहुंचूंगा। आज शंकरलाल और गुलजारी-लाल आये हैं।
वापू के आशीर्वाद

अपने कागज-पत्र आदि जांचने के लिए लाने को रामदास का विचार वारडोली लखतर जाने का है। किराये आदि का खर्च दे देना।
वापू

देवशर्मा मिल गए हैं। वह कहते हैं कि जो खर्च आज शैल-आश्रम में हो रहा है, उतना उन्हें मिले तो कब्जा लेने को तैयार हैं। इसके वारे में लिखना।

: १४९ :

१४-१-३५

चि० जमनालाल,

तुम नहीं आ सकोगे, यह समझा। जबतक डाक्टर इजाजत न दें तब-तक वहीं रहना ठीक है। वहुत उपाधि मोल न लेना।

रामदास को मणिभवन में रखने की मणिलाल की इच्छा कम है, ऐसा रामदास को प्रतीत होता है। अतः वहां से उसका चला जाना ठीक ही है। अव वह अलग कमरा लेकर रहना चाहता है। उसका किराया २५ रु० तक होगा, जिसकी उसने मांग की है। मैं समझता हूं कि वह उसे लेने दें। यह सव अनुचित तो मालूम होता है, किन्तु रामदास की वीमारी ही ऐसी है कि उसके विषय में अनुचित उचित मालूम होता है। इसमें पिता का मोह कहां-तक मुझे गलत रास्ते ले जाता होगा, सो नहीं कह सकता। रामदास की इस मांग में यदि तुमको दोप मालूम होता हो तो उसके अनुसार उसे कहने का अधिकार तुमको वर्षों पहले मिल चुका है। जैसा ठीक मालूम हो वैसा करना।
वापू के आशीर्वाद

: १५० :

२६-१-३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। खानसाहब आज यहां हैं। तुम्हारा तार पढ़ा दिया है और उसपर से आशीर्वाद का लम्बा तार भेजा है, मिला होगा। तुम विवाह का संयोजन करने की विशेषता ठीक हासिल कर रहे हो, ऐसा लगता है। यह विवाह तो इतिहास में रह जायगा। वेचारी सोफिया को तो कभी यह विचार भी न आया होगा कि वह पठान से व्याह करेगी। न सोचा होगा सादुल्ला ने कि वह खोजी को व्याहेगा। तुम्हारी पसन्द मुझे तो वहुत जंच गई है। दोनों सुखी होंगे और सोफिया चाहे जितनी सेवा कर सकेगी। हम सव मंगलवार को वर्धा पहुंचेंगे। साथ में कोई नए तो नहीं होंगे। चन्द्र त्यागी की वलवीर के साथ सगाई हुई थी। वह लड़की भली है। दोनों मेरी (मेरी नाम की दो वहनें) तो वेतुल उतर जायंगी।

ऐसा जान पड़ता है कि सरदार, राजाजी, राजेनवावू को ८ फरवरी तक रुकना पड़ेगा। इतने में विल पर भी चर्चा हो जायगी।

कमलनयन सीलोन जाने के लिए अधीर हो गया है; पर जरा रोकने की जरूरत है।

वापू के आशीर्वाद

: १५१ :

दिल्ली, २६-१-३५

मु० जमनालालजी,

साथ का पत्र लिखे जाने के वाद वापू ने कितनी ही और वातें लिखने को कही हैं। वे लिखता हूं। आज वनारस से सुमंगल प्रकाश आये थे। उन्होंने वापूजी को खवर दी कि ...से अव उन्होंने विवाह करने का विचार किया है। उनके वाप का भी विचार है कि उनका विवाह वैश्य जाति में कर दिया जाय, और यह सूचित किया है कि वापू का आशीर्वाद मिले तो ... के साथ ही विवाह-सम्वन्ध हो। वापू पहले तो इस सम्वन्ध के विरुद्ध थे। वह इसीलिए विरुद्ध थे कि... वड़े आदर्शों पर चलने वाली थी, पर अव जव खुद ही कवूल कर लिया है तो उसमें वापू को

कोई आपत्ति हो ही नहीं सकती। यहां वल्लभभाई थे। वह भी चाहते हैं कि यह सम्बन्ध तुरन्त जुड़ा दिया जाय।

अब बापू आपकी राय मांगते हैं। मुझे तथा देवदास को भी ऐसा लगता है कि यह (सम्बन्ध) जुड़ा दिया जाय तो अच्छा। आपका पत्र आने पर बापू... को लिखेंगे। हम १९ तारीख की शाम को ग्रांडट्रंक एक्सप्रेस से वर्धा पहुंचेंगे।

लि० सेवक,
महादेव का प्रणाम

: १५२ :

३०-१-३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारे पत्र यहां पहुंचते ही मिले हैं। तुम्हारा कान तो बहुत परेशान कर रहा है। यहां सब चिन्तित हैं। घनश्यामदास भी फिक्रमन्द हो गए हैं। उन्हें अपने कलकत्ते के यहूदी डाक्टर पर बड़ा विश्वास है। उसका आपरेशन चुनीदा माना गया है। इससे भी वे आग्रह कर रहे हैं कि अगर कान फौरन ठीक नहीं हो सके तो उनके डाक्टर की सलाह ली जाय। मैंने डाक्टर जीवराज से विवरण पूछा है। तुम भी विचार कर लेना। अवधियां बढ़ती जाती हैं, यह अच्छा नहीं लगता। क्या तुम खुद चाहते हो कि जानकीदेवी वहां आजाय? उसकी इच्छा कल रात में थोड़ी-बहुत मालूम दी। उसे ऐसा भी लगा कि शायद तुम उसकी हाजिरी चाहते हो। ऐसा हो तो वह जरूर आना चाहेगी। मैंने तुम्हारे इस पत्र के जवाब की बाट देखने को सुझाया है। इसके जवाब में तार करना हो तो करना। दर्द की पूरी विगत सूचित करना।

अभी तो मैं यहीं हूं। तुम अभी यहां आने का विचार छोड़ देना। जब डाक्टर निश्चिन्त होकर इजाजत दे दे, तब आओ।

खाने के बारे में मेरा कहना मानो तो अच्छा है। दूध, फल चोकर-वाले आटे की रोटी। चावल, आलू वगैरह का त्याग। साग-सब्जी का सेवन। चाहे जब न खाना। निश्चित समय के अतिरिक्त आग्रहपूर्वक त्याग। एक वक्त पाकाशय पर जितना कम बोझ पड़े उतना ही अच्छा।

खाने के बारे में डाक्टरों की राय बहुत मानने जैसी नहीं है। उनका अनुभव इस बारे में भी बहुत ही कम होता है।

दुर्गाप्रसाद का रुपया तो अभी मैं ही भेजता हूं। मैंने तो भेज देने के लिए कह ही दिया था। मुझे बिल्कुल खबर न थी कि उन्हें बम्बई जाने के लिए रुपये की तंगी थी। बापू के आशीर्वाद

मेहरताज आखिर नहीं आई। लाली शायद देहरादून जायगा।

: १५३ :

२-२-३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र और तार दोनों मिले। जानकीदेवी आज रवाना हुई हैं। उनके साथ यह पत्र जायगा।

खाने के बारे में उनको भी समझाया है। उसकी मदद तो मिलेगी ही, इस विषय में मुझे जरा भी शंका नहीं है।

ओम् की चिन्ता रखने की जरूरत नहीं। अपने-आप रखूंगा।

जानकीदेवी का हृदय कमजोर है। उसकी जांच करा लेना। दवा तो वह नहीं लेगी, पर क्या है यह जान लिया जायगा। ट्रीटमेंट (इलाज) क्या देना चाहता है, यह भी मालूम हो जायगा।

रणछोड़भाईवाले रुपयों की रसीद उद्योग-मन्दिर द्वारा नारायणदास के नाम की अथवा जो ट्रस्टी हो उसके नाम की, तैयार करना। ट्रस्टी का नाम मैं भूल गया हूं।

मुझे तो अभी यहीं रहना है। मच्छर की मुझे कोई परेशानी नहीं है। छत पर तो जरा भी नहीं है। कल रात बरसात होने से नीचे सोया था। वहां भी कोई दिक्कत नहीं हुई। बापू के आशीर्वाद

: १५४ :

वर्धा, ६-२-३५

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। डा. जीवराज के पत्र से मुझे संतोष है। वह भोजन में परिवर्तन करना सुझाते हैं। मक्खन ज्यादा लेने को कहते हैं। उनके साथ

बात करके बढ़ाना जरूरी समझो तो बढ़ा देना। मुझे डर है कि तुम बातचीत बहुत करते होगे और कसरत कम। यदि ऐसा हो तो तुमको दोनों में सुधार करने की ज़रूरत है। मुझे विस्तार से लिखना।

कमलनयन के साथ बातें की हैं। मेरी निश्चित राय है कि यदि वह राजी हो जाय तो विवाह करके ही उसका विलायत जाना उचित है। परन्तु अपनी पत्नी को वह साथ न ले जाय। पत्नी को ले जाकर पढ़ सकना लगभग असम्भव है। विलायत में घर-गिरस्ती जोड़ना भी अनुचित है। हां, दोनों सैर-सपाटे के लिए जायं तो बात दूसरी। पर यहां तो सैर-सपाटे का सवाल है ही नहीं। मेरी राय इस प्रकार है। अभी सगाई कर ले। मलेरिया शान्त होने पर कोलम्बो जाय। एक परीक्षा तो पास कर ही ले। फिर विलायत जाय। जाने से पहले विवाह कर ले। थोड़ा समय संसार का सुख भोगना चाहे तो भोगे, परन्तु विलायत तो अकेला ही जाय। विलायत से भले आता-जाता रहे। कोलम्बो का अनुभव कमलनयन को ठीक काम आयेगा। उसका जीवन अभी अध्ययनशील नहीं बना। यह हो जाने पर फ़िर कोई कठिनाई नहीं रहेगी।

उद्योग-संघ में छः स्थायी ट्रस्टी नियुक्त किये हैं, उसमें तुम्हारा नाम लिखा है। यह आवश्यक था। अतः तुमको साधारण सदस्य बनाने की जरूरत है। इसका फार्म इसके साथ भेज रहा हूं, उसे भरकर लौटती डाक से भेज देना। इसमें संकोच का कोई कारण नहीं है।

बापू के आशीर्वाद

कृष्णदास सगाई के लायक होगया है। कोई लड़की तुमने निगाह में रखी है? हो तो लिखना।

बापू

: १५५ :

९-२-३५

मुरब्बी भाई,

ग्राम-उद्योग-संघ के सदस्य होने की प्रतिज्ञा के संबंध में बापू लिखाते हैं कि उन्होंने आपके विषय में पूरा-पूरा विचार करके ही दस्तखत करने की सलाह दी है। उन्होंने सबसे कहा भी है कि वह आपकी सही प्राप्त कर सकेंगे। अब यदि आप नहीं करेंगे तो उसका असर खराब होगा। वह

समझते हैं कि आपको सही करने में धर्मभीरु होने का कोई भी कारण नहीं है। आपने मानसिक त्याग तो पूरा-पूरा किया ही है, आपकी वृत्ति भी ग्रामीण ही है। आज इतना ही उनके लिए काफी है। इसलिए वह जोर देकर लिखाते हैं कि फिलहाल तो उसपर सही करके भेज दीजिए।

यहां आने के बाद मेरे साथ इस विषय में पेट भर के चर्चा कर लें और यदि आप मुझे समझा सकें अथवा मैं आपको समझा न सकूं तो फिर आपके सदस्यता से त्याग-पत्र देने में कोई आपत्ति न करूंगा। सदस्यता से जब चाहें इस्तीफा देने की इसमें छूट है। आपके बिना यह ट्रस्टी-मंडल बनाना उन्हें (बापू को) ठीक नहीं लगता।

किशोरलाल के प्रणाम

: १५६ :

वर्धा, २४-३-३५

चि० जमनालाल,

मदालसा काठगोदाम में तुम्हारे साथ हो ले, यह ठीक लगता है। इतने में उसके फोड़े का भी पता लग जायगा।

राजेन्द्रबाबू के विषय में व्यावहारिक बात ही करना। गिरवी या बेचनामा लिखाना। व्याज रखना। कम-से-कम रखना।

भवाली में तबीयत ठीक न रहे तो तुरन्त छोड़ देना। कमला को शाक का पार्सल भेजते थे। कमला लिखती है कि वह अच्छा नहीं था, इसलिए बन्द कर दिया है। शाक फल की तलाश करना।

बापू के आशीर्वाद

: १५७ :

वर्धा, १८-४-३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले। कुमारप्पा से पूछा। जब ये फार्म छपाये गए थे तब कोई अध्यक्ष नहीं नियुक्त किया गया था। खजानची तो थे ही। उनका नाम देना आवश्यक मालूम हुआ, इसलिए छापा गया। मुझे इसकी कोई खबर नहीं थी। कागज भी मैंने तुम्हारा पत्र आने के बाद मंगाकर

देखा। अव आगे जो फार्म छपाया जायगा उसम परिवर्तन करके छपाने की सूचना की है। इसमें कोई खास वात नहीं है।

कमलनयन सरहद में पहुंच गया, यह ठीक है। पत्रों में था कि उसे चोट आई है। पर उसमें कोई खास वात नहीं मालूम होती।

कमला का मालूम हुआ। कमला की इच्छा है कि जव वह जाने लगे तो वम्बई जाकर मैं उससे मिल आऊं। तुम वहां हो ही, सो मुझे सलाह देना।

कान कैसा रहता है, इस प्रश्न का उत्तर नहीं है। आज ठक्कर वापा आये हैं।

वापू के आशीर्वाद

: १५८ :

२३-४-३५

चि० जमनालाल,

कमलनयन के साथ मैंने काफी वातें कर ली हैं। सम्बन्ध जोड़ने के पहले जो··· वर्धा आजाय तो मैं भी उसे जरा जांच कर लूं, ऐसा लगता है। कमलनयन को भी यह वात जँची ह। इसलिए···को मैंने इस तरह का पत्र लिख दिया है।

तुम्हारा तार मिलने के पहले ही राधाकिसन को सीकर भेज चुका था, इसलिए तार नहीं किया।

कान का क्या हाल है? मदालसा कैसी है?

वापू के आशीर्वाद

: १५९ :

चि० जमनालाल वर्धा, २७-४-३५

कमलनयन यहां से इलाहावाद की ओर रवाना हुआ है। मैंने··· को लिखा है कि अगर वह यहां आजाय तो अच्छा हो। सम्बन्ध जुड़ने के पहले मैं उससे मिल लूं। रामकृष्ण मेरे साथ इन्दौर आया था। वहां उसे दो-तीन दिन के लिए गुलाव ने रोक लिया है। उज्जैन आदि आस-पास स्थान देख लेगा। आज उन दोनों को आना चाहिए।

प्रभावती के नाम व्रजकिशोरवावू का पत्र है। उन्होंने लिखा है कि

वह कहें तब बिहार जाय। इसलिए छुट्टी के दिनों के अलावा भी जाना पड़ जाय। प्रभावती ने लिख दिया है वह कि बुलावें तब जाने के लिए तैयार रहेगी।

चौधुरी यहां आया है। तुम्हारे बीच क्या बात हुई, मुझे पता नहीं है। उसके तथा वालुंजकर के कहने से मैं समझा हूं कि उसकी पत्नी को मेटरनिटी होम का काम करने के लिए तुम उसे सौ रुपया देने को तैयार हो। इस सम्बन्ध में तुम्हारे साथ मेरी बात हुई हो, ऐसा याद नहीं ह। चौधुरी ने मुझसे कहा, यह याद है। मेटरनिटी होम तो बनाना पड़ेगा और उस बगीचे में बनवाने पर शायद विचार करना पड़ेगा। तबतक पहले यह बाई सामान्य केस लोगों के घरों में जाकर देखे और ांव की बहनों से मिले वगैरह। होम शुरू करने के लिए तो खाट आदि का खर्च भी करना चाहिए। यह सब तो तुम आकर विचार कर देखो, तभी होगा। मूल बात तो यह है कि इस बहन को रखना है या नहीं। चौधुरी को सौ रुपये उ० संघ से नहीं दिये जा सकते। संघ तो उसे ज्यादा-से-ज्यादा २५) मासिक दे सकता है; क्योंकि उसकी कीमत कागजों के प्रयोग करने जितनी ही हो सकती है।

कमला को मिलने के लिए वम्बई झांक आऊंगा। रास्ते में मिलने जाना मुश्किल देखता हूं।

मदालसा वहां पहुंची होगी। मोटर-रेल का कुछ समय के लिए त्याग करो, यह मुझे अच्छा लगेगा।

बापू के आशीर्वाद

: १६० :

चि० जमनालाल, वर्धा, २८-४-३५

तुम्हारा पत्र मिला।

मदालसा भले ही उबाला हुआ दूध पिये और रोटी हजम हो तो खाय। अपने शरीर की संभाल रखकर जो जी में आवे वह खाय; पर चार बार से अधिक नहीं। बीच में भी कुछ नहीं। यह समझ में आ सकता है कि वह कसरत करेगी तो भोजन का परिमाण बढ़ेगा।

कान का मवाद बंद हुआ ? राजेन्द्रबाबू और राजा आज आगए। राजा बहुत थक गए हैं, इसलिए अब वह जा रहे हैं।

प्रोफेसर भी आ गए। बापू के आशीर्वाद

प्यारेलाल के विषय में तारादेवी को लिख चुका हूं।

: १६१ :

चि. जमनालाल वर्धा, १३-५-३५

तुम्हारा पत्र राधाकिसन के नाम मिला है। मेरा विश्वास है कि तुम्हें इस तरह के काम में पड़ने की कोई जरूरत नहीं है। यह काम अब लगभग समाप्त हो गया जान पड़ता है। तुम्हारा कर्त्तव्य वहां रहकर शरीर को पूरी तौर से स्वस्थ कर लेना है। जून के अन्त तक नीचे उतरना ही नहीं है। जो कुछ हुआ है वह विपरीत तो हुआ है, पर उसमें ऐसी उलझनें हैं कि बीच में पड़नेसे बहुत सार नहीं निकल सकता। जो कुछ हो रहा है उसे होते रहने देना ठीक है। दूर बैठे जो सलाह दी जा सकती है, वह हम दें।

इन्दौर से कुछ नहीं मिला, यह लिख चुका हूं। अब तुम्हें जिसको लिखना हो लिखो।

••• की बात समझा। मेरा पत्र उसे मिल गया होगा।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक यहां १८वीं को होगी। सदस्यों को बंगले में ठहराने के लिए राधाकिसन को कह दिया है। मदालसा का नियमित पत्र चाहिए।

बापू के आशीर्वाद

: १६२ :

वर्धा, १४-५-३५

चि० जमनालाल,

तुम्हें इन्दौर के बारे में वहां बैठे हुए भी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहां से कुछ आये, ऐसा नहीं लगता। साथ का पत्र पढ़ लेना। अपने जवाब की नकल भेजता हूं। मेरी तो किसीसे जान-पहचान है नहीं; तुम्हारे ऊपर उंड़ेल दिया है। उसमें भी कुछ नहीं हो सका तो समझ लेंगे सुलट गया। तुम्हें इसके लिए चिंता में नहीं पड़ना है। वहां बैठे-बैठे कुछ

हो सके—किसीको लिख सको तो लिखकर काम कर देना। इस समय ऐसा न हो सके तो इसे भूल जाना। वापू के आशीर्वाद

: १६३ :

चि० जमनालाल, वोरसद, २४-५-३५

तुम्हारा पत्र मिला है। इन्दौर की वात भार-स्वरूप न होने देना। जव नीचे उतरो तो वहां जरूर हो आना।

गंगादेवी की खवर मिलती होगी। वोरसद में सव ठीक है।

वापू के आशीर्वाद

: १६४ :

भवाली में मिला, ९-६-३५

चि० जमनालाल,

तुम नैनीताल में सवको ठीक मिल आये। मैं चाहता हूं कि तुम पूरे जून मास भर पहाड़ पर रहो। १५वीं के वाद का जो प्रोग्राम वनाया है वह ३० जून के वाद करना। कान अभी तक पूरे तौर से साफ नहीं हुआ, यह ठीक नहीं लगता। वम्वई खवर देते रहते हो? न दिया हो तो अव पूरा विवरण भेजो। वह (डाक्टर) क्या कहता है, यह जानना चाहिए। और इससे हाथ धोना हो तो भले हाथ धो ले। कान में से (मवाद) वहना वन्द होना चाहिए।

ओगिल्वी को पत्र लिखने में शायद जल्दी हुई हो। वह शरीर की दृष्टि से। उसकी 'हां' आ जाय तो मुझसे मिलकर उससे मिलने जाओगे, ऐसी आशा करता हूं।

डेन्मार्क के उस दोस्त का पत्र इसके साथ है। उसने तो अपना पता वम्वई का दिया है।

मेरी वहन कल आती है। मदालसा की प्रगति के वारे में तुम चुप हो।

कमलनयन गया। उत्साह तो ठीक था। गंगादेवी वगीचे में आ गई हैं। खानसाहव को खूव मिला। उनकी तवीयत कमजोर तो वहुत है। पर मजे में थे। इनसे मिले, यह वहुत अच्छा लगा। सवको वहुत याद कर रहे

थे। उन्हें नासिक या यरवड़ा बदलने को लिखा है। अब जो हो सो सही। अब्दुलगनी के बारे में कुछ चिन्ता जरूर थी।

उद्योग-संघ का (काम) धीमी गति से, पर नियमित रूप में चल रहा है। गढ़ा जा रहा है। बाकी सब ठीक है।

एंड्रूज़ शिमले में हैं। अपनी पुस्तक लिख रहे हैं। अधिकारियों से इस वक्त मिलना बन्द कर रखा है। बापू के आशीर्वाद

: १६५ :

वर्धा, ९-६-३५

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। दास के नाम पहुंच साथ में है।

वाइसराय को दो पत्र लिखे, जिनकी नकल साथ है। जवाब में 'न' आ गया है। अब ज़ब सबको क्वेटा से नीचे भेज दिया है तो उतरनेवालों की संभाल रखने के अलावा कुछ करने को नहीं रहता।

तुम नीचे उतरने में जल्दी न करना। इस महीने के अन्त तक तो वहां जरूर ही रहना। यहां तो अब भी (गर्मी के मारे) भट्टी सुलग रही है।

बापू के आशीर्वाद

: १६६ :

जुलाई, १९३५

पू. बापूजी,

पू. बा कहा करती थी मदूकी सिगड़ी कभी दूर नहीं होती है; सो खुश-खबरी है कि इस मास में पट्टा और सिगड़ी पास नहीं आये हैं। पर इस घर के लोग कोई भी सीधे नहीं बैठ सकते हैं। आठ वक्त नीची मुंडी करके प्रार्थना करती है, फिर सारे कार्य में कमर व मुंडी सीधी नहीं हो सकती। फोटो लें तो मालूम हो। उसकी आंखें भी नीचे झुक गई हैं सो पेट और छाती सीधे कैसे रहेंगे ? एक लकड़ी कमर में बांधकर सिर भी सीधा रखे तब इसके शरीर की ८ बांक निकल जांय। नाक रुका ही रहता है। बाकी सब ठीक है, माताजी (मदालसा) बीमार न पड़े वहां तक। दो रुपये के

कोयले जलाकर नाक-कान सेकेंगे पर एक रुपये का कपड़ा पहनकर सुखी होना पाप ! ऐसे ज्ञानियों को कौन समझावे ?

अष्टवक्रा के आठ वांक –

१. डेढ़ पैर होने से शौचादि को जम के नहीं बैठ सकती।

२. कमर का आगे झुकाव।

३. गर्दन की हड्डी बी.ए. के अभ्यासियों के माफक टेढ़ी, छाती फेफड़ा बीच में।

४. सीधे हवा कैसे लेनी ?

५. खाना खाकर भी पेट झुका के बैठती है।

६. आंख आपने ध्यान से नहीं देखी।

७. दांतों की दशा सुधरती है, पर आगे झुके हैं।

८. हाथ छोटेपन में उतरा था सो पूरा काम नहीं देता। सीधे, हाथ को छोड़कर सब सुधर सकता है। पर शरीर को आगे के बजाय पीछे झुकाने के तनाव से सीधा होगा।

आठ प्रार्थना –

१. बिस्तर में, उठते ही २. शौचादि के बाद प्रातः ३. नाश्ते के समय ४. भोजन के समय ५. गति के समय ६. शाम के भोजन के समय ७. शाम की प्रार्थना ८. बिस्तर में ध्यान।

आंख मीचकर कुछ भी करे, पर सिर झुकाने से सारा शरीर झुक जाता है। सो कुछ रोज दीवाल से टिककर अभ्यास करे, सीधे होने तक। यह पत्र विनोबाजी देख लें कहांतक ठीक है ? जानकी का प्रणाम

: १६७ :

वर्धा २१-७-३५

चि० जानकीबहन,

तुम्हारा पत्र सुन्दर है। तुम जो चाहती हो सो मदालसा से धीरज के साथ कराना। चिढ़कर कोई काम कराने का वक्त गया समझ लो। अभी तो दोनों वहीं रहना। पढ़ा जाय, उतना पढ़ना। लिखा जाय, उतना लिखना।

रणजीत और सरूप को अपने बच्चे मानकर रहना। बाकी तुम्हारी स्वतंत्रता पर कोई हमला कर सके, ऐसा तो है ही नहीं।

यहां सब ठीक ही है। ओम् अपने आपमें मस्त है और रामकृष्ण टिकट इकट्ठे करने में मजा ले रहा है। अब तो मेरे बगल में नहीं सोता है। वह ठीक ही है।

बापू के आशीर्वाद

: १६८ :

वर्धा,
३-८-३५

चि. जमनालाल,

तुम थैली के लिए द्रव्य एकत्र करने इंदौर जा रहे हो। इस सिलसिले में तुमने मुझसे तीन बातें जानना चाही हैं—(१) यह रुपया किस प्रकार खर्च किया जायगा ? (२) कोई अंकित दान इसमें लिया जाय या नहीं ? और (३) इसके खर्च के लिए कोई ट्रस्ट या कमिटी आप बनाना चाहते हैं या क्या व्यवस्था सोची है ?

इनके सम्बन्ध में मेरा खुलासा यह है कि मेरी मांग मुख्यतः दक्षिण भारत में हिन्दी-प्रचार के लिए हैं; किन्तु आवश्यकता देखकर दूसरे प्रांतों में भी जैसे बंगाल, आसाम, सिन्ध, गुजरात, पंजाब, आदि जहां हिन्दी भाषा का प्रचार या प्रवेश नहीं है, मैं इस रकम को लगाना चाहता हूं। इनमें से किसी प्रान्त के कार्य के लिए अथवा इस कार्य के लिए आवश्यक प्रचारक तैयार करने के लिए कोई दाता अंकित रकम देंगे तो थैलीके लिए उसे स्वीकारने में कोई आपत्ति न होनी चाहिए।

अब रही बात ट्रस्ट या कमिटी की। सो सब रुपया मिल जाने पर ट्रस्ट या कमिटी बनाकर अथवा किसी रजिस्टर्ड संस्था के द्वारा मेरी देख-रेख में रुपया खर्च करने का मेरा इरादा है।

बापू के आशीर्वाद

: १६९ :

वर्धा, १९-९-३५

प्रिय मुरव्बी जमनालालजी,

सफियाबहन का पत्र मिला। बापू कहते हैं कि खानसाहब को फिर मिलो तब उन्हें इतनी खबर देना। गनी के साथ बापू का पत्र-व्यवहार चल रहा है। उसका मामला मुश्किल है। लेकिन सब जायगा। इस समय उसकी तबीयत ठीक नहीं है। कलकत्ते में साज-संभाल और उसके डाक्टरी बिलों के रुपये यहीं से भेजे हैं। श्री निर्मलकुमार बोस की ओर से उसकी नियमित रिपोर्ट आती है। वह ठीक हो जायं तो तुरन्त ही उसे यहां बुला लिया जायगा। यहां खुर्शेदबहेन भी हैं। इनके साथ उसका मन लग जायगा, ऐसी आशा रखें। चाहे जो हो, खानसाहब जबतक जेल में हैं तब-तक उन्हें गनी की चिन्ता छोड़नी चाहिए। वली और आप यहां आयंगे तब आपके साथ मशविरा करने के बाद इस विषय में क्या किया जाय, इस का अधिक पता लगेगा।

आप सब मजे में होंगे। बिड़लाजी और सरदार यहीं हैं। बिड़लाजी थोड़े दिन रहेंगे। सरदार आज जा रहे हैं। मीराबहन का बुखार अब उतर गया है।

कमलनयन के पत्र आजकल नहीं आये हैं। वहां नियमित रूप में आते होंगे।

लि० स्ने०

महादेव के प्रणाम

: १७० :

वर्धा, २०-९-३५

चि. जमनालाल,

सुनता हूं कि तुम्हारे आने की तारीख आगे बढ़ती जा रही है। अलमोड़ा में रहने के लिए बढ़ रही है यह मुझे अच्छा लगता है। तुमको आराम करने की आवश्यकता है ही। वहां बैठे-बैठे भी तुम पूरा आराम ले सको यह सम्भव तो है नहीं। पत्र तो लिखने ही पड़ते हैं। लोग भी वहां मिलने-जुलने आते ही हैं, और वहां का काम तो है ही। यह होते हुए भी जो

परिश्रम यहां उठाना पड़ता है वह तो वहां नहीं ही है, इस कारण जाड़ा शुरू होने तक वहां रहो तो मुझे अच्छा लगेगा। फिर वहां के जाड़े की तो तारीफ है। इससे भी अधिक अच्छा जाड़ा शिमला का माना जाता है; और जाड़े में शिमला का रहन-सहन वर्धा से भी सस्ता होता है। बंगले मुफ्त के जैसे किराये पर मिल जाते हैं। साग-सब्जी, फल वगैरह-ढेर-के ढेर और सस्ते मिलते हैं। और दृश्य उत्तमोत्तम होते हैं। सर्दी लोगों की कल्पना में ही होती है। लाहौर में जितनी ठंड लगती है उसकी अपेक्षा वहां कम लगती है; इसलिए मैं तो तुमको सर्दी के दिनों की भी छुट्टी दे दूंगा। जहां बैठे रहोगे वहां से भी काम तो देते ही रहोगे। पूरा एक वर्ष शांति से अगर पहाड़ पर बिता दो तो मेरा खयाल है कि तुम्हारा कान का दर्द शान्त हो जायगा मदालसा का शरीर बिलकुल तैयार हो जायगा और जानकीमैया, हड्डियां न तोड़ लें तो, बढ़िया घुड़सवार बन जायंगी। चर्खा-संघ की सभा में तुम उपस्थित रहो, ऐसी मेरी इच्छा तो जरूर है; पर अगर तुमको संतोष हो जाता हो तो मैं तुम्हारी उपस्थिति के बिना भी काम चला सकता हूं। नई नीति के बारे में चर्चा तो खूब की है। तुमको जो कहना हो वह लिखकर भेज सकते हो। खादी-प्रतिष्ठान, मेरठ और कश्मीर के भंडार के विषय में विचार करने की बात हो तो इनके बारे में भी मेरे विचार बन चुके हैं। इस सम्बन्ध में तुम अपने अभिप्राय भेज सकते हो और फिर जो हो जाय उसे सहन करो।

उसके बाद कांग्रेस-कमेटी की मीटिंग का सवाल है। इसमें भी न आओ तो चलेगा। इन सबमें से मुक्ति इसी शर्त पर मिल सकती है कि तुमको किसी भी पहाड़ पर यह सारा समय बिताना चाहिए। अगर नीचे उतरते हो तो फिर दोनों बैठकों में शामिल होना, यह तुम्हारा धर्म हो जाता है। तुम जालंधर जानेवाले थे सो क्या नहीं गए ? राधाकृष्ण और सरदार ऐसा समझते हैं कि शायद तुम नहीं गए। सरदार को वहां जाना पड़ेगा। यहां सब ठीक चल रहा है। बालकोबा गौरीशंकर की देख-रेख में केवल दूध का प्रयोग कर रहे हैं। अब ठीक हैं। इसके साथ भगवानजी का पत्र है। तुमने जिस आदमी के लिए लिखा उसे मिलने को कह दिया है।

बापू के आशीर्वाद

: १७१ :

पूज्य जानकीमैया, वर्धा, १७-१०-३५

आपको पत्र लिखने का प्रसंग कभी आता ही नहीं। काम विना आप-जैसी को तकलीफ कैसे दी जा सकती है ? साथ का पत्र पढ़ लें या मदालसा से पढ़वा लें। ये भगवानजी सावरमती-आश्रम के एक पुराने सभ्य हैं। इन्हें कुछ दिनों आराम करना है और अलमोड़ा जाना है। आपके वहां के मकान में एक आदमी का इन्तजाम हो सकता है क्या ? यह रहेंगे तो आपका थोड़ा-वहुत काम भी कर देंगे। वहुत भले, नम्र और परोपकारी आदमी हैं। यह अपने लिए तो केवल फल और दूध ही लेंगे और वह अपना ही खर्च कर लेंगे। इनके लिए रहने का इन्तजाम चाहिए। उत्तर लिखिए या लिखवाइएगा।

चि० मदालसा का वजन तो इतना वढ़ता होगा कि यहां आने पर हम उसे पहचान भी नहीं सकेंगे। रामकृष्ण को आशीर्वाद। वावला को उसके विना सूना-सूना लगता है। लि० से०

महादेव के प्रणाम

: १७२ :

१-११-३५

प्रिय जमनालालजी,

इसके साथ उस पॉल[१] का पत्र आया है, भेजता हूं। वे लोग तो आनेवाले ही हैं। पर मैं उसको लिखता हूं कि महात्माजी हाजिर नहीं ही हो सकेंगे, यह समझ कर आइए। पर ईसाई लोग इस सम्वन्ध में मुसलमानों जैसे ही हैं। होराभाई की गर्दन एक वार पकड़ाई सो पकड़ाई। छूटती ही नहीं। और आयंगे तो फिर वापूजी को तकलीफ दिये विना भी नहीं रहेंगे। लि० स्ने०

महादेव के प्रणाम

१. इन्टरनेशनल फैलोशिप संस्था के मंत्री। इस संस्था की मीटिंग वर्धा में २७ से ३१-१२-३५ तक हुई थी।

: १७३ :

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी, नासिक पहुंचते, १७-१-३६

यह पत्र नासिक पहुंचते-पहुंचते लिख रहा हूं। बापू की तबीयत अच्छी है। बातचीत करने में तो बीमार लगते ही नहीं। गाड़ी रवाना होते ही सरदार के मज़ाक शुरू हो गए। डाक्टर से बोले, "लो गाड़ी चलने लगी, अब बत्ती की स्विच बन्द करो।" और डाक्टर स्विच खोजने लगे। सब जोरों से हँस पड़े। तो बोले, "डाक्टर ! थर्ड क्लास में स्विच नहीं होती।" बापूजी सुबह पौने चार बजे उठे। अकेले ही प्रार्थना करके फिर सो गए। मैं और मणिबेन चार बजे उठे और यह समझकर कि बापू सो रहे हैं। हम दोनों भी प्रार्थना करके सो गए। सुबह पता चला कि बापू हमसे पहले ही प्रार्थना कर चुके थे। प्रार्थना के बाद तुरन्त जो सोये तो ५॥ बजे उठे। बाद में फिर सो गए। सरदार ६॥ बजे बापू से कहने लगे, बीमार आप हैं या हम ? आप तो लकड़ी की इस कड़ी पट्टी पर भी सो जाते हैं। आपको बीमार कौन कहेगा ? लकड़ी की इन सीटों पर हम नहीं सो सकते, इस कारण बीमार तो हमीं हुए न ?" इस तरह मज़ाक होते रहते हैं। डब्बा तो रिजर्व जैसा ही है; क्योंकि नासिक तक तो कोई आया ही नहीं। पर अब नासिक आगया है और यह पत्र आप को कल मिल सके इस हिसाब से डाक में डालना हो तो उसे नासिक में ही डालना चाहिए।

स्नेहाधीन

महादेव के प्रणाम

: १७४ :

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी, अहमदाबाद, २४-१-३६

आपका कृपा-पत्र मिला। आपको पत्र तो रोज लिखता लेकिन आप का हाल-चाल नहीं था, इसलिए महोदय को किशोरलालभाई के उन्हें लिखे गए पत्र आप वहां हों तो पढ़ा देने के लिए कहा था।

बापू की तबीयत में सुन्दर सुधार हो रहा है। ब्लडप्रेशर यहां आये तब कुछ बढ़ा था; पर वह मुसाफिरी की मेहनत के कारण ही था। शक्ति खूब आती जा रही है। विद्यापीठ की विशाल छत पर लगभग पहली ही

रफ़्तार से ४०-४५ मिनट दो वार में टहलते हैं। खुराक अधिक लेते हैं और कल अंबालाल के घर हाथ के दले आटे की बनी ब्राउन ब्रेड लेंगे, ऐसा अनुमान है। आप जरा भी चिन्ता न करें। जितना आराम आप वर्धा में देते थे उतना ही यहां दिया जा रहा है—सिर्फ कभी-कभी जो अपवाद आप कभी नहीं करते वह सरदार कर डालते हैं। लिखने-लिखाने का तो अभी वहुत-कुछ वन्द ही है; पर कल मुझे नोटिस दे दी है ··· मैंने वर्धा और वम्वई के डाक्टरों का आदेश अक्षरशः पालन किया, और अपना मन विल्कुल रिक्त—अवकाशपूर्ण रखा। पर अव मैं ऐसा नहीं कर सकता। मन काम करने लगा है और वक्त-वक्त पर मुझे सूचना देने का मन हो तो देते जाना पड़ेगा। भगवान की दया यही है कि अभी लिखने का साधन नहीं मांगा है।

पंडितजी के साथ कुछ वातचीत हुई है। वह तो खुद ही कहने लगे—मैंने तुम्हारे खत का जवाव नहीं दिया। इसीलिए कि जमनालालजी शायद इस ओर आयंगे। मुझे योगा को जमनालालजी के पास ले जाने में ज़रा भी अड़चन नहीं है। २८वीं तारीख़ को मुझे वुलाया है; पर जाने-आने में चार दिन वर्वाद होंगे। इसलिए हिम्मत नहीं होती। उनका यहां आना हो तव योगा के साथ वात करें तो कैसा? तो भी उन्हें पत्र लिखकर पुछवा लूंगा। और वहुत वातें हुईं, लेकिन उस विषय में इस पत्र में कुछ नहीं लिखता।

लि० स्ने०
महादेव के प्रणाम

: १७५ :

प्रिय मुरव्वी जमनालालजी, अहमदावाद, २८-१-३६

वापू की तवीयत वहुत अच्छी चल रही है। ब्लडप्रेशर तो नहीं लिया, शायद कल लिया जायगा। पर उनकी चलने की रफ्तार भी वढ़ रही है— रोज ३० मिनट सुवह और ३० मिनट शाम को टहलते हैं। खुराक में दूध, घी, डवल रोटी, (चार औंस लगभग) शाक-भाजी और लहसुन लेते हैं। शक्ति भी ठीक तौर पर आती जा रही है। शंकरलाल का पत्र था कि ८वीं को वर्धा में मीटिंग रखी है। सरदार की इच्छा

है कि मीटिंग यहां रखो कि जिससे आप बापू को मिल भी सकें और उनका प्रोग्राम पक्का कर सकें। उर्मिलादेवी के लड़के की शादी में मुझे कलकत्ते जाना पड़ेगा। ७वीं तारीख को सवेरे वर्धा से रवाना होऊंगा। राधाकृष्ण-अनुसूया के विवाह की प्रसादी कोई स्टेशन पहुंचायेगा तो खुश होऊंगा।

लि० से०

महादेव के प्रणाम

: १७६ :

अहमदाबाद,
४-२-३६

प्रिय मुरव्वी जमनालालजी,

मीराबहन को आप नहीं समझा सके या वह समझने को तैयार ही नहीं थीं? बापू ने (रक्तचाप) उतरने का तार किया। उसके बाद वह रवाना होने का इरादा छोड़ देंगी, ऐसी आशा बापू रखते थे। आज भी तुम्हारा तार आने के बाद उनके रवाना न होने का तार आयगा, ऐसी आशा रखी थी। पर वह तो रवाना हो ही गई। बापू कहते हैं—"यह सेगांव छोड़ेगी तो मुझे सेगांव जाना पड़ेगा।" आपकी युक्ति तो बापू को देखने आने के लिए हो सकती है। लेकिन सेगांव छोड़ देने की तो हो ही नहीं सकती। शायद कल ही बापू उन्हें वापस विदा कर दें तो आश्चर्य नहीं।

आपके भतीजे[1] की तो खूब रही। वह शिकार के लिए निकले हों ऐसा तो मानने में ही नहीं आता। बाहर टहलने निकले हों और शेर ने अचानक हमला किया हो ऐसा लगता है। विवाहित नहीं थे क्या? गंगाबिसनजी को अलग पत्र लिखता हूं, वह उन्हें पहुंचा दें।

लि० स्ने०

महादेव

---

१. नागरमल बजाज। यह जमनालालजी के चचेरे भाई और बड़े दिलेर युवक थे। गांव में शेर आ जाने से उत्सुकतावश उसे देखने चले गए। शेर ने उनपर हमला कर दिया और उन्होंने बहादुरी के साथ बिना हथियार उसका मुकाबला किया और उसे भगा दिया। उस लड़ाई में वह घायल हुए और अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।

: १७७ :

दिल्ली, १९-३-३६

ग्राम-निवास-सम्बन्धी मेरी कल्पना

वा की इच्छा हो तो उसे लेकर, न हो तो अकेले मुझे ही, सेगांव में एक झोंपड़ी बनाकर रहना।

मीराबहनवाली झोंपड़ी शायद मेरे लिए काफी न हो।

झोंपड़ी बनाने में कम-से-कम खर्च करना। १०० रु० से ऊपर तो आना ही नहीं चाहिए।

मुझे जितनी मदद की जरूरत हो वह सेगांव में से ही प्राप्त कर लेनी चाहिए।

जब-जब जरूरत हो मुझे मगनवाड़ी जाते रहना चाहिए। ऐसा करने के लिए जो वाहन मिले उसका उपयोग करना।

.... के पास ही मीरा .... रहे। मेरी सेवा में समय न दे, लेकिन गांव के काम में मदद दे सकती है।

जरूरत हो तो महादेव कान्ति आदि वहीं रहें। उनके लिए सादी झोंपड़ी बनाना।

ऐसा करते हुए बाहर के जिन कामों में मैं भाग ले रहा होऊं उनको जारी रखूं।

खास जरूरत के बगैर बाहर के लोग मुझसे मिलने के लिए सेगांव न आवें। मगनवाड़ी जाने के जो दिन तय हुए हों उन दिनों वहां मिल लिया करें।

बाहर भ्रमण करने की जरूरत मालूम होने पर ....

मेरा पूर्ण वि.... करने से खास .... लाभ होने वाला है और ग्राम-उद्योग का काम अधिक गति से चलेगा, लोगों का ध्यान ग्राम-उद्योग की तरफ अधिक झुकेगा।

ऐसा करने से मीराबहन की भारी शक्ति का पूरा उपयोग होगा। और महादेव, कान्ति आदि को भी नया और अच्छा अनुभव मिलेगा।

मेरे गांव में बस जाने से मेरी कल्पना में जो दोष होंगे वे ऊपर आ जायंगे। दूसरों को प्रोत्साहन तो मिलेगा ही।

सेगांव में ही बसने का .... नहीं है, पर यह प्रवाह-पतित मालूम होता

है। लेकिन कोई दूसरा गांव अधिक ठीक मालूम हो तो उसपर विचार करने को मैं तैयार हूं।

बापू

: १७८ :

३-५-३६

चि० जमनालाल,

श्रीमन्नारायण के साथ बातें कीं। मुझे वह भा गया है। उसकी काव्यशक्ति अच्छी है। अभी उसे बढ़ने की हविस है। कुटुम्ब अच्छा मालूम देता है।

वह समाधि देखी। अब उसमें क्या काम हो रहा है, यही नहीं समझ पाया। जानने की इच्छा है सही।

समाधिवाले बगीचे की देख-रेख धर्माधिकारी रखें। उसका यहां मन लग गया हो, ऐसा जान पड़ता है। औरों को सन्तोष देता है; काम में लगा है।

बापू के आशीर्वाद

: १७९ :

नन्दी दुर्ग, १३-५-३६

प्रिय मु० जमनालालजी,

पूज्य बापू और सरदार दोनों मजे में हैं। आज कुमारप्पा पहुंच गए। दीवान और डाक्टर की मनाही होते हुए भी, बापू कुर्सी का उपयोग न करके सारी पहाड़ी पैदल ही चढ़कर गए। पांच मील की चढ़ाई २। से २।। घंटे में पूरी कर सके, पर थकान बिलकुल नहीं आई। यहां शान्ति तो अपार है, और यहां की स्वच्छता और निर्जनता आकर्षक है। बापू को बहुत आराम और शान्ति मिलेगी, इसमें शंका नहीं। राज्य ने सारा प्रबन्ध हमारी रुचि को ध्यान में रखकर किया है।

चितलिया ने कुछ पर्चे भेजे थे सो उनमें से एक, जो आपके लिए था, इसके साथ भेजता हूं। अभी तक भगिनी-सेवा-मन्दिर का कब्जा उसने छोड़ा नहीं है। और उस सम्बन्ध की सारी योजना की रूप-रेखा वह बना रहा है। बापू ने उसे लिखा है कि सेवा-मन्दिर का क़ब्ज़ा छोड़ने के बाद ही उसकी

योजना पर विचार हो सकेगा। इसपर भी विचार करना होगा कि वह ट्रस्ट के हेतु तथा बापू की विचार-सरणि के अनुरूप है भी या नहीं।

डा० अन्सारी की मृत्यु से बापू को बहुत आघात पहुंचा है। अनेक पत्रों में उन्होंने लिखा है कि मृत्यु उनको हिला नहीं सकती, लेकिन इस मौत से उनको बहुत आघात पहुंचा है। ऐसा लगता है मानो वह अकेले रह गए हैं। उनकी मित्रता कोई राजनैतिक मित्रता नहीं थी, बल्कि गाढ़ व्यक्तिगत मित्रता थी। हरिजन में भी बापू ने अपना दुःख उंड़ेला है।

जिस बहन के सम्बन्ध में डा० जाकिर हुसैनसाहब का पत्र लखनऊ में आपको मिला था और जिसका उत्तर आपकी ओर से मैंने दिया था, उस बहन का पत्र इसके साथ भेजता हूं। उसे मैं लिख देता हूं कि अपने आने के सम्बन्ध में सीधा आपसे पत्र-व्यवहार करे।

आप कुशल होंगे। सबको यथायोग्य। किशोरलालभाई को प्रणाम। जानकीबहन, गोमतीबहन आदि को भी। सेवक

महादेव के प्रणाम

: १८० :

नन्दी दुर्ग, २१-५-३६

चि०-जमनालाल,

सचमुच ताराबहन असाधारण बहन थी। उसकी एकनिष्ठा, दृढ़ता, पवित्रता, उदारता और हिन्दुस्तान का प्रेम अवर्णनीय था। महादेवी ने भी बहुत सुन्दर सेवा की और हिम्मत भी दिखाई।

मीराबहन का पत्र उसकी बीमारी का है। इस बहन के दोष नगण्य हैं। उसके गुण अनुकरण करने योग्य हैं। ईश्वर उसे बचाये।

मदालसा, ओम मजे में हैं...दोनों का पत्र वापस भेजता हूं।

अपने शरीर की संभाल रखते होंगे। खुराक मैंने लिखी है उस तरह चलता है ? आराम पर्याप्त लें पाते हो ? रोज फिरना होता है ?

पेड़ू के लिए (मिट्टी की) पट्टी लेने की जानकीबहन की सूचना फेंक देने की नहीं है।

यहां सब कुशल है। बापू के आशीर्वाद

: १८१ :

नन्दी दुर्ग, २५-५-३६

चि० जमनालाल,

इसके साथ गोपाल का पत्र तुम्हें पढ़ने के लिए भेजता हूं। ताराबहन के जाने से वह खूब घबराया-सा लगता है। उसमें दोष हैं, पर गुण भी हैं। उसकी जिम्मेदारी अब मेरे सिर आ पड़ी है। इसमें कठिनाई नहीं देखता। दूर बैठे बताते रहना है। अभी तो बीमा के काम में जुटा रहे, और ग्राम-सेवा के लिए तैयार होने की सूचना दी है। सुमित्रा और सुभद्रा का मामला अटपट है। उसे ताराबहन हरिद्वार ले गई थीं, ऐसा खयाल है। मैं जांच कर रहा हूं। उसके विचार भी जानने का प्रयत्न करता हूं। अगर गोपाल के कहने के मुताबिक सुमित्रा सुभद्रा का कब्जा सौंप दे तो उसे महिलाश्रम में रखना मुझे ठीक लगता है। सुमित्रा को तो गांव में मेरी बहन के पास रहने के लिए सूचित किया है। उसके खर्च के लायक शायद देना पड़े। अपना अभिप्राय जताना। तुम आराम जरूर लेना। बापू के आशीर्वाद

३० मई तक नन्दी—३१ मई से १५ जून तक बैंगलोर सिटी।

: १८२ :

बैंगलोर सिटी, २-६-३६

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला।

जुहू में ठीक आराम मिलता हो—कसरत करते हो और खुराक का नियम-पालन करते हो तो मुझे सन्तोष है। पेडू के लिए पट्टी जरूरी ही है। तो भी डाक्टर की सलाह लेनी हो तो लेना।

मैं वर्धा १५वीं तारीख को पहुंचूंगा। मदालसा ने दो पंक्तियां लिखकर ठीक बेगार टाली है। वहां आकर वजन बढ़ाया हो और मानसिक व्यथा समुद्र में डाल दी हो तो भले ही पत्र न लिखे।

ओम कहां है? श्रीमन का 'हिन्दी' तो मेरे पास है ही। मैं थोड़ा लिख भेजूंगा। हरीलाल का देखा होगा।

बापू के आशीर्वाद

: १८३ :

जवाब दिया, १५-७-३६

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

(१) इसके साथ बहन महादेवी का पत्र देखने के लिए भेजता हूं।

(२) उस पुरुलियावाली बहन को इजाजत दे दी ?

(३) आज बापू ने गांधी सेवा-संघ का सम्मेलन हुदली में रखने की इजाजत गंगाधर राव को भेजी है और बापू ने वहां जाना कबूल किया है। किशोरलालभाई को खबर देने की कृपा करें।

(४) श्रीमन्नारायण की क्या खबर है ? यहीं हैं या कहीं और गए हैं ? मैंने परसों उन्हें काम सौंपा है, उसका कोई जवाब नहीं आया।

(५) पू० जानकीबहन के पास गाय का घी कुछ स्टाक में है क्या ? हम पंजाब से मंगाते हैं। वह नहीं आया और इस समय बिना घी के ही काम चला रहे हैं। थोड़ा-बहुत मिलेगा सही ? लि० सेवक

महादेव

: १८४ :

सेगांव, ३१-८-३६

चि० जमनालाल,

तुम्हारे साथ तीन बातें करनी रह गई।

बाबाराव हरकरे का क्या हुआ ? मुझे लगता है कि उसे हर महीने २५) भेजना अच्छा है।

उसके भाई की योग्यता अधिक की हो तो उसे ज्यादा देना उचित होगा।

शंकरराव दिवेकर की स्थिति दयाजनक लगती है। उसके ऊपर १५००) के समन्स हैं और वह बेकार है। उसके लिए कुछ करने का विचार किया है क्या ?

इन सब बातों के बारे में तुम अधिक विचार कर सकते हो।

बापू के आशीर्वाद

: १८५ :

(मिला : १९-२-३७)

मुरब्बी जमनालालजी,

हाल में आपसे मिलना असम्भव हो गया है। यह स्वाभाविक ही है। अब तो इलेक्शन पूरा हो जाय तभी मिला जा सकता है न। मिसेज नायडू को मैंने कहा था कि आपको फुर्सत होती तो जरूर मिलते, पर ऐसा हो नहीं सकता था। उसने सन्देश दिया था कि डाक्टर महोदय को २५०) मदद मिले तो उसे जीतने में बाधा नहीं होगी। उन्हें खुद आकर यह बात आपसे कहनी थी; पर जब आपके घर के सामने से जाना होता है तो आप नहीं होते।

श्रीमती मुथुलक्ष्मी रेड्डी बापू को मिलने आने वाली है। उसकी तारीख निश्चित नहीं है। पर बापू ने कहा है कि वह आप के यहां ही उतरेगी। आपकी गैरहाजिरी में उतारूं न ?

१६वीं तारीख की शाम को मिसेज फ्युलोप मिलर नाम की एक बहन आ रही है। इसके पति ने बापू के विषय में आस्ट्रियन भाषा में सुन्दर पुस्तक लिखी है और उसका अनुवाद अंग्रेजी में 'गांधी एण्ड लेनिन' नाम से प्रकाशित हुआ है। वह बापू को मिलने आनेवाली है। उसे भी आपके यहां ठहराना है। उस समय आप होंगे क्या ?

लि० सेवक
महादेव

: १८६ :

तीथल, २८-५-३७

प्रिय जमनालालजी,

एंडरूज का कमलनयन के बारे में पत्र उसके साथ भेजता हूं। आपका क्या खयाल है ?

वर्धा में प्रेस खोलने का विचार था; उसका क्या हुआ ? बापू पूछते हैं कि उसके बारे में आपको जो जांच करनी थी वह कर ली क्या ? आजकल कागज महंगा हो गया है, इसलिए 'हरिजन सेवक' और 'हरिजन' दोनों ही

की छपाई महंगी हो गई है। अब अगर उन्हें वर्धा लाया जाय तो कुछ सस्ता पड़ेगा या क्या, यह भी देखना है।

अभी तो हम १०वीं तारीख तक यहां रहनेवाले हैं, इसलिए आप यहां एक दिन आ जायं तो ठीक, ऐसा बापू लिखाते हैं। कल शाम को यहां राजाजी आ रहे हैं। तीन-चार दिन तो रहेंगे, ऐसा समझा जाता है। उसके बाद खेर आयंगे। आप सब मजे में होंगे। आपको १४वीं के केस के लिए वर्धा पहुंचना होगा ही। हम १०वीं को निकलकर १२वीं को वर्धा पहुंचेंगे। अगर आप को बम्बई में दो-तीन दिन काम न हो तो ७वीं-८वीं के अर्से में आओ और हम सब साथ वर्धा चलें। उत्तर लिखें। लि० सेवक

महादेव

: १८७ :

तीथल, ६-६-३७

चि० जमनालाल,

. . . . के बारे में मेरी अक्ल हैरान है। उसके साथ पत्र-व्यवहार चल रहा है। पर इस घड़ी तो इस तरह लिखने का मन हो जाता है। जिस तरह बहुत से भिक्षुक तुम्हारे पास आते हैं और उन्हें देने न देने के लिए मेरी राय की जरूरत नहीं रहती, उसी तरह इसे भी समझो और जैसा जंचे वैसा करो। अगर मेरी राय चाहिए ही तो तुम्हें राह देखनी पड़ेगी।

तुम आराम ले सकते होगे। खूब टहलते होगे। खाने में परहेज करते होगे।

१०वीं तारीख को सुबह या ९वीं की शाम को यहां से रवाना होना है। इस रास्ते से जाओ तो साथ चलें। पर जैसी सुविधा हो वैसा करना।

बापू के आशीर्वाद

: १८८ :

सेगांव, १५-६-३७

चि० जमनालाल,

यदि खानसाहब राजी हैं तो जायं। बियानी को तार देना कि खान-

साहब से व्याख्यान न करावे। खानसाहब जायंगे तो मेहर और लाली का क्या? कल यहां आने वाले थे।

कमल पहुंच गया सो अच्छा हुआ। बापू के आशीर्वाद

: १८९ :

सेगांव, १९-६-३७

चि० जमनालाल,

यह तार भेज दो।[1]

'खानसाहब को कोई स्वतंत्र उत्साह नहीं है। अगर उनकी हाजिरी जरूरी समझो तो आकर बातचीत कर लो —गांधी'

यदि यह उत्तर उचित माना जाय तो भेजो। मैं हुक्म निकालकर भेजना नहीं चाहता हूं। बापू के आशीर्वाद

: १९० :

सेगांव, १७-९-३७

चि० जमनालाल,

उद्योग-संघ के इतने सारे सदस्य यहां आये, इससे कल मैं शर्मिंदा हुआ और दुःखी भी। ऐसे काम के लिए मुझे वहां आना चाहिए। इससे ही खर्च वगैरह में बचत होती है। मेरे इतना चलने-फिरने से मेरे शरीर को कोई नुकसान नहीं होता, पर वहां न जाकर सबको यहां घसीटने से मुझे बहुत आघात पहुंचा। इसलिए मोटर या बैलगाड़ी जो भी हो, मुझे समय पर भिजवा देना कि जिससे मैं वहां अधिक-से-अधिक पौने दो बजे तक पहुंच सकूं। सबको बंगले पर ही बुला लेना। अगर वहां न हो सके तो खुशी से मगनवाड़ी ले जाना। चर्खा-संघ का सीधा या अटपटा जो काम हो उसे जहांतक हो सके तुम ही निबटा लेना; जिससे हम वहां अत्यन्त महत्व की ही बातें कर सकें।

बापू के आशीर्वाद

---

१. यह तार विदर्भ-कांग्रेस-कमिटी के अध्यक्ष श्री ब्रिजलाल बियाणी के लिए था।

: १९१ :

वर्धा, ११-१०-३७

प्रिय मु० जमनालालजी,

इतने कामों में उलझा हूं कि पत्र नहीं लिख सका। पर आपकी ओर से जो कुछ करना है वह सब करता हूं। श्रीमन् को रोज दो वार देखता हूं। कई भूलें रुकवाने की कोशिश करता हूं। कल वापू को उसे देखने के लिए और खास कर जानकीवहन को दृढ़ता रखने और अधीर न होने को समझाने के लिए लानेवाला हूं। मेहमानों के वारे में भी देख रहा हूं। वहादुरजी को ठीक तौर से देख लूंगा। निश्चिन्त रहियेगा। कान्फरेंस वन्द कराने का विचार कई कारणों से था। एक तो श्रीमन् की वीमारी और आपकी चिन्ता। दूसरे वापू को कलकत्ते जाने के पहले थोड़ा आराम मिले, क्योंकि इस परिषद् में काफी वक्त और श्रम खर्च होगा। लेकिन आर्यनायकम नहीं माने और वोले—सारी जवावदारी मेरी है। परन्तु अभी उन्हें समझा रहा हूं। कल जो होगा सो सही होगा। आप श्रीमन् की या मेहमानों की कुछ भी चिन्ता न करेंगे। श्रीमन् के पास अधिक समय देने की कोशिश करूंगा। कोई जरा भी कम्प्लीकेशन्स नहीं है और चिन्ता का कारण नहीं है।

यह पत्र जल्दी में स्टेशन पर लिख रहा हूं। आने-जानेवाले लोग ही इतना समय ले लेते हैं कि जरा भी अवकाश नहीं रहता।

लि० स्ने०

महादेव का प्रणाम

: १९२ :

सेगांव, १२-१०-३७

चि० जमनालालजी,

तुम्हारा पत्र मिला। वहादुरजी आ सकते हैं।

श्रीमन् के वुखार के वारे में मालूम हुआ। उसका वुखार खराव है। हठीला मालूम होता है। आज उसे देख आने की आशा रखता हूं। सुवह की प्रार्थना के वाद यह लिखा रहा हूं। श्रीमन् की वीमारी के कारण शिक्षा-परिषद् को स्थगित करने की सूचना महादेव और किशोरलाल ने रखी। वह मेरे

गले नहीं उतरी। सौ मनुष्यों की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी तुम पर तो नहीं ही होनी चाहिए। पैसे तुम्हारे होंगे यह मैं मान लेता हूं। इसकी मुझे चिन्ता भी नहीं है। परन्तु मैं यह मानता हूं कि काम-काज का बोझा तुम्हारी सहायता के विना दूसरे लोग न उठा सकें तो ऐसे काम करने ही नहीं चाहिए। अगर ऐसी शक्ति दूसरों में भी आजाय तभी काम शोभित होंगे। इसी कारण मैंने आर्यनायकम को कहलवाया था कि उसकी अपनी श्रद्धा और लगन हो तो ही परिषद् भरने दे। नहीं तो भले ही स्थगित हो जाय। यह कल्पना ही श्रीमन् की थी और श्रीमन् के ऊपर ही मैंने आधार रखा था। वह तन्दुरुस्त था तवतक मैं निश्चिन्त था। उसके वारे में मैंने मान लिया था कि वह तो वीमार पड़ेगा ही नहीं। इस कारण जव उसकी वीमारी का सुना तो मैं व्याकुल होगया। तुम्हारी श्रीमन् की खोज को मैंने अत्यन्त आश्चर्य-जनक माना है। उसमें विद्वत्ता, प्रौढ़ता और नम्रता का असाधारण मिश्रण है। उसकी गैरहाजिरी में परिषद् मुझे अटपटी लगेगी। परन्तु हाथ में लिये काम अधूरे नहीं रखे जाने चाहिए, इस न्याय से और नायकम की श्रद्धा कम न हो वहांतक और तुम्हारा विरोध न हो तो परिषद् करने का मैंने आग्रह रखा है। मैं मानता हूं कि तुम्हारा विरोध सही जगह पर होगा। क्योंकि तुम्हारी व्यवहार-वुद्धि के वारे में मुझे श्रद्धा है। तुम्हारे विना, तुम्हारे वंगले के विना, परिषद् का काम सांगोपांग हो सकेगा या नहीं, इसकी पूरी जान-कारी तो तुमको ही होगी। इस कारण अगर तुम चाहते हो कि परिषद् स्थगित रखनी चाहिए तो मुझे तुरन्त तार से खबर देना, तो परिषद् स्थगित कर दूंगा।

तुम्हारी तवीयत ठीक होगी। सावित्री का ठीक चल रहा होगा।

बापू के आशीर्वाद

: १९३ :

वर्धा, १२-१०-३७

प्रिय मु० जमनालालजी,

बापू श्रीमन् को देख गए। वहुत खुश है और वुखार का जोर भी कम

है। चिन्ता करने जैसी कोई बात नहीं है। आप शुक्रवार को तो आने ही वाले हैं। आर्यनायकम से बात करके उसे तो बापू ने कहा है कि "जमनालालजी पर जरा भी बोझ डाले बिना सभी मेहमानों का बोझ उठाने को तैयार हो तो भले रखो।" आर्यनायकम ने कहा—"मैं भार उठाऊंगा।" तो भी बापू ने आपको लिखना तो ठीक ही समझा। इसलिए यह पत्र जा रहा है।

बहादुरजी का मैं देख लूंगा। लि० सेवक,

महादेव

: १९४ :

सेगांव, १३-१०-३७

चि० जानकीबहन,

आचार्य रामदेव का मेरे नाम पत्र है कि तुम्हें देहरादून जाना स्वीकार कर ही लेना चाहिए। तारीख मेरे पास नहीं है। श्रीमन् तो अच्छा हो ही जायगा। अगर न जा सको तो उन्हें तार दे देना। जा सको तो अच्छा ही है। पतिदेव को पूछने की जरूरत है क्या? बापू के आशीर्वाद

: १९५ :

वर्धा, ६-१२-३७

प्रिय मु० जमनालालजी,

यह आदमी बनारस से चला आ रहा है। बंगाल के बैरामपुर जेल में नजरबन्द था। उसे एक महीना पहले छोड़कर निर्वासित किया गया। वहां उसके पास कुछ खाने-पीने का भी सहारा न था। होम मिनिस्टर को अनेक अर्जियां भेजी हैं, पर उन्होंने कुछ सुनवाई नहीं की; इसलिए मोहनलाल सक्सेना ने उसे यहां ढकेला है। अब मुझे बंगाल के गृहमंत्री से पत्र-व्यवहार करना है; और इसे बंगाल में रहने देने की इजाजत दिलानी है। तबतक इसे पड़ा रहने दें....कोई काम सौंप दें। आदमी तो अच्छा लगता है। इसके बारे में लिखने के लिए मुझे जरा बापू से पूछना है। मोटर मिल सकती है क्या? अगर मोटर न मिले तो साथ की चिट्ठी बापू के पास किसी साइकलवाले के साथ भिजवा दीजिएगा?

कोई और सूचना हो तो दीजिएगा बापू का। मन बम्बई आने को जरा भी नहीं दीखता। हरि इच्छा। उनकी इच्छा के विरुद्ध कुछ करने में कुछ सार निकलेगा? पर जो हुआ सो हुआ।

लि० सेवक,
महादेव के प्रणाम

: १९६ :

जुहू, २३-१२-३७

प्रिय मुरव्वी जमनालालजी,

कल रात को डाक्टर आये थे। उन्होंने हृदय की धड़कन के फोटोग्राफ लिये। ब्लड-प्रेशर जो टहलने जाने के पहले १६० था वह १९० हो गया था। आज सवेरे १८८/१०८ था। इसका अर्थ यह हुआ कि सर्पगन्धा का असर भी तात्कालिक है, कायमी नहीं है। डाक्टर भी परेशान तो हैं ही; पर दो-तीन दिन देखने के बाद सर्पगन्धा की मात्रा बढ़ाने या घटाने का विचार ये लोग करेंगे।

बाकी सम्पूर्ण शान्ति है। कोई आया गया नहीं। पट्टणी साहबका पत्र था कि "बिना इजाजत मिलने नहीं आऊंगा।" मैं उनसे ताजमहल होटल में मिल आऊंगा तो सन्तोष होगा। लोगों को आने देने के बारे में मैं भी आप-के जितनी ही कड़ाई रखता हूं।

प्यारेलाल तो शान्त दीखते हैं; मुझे लगता है कि समय पाकर जख्म भर जाय[illegible]गा और इस कसौटी से निकलकर वह अधिक शान्त और अधिक दृढ़ मनव[illegible]ाले हो जायंगे।

कल शी[illegible] शाम को पागनीस भजन सुनाने आ रहे हैं। आप आयंगे तो फिर एक बार बुल[illegible]ायंगे।

लि० स्ने०,
महादेव

: १९७ :

वर्धा, १०-३-३८

[illegible] जमनालाल[illegible] जी,

[illegible] से अब उन[illegible] गए। [illegible] की कोठरी में नहीं रहा जा सकेगा, ऐसा बापूजी [illegible] है। कारण, गर्मी अ[illegible] सह्य है। और उन्हें जुहू नहीं जाना है, इसलिए

आपकी इजाजत हो तो वह फिलहाल आपवाले मकान में सेगांव में आजायं, जैसे वह पहले रहा करते थे। इसमें आपको कोई आपत्ति तो नहीं होनी चाहिए। पर आपसे पूछ लेना अच्छा है, इसलिए पुछवाया है। अगर इस सम्वन्ध में तार करना ठीक जंचे तो तार करें। इससे वालकोवा को आपके घर में ले जाया जा सकेगा।

लि० सेवक,
महादेव के प्रणाम

: १९८ :

पेशावर, ३-५-३८

सेठ जमनालाल वजाज,
जयपुर

वल्लभभाई जयपुर नहीं जा सकते, यह कहना भूल गया। उन्हें मैसूर जाना है। स्वास्थ्य अच्छा है। जलवायु अति सुन्दर है, पर यात्रा का कार्य-क्रम वहुत भारी होने के कारण रद कर दिया है। वापू

: १९९ :

वम्वई, १२-५-३८

जमनालाल वजाज,
सीकर

आशा है कि सीकर की जनता तुम्हारी अपील सुनेगी। वहाँ जवतक रुकने की जरूरत हो तवतक तुम्हें रुकना चाहिए। वापू

: २०० :

सेगांव, ११-६-३८

चि० जमनालाल,

महादेव के नाम तुम्हारा पत्र देखा। तुम्हारी व्यथा समझ सकता हूं। मैं चाहता हूं कि मेरा कदम उस व्यथा को, थोड़े-वहुत अंशों में भी, कम करने में सहायक वने। मैंने अखवारों के लिए एक लेख लिख तो रखा है, पर अभी छपाया नहीं। तुम्हारी सूचना विचारणीय तो है ही। मेरे स्वभाव के अनुकूल दूसरी वस्तु है। ऐसी वातें जव मैं प्रक[illegible]ता हूं, तभी मुझे अधिक शान्ति

मिलती है। तुम्हारे पत्र में जो भय प्रकट किया गया है, वह व्यावहारिक चीज है। विचारपूर्वक और धर्म समझकर जो कदम मैं उठाऊं उसपर दृढ़ रहने की शक्ति मैं खो बैठा हूं, ऐसा मुझे नहीं लगता। फिर भी छपाने की जल्दी नहीं करूंगा। वह स्थागित रहा तो भी जो लोग गुजराती नहीं समझते उनके लिए तो गुजराती जैसा वक्तव्य अंग्रेजी में होना ही चाहिए।

सावित्री के पुत्र-जन्म के समाचार कल गोवर्धनदास के द्वारा मिल गए थे। लक्ष्मण प्रसाद को पत्र लिख रहा हूँ।

बापू के आशीर्वाद

: २०१ :

वर्धा, १२-६-३८

प्रिय जमनालालजी,

आपका पत्र बापूजी को पढ़ा दिया था। उनका उत्तर इसके साथ है। आपको अब यहां की परिस्थिति से वाकिफ कराता हूं। बापू के इस प्रस्ताव का[१] मीराबहन को छोड़कर और सब स्त्रियों ने तीव्र विरोध किया है।

---

१. जब बापूजी शाम को घूमने के लिए जाया करते थे तब अनेक लोग उनके साथ जाते थे। उनमें से किसी-न-किसी के कंधे पर हाथ रखकर बापूजी चलते थे। इसमें लड़कियों की होड़ चलती थी कि 'आज मैं बापूजी की लकड़ी बनूंगी....'आज मैं बनूंगी'। वर्धा के लोगों में एक ... इसकी चर्चा होने लगी और एक-दो मित्रों ने यह भी कहा कि बापूजी को देखकर इसका और लोगों के भी अनुकरण करने की सम्भावना है। इसलिए बापूजी ने अपना यह रिवाज छोड़ देने का प्रस्ताव किया और इस बारे में अपने साप्ताहिक के लिए लेख भी लिखा।

हममें से चन्द लोगों ने बापूजी के इस प्रस्ताव का विरोध किया। हमारी दलील यह थी कि बापूजी के लिए जो चीज बिलकुल स्वाभाविक थी उसे छोड़ने से ही सारा वायुमंडल कृत्रिम हो जायगा। बापूजी का असाधारण अधिकार सब जानते हैं। उनका अनुकरण करने की कोई हिम्मत नहीं करेगा। और जैसा कि महादेवभाई ने लिखा है, हम ऐसे

राजकुमारी का विरोध तो सबसे अधिक तीव्र है। पुरुषों में सुरेन्द्रजी, बलवंतसिंहजी जैसों ने इसका स्वागत किया है। विरोधियों में मुझ जैसे हैं। मैंने तो अनेक कारणों से विरोध करके नीचे लिखे अनुसार सूचना की थी—

१. बापू को भी वह स्वतंत्रता नहीं लेनी चाहिए जो दूसरे नहीं ले सकते। अगर बापू का यह सिद्धान्त तत्वतः स्वीकार करें तो, बापू को अपने लिए तथा अपने तमाम साथियों के लिए, बहनों के तमाम व्यक्तिगत तथा एकान्तिक स्पर्श निषिद्ध मानने चाहिए।

२. जाहिरा तौर पर भी प्रत्येक अनावश्यक स्पर्श निषिद्ध मानना चाहिए।

इसके जवाब में बापू का कहना है कि नैष्ठिक ब्रह्मचारी के अलावा और सबके लिए ये दो नियम पर्याप्त हैं। पर जिसे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन करना है उसके लिए तो स्पर्शमात्र वर्ज्य होना चाहिए, मैं यह चीज स्वीकार नहीं करता। पर यह तो मुझ-जैसों के क्षेत्र से बाहर की बात है। मैं तो इतना ही समझता हूं कि अनेक बहनें बापू के स्पर्श से पवित्र हुई हैं और अपनी अनेक व्याधियों में बापू से आश्वासन प्राप्त कर सकी हैं। बापू को इस सेवा से बहनों को वंचित नहीं रखना चाहिए।

इस प्रस्ताव को समझानेवाला लम्बा लेख हरिजन के लिए पिछले हफ्ते बापू ने लिखाया था; उसे मैंने जोरदार कारण बताकर रोक दिया था। इस हफ्ते भी उसको रोकने की पूरी आशा है। फिर तो जो हो सो ठीक।

आपके पत्र से मैं जरा घबरा गया। बापू अमुक काम करें तो हमारा मार्ग सरल हो, यह कहना मुझे कठिन लगा। जिसका जितना अधिकार

उदाहरण जानते थे कि बापूजी के पवित्र व वात्सल्यपूर्ण स्पर्श से कई बहनों को आश्वासन व शान्ति मिलती थी। बापूजी के प्रस्ताव का विरोध हुआ, यह ठीक ही हुआ, किन्तु उनको इस विषय पर अपने विचार विस्तार से लिखने का मौका नहीं दिया गया, यह अच्छा नहीं हुआ।

—काका कालेलकर

उसका वैसा ही मार्ग। मैं समझता हूं कि मैंने ऊपर जो मर्यादाएं बताई हैं उन सबको हम सब साथी स्वीकार करके बापू को निश्चिन्त कर दें तो बापू को कोई नया प्रस्ताव करने की बात नहीं रहेगी। इस चीज की जाहिरा चर्चा करने में मैं आज तो लाभ के बजाय हानि ही अधिक देखता हूं। अधिक क्या लिखूं ? सुशीला और प्यारेलाल दो दिन हुए यहां आये हैं। सुशीला की सेवा तो निषिद्ध नहीं मानी है। पर दूसरी बहनों को यह खटकता है। वे पूछती हैं कि हम उसकी अपेक्षा क्या कम पवित्र हैं ? इन सरदी के दिनों में भी ब्लड़-प्रेशर १८०/१०८ रहता है। इसे चिन्ताजनक तो मानना ही चाहिए। पर इस तरह की चर्चाओं में जब चौबीसों घंटे लगे रहते हैं, तब ब्लड-प्रेशर कम कैसे हो सकता है ?

आपका,
महादेव

: २०२ :

३०-७-३८

चि० जमनालाल,

तुम्हारी यहाँ रहने आने की इच्छा है, ऐसा तुम यहाँ किसी से कह गए हो। आओ तो सबकुछ तैयार ही है। पर अगर न आना हो तो मेरा विचार किशोरलाल को कुछ समय यहाँ रखने का है। लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि तुम आते हो तो रुक जाओ। तुम न आ सको तो ही किशोरलाल आय। महर्षि रमण के पास जैसे भी हो सके जल्दी हो आओ, ऐसा मैं चाहता हूं।

बापू के आशीर्वाद

: २०३ :

श्रीहरि

वर्धा, ता० १८-१०-३८

पू० बापूजी,

श्री द्विवेदी का आपके नाम का पत्र देखा। मेरे पास भी उनका पत्र आया है। ग्वालियर राज में इन्होंने कुछ अर्से से ग्राम-सेवा का कार्य प्रारम्भ

किया है। बीच-बीच में मुझे इनके काम की रिपोर्ट मिली है। श्री हरिभाऊजी इनके काम के बारे में प्रत्यक्ष रूप से अधिक जानते हैं। आप इन्हें संदेश या आशीर्वाद भेजना चाहें तो कोई खास आपत्ति नहीं है।

आप अपना प्रोग्राम लिख भिजावें। यहां किस तारीख को पहुंचेंगे? श्री भणसालीजी की व्यवस्था ठीक है। आप चिन्ता न रखें। डा० नर्बदा-प्रसाद पूरा खयाल रखते हैं। जमनालाल बजाज

: २०४ :

श्रीहरि

पौनार, वर्धा, ४-११-३८

पूज्य बापूजी,

आज मिती व तारीख के हिसाब से मुझे ४९ वर्ष पूरे हुए हैं। पचासवां वर्ष चालू हुआ है। आपका आशीर्वाद तो सदैव ही रहता है, परन्तु मैं जब विचार करता हूं तो मुझे इन दो-अढ़ाई वर्षों में ऐसा साफ दिखाई देता है कि मैं आपके आशीर्वाद का पात्र नहीं हूं। मेरी कमजोरियों का जब मैं विचार करता हूं तब तो इन वर्षों में खासकर छोटेलालजी की घटना के बाद मेरे मन में आत्महत्या के भी विचार आये, जिसे मैं कायरता व पाप समझता आ रहा था; बुद्धि से तो अभी भी समझता हूं। मुझे दुःख इस बात का विशेष रहता है कि मेरी उन्नति के बदले अवनति विशेष होती दिखाई दे रही है।

इसके कई कारण हो सकते हैं, परन्तु उन सबकी जिम्मेदारी तो मेरी ही है। देहली के पहले तक तो विचारों का जोर मेरे मन में चलता रहा। एक तो मैं सब सार्वजनिक कामों से, अगर सम्भव हो तो खानगी काम से भी, अलग हो जाऊं। अगर यह संभव न हो तो ज्यादा जिम्मेवारी का काम लेकर उसमें रात-दिन फंसा रहूं। परन्तु अब तो निकलने में ही अधिक समाधान मिलना संभव है।

मेरी कमजोरी मुझे इस प्रकार दिखाई दे रही है। अहिंसा व सत्य का आचरण कम होता दिखाई दे रहा है। डर है कि कहीं इसपर से श्रद्धा भी कम न हो जावे। इसी कारण असहनशीलता भी बढ़ रही है। क्रोध की मात्रा भी बढ़ती जा रही है। कामवासना बढ़ती हुई मालूम हो रही है। लोभ की

मात्रा भी। इतने सब दुर्गुण या कमजोरी जो मनुष्य अपने में बढ़ती हुई देख रहा है फिर उसे जीने का मोह कैसे रह सकता है ? याने मानसिक कमजोरी के विचार तक ही वात होती तो भी फिर प्रयत्न के लिए उत्साह रहता, परन्तु जव शरीर की इन्द्रियों को भी मैं कावू में न रख पाता हूं याने प्रत्यक्ष शरीर से पाप होते दिखाई देता है तब लाचार बन जाता हूं। ऊपरी हिम्मत तो बहुत ज्यादा रख रहा हूं, रखने का प्रयत्न भी करता रहूंगा। परन्तु मुझे आज यह अनुभव हो रहा है कि कहीं यही दशा रही तो या तो पागल की स्थिति पर पहुंच जाना सम्भव है या पतन के मार्ग पर जाने का भय है। इसलिए आज अगर स्वाभाविक मृत्यु का निमन्त्रण आये तो मेरी आत्मा कहती है कि मुझे समाधान, शान्ति मिलेगी, क्योंकि मेरा भविष्य अंधेरे में दिखाई दे रहा है। मुझे आज यह विश्वास हो जावे कि मेरा पतन कभी नहीं होवेगा, मैं सत्य के मार्ग से नहीं हटूंगा तो मुझमें फिर नवजीवन, उत्साह आना सम्भव है। मुझे इन वर्षों में बहुत-सी मानसिक चोटें लगी हैं। कुटुम्बियों द्वारा, मित्रों द्वारा, जिसके लिए मेरी तैयारी न थी। अगर इसी प्रकार चोटें लगती ही रहीं तो पागल होने के सिवाय दूसरा क्या होगा ? मृत्यु तो मेरे हाथ की बात नहीं है। आत्महत्या में तो कायरता व पाप दिखाई देता है। क्या करूं; कुछ समझ में नहीं आता। मेरे दिल का दर्द किसे कहूं ? कौन ऐसा है जो प्रेम से मेरी मानसिक स्थिति को सुधार सकता है ? मेरा भरोसा तो आपपर व विनोबा पर ही था। परन्तु आपसे तो अब आशा कम होती जा रही है। विनोबा से अभी आशा है। शायद कोई समाधानकारक मार्ग निकल जाय।

इन वर्षों में मैं आपके पास कई बार हृदय खोलने के लिए आया, परन्तु आपकी मानसिक, शारीरिक व आस-पास की स्थिति के कारण पूरी तौर से खोल नहीं सका। इसका मेरे मन में दुःख रहा और ऐसा लगता रहा कि मैं आपको व अन्य मित्रों को धोखा तो नहीं दे रहा हूं। क्योंकि मैं धोखे से बढ़-कर पाप या नीच कृत्य नहीं मानता आया। इसलिए मैंने मेरी स्थिति कई मित्रों को, घरवालों को कहने का प्रयत्न किया; परन्तु उसमें पूर्ण सत्य न रहने के वजह से या अन्य कई कारणों से उसका जो परिणाम आना चाहिए था वह नहीं आया। अब आप कोई राजमार्ग बता सकते हैं। मुझे तो लगता है कि अभी तक मेरी बुद्धि काम दे रही है। मेरे में जो-जो कमजोरियां हैं व

वे जिन कारणों से घुसी हैं वह भी मालूम हैं; उनको निकालने की इच्छा भी है। यह इच्छा तीव्र बनाई जा सकती है। परन्तु मेरे पास याने मेरे साथ कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसमें प्रेम, सेवा व उदारता भरी हुई हो; जिसके पवित्र चरित्र व प्रेममय वातावरण या सेवा से मेरे मन को शान्ति मिले। क्या इस प्रकार की बहन या भाई आपकी निगाह में है? अगर निगाह में है तो क्या उसका मेरे साथ रहकर मेरी सेवा करना सम्भव है? सार्वजनिक कार्यकर्ता के पास से काम छुड़ाकर उससे अपनी सेवा लेने की हिम्मत नहीं होती। मैंने जिन कमजोरियों का वर्णन किया है, उसका यह अर्थ नहीं है कि मुझमें पहले कमजोरियां नहीं थीं, इन वर्षों में ही आई हैं। वे पहले से ही थीं, परन्तु मुझे लगता था कि वे जोर से निकल रही हैं। परन्तु आज ऐसा नहीं मालूम हो रहा है, यही खास बात है।

आप कोई ऐसा मार्ग निकाल सकें तो निकालें जिससे मेरी मामूली मनुष्यों में गिनती हो। लोग अधिक पवित्र व उच्च न मानें तो शायद इससे भी मेरा कल्याण हो। आप मेरी इस अवस्था से दुखी तो होंगे ही परन्तु मैं क्या करूं? समझ में नहीं आता। मुझे तो आपको प्रणाम करने में भी संकोच होता है।

मेरे मन में जिस प्रकार विचार आये आज जन्म-दिन के निमित्त लिख दिये हैं। आप जब यहां आवेंगे तब समय निकालकर जो कहना हो सो कहें, वहांतक मैं विनोबा से मदद लेने का प्रयत्न करूँगा।

जमनालाल बजाज

मैंने यह पत्र पू. विनोबा, चि. राधाकृष्ण को तो दिखा दिया है। जानकीदेवी व कमल आदि को फिर बता दूंगा। नकल रख ली है।[1]

---

१. यह पत्रने लिख के बाद २७-११-३८ को जमनालालजी का गांधीजी से मिलना हुआ। तब पता चला कि उपरोक्त पत्र गांधीजी को नहीं मिला है। जमनालालजी ने तब अपना हृदय-मन्थन गांधीजी को बताया। कोई १। घंटे बातें हुईं। उसके बाद गांधीजी और जमनालालजी को और कामों में लग जाने से बात करने का समय नहीं मिला। २६-१२-३८ को जमनालालजी फिर गांधीजी से मिले और अपने

: २०५ :

सेगांव, २१-१२-३८

चि. जमनालाल,

तुम्हारे दोनों पत्र मिले थे। पहले पर अमल किया गया। दूसरे के लिए आग्रह क्यों हो? जलियांवाला बाग मीटिंग में तुम न आ सको तो कोई हर्ज नहीं। भले ही केशवदेवजी हाजिरी दें। वोट की तो जरूरत नहीं होगी। तबीयत खराब है, ऐसा तुम निश्चय न कर बैठना। तबीयत को आराम की जरूरत है। वह मिलने से ठीक हो जायगी। तुम हिन्दुस्तान में या सीलोन में थोड़ी मुसाफिरी कर लो तो बस हो जायगा। काम मात्र की चिन्ता छोड़ दो।

रजबअली का कारोबार ठीक है क्या? जानकीबहन कैसी है?

बापू के आशीर्वाद

४-११-३८ के पत्र की नकल गांधीजी को दिखाई। उस दिन मौन होने के कारण गांधीजी ने अपने निम्न विचार लिख दिये—

"कल कुछ देर हम बातें कर लेंगे अथवा एक-दो दिन रहा जा सके तो रह जाओ। तुम्हारी बीमारी की दवा मुझे आसान लगती है। घबड़ाने का कोई कारण नहीं है। तुम्हारा विनाश तो है ही नहीं। पर तुम्हारे दोषों को स्वीकार मैं करता हूं क्योंकि मुझे तो ऐसे बहुत अनुभव हो चुके हैं। यहां गांठ सुलझाकर जाना, अभी तो इतना ही कहता हूं।"

गांधीजी ने चाहा कि जमनालालजी एक-दो दिन ठहर जायं, पर जयपुर-सरकार ने जमनालालजी पर जयपुर में प्रवेश करने पर जो पाबंदी लगाई थी उसके विरोध में वह जयपुर जाना आवश्यक समझते थे। इस कारण वह रुक न सके। अतः उसी दिन (२६-१२-३८ को) गांधीजी ने अपने विचार पत्र द्वारा भी विस्तार से लिख भेजे। यह पत्र आगे दिया है।

: २०६ :

सेगांव, २६-१२-२८

चि: जमनालाल,

अभी अंग्रेजी की एक सुंदर उक्ति देखी थी। उसका अर्थ यह है कि मनुष्य को अपने दोषों का चिन्तन न करके गुणों का करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य जैसा चिन्तन करता है वैसा बनता है। इसका अर्थ यह नहीं कि दोष देखे ही नहीं। देखे तो जरूर, लेकिन उनका विचार करके पागल न बने। ऐसा हमारे शास्त्रों में भी मिलता है। इस कारण तुमको आत्मविश्वास रखकर यह निश्चय करना चाहिए कि तुम्हारे हाथों कल्याण ही होनेवाला है। हुआ तो है ही।

तुम्हें अतिलोभ छोड़ना उचित है। व्यक्तिगत व्यापार परोपकार के लिए भी खत्म कर देना चाहिए। खत्म न कर सको तो कड़ी मर्यादा निश्चित करनी चाहिए। राजनैतिक क्षेत्र से भी निकलने का प्रयत्न करना चाहिए। अगर उसमें रहना ही पड़े और तुम अपनी ही शर्तों पर रह सकते हो तो केवल मध्यप्रांत के संगठन का कार्य करो। पर तुम्हारा क्षेत्र तो पारमार्थिक व्यापार है। इसलिए तुम फिर से चर्खा-संघ में अपनी सारी शक्ति का उपयोग करो। यह काम तुम्हारी बुद्धि, तुम्हारी नीति और तुम्हारी व्यापार-शक्ति का पूरा उपयोग ले सकता है। राजनीति में बहुत गन्दगी रहती है। उसके अन्दर तुमको सन्तोष मिले, इसकी कम ही सम्भावना है। चर्खा-संघ पूर्ण सफल हो जाय तो सहज ही पूर्ण स्वराज मिल सकता है। इसमें तुम कूद पड़ो, तो ग्राम-उद्योग, अस्पृश्यता-निवारण आदि में भी थोड़ा-बहुत ध्यान दे सकते हो। लेकिन वह तो तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही। यह तो अतिलोभ को रोकने के लिए और तुमको मन के मुताबिक पूरा काम मिल सके इसके लिए सूचित कर दिया है।

दूसरी वस्तु विकार है। यह जरा कठिन है। मैं अगर तुमको ठीक-ठीक समझा होऊं तो मैं यह समझता हूं कि तुमको स्त्री-परिचर्या रोकना उचित है। सब इसे पचा नहीं सकते। यह कह सकते हैं कि हमारे मंडल में स्त्री-परिचर्या करनेवाला अधिकांश में मैं अकेला हूं। मेरी सफलता या असफलता का निर्णय मेरी मृत्यु के बाद ही निकल सकेगा। मेरे लिए तो यह प्रयोग ही

है। मैं स्वयं भी दावे के साथ नहीं कह सकता कि मैं सफल ही हुआ हूं। मेरी कामना शुकदेवजी की स्थिति को पहुंचने की है। उस स्थिति से मैं कई योजन दूर हूँ। अगर तुमको आत्मविश्वास हो तो मुझे कुछ कहना ही नहीं है। लेकिन अगर न हो और मेरा समझना ठीक हो तो तुमको गहरे उतरकर उचित परिवर्तन करना चाहिए। इसमें स्त्री-सेवा छोड़ने की बात नहीं है।

इनमें से एक भी चीज की प्रतिध्वनि तुम्हारे हृदय में न हो तो कुछ करना नहीं है। विचारों का आदान-प्रदान करना। निराशा को कहीं भी स्थान नहीं है। तुम पतित नहीं हो, सत्यनिष्ठ हो। सत्यनिष्ठ का पतन संभव ही नहीं।

बापू के आशीर्वाद

: २०७ :

नई दिल्ली, ३०-१२-३८

पूज्य श्री बापूजी,

मैं कल फ्रण्टियर मेल से सवाई माधोपुर पहुंचा। उतरते ही जयपुर राज्य की लाइन के स्टेशन पर जयपुर राज्य के नीचे लिखे अधिकारी उपस्थित मिले।

(१) रा. ब. लाला दीवानचन्द, डिप्टी इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस
(२) श्री डी. एन. चक्रवर्ती, सुपरिंटेंडेंट पुलिस
(३) हसनअली, सब-इन्स्पेक्टर पुलिस
(४) श्री. लक्ष्मीनारायण, तहसीलदार, सवाई माधोपुर

दस मिनट बाद मि. यंग, इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस, भी आगए थे। सबकी मौजूदगी में मुझपर जो नोटिस तामील किया गया उसकी नकल इसके साथ है।[1]

---

१. जमनालालजी पर निम्न नोटिस तामील किया गया था—

सेठ जमनालाल बजाज आफ वर्धा

चूंकि जयपुर-सरकार को यह जतलाया गया है कि जयपुर राज्य में आपकी उपस्थिति और कार्यशीलताओं से शांति-भंग होने की संभावना है, इसलिए, जनहित की दृष्टि से और सार्वजनिक शांति के खयाल से यह जरूरी

मि. यंग मुझसे कोई १॥ घंटे तक बातचीत करते रहे। वैसे तो मैंने ऐसी किसी रुकावट को न मानने की ही तैयारी कर ली थी, परन्तु उस दिन आपने जो अपना दृष्टिविन्दु मुझे बताया वह मुझे जँच गया था और इसलिए मैं इस मनाही को मानकर दिल्ली चला आया। जयपुर प्रजा-मंडल के मित्रों से मिलकर उनकी स्थिति जान लेना जरूरी था।

प्रजा-मंडल के मित्रों का मत था कि मुझे तुरन्त ही इस आज्ञा को भंग कर देना चाहिए था; परन्तु यहाँ श्री. हीरालालजी को जब मैंने आपके विचार बताये तो उन्हें वे पसन्द आये। मेरी इस रोक के सम्बन्ध में आज एक वक्तव्य मैंने अखबारों में दिया है। उसकी भी एक प्रति इसके साथ भेज रहा हूँ।

कल से ज. प्र. मंडल की कार्यकारिणी की मीटिंग जयपुर में होगी। उसमें मुझपर लगाई गई रोक से उत्पन्न परिस्थिति पर विचार तथा प्रजा-मंडल की राजनैतिक मांग का कच्चा ढाँचा तैयार किया जायगा। उसे लेकर मैं तथा श्री. हीरालालजी ३-४ दिन में बारडोली आ जायंगे और आपकी राय तथा सूचना जानकर उसे पक्का बना लेने का विचार है।

मुझपर यदि रुकावट लगाई जाय तो उसके बारे में आपने एक चिट्ठी लिखने को कहा था। वह यदि मेरी तरफ से भेजनी हो तो उसका मसविदा बनाकर श्री. सागरमल के हाथ भेज दीजिए। यदि आप खुद इस विषय में किसीको पत्रादि लिखना मुनासिब समझें तो उसकी भी सूचना मुझे इनके साथ भिजवा दीजिएगा।[1]

जमनालाल बजाज का प्रणाम

समझा गया है कि जयपुर राज्य में आपका प्रवेश गैर-कानूनी करार दे दिया जाय।

इसलिए आप अगले हुक्म तक जयपुर राज्य में प्रवेश न करें।

बहुक्म कौंसिल ऑफ स्टट,

एम० अल्ताफ ए० खेरी

सेक्रेटरी, कौंसिल ऑफ स्टेट, जयपुर

१. इस पत्र के मिलते ही गांधीजी ने श्री राधाकृष्ण बजाज को लिखा—"यह तार भेजो। खत भी साथ में है।

: २०८ :

बम्बई, १६-१-३९

पूज्य श्री बापूजी,

इस पत्र के साथ मि. यंग की ओर से श्री. देशपांडेजी (गोविन्दगढ़) को भेजे हुए पत्र की[1] नकल भेज रहा हूँ। श्री देशपांडेजी ने श्री शंकरलाल भाई को भी उसकी नकल भेजी है। उन्होंने आपको लिखा ही होगा। इसका जो जवाब आप उन्हें भेजेंगे वह कृपया मुझे भी सूचित कर दें। वैसे तो अन्डरटेकिंग (प्रतिज्ञा) देने में हर्ज नहीं था, परन्तु वर्तमान स्थिति में प्रश्न विचारणीय हो जाता है। मेरे कार्यक्रम की नकल भी आपको भेज रहा हूं।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

: २०९ :

बम्बई, १७-१-३९

प्रियबहन राजकुमारीजी,

कल पू. बापूजी का तार मिलने पर यहां से मैंने जयपुर दरबार की स्टेट

"तार। हुक्म के बारे में कोई चिन्ता नहीं। अगर हो सके तो बारडोली आ जाओ।" —बापू

लेकिन उपरोक्त तार भेजने से पहले ही जमनालालजी का नई दिल्ली से भेजा हुआ ता. ३१-१२-३८ का निम्न तार मिला—

"सागरमल नहीं आ रहे हैं। बापू को मंजूरी का तार दो कि जयपुर के दोस्तों से बारडोली में ४ तारीख को मिल सकेंगे।"

इस तार की पीठ पर गांधीजी ने श्री प्यारेलाल के द्वारा श्री राधाकृष्णजी के लिए लिखवाया कि पहले भेजे गए तार की जगह नीचे लिखा तार भेजो—

"तुम्हारा तार। आप—जयपुर के मित्रों से ४ तारीख को बारडोली में खुशी से मिल सकूंगा।" —बापू

१. इस पत्र में राजस्थान चरखा-संघ के सदस्यों से राजनीति में भाग न लेने की अन्डरटेकिंग मांगी गई थी।

कौन्सिल को जो पत्र लिखा था उसकी नकल व वहां के नोटिफिकेशन की नकल उन्हें भेज दी है। इस पत्र के साथ जयपुर गजट के नं. ४५१८ के सारांश की नकल भेज रहा हूं। शायद बापूजी को इसकी जरूरत पड़े।

कल जो कागजात बापूजी ने मंगवाये हैं, उसपर से मालूम होता है कि इस 'हरिजन' में वह इस विषय पर कुछ लिखेंगे। यदि बापूजी के उस लेख की एक नकल आप मुझे वर्धा के पते पर भिजवा देंगी तो जयपुर राज्य में प्रचार करने के लिए मैं उसका उपयोग करना चाहता हूं। जिस समय हरिजन प्रकाशित होगा उसी समय उसे पत्रिका के रूप में छपाने का विचार है। इसलिए यदि उसकी नकल पहले ही मिल जायगी, तो इस काम में सुविधा होगी। मैं कल यहां से वर्धा जाने वाला हूं।

जमनालाल बजाज के वंदेमातरम्

: २१० :

बारडोली, २८-१-३९

जानकीदेवी बजाज,
वर्धा,

अभी जयपुर तबतक न जाओ, जबतक कि डाक्टर और मैं दोनों यह प्रमाणपत्र न दे दें कि तुम बिल्कुल स्वस्थ और सानन्द हो। बापू

: २११ :

आगरा, ३-२-३९

महात्मा गांधी,
वर्धा

आशा है आपने रिहाई के बाद का वक्तव्य देख लिया है। अब जल्द-से-जल्द पैदल जयपुर-प्रवेश की योजना बना रहा हूँ। घनश्यामदासजी फिर से प्रवेश करने में विलम्ब करने पर जोर दे रहे हैं। मैं सहमत नहीं हूं जबतक कि सरकार लिखित रूप में न दे। मैं समझता हूं कि बीचम का पत्रव्यवहार अब प्रकाशित हो जाना चाहिए। उत्सुकता है। "लफिईस्योर" के पते पर स्वास्थ्य और प्रोग्राम की सूचना दीजिए। मेरा फोन नं० ६६ है। जमनालाल

: २१२ :

महात्मा गांधी, नई दिल्ली, ४-२-३९
वर्धा

जहांतक जिम्मेदार पुलिस अधिकारी का सवाल है जमनालालजी ने उससे जबानी अनुरोध किया है कि वह अधिकारियों को फिर विचार करने का मौका दें। क्या मैं जमनालालजी से कहूं कि वह अधिकारियों को लिखें कि पुलिस अधिकारी का हुक्म कैसा मूर्खतापूर्ण है, और आठ तारीख तक का समय दें। उन्हें अनुकूल पत्र का मसविदा भेज रहा हूं। अगर आप सहमत हों तो उन्हें पत्र द्वारा सलाह दें। महादेव

: २१३ :

महादेव देसाई वर्धा
बिड़ला हाउस,
नई दिल्ली

हालांकि पूरी बात जाने बगैर तुम्हारा सुझाव मुझे नहीं जंचा, तो भी मैं जमनालालजी को सुझा रहा हूं कि वह तुम्हारी सूचनाओं पर ध्यान दें। स्वास्थ्य अच्छा है।[1] बापू

: २१४ :

जमनालाल, ४-२-३९
मार्फत लकिइंश्योर, आगरा

तुम्हारा तार। महादेवभाई ने तुमको कुछ सुझाव तार द्वारा भेजे हैं। उनका पालन करो। स्वास्थ्य अच्छा है। बा, मणिबेन गिरफ्तार हो गई हैं। बापू

---

१. जमनालालजी की डायरी में इस सम्बन्ध में ४-२-३९ को लिखी गई निम्नलिखित सूचना मिलती है—

"वर्धा दो बार फोन। आखिर, मेरा मन हो, उस मुताबिक करने की बापू की इजाजत आ गई। सुख मिला। लड़ाई के प्रोग्राम की योजना व चर्चा। जाट-नेताओं से, विद्यार्थियों से, कार्यकर्ताओं से बातें।

: २१५ :

जयपुर, ६-२-३९

महात्मा गांधी,
वर्धा

कल दोपहर वाद जमनालालजी की गिरफ्तारी तक उनके साथ रहा सेठजी को स्पेशल ट्रेन द्वारा फौज और सशस्त्र पुलिस-सहित हमारे साथ जयपुर के पश्चिम में पहुँचाया गया। वहाँ से मोटरकारों द्वारा उन्हें अज्ञात स्थान को ले जाया गया। उनके लड़के, सेक्रेटरी और नौकर को भी साथ ले जाया गया। इन्स्पेक्टर जनरल ने गिरफ्तारी के समय यह वादा किया था कि दो घंटे के वाद यह वताया जायगा कि सेठजी को कहां भेजा गया है। वार-वार अनुरोध करने पर भी अभी तक उन्होंने इस विषय में कुछ नहीं वताया। अधिकारीगण इस विषय में सूचना देने से निश्चित रूप में इन्कार कर रहे हैं। सभी अत्यधिक चिन्तित हैं। अपने आदेश राजस्थान स्टोर्स की मार्फत तार द्वारा भेजें।

चन्द्रभाल जौहरी

: २१६ :

जमनालालजी, जहां कहीं भी हैं, सुरक्षित हैं। वक्तव्य प्रकाशित कराने का प्रयत्न कर रहा हूं। मुझे सूचित करते रहो।[1]

वापू

: २१७ :

७-२-३९

चि. जानकी वहेन,

तुम्हें चिन्ता नहीं करनी है। जो चिन्ता करता है वह लड़वैया नहीं कहलाता। जयपुर जाने में कुछ सार नहीं है। इसलिए यहीं वैठे धर्म-पालन करना है। ईश्वर को जो करना होगा, वह होगा।

---

१. श्री चंद्रभाल जौहरी के ६-२-३९ के तार उत्तर में गांधीजी ने उपरोक्त तार श्री जौहरीजी को भिजवाने को लिखाया था। यह मजमून उस तार की पीठ पर लिखा हुआ है।

टेलीफोन से आई हुई सूचनाएं अपने पास रखता हूं। कुछ वक्तव्य निकालने की इच्छा है। मोटर नहीं रोकता।

तुम्हारी आज की हालत में तुम्हारा यहां आना किसलिए है?

बापू के आशीर्वाद

: २१८ :

महात्मा गांधी,
वर्धा

आगरा, ९-२-३९

वक्तव्य देखा। यंग के बारे में अधिकांश वर्णन टेलीफोन-सन्देश के भ्रम के कारण गलत है। सच्चा वर्णन 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में ८-९ तारीख के डाक-संस्करण में प्रकाशित हुआ है। आशा है कि जरूरत के अनुसार (काम) करेंगे। रविवार को (जयपुर राज्य में) फिर प्रवेश कर रहा हूं।[1]

जमनालाल

: २१९ :

जमनालालजी,
सैनिक, आगरा।

आपका तार मिला। मेरे बयान में निश्चित संशोधन करके भेजिए। संशोधित रूप में प्रकाशित करायंगे। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आपको एक छोटे-से दल के साथ बिना सूचना दिये अगर सम्भव हो तो पैदल सरहद पार करना चाहिए। जानकीदेवी को वर्धा नहीं छोड़ना चाहिए। वह शरीर से कमजोर हैं और कमला का प्रसूति-काल निकट है, इसलिए उनका वर्धा छोड़ना खतरनाक है। अगर वह गईं तो संघर्ष में जरूर भाग लेंगी। समाप्त होने के पहले कभी वापस न लौट सकेंगी। मुझे विश्वास है कि अभी उनके

---

१. जमनालालजी को जयपुर-पुलिस ने ५ फरवरी को गिरफ्तार किया था और ७ फरवरी को जयपुर की हद के बाहर, भरतपुर राज्य की हद में ले जाकर छोड़ दिया था। इसके बाद जमनालालजी ने १२-२-३९ को जयपुर-हद में तीसरी बार प्रवेश किया। तब उनको विराटनगर में गिरफ्तार करके मोरांसागर डाकबंगले में कैद रखा गया था।

लिए ऐसा करने का समय नहीं आया है। वह स्वस्थ होतीं और अन्य कारणों से भी वर्धा स्वतंत्रता से छोड़ सकतीं तो भी मैं उनके वर्धा छोड़ने को प्रोत्साहन न देता और उनको तब के लिए सुरक्षित रखता जब संघर्ष पूरे जोर पर शुरू हो जाता।

: २२० :

राजकोट, २६-२-३९

राधाकृष्ण बजाज,
जयप्रजा, आगरा,

जयपुर शहर में हड़ताल न हो। बापू

: २२१ :

आगरा, २७-२-३९

महात्मा गांधी,
वांकानेर।

आपका तार मिला। जयपुर में हड़ताल सहज ही हो गई है और वाइसराय के आगमन के सिलसिले में जारी है। हम हड़ताल के पक्ष में हैं। अगर आप (हड़ताल) पसन्द न करते हों तो तार दीजिए। राधाकृष्ण

: २२२ :

वाइसराय के आने पर हड़ताल बन्द कर दी जानी चाहिए। पर इसका आखिरी फैसला तुमलोगों को ही करना चाहिए।[1] बापू

---

१. यह तथा पिछले दो तार जयपुर-सत्याग्रह के समय के हैं। इस तार का मजमून राधाकृष्ण बजाज, जो जमनालालजी की गिरफ्तारी के बाद जयपुर-सत्याग्रह का काम-काज देखते थे, के ता० २७–२–३९ के तार के पीछ गांधीजी के हस्ताक्षर में लिखा हुआ है।

इसके संबंध में जमनालालजी के विचार उनकी २५–२–३९ की डायरी में निम्न रूप में लिखे हैं—

: २२३ :

दिल्ली, १६-३-३९

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। जान-बूझकर ज्यादा नहीं लिखना चाहता। मेरा दृढ़ अभिप्राय है कि हमें अपनी मांग को बढ़ाना नहीं है। प्रजामंडल को विना शर्त मान्यता दे और सिविल लिबर्टी (नागरिक स्वतंत्रता) दे दे तो सविनय-भंग-आंदोलन समाप्त कर दिया जाय। कैदी तो छोड़े ही।[१]

तुम्हारी तबीयत ठीक रहती होगी। मानसिक स्थिति भी उत्तम होगी। कुछ पढ़ते हो? कातते हो? वजन कितना है? फल वगैरह तो खाना ही चाहिए। इसमें हठ करना मोह है। स्वाद के लिए नहीं किन्तु शरीर मांगे तो औषधि के रूप से दिया जाय। बापू के आशीर्वाद

: २२४ :

पूज्य बापूजी, मोरां सागर (जयपुर), १५-४-३९

पू. बा की बीमारी के समाचार पढ़कर चिन्ता हो रही थी। बाद में ठीक होने के समाचार पढ़े है, आशा है बा अब बिल्कुल ठीक होंगी।

राजकोट के मामले की रिपोर्ट सन्तोषजनक नहीं आ रही है। ईश्वर ठाकुरसाहब व उनके सलाहकारों को सद्बुद्धि प्रदान करे। आपको तो शायद अभी राजकोट ठहरना पड़ेगा।

कई दिनों से विचार हो रहा था कि वाइसराय के जयपुर आने के बारे में कौंसिल आफ स्टेट को पत्र लिखें कि उनका इस समय आना प्रजा व राज्य के हक में ठीक नहीं होगा। जयपुर राज्य में भयंकर अकाल पड़ रहा है। दूसरी तरफ वाइसराय के स्वागत में लाखों रुपयों का नाश होगा रोशनी आदि में। मैंने तो यह भी सोचा कि वाइसराय जबतक जयपुर में रहें, मैं विरोध में उपवास रखूं। परन्तु बाद में कई कारणों से पत्र नहीं भेजा।

२. इसके बाद ही गांधीजी की आज्ञा से जयपुर प्रजा-मंडल की कौंसिल ने २२–३–३९ को सत्याग्रह स्थगित कर दिया था।

रामदुर्ग स्टेट (कर्नाटक) में जो घटना हुई उसे पढ़कर दुःख पहुंचना स्वाभाविक था ।[1] इस घटना से तो आपने स्टेटों में सत्याग्रह स्थगित कर दिया यह बहुत ठीक किया, ऐसा विश्वास हो गया । परमात्मा जो कुछ करता है व कराता है वह ठीक ही कराता है ।

मेरा स्वास्थ्य तो बहुत ठीक है । खांसी बिलकुल चली गई । पांव में दर्द भी नहीं रहा । वजन ता. ११-४ को लिया था । १९६ करीब है । याने ११, १२ रतल कम हुआ है । मुझे वजन कम होने की चिन्ता नहीं है । मैं करीब पच्चीस रोज से एक ही बार भोजन करता हूं । शाम को दूध लेता हूं । यहां का पानी भारी होने के कारण गरम करके पीता हूं । इससे ठीक लाभ पहुंचता है ।

मेरा मन तो यहां लग गया है । शान्ति भी ठीक मिल रही है । विचार भी प्रायः ठीक चलते हैं । कई वार कमजोरियों के खयाल से उदासीनता व रोना आ जाया करता है । वाद में विचार करने से, पढ़ने से उत्साह व भविष्य ठीक दिखाई देने लगता है । भक्ति की ओर झुकाव बढ़ रहा है । बढ़ा रहा हूं । परमात्मा की दया रही और आपका तथा विनोबा का आशीर्वाद रहा तो जीवन में उत्साह ठीक आ जायगा । पत्र सुबह प्रार्थना के वाद लिखा है, जैसे विचार आये वैसे ही । पू. बा को प्रणाम । सरदार वहां हों तो प्रणाम । नारायणदास भाई की तो कई वार याद आती रहती है ।

जमनालाल का प्रणाम

---

१. रामदुर्ग प्रजा-मंडल के अध्यक्ष और कुछ कार्यकर्ताओं को रियासती सरकार ने गिरफ्तार कर लिया था । अपने नेताओं को छुड़ाने के लिए और शायद वदला लेने के हेतु से भी, करीव २००० नगरवासियों ने वहां इकट्ठे होकर सरकारी कर्मचारियों पर हमला किया । इस हमले को दवाने के लिए सरकार ने गोली चलाई । इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप रियासत में ब्राह्मण-ब्राह्मणेतरों में आपसी झगड़ा छिड़ गया था ।

: २२५ :

एप्रिल, १९३९ (?)

चि० जानकीवहन,

कल तो नानाभाई और मनुभाई आते हैं। उनको सेगांव आने देना अच्छा होगा। आजकल यहां भीड़ नहीं है। और उनको लेने के लिए मुन्नालाल जाते हैं तो खाली क्यों तुमको तकलीफ दूं? मंगलवार को शायद पांच आदमी आवेंगे। उनको भी सेगांव लाना तो चाहता हूं। कुछ परिवर्तन करना होगा तो देख लूंगा। जमनालाल पकड़े गए सो अच्छा ही हुआ।

बापू के आशीर्वाद

विवाह-विधि[1] नानाभाई करेंगे। व्यास भी भले आवे।

: २२६ :

राजकोट, १३-५-३९

चि० जमनालाल,

तुम्हारे जयपुर लाये जाने का हाल मिला। तबीयत ठीक सुधार लेना। वजन ज्यादा नहीं घटना चाहिए। फल बराबर खाना ही चाहिए। तला-गला न खाना। वैद्य की कोई दवा खानी हो तो खाना। मुझे राजकोट लिखना। अभी तो यहीं रहना होगा। यहाँ की चिन्ता करने-जैसी कोई बात नहीं है। महादेव साथ हैं। उसकी (तबीयत) ठीक रहती है।

बापू के आशीर्वाद

: २२७ :

सेगांव, ३-८-३९

प्रिय मुरब्बी जमनालालजी,

हरिजन-आश्रम के ट्रस्ट के विषय का प्रस्ताव इसके साथ भेज रहा हूं। इसपर बापू की और मेरी सही हो गई है। अपनी सही करके आप नरहरिभाई को भेज देंगे।

---

१. मनुभाई पंचोली और विजयाबेन पटेल के विवाह के सम्बन्ध में।

आपकी तबीयत के बारे में चिन्ताजनक खबर सुनी थी। दिल्ली से आपको मिलने के लिए आने का विचार किया; पर कलकत्ते के कैदियों को देखने जाने को अधिक आवश्यक मानकर बापू ने मुझे वहां भेजा और कहा कि कलकत्ते से लौटने के बाद जरूरत होगी तो हो आना। शंकरलाल ने भी मिलने का तार किया था। आपकी इच्छा हो तो तुरन्त आजाऊं। वाइसराय ने ५ ता० को बापू को मिलने के लिए बुलाया था। परन्तु पत्र में लिखा था कि कोई खास काम नहीं है, लेकिन बहुत दिन से नहीं मिले हैं, इसलिए हम मिलें तो अच्छा हो। इसपर बापू ने लिख दिया कि हाल ही में दिल्ली से आया हूं और थका हूं, काम भी बहुत पड़े हैं, इसलिए अभी तो माफ करें। २०वीं के बाद कोई तारीख देंगे तो मिलूंगा। रियासतों के बारे में उन लोगों की नीति जरा भी समझौते की ओर हो, ऐसा नहीं लगता। २०वीं के बाद अगर वाइसराय को मिलना हो तो वहां क्या होता है, यह आपको जताने का प्रयत्न करूंगा।

आप वहां खूब कामकाज में दिन गुजारते हैं, यह जानकारी श्रीमन् से मिली थी। इसलिए आपको काम में अकेलापन तो महसूस नहीं होता होगा। तबीयत ठीक नहीं रहती, यह दुख की बात है सही। बम्बई से किसी डाक्टर को वहां देखने के लिए नहीं बुलाया जा सकता क्या?

पूज्य बापू की तबीयत बहुत अच्छी रहती है। मीराबहन विहार में बीमार पड़कर वापस आ गई हैं। डाक्टर सुशीला दिल्ली अस्पताल में एक महीना और अनुभव के लिए गई हैं। जानकी बहन को जब मिलें तो मेरा प्रणाम कहिएगा।

लि० स्ने०

महादेव के प्रणाम

: २२८ :

जयपुर स्टेट कदी, ७-८-३९

प्रिय श्री. महादेवभाई,

आपका खत मिला। आपकी कलकत्ते की खबर अखबार में देखी।

× × ×

वाइसराय के इन दिनों के व्यवहार को देखते हुए मेरी ऐसी इच्छा होती

हैं कि जबतक वह स्पष्ट तौर से मिलने का कारण न लिखें तबतक बापूजी उनसे मिलने न जायं। बापूजी इस समय नहीं गए यह बहुत अच्छा किया। इससे मुझे खुशी हुई। बापूजी से कहें कि जयपुर के मामले में वह विशेष चिन्ता न करें। मैं यहां की असलियत से वाकिफ होता जा रहा हूं। भीतर बहुत ही गन्दगी भरी हुई है। प्रजा के लिए तो कोई अपनेको जवाबदार समझता ही नहीं है।

कल हीरालालजी आदि सब मित्र छूट गए हैं। समय तो लगेगा लेकिन परमात्मा की कृपा से और बापूजी के आशीर्वाद से गन्दगी जरूर दूर होगी। वर्तमान स्थिति को देखते हुए तो मुझे काफी समय नहीं देना होगा। श्री. महाराजा साहब आगए हैं।

मुझे उनसे कुछ आशा तो थी परन्तु वह कुछ कर सकते हैं या नहीं मालूम नहीं। मैंने उन्हें एक खत तो लिखा है। उनसे मिलना तो वर्तमान हालत में संभव नहीं दिखाई देता है। अंग्रेजों में जो अच्छाई होती है वह भी यहां कम दिखाई देती है। पर उनमें जो बुराइयां हैं उनका पद-पद पर अनुभव होता है।

मेरे स्वास्थ्य आदि के विषय में तो कमलनयन ने आपसे बात की ही होगी। शंकरलालभाई का स्वभाव तो घबराने का अधिक है, इससे आशा है कि बापूजी उनकी बातों पर अधिक खयाल न करेंगे। मेरे स्वास्थ्य के कारण तो आपके आने की जरूरत नहीं है, पर यदि किसी मौके पर आप २/४ दिन के लिए आ सकें व यहां की हालत से वाकिफ हो सकें तो अच्छा होगा, खासकर शिकारखाना व जंगलात के अमानुषिक कानूनों से।

नागपुर टाइम्स में (ता. ३-८ के) राधाकृष्ण का आर्टिकल आपने देखा होगा। न देखा हो तो जरूर पढ़ें। उससे आपको कुछ कल्पना हो सकेगी। बापूजी का स्वास्थ्य ठीक है, यह पढ़कर समाधान हुआ।

बम्बई से डाक्टर को बुलाने की तो आवश्यकता बिल्कुल मालूम नहीं होती।[1] यदि सुशीला का दिल्ली से वर्धा वापस जाते वक्त मुझे देखकर जाना

---

१. यह पत्र लिखने के बाद जमनालालजी को ९-८-३९ को गांधीजी का तार मिला कि वह महादेवभाई के साथ बम्बई से डा. भरूचा को भिजवा

संभव हो सके तो ठीक है । वह सारी स्थिति से आप लोगों को भी वाकिफ कर सकेगी । अधिकारियों का व्यवहार ठीक नहीं मालूम होने से मेरे जले हुए घाव का इलाज कल से यहां के एक नेचरोपेथ की मदद से शुरू किया है ।

हरिजन-आश्रम के ट्रस्ट के ठराव पर सही करके भेज रहा हूं ।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

(नकल पर से लिया गया । इसमें मूल से कुछ फरक हो सकता है ।)

: २२९ :

जयपुर, २-९-३९

पू. बापूजी,

कल पत्र लिखा वह मिल गया होगा । श्री जयपुर महाराजा से कल बात हुई । उस पर से यह मालूम हुआ कि वह किसी ऊंचे दर्जे के हिन्दुस्तानी को दीवान बनाने की इच्छा रखते हैं । उन्होंने अपनी इच्छा वाइसराय से कह भी दी है । क्या आप भी वाइसराय को सूचित करना ठीक समझते हैं ? नहीं तो मेरी इच्छा तो होती है कि मैं एक बार वा सराय से मिलकर जयपुर की आज की स्थिति में योग्य हिन्दुस्तानी दीवान ही सफल हो सकेगा, यह कहूं । अगर यह ठीक नहीं समझा जाय या सम्भव न हो तो पत्र लिखना चाहता हूं । क्योंकि अभी तक दीवान की नियुक्ति का फैसला नहीं हुआ है । एक बार हो जाने पर कठिनाई हो जायगी । आप अपनी राय लिख भेजें । मैं भी सोचूंगा ।

हिन्दुस्तानी दीवानों में आप कोई खास नाम बता सकते हैं जिस पर वाइसराय भी आपत्ति न करके स्वीकार कर लें ? मैंने कल महाराजा को कुछ नाम नोट करवाये हैं, जिसमें विशेष रूप से तो कुंवर सर महाराज-सिंहजी का है । आप श्री राजकुमारीबहन से पूछकर लिखें कि वह कब तक भारत आनेवाले हैं ? उन्हें यह जगह ऑफर की जाय तो वह स्वीकार कर लेंगे न ? सर शादीलाल का नाम भी मैंने कहा है । आज शायद फिर महाराजा साहब से मिलना पड़े ।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

रहे हैं । इसके जवाब में भी जमनालालजी ने तार भेजा कि फिलहाल बम्बई से डाक्टर को भेजने की कोई जरूरत नहीं है ।

: २३० :

(खानगी) जयपुर, ५-९-३९

पूज्य बापूजी,

मैंने आज शिमला फोन करने की कोशिश की परन्तु राजकुमारी-बहन के बंगले के फोन नम्बर नहीं मिले। दूसरे, सात-आठ घंटे तक लाइन मिलना सम्भव नहीं था। इसलिए एक्सप्रेस तार भेजा—

महात्मा गांधी,
मैनोर-विला, शिमला

महादेवभाई या राजकुमारीजी आज रात को जयपुर ६७ नम्बर पर व्यक्तिगत फोन करने की व्यवस्था करें, ऐसा इन्तजाम करें। वाइसराय से अनुरोध करें कि अगर सम्भव हो तो जयपुर के लिए भारतीय प्रधान मंत्री नियुक्त किया जाय। कार्यक्रम और फोन नम्बर सूचित करें।

जमनालाल

आपका शिमला से दिया हुआ यह तार रात को ८॥। बजे मिला।

"अगर आसानी से हो सके तो ८ तारीख को वर्धा की मीटिंग में हाजिर हो। बापू"

इस समय वर्किंग कमेटी के समय उपस्थित होने की इच्छा तो होती है, परंतु यहां का कार्य छोड़कर आने का उत्साह नहीं हो रहा है।

श्री महाराजा साहब से दो बार तो मिल चुका। कल फिर १२॥ बजे मिलने वाला हूं। उम्मीद तो है कि प्रजा-मण्डल के प्रतिबंध का प्रश्न कल जरूर तय हो जायगा। अखबारों का प्रतिबंध सीकर किसान कैदियों को छोड़ने का प्रश्न भी शायद तय हो जायगा। तब तो मैं आने की कोशिश करूंगा। अन्यथा इस समय श्री महाराजा से मिलकर जो परस्पर विश्वास, प्रेम सम्पादन हो रहा है, उस बल पर ऊपर के तथा अन्य कई प्रश्न हल होने की आशा दिखाई देती है। मेरी गैरहाजिरी से सम्भव है कि बीच के लोग गड़बड़ी डाल देवें। इसलिए रह जाना भाग पड़ेगा। जयपुर के लिए तो मैं आपसे यही मदद इस समय चाहता हूं कि कोई योग्य भारतवासी दीवान आ जाय तो फिर बहुत-से प्रश्न मिल-जुलकर तय हो सकेंगे। आप उचित

समझें तो वाइसराय को लिखें । अन्यथा यहां तो मैं पूरी कोशिश कर रहा हूं ।

मुझे एक वात और लिख देनी है । कलकत्ते में सुभापवावू व मौलाना के वहां न होने के कारण उनसे तो मैं नहीं मिल सका । परन्तु श्री शरदवावू से मिलकर मैंने खूब साफ तौर से वातें कीं । मेरी समझ है, उसका उनके मन पर ठीक परिणाम हुआ था । उन्होंने कहा कि सुभाप-वावू को वह समझायेंगे व आपके पास लेकर आयेंगे या उन्हें भेज देंगे । मैं भी उस समय हाजिर रह सकूं तो ठीक रहेगा । उनकी वातें सुनने के वाद आप जो मार्ग (formula) निकालेंगे वह सुभापवावू स्वीकार कर लें । अव तो सरदारजी ने उनको वुलवा ही लिया है । मुझे तो पूरी आशा है कि आप चाहेंगे तो उस तरह वहुत करके वह तैयार हो जायंगे । लड़ाई के वारे में ब्रिटिश सरकार से झमेले में जाना होगा क्या ? मैं तो समझता हूं, शायद आप लोग एक आवाज से इस समय जो वाजिव शर्तें रखेंगे वह स्वीकार हो जाय । रखना चाहिए या नहीं, यह आपके विचारने की वात है । मेरी समझ से तो रखी जा सकती है ।

चि. राधाकृष्ण को भेजा है । आप जो उचित समझें इसके हाथ जवाव भिजवा दें ।

मैंने वह स्थान छोड़ दिया है । न्यू होटल में रहने आया हूं ।

जमनालाल वजाज का प्रणाम

: २३१ :

दिल्ली,
६-९-३९

चि. जमनालाल,

दीवान के वारे में कठिन वात है । शिमला में ऐसी कुछ वात हुई ही नहीं थी । अगर तुम्हारी दृष्टि से तुमारा वहीं रहना अधिक लाभदायी है तो वही किया जाय । आराम से आ सकते हैं तो आ जाना ।

वापू के आशीर्वाद

: २३२ :

श्रीहरि

जयपुर, १०-९-३९

पूज्य बापूजी,

यहां के कार्य में मेहनत तो खूब करनी पड़ रही है। परन्तु परिणाम सन्तोषकारक आ रहा है। मेरी समझ से प्रायः अपनी मांगें तो पूरी हो ही जायंगी, जल्दी ही। साथ में रचनात्मक कार्य में स्टेट की ओर से और भी ठीक सहयोग मिलना सम्भव है। श्री महाराजा साहब के बारे में मेरा खयाल, ज्यों-ज्यों परिचय बढ़ता जा रहा है, ठीक हो रहा है। उनके पास योग्य सलाहकार की कमी है। आज के मेरे स्टेटमेन्ट से आपको आज तक के कार्य की स्थिति का पता चल जायगा। कल जन्मगांठ है, उस समय भी कुछ बातें साफ हो जायेंगी। अगर आप मेरे स्टेटमेन्ट का हवाला देते हुए जयपुर में ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर न भेजकर ऊंचे दर्जे का हिन्दुस्तानी भेजने के लिए हरिजन में लिख सकें तो उसका शायद पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट पर ठीक असर पड़ेगा। मैं तो कोशिश कर ही रहा हूं। मैं अभी तक तो दूध फल पर ही हूं। ता. १५ तक यहां रहूंगा। बाद में सीकर की ओर जानेवाला हूँ।

जमनालाल का प्रणाम

: २३३ :

सेगांव, ३-१२-३९

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला था। तुम और ५० वर्ष पूरे करो और तुम्हारी शुभेच्छाएं परिपूर्ण हों। निराश बिलकुल मत होना। शान्ति से वहां तबीयत सुधारो। यहां ठीक चल रहा है। कमलनयन लम्बी बातें कर गया था। रामकृष्ण का मन अभ्यास में लग गया मालूम होता है। ओम् मजे करती है। श्रीमन् का तो पूछना ही क्या! अपने कर्तव्य में परायण रहता है। राजाजी आज आये हैं। एंडरूज यहीं हैं। आज डा. ज़ाकिर हुसेन आ रहे हैं।

बापू के आशीर्वाद

: २३४ :

वर्धा, २६-१-४०

जयपुर के बारे में मैं अभी लिखना नहीं चाहता। इस वक्त का मेरा दिल्ली जाना मेरी दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए मेरा अभी कुछ न कहना ही उचित है। वहां तो बात करूंगा ही। अपने को कोई जल्दी नहीं है। तुम्हारा इलाज पूरा हो जाने पर ही जाने का विचार करना है।[1]

: २३५ :

श्रीहरि

पूना, २९-१-४०

पू. बापूजी,

मैं परसों यहां आ पहुंचा। इलाज पूर्ववत् उसी रोज से शुरू हो गया है। दामोदर को भी कल डाक्टर ने जांचा। खून, पेशाब आदि देखकर पूरी रिपोर्ट एक हफ्ते में देने को कहा है। चि. मदालसा को आराम है। अब उसे चलने-फिरने की पूरी इजाजत मिल गई है।

जयपुर से होम मिनिस्टर का जो पत्र आया था, वह मैंने आपको दिखाया ही था। उस पत्र का जो जवाब मैं देना चाहता हूं, उसका ड्राफ्ट आपके पास इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। आप उसे देखें व जो सुधार करना ठीक समझें करें। मैंने आज सुबह श्री. हीरालालजी शास्त्री को कलकत्ता तार दिया है कि वे पूना आते समय रास्ते में वर्धा उतर जायं व आपसे मिल लें। अभी के कार्यक्रम के अनुसार वे बुधवार शाम को मेल से वर्धा उतरेंगे। जयपुर की वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए मेरा विचार हो रहा है कि आपके वाइसराय से मिलने के बाद एक दफा मैं उनसे मिलूं। अगर आप ठीक समझें तो अपनी मुलाकात में उनसे जिक्र करिए कि जयपुर के मामले में पूरी परिस्थिति वे समझना चाहते हों तो मैं उनसे मिलकर समझा दूं। यदि उन्होंने मुझे पोलिटिकल डिपार्टमेंट से मिलने का इन्तजाम करा

१. जयपुर के सवाल पर, गांधीजी ने मौन होने के कारण जमनालालजी को यह जवाब लिखकर दिया था।

दिया तो मैं उन लोगों को भी साफ तरह से समझा सकूंगा। इससे बाहर से जो खराबी व गलतफहमी होती है, उसे मिटाने में बहुत सुभीता होगा। यदि आप उसे ठीक समझते हों तो इसका जिक्र वाइसराय से करें। यदि आप यह ठीक समझते हों कि मैं उन्हें अलग पत्र लिखूं, तो आप मुझे उसका ड्राफ्ट बनाकर भेज दें, ताकि मैं उन्हें अलग लिख सकूं।

कल शाम को जयपुर से फोन आया था, जिससे मालूम हुआ कि पुलिस ने खादी-भंडार, खादी-आश्रम, प्रजा-मंडल के दफ्तर, श्री. पाटनीजी व मिश्राजी के मकान पर छापा मारा। वहाँ उन्हें कोई खास चीज मिली नहीं। सिर्फ 'जयपुर-रहस्य' नाम की एक किताब जप्त कर ली गई। शहर में इससे सनसनी फैली हुई है। इस तरह पुलिस को अपना आतंक जमाने का मौका मिल रहा है, जिसका मुमकिन है लोगों पर बुरा परिणाम हो। ऐसी परिस्थिति को देखते हुए मेरा मन यहां नहीं लगता। मेरी बहुत इच्छा होती है कि वहां जाकर रहूं व मामला सुलझाने की चेष्टा करूं।

आज तक हुई घटनाओं पर प्रकाश डालता हुआ एक छोटा-सा वक्तव्य प्रेस में देने की इच्छा है। यदि आप इसे समयानुकूल समझते हैं तो जिस आशय का वक्तव्य प्रकाशित करना ठीक हो वह श्री. शास्त्रीजी के साथ भेजें।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

: २३६ :

पूना, ३१-१-४०

महात्मा गांधी,
वर्धा

जयपुर की ताजा खबरें निराशाजनक हैं। रियासत की चालबाजी त्रासदायक और अन्यायपूर्ण है। जयपुर फ़ौरन जाने की ज़रूरत महसूस करता हूं। तार द्वारा इजाज़त दीजिए। इलाज का ठीक ध्यान रखूंगा।

जमनालाल

: २३७ :

सेगांव, १-२-४०

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र और तार मिले। शास्त्रीजी से बातें कीं।

तुम्हारी वहां की मियाद पूरी होने तक जयपुर जाने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। फिर मेरा दिल्ली का काम निबटा नहीं है, तबतक जाने की कोई बात है ही नहीं। इसलिए १५ तक सहज ही पहुंच जाते हैं। फिर कितने दिन बाकी रहते हैं? तबीयत ठीक करना भी धर्म है, यह समझना जरूरी है। तुम्हारा मसविदा ठीक नहीं मालूम होता। तुमको कोई फरियाद करनी हो तो वह महाराजा से ही करनी है। उसे बीच में लाने में कोई सार नहीं समझता। तुम जब घूमने-फिरने लग जाओगे तब उनसे खुद जाकर मिल सकते हो। फिर जो होना हो सो हो।

वाइसराय के साथ जितनी गहराई में तुम चाहते हो उतना मैं नहीं जा सकता। मूल बात के साथ जितना मेल हो उतने तक ही मैं जा सकता हूं। तुम्हारे मिलने के बारे में दिल्ली से लौटने के बाद विचार करेंगे।

मैं समझता हूं कि इसमें सब उत्तर आ जाते हैं। बाकी शास्त्रीजी बतावेंगे। जानकीदेवी और मदालसा मजे में होंगे। बापू के आशीर्वाद

: २३८ :

श्रीहरि पूना, ३-२-४०

पू० बापूजी,

श्री हीरालालजी से जयपुर के बारे में बातचीत हुई है। मेरा मन तो जयपुर जाकर बैठने का हो गया था। अब आपकी आज्ञा के अनुसार फरवरी आखिर तक यहीं रहकर इलाज कराता रहूंगा।

होम मिनिस्टर के पत्र का जवाब देना मुझे ठीक मालूम देता है। वहां की परिस्थिति का व भविष्य का विचार करते हुए जो पत्र तैयार किया गया है वह हीरालालजी आपको दिखायगे। आप पसन्द कर लेंगे तो वह पत्र चला जायगा, नहीं तो आप जैसा लिखायंगे वैसा भेज दिया जायगा।

जयपुर के मित्र लोग भी चाहते थे कि मेरी ओर से कोई सार्वजनिक

तौर से बयान निकले तो ठीक रहेगा। पर आपने मुझे यह राय दी कि इस समय मुझे कोई बयान नहीं देना चाहिए, इसलिए मैंने अपने नाम से कोई बयान नहीं दिया है। श्री हीरालालजी ने मेरी सलाह से एक छोटा सा बयान दिया है, वह आपको दिखायंगे ही।

वाइसराय के साथ जयपुर के सम्बन्ध में कोई आशाजनक या अन्य प्रकार से बात हुई हो तो आप श्री हीरालालजी से कह देंगे तो वह मुझे सूचना भेज देंगे। मेरा, मदालसा, जानकीदेवी का ठीक चल रहा है। दामोदर का एक्सरे लिया था। कोई खास शिकायत नहीं मालूम देती है।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

: २३९ :

पूना, २२-२-४०

महात्मा गांधी,
मालिकांदा, बंगाल

जयपुर-सरकार दमन-नीति का संचालन शुरू कर चुकी है। आपसे पटने में मिलने के बाद जयपुर पहुंचने का इरादा रखता हूं।

जमनालाल

: २४० :

जयपुर, ४-४-४०

पू० बापूजी,

मेरी, श्री शास्त्रीजी और पाटनीजी की प्राइम मिनिस्टर[1] से कई मुलाकातें हो चुकी हैं। प्राइम मिनिस्टर की मनोवृत्ति बहुत संकुचित है। और हमारे खयाल से वे बड़े प्रतिगामी विचारों के आदमी हैं। इसलिए मुलाकातों के दौरान में चोट पहुंचानेवाली बातें भी आईं। और ऐसे मौके भी आये जब बातचीत खतम होती हुई मालूम पड़ने लगी। वैसे प्राइम मिनिस्टर परिश्रमी और लगनवाले आदमी तो मालूम होते हैं। इनकी मनोवृत्ति कुछ ठीक रहे तो सम्भव है ठीक-ठीक काम चल जाय।

---

१. राजा ज्ञाननाथ। सर बीचम के बाद जयपुर के प्रधान मंत्री बनाये गए थे।

९ मार्च '३९ के नोटिफिकेशन को वापस लेने के लिए लिखे गए मेरे पत्र के उत्तर में कौंसिल ने यह जानना चाहा कि नोटिफिकेशन में आपत्तिजनक बात कौन-सी है ? ऐसी हालत में नोटिफिकेशन के डिटेल के बारे में बातचीत करनी पड़ी। प्राइम मिनिस्टर ने यह तो शुरू में ही जाहिर कर दिया कि प्रजा-मण्डल के नाम के बारे में वह कोई आपत्ति नहीं उठायेंगे और यहां का पदाधिकारी बाहर की किसी संस्था का पदाधिकारी न रह सके, इस बात पर भी आग्रह नहीं करेंगे। बाकी चार बातें रहीं। उनमें से प्रजा-मण्डल का मेम्बर बनने का हकदार कौन है, यह सवाल विशेष कठिनाई के बिना ही साफ हो गया। दूसरा महाराज के प्रति भक्ति का सवाल भी हल हो गया, क्योंकि महाराज की छत्रछाया में उत्तरदायी शासन चाहने का अर्थ महाराज के प्रति भक्ति शामिल समझ ली गई। तीसरे प्रजा की शिकायतों को मिटाने के लिए कानूनी उपाय काम में लेने की शर्त के बारे में भी काफी झंझट होने के बाद समझौता हो जाने की सूरत हो रही है। इस मामले में प्राइम मिनिस्टर का जोर इसी बात पर रहा कि हम लोग जनता के पास न पहुंचें और सरकार से कहकर ही शिकायतों को मिटवाने की कोशिश करें। जनता के पास पहुंचने में किसी प्रकार की रुकावट स्वीकार करने से हम लोग साफ इन्कार हो गए। तब यह सवाल प्रायः ठीक होने की दशा में आगया। चौथा सवाल बाहर की संस्थाओं से सम्बन्ध (एफिलिएशन) न रखने का है। इस बारे में प्राइम मिनिस्टर का आग्रह है कि यह बात विधान में साफ होनी चाहिए। इन चार बातों के अलावा उत्तरदायी शासन प्राप्त करने के उद्देश्य के बारे में बड़ी आपत्ति प्रकट की गई। परन्तु इसमें अपनी ओर से कुछ भी परिवर्तन न करने का निश्चय प्रकट करने के बाद प्राइम मिनिस्टर का यह आग्रह रहा है कि 'ध्येय' (आबजेक्ट) शब्द के पहले 'अन्तिम' (अल्टीमेट) शब्द और जोड़ दिया जाय। एक आपत्ति जयपुर राज्य के बाहर रहनेवाले जयपुर निवासियों की प्रवासी कमेटियां बनाने के बारे में उठाई गई है। अब असल में खास मतभेद तीन सवालों के बारे में है। अपनी ओर से रजिस्ट्रेशन के आवेदनपत्र में इन तीनों बातों को साफ कर देने की तैयारी है। परन्तु 'आब्जेक्ट' के पहले 'अल्टीमेट' जोड़ने की तैयारी नहीं है। और प्रवासी कमेटियों के बारे में भी अड़ रहने का विचार है। बाहर

की संस्थाओं से सम्बन्ध न रखने की बात सिद्धान्त में ठीक नहीं मालूम होती, हालांकि व्यवहार में विशेष हानि नहीं दिखाई देती है।

प्राइम मिनिस्टर आज बाहर गए हैं। ७-८ को वापस आयंगे तब फिर मिलना होगा। इस समय तो यही आशा है कि मतभेद के सवाल ठीक हो जायंगे। और अगर हो गए तो प्राइम मिनिस्टर का कहना है कि वह कौंसिल की १०–४ की बैठक में इस सवाल का अन्तिम फैसला करवा देंगे। महाराज से मिलना नहीं हो सका। समझौता हो जाने के बाद मिलना सम्भव हो सकता है। महाराज ने अपनी तरफ से कुछ जोर तो लगाया मालूम होता है। कम-से-कम इतना स्पष्ट है कि ये लोग लड़ पड़ने पर तुले हुए नहीं दीखते।

समझौता हो गया तब तो सम्भव है मैं वर्किंग कमेटी की बैठक के लिए चला जाऊं। समझौता न हुआ तब तो आने का सवाल है ही नहीं। समझौता हो जाने की सूरत में भी शायद मैं १५-२० दिन इधर ही ठहरने का विचार कर लूं।

रजिस्ट्रेशन के लिए जो आवेदनपत्र देने का विचार है उसकी तथा विधान की नकल आपके पास भेजी है। इस सम्बन्ध में आपको कुछ सूचना करनी हो तो मुझसे ७-४ को नं० ६७ पर जयपुर परसनल फोन करवा दें—खासकर विधान में 'आब्जेक्ट' के पहले 'अल्टीमेट' जोड़ने न जोड़ने के बारे में और बाहर के 'एफिलिएशन' के बारे में।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

: २४१ :

सेवाग्राम, ७-४-४०

भाई जमनालालजी,

आपका खत पहुंचा आज की डाक में, और मैंने तुरन्त ही पू० बापूजी को दे दिया। उन्होंने पढ़ के कहा है कि कोई सूचना की जरूरत नहीं है। इसलिए मैं फोन नहीं कर रही हूं। पू० बापूजी अच्छे हैं, काम में मगन हैं। कहते हैं जब आप आयंगे तब बातचीत हो जायगी।

आशा है आप स्वस्थ हैं और आपके काम में सफलता मिलेगी।

आपकी बहन
अमृत कुंवर

: २४२ :

वर्धा, १२-४-४०

जमनालाल बजाज
जयपुर

बधाइयाँ।[1] जबतक जरूरी हो वहीं ठहरो।

बापू

: २४३ :

सेवाग्राम, २०-५-४०

चि० जमनालाल,

सरोजिनीदेवी को लिखने की मेरी हिम्मत नहीं थी। काटजू को अनजाना नहीं गिन सकते। प्रसिद्ध वकील हैं और कांग्रेस के प्रधान थे। बड़ा ओहदा था। लोगों को ऐसा मोह भी छोड़ना चाहिए।

ओम् नापास हुई लगती है। ऐसा हो तो निराश न हो। फिर मेहनत करके पास हो ही जायगी। एक प्रसिद्ध आदमी २१ बार नापास हुआ, पर अन्त में खट से पास होगया।

बापू के आशीर्वाद

: २४४ :

सेवाग्राम, १-६-४०

चि० जमनालाल,

तुम्हारा खत मिला। काटजूजी ने मुझे लिखा था। जयपुर का तो अच्छा हो गया माना जाय। हमारे कोई कार्यकर्ता जल्दबाजी न करें। भाषण देना ही पड़े तो खादी इत्यादि पर दे। आर्थिक-सामाजिक सुधार के लिए काफी अवकाश है।

तुम्हारी तबीयत बिल्कुल अच्छी मानी जाय? जानकीदेवी कैसी है?

---

१. जयपुर-सरकार और जयपुर राज्य-प्रजा-मंडल में समझौता हो जाने पर।

क्या डा० पुरुषोत्तम पटेल का देहान्त हुआ ? उनकी पत्नी का नाम क्या है ?

वापू के आशीर्वाद

डा० पटेल की पत्नी का पत्र साथ है।

: २४५ :

ट्रेन में, २५-९-४०

चि० जमनालाल,

तुम्हारा जयपुरवाला आज ही पढ़ा। 'हरिजन' के लिए लिखने बैठा; पर विचार किया कि अभी न लिखूं। यह सोचकर छोड़ दिया कि लिखने से तुम अधिक निगाह में चढ़ जाओगे। लेकिन तुम समझते हो कि मेरे लिखने से लाभ ही होगा तो मैं लिखने को तैयार हूं। तुम्हारी और राजेन्द्रबाबू की तबीयत कैसी है ? मैं शिमला जा रहा हूं। रविवार या सोमवार को सेवाग्राम लौटूंगा।

वहाँ का काम तुम्हारे संतोष के लायक चल रहा होगा।

वापू के आशीर्वाद

: २४६ :

सेवाग्राम, १६-७-४१

चि० जमनालाल,

मेरा जी तुममें ही लगा रहेगा। वहां इच्छित लाभ मिले तो मुझे बहुत शान्ति मिलेगी। अधिक आधार तो राजकुमारी के निर्मल प्रेम के ऊपर है। लेकिन तुम्हारी मानसिक दृढ़ता का भी भाग उसमें होगा ही। खाने में या और किसीमें कुछ परिवर्तन करना हो तो मुझे लिखना या तार देना।

मदालसा आज मीराबहन के पास रह गई है। उसकी भावनाएं तो बहुत ऊंची हैं। उसका शरीर ठीक हो जाय और प्रसूति निर्विघ्न हो जाय तो मैं मानता हूं कि वह जरूर चमकेगी। विनोबा का शिक्षण सफल होना चाहिए।

वापू के आशीर्वाद

: २४७ :

शिमला वेस्ट, १८-७-४१

पूज्य बापूजी,

कल भेजा तार व पत्र तो मिल गया होगा। आपका पत्र बहन के पत्र में मिला। मेरा ठीक जम रहा है। मैं इस बात का पूरा खयाल रखता हूं कि यहां बोझ रूप न होने पाऊं। घर के सब ठीक प्रेम करते हैं। कल शाम को राजकुमारीबहन के साथ घूमने गया था। आज सुबह मुंशीजी व तोफा-बाई (उनका कुत्ता) व उसके दो अर्दली के साथ घूम आया। मैं तो ज्यादा घूमना चाहता था परन्तु तोफा के कारण २॥ माइल अन्दाज घूमना हुआ। शाम को इतना और हो जायगा। घूमना तो मैं बढ़ा लूंगा। आज तीन दिन बाद पहले कसरत, बाद में मालिश हुई। मेरा खाने का चार दफा रखना पड़ेगा ऐसा मालूम देता है। सुबह घूमकर आने पर दूध, थोड़े फल, आम या दूसरे, सेब, आड़ू, वगैरह; ११ बजे साग, फल, दही (अन्न नहीं); ४ बजे चाय के समय पांच तोले अंदाज के टोस्ट, साग (सेलेड डाले हुए) व टमाटर का रस, फल। शाम को साढ़े सात बजे घूमकर आने के बाद साग का रस साग, दूध, फल। इस तरह अभी चलाकर देखना है। अगर भविष्य में तीन बार में व्यवस्था ठीक बैठ जायगी तो वैसा कर लूंगा। साग बहुत ही अच्छी तरह से स्टीम किये हुए—सिझाये हुए मिलते हैं। फल भी आड़ू (पीच), नासपाती, सेब, आम मिल जाते हैं। दूध घर की गायों का उत्तम मिलता है। दाल, चावल, मिठाई, केले वगैरह का सम्बन्ध तो नहीं आया है। आलू के कल थोड़े-से टुकड़े ले लिये थे। आज से बन्द कर दिये हैं। मटर भी बन्द कर दी है। यहां सलगम आदि के साग भी बनाते हैं। जमीकंद तो मुझे पसंद नहीं है। इस बारे में सूचना करना हो तो कर दीजिएगा। हां, आज छोटी-छोटी सूखी भिंडी बहुत थोड़े घी में भुंजी हुई (तली हुई) दी थी। स्वाद तो लगती है। इस बारे म, आप ज्यादा घीमे तली हुई तो पसन्द नहीं करते हैं, यह मैंने कह दिया है। खान-पान का मैं व बहन मिलकर सुन्दर तरह से जमा लेंग। मानसिक दृढ़ता के बारे में तो कुछ समय के बाद ही मालूम हो सकेगा। आपका आशीर्वाद तो है ही। बहन का प्रेम भी दीख रहा है। मुझे पूरा विश्वास होने पर ही लिख सकूंगा। आप विशेष चिन्ता न कर रोज

आशीर्वाद प्रदान करते रहें। चि० मदू से तो मुझे भी बहुत आशा है, शरीर ठीक हो जावे तो। खानसाहब को आखिर मेरे माफक होना ही पड़ा। अब ठीक होंगे। आते समय मिलना नहीं हुआ। मैं अब ज्यादा नहीं लिखूंगा। बहन रोज लिखती ही है। बहन के साथ सुबह करीब १ घंटा काता भी है।

जमनालाल का प्रणाम

: २४८ :

सेवाग्राम, (जबाब दिया : २७-७-४१)

चि० जमनालाल,

तुम्हारे बुखार का हाल पढ़कर कुछ घबराहट हुई। परन्तु तार से शान्ति मिली है। वहां तबीयत बिल्कुल ठीक हो जानी चाहिए। सेवा (लेने) में दुःख का कारण नहीं है। प्रभु के प्रीत्यर्थ लेना। आशा करना कि सब सेवाओं का बदला ईश्वर सौ गुनी दूसरी सेवाओं में दिलवायगा। यह कुटुम्ब ही सेवाभावी है। उसके पिता भी ऐसे ही सीधे (सरल) थे। सचमुच देखा जाय तो उन्हें ही कपूरथला का राजा होना चाहिए था, पर वह ईसाई माने गए इसलिए गद्दी दूसरे को मिली।

बापू के आशीर्वाद

: २४९ :

शिमला, २७-७-४१

पू. बापूजी,

आपका पत्र अभी बहन राजकुमारी के पत्र में मिला। मेरा जुकाम व ज्वर तो तीन रोज में ही चला गया था। मैं परसों तो आठ माइल से भी ज्यादा—दोनों समय मिलकर—घूमा था। कल पांच माइल। क्योंकि शाम को सर बाजपेई मुझसे मिलने आगए थे। बहुत देर तक बातचीत होती रही। खासकर मुझे तो जयपुर की स्थिति पर ही बात करनी थी। इनके पिता, सर शीतलाप्रसाद जयपुर में चीफ जस्टिस हैं। इनकी राय से जबतक महाराज वापस न आ जायं, सर बायली से मिलकर विशेष लाभ नहीं होगा। मुझे भी यह राय ठीक मालूम देती है; कोशिश करके मिलने का मोह छोड़ दिया है। मेरी इच्छा यहां ता. १०-१२ अगस्त तक रहने की है। बाद में दो-

चार रोज हरिद्वार, गुरुकुल में (अभयजी के पास) रहने की इच्छा है। हरिद्वार गए भी मुझे बहुत वर्ष हो गए। वहां मुझे गंगा के कारण अच्छा मालूम देता है। वहां से, अगर संभव हुआ तो, देहरादून में जवाहरलालजी से मिल आऊंगा। बाद में, चि. ओम्, राजनारायण के पास नैनीताल एक सप्ताह रहने का इरादा है। ओम् बराबर लिखती रहती है। बाद में अगर आपकी इजाजत मिल जायगी तो एक महीना सीकर रह आऊंगा। अगस्त में वहां मौसम ठीक हो जाता है। ज्यादा समय यहां रहने से जो लाभ व प्रेम मुझे मिला है, उसमें कम होने का मुझे डर बना रहेगा। मैंने मेरा यह प्रोग्राम बहन को बता दिया है। आप इजाजत देंगे तो निश्चय कर लूंगा। दूसरी बार फिर कभी आना हुआ तो ज्यादा समय तक भी रह सकूंगा। क्योंकि फिर तो मैं इस कुटुम्ब का ही व्यक्ति बनकर आऊंगा। वैसी हालत में मुझे भी संकोच नहीं रहेगा और कुटुम्ब की भी थोड़ी-बहुत सेवा कर सकूंगा। मेरा तो अब यह मानना होता जा रहा है कि इस आदर्श कुटुम्ब का परिचय आपकी अपेक्षा मेरा ज्यादा हो जाना सम्भव है। आशा है आपको ईर्ष्या तो नहीं होगी। रायजादा हंसराजजी अभी मिलने आये हैं। आपको प्रणाम लिखाते हैं। स्वास्थ्य इनका ठीक है।

जमनालाल का प्रणाम

: २५० :

सेवाग्राम, २७-७-'४१

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरी प्रार्थना तो चालू ही है। और तुम्हारे प्रयत्न पर मुझे श्रद्धा है। राजकुमारी का सत्संग है और दूसरी तरह से भी वहां का वातावरण साफ है। इसलिए मैंने तो वहां के (तुम्हारे) निवास से (तुम्हें लाभ होने की) बड़ी आशा बांध रखी है। मदालसा खूब खुश है। यह अच्छी तरह खाना खाती है। उसे कुमारी-शाक खाने की छूट दी है। जो कुछ वह खाती है, खूब स्वाद से। जानकीदेवी भी ठीक आनन्द में रहती हैं, इसलिए इधर तो सब कुशल है।

घनश्यामदास परसों गए। बापू का आशीर्वाद

: २५१ :

सेवाग्राम, ३०-७-४१

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें अच्छा लगे, तभी तक वहां रहना है। अगर मुझसे ज्यादा अच्छा इस कुटुम्ब से जोड़ो, तो मुझे अच्छा लगेगा। ईर्ष्या नहीं होगी। पर आज जो वहां रहने में ही डरते हो तो कैसे मेरा-जैसा सम्बन्ध जोड़ोगे? जबतक रा. कु. वहां रहें तबतक रहने में हर्ज नहीं हो सकता। परन्तु तुम्हें जैसा ठीक लगे, वैसा करना। जवाहरलाल से मिलो, यह तो अच्छा ही है। मिलने की खबर अखबार में न आने देना। देहरादून के पास आनन्दमयी देवी रहती हैं। वह कमला की गुरु थीं। अच्छी बाई कही जाती हैं। मिल सको तो मिल लेना। बहुत दौड़-धूप न करना।

बापू के आशीर्वाद

: २५२ :

सेवाग्राम, १४-८-४१

चि. जमनालाल,

तुम्हा ी तबीयत वहां सुधर रही हो, ऐसा लगता है। डा. मेंकल के कहने से मालूम होता है कि घुटने की तकलीफ तो रह जायगी। अगर उतने ही पर रुक जाय तो मैं कोई हर्ज नहीं देखता। वहां मानसिक शांति मिले, तबतक न खिसकना।

बाइली से मिलने का आग्रह न रह जाय। सहज में मिल जाय तो हर्ज नहीं; पर कोशिश से मिले तो अच्छा नहीं।

रामकृष्ण से मिलकर बहुत संतोष हुआ। वह जेल का पूरा लाभ उठा रहा है।

बापू के आशीर्वाद

: २५३ :

सेवाग्राम, १७-८-४१

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। यहां आ जाना। पीछे सीकर वगैरह का विचार

करेंगे। आज श्राद्ध[1] में लगा हूं। मदु आई है। इसलिए अधिक नहीं। ओम और उसके पतिदेव को आशीर्वाद।

बापू के आशीर्वाद

: २५४ :

चि. जमनालाल सेवाग्राम, २४-८-४१

तुम्हारे तार का जवाब दिया है। उसका जवाब भी आगया। महेश के विषय में निश्चिन्तता नहीं है। वर्षों का रोग शांत है; पर उसे जड़ मूल से नाबूद नहीं मान सकते। विशेष खुराक आदि ले रहा है। थकावट भी आ जाती है। ऐसी स्थिति में खास काम के बिना बाहर नहीं निकलना चाहिए। तुम्हें किसी मदद की जरूरत है क्या ? है तो किस तरह की ?

शान्ता को वहां बुलाने में मुझे तथ्य नहीं दीखता। अगर उसके हित के लिए है, तो तुम वहां पूरा अनुभव लो, पीछे उसे स्वतंत्र रूप में भेज दिया जायगा। अगर उसकी सेवा की जरूरत हो तो मुझे लगता है कि उस विषय में संयम रखने से ही वहां का पूरा लाभ मिल सकता है। यह मेरा अभिप्राय है। इतने पर भी तुम चाहोगे, वैसा मैं करूंगा। शान्ता को पूछना तो बाकी है।

वल्लभभाई छूटे हैं। उनको पोलीपस (की बीमारी) नहीं है। इसलिए बहुत डर था, वह तो शांत हुआ। बापू के आशीर्वाद

: २५५ :

वर्धा, २५-८-४१

सेठ जमनालालजी,

देहरादून

शान्ता की इच्छा नहीं है। आप जैसा चाहें, करने को तैयार है। मेरी राय है कि अच्छा हो, उसे वहां बाद में भेजा जाय। क्या तुम्हें किसीकी सेवा की जरूरत है ? कल पूरा विवरण लिख चुका हूं। बापू

---

१. गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर का निधन ७-८-४१ को हुआ था। यहां उन्हींके श्राद्ध का उल्लेख है।

: २५६ :

सेवाग्राम, २५-८-४१

चि. जमनालाल,

इसके साथ शान्ता का पत्र है। वहां पहुंचते-पहुंचते अक्षर अस्पष्ट हो जायं और न पढ़े जायं तो पढ़ने की तकलीफ मत उठाना। उसका सार मैंने आज तार में दिया है। शान्ता की इच्छा भी नहीं है और अनिच्छा भी नहीं है। वह तो तुम्हारे अन्दर समा गई है। अर्थात् जो तुम्हारी इच्छा वह उसकी इच्छा। यह है भी ठीक। इस कारण प्रश्न केवल उसके हित का रहता है। तुम वहां बहुत अधिक समय रहने वाले हो तो शान्ता वहां जाकर कुछ प्राप्त भी कर सकती है। मेरी निगाह में तो उसे वहां तुम्हारी अनुपस्थिति में रहना चाहिए। शायद उसे वहां रहने की जरूरत भी न हो। भक्ति तो उसमें है। अब यह विचारणीय है कि वहां का वातावरण उसे सक्रिय बनाता है या नहीं। वह इस जन्म में तो दूसरा गुरु बनाने वाली है नहीं। उसके गुरु तो तुम ही हो। इस कारण तुमको तो उसे आज्ञा ही देनी है। इस पत्र-व्यवहार में ही तुम्हारा वहां रहने का समय पूरा हो जायगा। अगर तुमको वहां शांति मिलती हो और जो चाहते हो वह मिल जाता हो तो वहां से हटना नहीं। अगर वहां रहने का निश्चय करो या और कुछ तय करो, पर शांता की वहां उपस्थिति चाहते हो तो तार देना, उसे रवाना कर दूंगा। तुम्हारे तार में विचार के लिए अवकाश था। इस कारण ही तार भेजा और जवाब मंगाया। महेश और शांता दोनों के विषय में विचार करने की बात तो थी ही। मैंने ऐसा अर्थ किया कि दोनों को उनकी खातिर बुलाया गया है। तुम्हारी सेवा की खातिर नहीं, अगर बुलाने का हेतु सेवा ही हो तो जुदा विचार करना उचित है।

आज सरदार के कोई खास समाचार नहीं हैं। कल का पत्र मिला होगा। मदालसा मजे में है।

बापू के आशीर्वाद

: २५७ :

श्रीहरि

देहरादून, २६-८-४१

पू. बापूजी,

मेरा स्वास्थ्य और मन बहुत ठीक है। यहां स्वाभाविक जीवन बिताने

को मिल रहा है। मां[1] का प्रेम भी मुझे चाहिए जैसा मिल रहा है। मां अहिंसा व प्रेम की मूर्ति मालूम होती है। वातावरण भी हरिस्मरण, कीर्तन व मौन का रहता है। मां पढ़ी-लिखी न होते हुए भी जटिल प्रश्नों को बहुत सुन्दर तौर से समझाती हैं। सदा आनन्द में रहती हैं। इनके बारे में बंगला में काफी लिखा गया है। अंग्रेजी, हिन्दी में लिखा हुआ तो है, परन्तु अभी छपा नहीं है। मां के एक भक्त ज्योतिशचंद्र राय, जिन्हें यहां 'भाई' कहा जाता था, उन्होंने आपसे पत्र-व्यवहार भी किया था। उनका स्वर्गवास हो गया है। मां के पति भोलानाथजी, जिन्होंने मां के उपदेश से संन्यास ले लिया था, कहते हैं पहले बहुत क्रोधी थे। बाद में धीरे-धीरे क्रोध कम हो गया बतलाते हैं। उनकी सेवा भी मां ने खूब की थी। उनका स्वर्गवास भी यहीं किशनपुर आश्रम में होगया। मां गृहस्थी होते हुए भी बाल-ब्रह्मचारिणी बताते हैं। सत्य का ठीक आग्रह रखती हैं। यहांका जीवन भी सीधा-सादा है। कई विद्वान व सज्जन पुरुष मां के भक्त हैं। मां तो अपना सम्प्रदाय या गुरुकुल फैलाना नहीं चाहतीं, परन्तु भक्त व पुजारी लोग जसा दस्तूर है, आडम्बर थोड़ा-बहुत रचते ही रहते हैं। यहां का सृष्टि-सौंदर्य भी अच्छा है, झरने का पानी भी स्वास्थ्य के लिए लाभकारक है। इन सब बातों का विचार करके करीब एक एकड़ जमीन मां के हाल के स्थान के पास ही लेने की बात की है। उसपर दो-तीन हजार रुपये लगाकर छोटा-सा मकान बनाने का विचार किया है। जब कभी मन उठ गया या आराम की जरूरत हुई और छुट्टी मिली तो यहां कुछ रोज आकर रह जाने से शरीर व मन की थकावट कम होना संभव है।

मेरा विचार ता. २ या ३-९ को यहां से दो रोज के लिए हरिद्वार जाने का हो रहा है। वहां से नैनीताल। शायद भाई जवाहरलाल से दुबारा दो-चार रोज में मिलना हो जायगा। वर्धा ता. २१ सितम्बर तक तो पहुंचना है ही। क्योंकि मैं जेल में रहता तो इस तारीख को छूटता, सादी सजा के कारण।[2]

---

१. माता आनंदमयी।

२. जमनालालजी नागपुर-जेल से बीमारी के कारण ३०-६-४१ को रिहा हुए थे। उन्हें व्यक्तिगत सत्याग्रह में ता० २१-१२-४० को ९ मास की सजा हुई थी।

इसलिए इस तारीख को आपकी सेवा में हाजिर हो जाऊंगा। वाद में आप मेरी शा रिक व मानसिक स्थिति समझकर जेल जाने की आज्ञा दें तो वहां चला ही जाऊंगा, अन्यथा आपकी सलाह से कार्यक्रम बनाऊंगा। मुझे शिमला-देहरा-दून की मुसाफिरी से ठीक अनुभव व शान्ति लाभ हो रहा है। मूझे अव यह तो विश्वास होता जा रहा है कि मेरे घुटने का दर्द जड़ से तो जैसा डा. दास कहते थे, वैसे जाने का नहीं है। टट्टी वैठने में तो जो तकलीफ पहले होती थी, प्राय: अभी भी होती है। यहां तो मैं दोनों समय मैदान में जाता हूं। खुरपी व फावड़ी लेकर। कई वार दो पत्थर रखकर कमोड के माफिक वैठने का कर लिया करता हूं। अन्यथा जमीन पर हाथ टेक कर उठना पड़ता है। स्नान भी झरने पर ठंड पानी से करता हूं। सुख मिलता है। सोना भी जमीन पर ही करता हूं। तेल-मालिश वगैरह को छुट्टी दे रखी है। यहां व्यवस्था होने में भी कठिनाई है। वातावरण में भी इतना समय निकाला नहीं जाता। भोजन का जरूर खयाल रखता हूं। वजन वढ़ने का तो ज्यादा डर नहीं मालूम देता, क्योंकि भूख प्राय: वनी ही रहती है। ताकत कुछ तो वढ़ी मालूम देती है। परन्तु जेल में, इलाज शुरू करने के पहले जितनी मालूम देती थी, उतनी नहीं है। घूमना-फिरना दोनों समय करता तो हूं, परन्तु घूमने का जितना शिमला में उत्साह था, उतना यहांपर नहीं है। शायद यहां गर्मी पड़ती है—शिमला में ठंड ज्यादा रहती थी इससे। मेरी इच्छा तो हो रही है कि श्री आनन्दमयी मां की आपसे भेंट हो। आपकी भी इच्छा होगी तो फिर प्रयत्न करके इन्हें वर्धा लाने की व्यवस्था करूंगा। मुझे 'सेठजी' कहा जाना अच्छा नहीं लगता था, इसलिए 'भैया' या 'भैयाजी' कहना शुरू होगया है। मां को भी यह पसंद आया है।

आपसे वहां आने पर इतने विषयों पर मुझे वातें करनी हैं—मां आनन्दमयीजी, सुभाप वोस, इन्दु, जवाहरलाल, सर फ्रान्सिस, व मेरा भावी प्रोग्राम। यह आपको पहले से सूचना दे रखता हूं कि जिससे आप मेरे लिए ठीक तौर से समय रख सकें। कुछ वातें विल्कुल खानगी में ही करनी होंगी। जवाहरलाल व इन्दु से भी ठीक वातें हुई हैं, घरवार की। आपको वहुत-सी वातें तो शायद मेरे पहुंचने के पहले ही मालूम हो जाना संभव है। पू. राजकुमारी वहन के पत्र आते रहते हैं। इनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। आप उन्हें

सेवाग्राम बुला रहे हैं, परन्तु मेरी समझ है कि इन्हें स्वास्थ्य बिल्कुल, ठीक हो जाने पर ही सेवाग्राम बुलाया जाना चाहिए। इनकी व इनके भाई, भाभी सबोंकी यही इच्छा मुझे मालूम हुई थी। इसलिए आपको सूचना रूप से लिख देता हूं। बाकी आप जो उचित समझें वैसा करें।

जमनालाल का प्रणाम

यह पत्र चि. मदु आपको सुना देगी व वह अपने पास आपकी इजाजत होगी तो रख लेगी।

तार आपका अभी मिला। चि. शान्ता को अभी भेजने की जरूरत नहीं। पीछे से वह तथा जानकीदेवी आना चाहेंगी तो आ जावेंगी। मैंने तार आज इसी प्रकार का भेजा है। ज. ब.

: २५८ :

२१-३-४१

मेरा कार्यक्रम

बापूजी,

स्वास्थ्य

शारीरिक—वजन १५५ अन्दाज, व्हायटेलिटी कम होगई, नागपुर में ज्वर आने के बाद शिमला व काठगोदाम में भी ज्वर आया, निकल तो जल्दी गया। घुटने में दर्द है ही, नैनीताल में ज्यादा मालूम दिया। थकावट जल्दी मालूम होती है।

मानसिक—पहले से अच्छी स्थिति होनी चाहिए। भक्ति की ओर मन को ज्यादा लगाना चाहता हूं, उससे संतोष मिलता है। रायपुर प्रान्ट में ठीक शान्ति मिली, वातावरण भी ठीक लगा। पू. आनन्दमयीजी के प्रेम व शान्त स्वभाव से भी लाभ मिला।[1]

---

१. देहरादून से लौटने के बाद गांधीजी को दिखाने के लिए जमनालालजी ने ऊपर की रिपोर्ट बनाना शुरू किया था। लेकिन जमनालालजी की डायरी से मालूम होता है कि यह रिपोर्ट पूरी हो जाने के पहले ही उसी दिन वह गांधीजी से सेवाग्राम में मिले और उस समय उन्होंने अपने भावी

: २५९ :

वारडोली, २१-१२-४१

प्रिय जमनालाल भाई,

कल मौलाना सा. और जवाहरलाल यहां पहुंच गए। ए. आई. सी. सी. के बारे में चर्चा हुई। यह तय पाया है—अभी तक—कि यह मीटिंग वर्धा में हो। पू. बापू के बनारस जाने के पहले—यानी जनवरी १२ से १९ के बीच में। वर्किंग कमिटी अक्सर पहले और ए. आई. सी. सी. के बाद में भी बैठती है। सो ए. आई. सी. सी. यदि १५ को हो तो बापू १९ या २० को बनारस के लिए रवाना हो सकेंगे।

बापू कहते हैं कि आपके लिए उचित होगा यदि आप तुरन्त तार के

कार्यक्रम के बारे में उनसे बातचीत की। इस विषय में जमनालालजी की डायरी में निम्न प्रकार नोट है—

"बापू से प्रणाम—बातचीत। मेरे प्रोग्राम के बारे में मैंने चार प्रस्ताव रखे।

१. सत्याग्रह करके जेल जाना ?—उ० बिल्कुल नहीं।

२. जयपुर का कार्य करना ?—उ० नहीं।

३. पौनार या अन्य स्थान में चर्खा व भजन, वाचन से समय बिताना ?—उ० यह भी ठीक नहीं।

४. गो-सेवा कार्य, यदि आप इस समय उपयुक्त व जरूरी समझते हों तो, करना ?—उ० यह कार्य मुझे पसंद है, अवश्य किया जाय।"

इसके बाद तुरंत ही जमनालालजी गो-सेवा के काम में जुट पड़े। ७ दिन बाद ही उन्होंने वर्धा में अखिल भारत गो-सेवा-संघ की सभा बुलाई, जिसका उद्घाटन गांधीजी ने किया और जमनालाल की नई जिम्मेदारी की सफलता के लिए आशीर्वाद दिया। नालवाडी के पास ही, जहां श्री विनोबाजी की देख-रेख में एक गौशाला भी चलती थी, जमनालालजी ने अपने रहने के लिए एक कच्ची कुटिया बनाई, जिसका नाम गोपुरी रखा गया, और वह वहीं रहने लगे।

द्वारा एक निमन्त्रण यहां पर मौलाना सा. को भेजें कि ए. आई. सी. सी. वर्धा में हो। पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य ठीक है।.....

आज और लिखने का समय नहीं। आप अच्छे होंगे। प्यार।

आपकी बहन,
अमृत कुंवर

: २६० :

बारडोली, २१-१२-४१

चि. जमनालाल,

भाई जुगलकिशोर के पत्र के अनुसार उनसे चर्खा-संघ द्वारा काम लेना। कांगड़ा में जितना हो सके उतना पैसा तो अवश्य खर्च करेंगे; यही बात पिलानी के बारे में।

मेरे विचार से तो ए. आई. सी. सी. की बैठक वर्धा में हो, यही ठीक होगा। तुमको भी ठीक लगे तो तार से निमंत्रण भेज देना। बैठक मेरे आने की तारीख के बाद और १९वीं तारीख से पहले हो जानी चाहिए।

इन्दु यहां आई है।

मदालसा ठीक होगी। बच्चा बराबर बढ़ रहा होगा।

मुझे चर्खा-संघ में तुम्हारी अनुपस्थिति बहुत महसूस हुई और अब वर्किंग कमिटी में भी मालूम होगी। पर तुमसे आग्रह न करने में ही मैंने श्रेय समझा है।

मेरी तबीयत ठीक रहती है; तुम्हारी ठीक होगी।

२७ जनवरी के बाद गो-सेवा-संघ की सभा रख सकते हैं।

जानकीमैया आगई? तबीयत बिगाड़ी तो नहीं न?

बापू के आशीर्वाद

: २६१ :

वर्धा, २४-१२-४१

पूज्य बापूजी,

आपका ता. २१-१२ का पत्र अभी मिला। पू. राजकुमारी बहन का

पत्र यहां कल आ गया था, परन्तु मैं पू. विनोबा के साथ भानखेड गया था। आज सुबह १० बजे वापस आते ही उन्हें तार कर दिया था कि वह समय वर्धा के लिए अनुकूल नहीं रहेगा, क्योंकि उस समय इमारतें वगैरह खाली नहीं रहेंगी। तीन सौ आदमियों के लिए कैम्प वगैरह की व्यवस्था करने में समय की कमी है। तथा खर्चा भी बहुत ज्यादा हो जायगा। अगर नागपुर, अकोला करने का विचार हो तो पूनमचन्द, ब्रिजलालजी[1] से पुछवाकर निमन्त्रण भिजवाया जा सकता है।

श्री. जुगलकिशोरजी को पत्र आपने या पू. जाजूजी ने वहां से भिजवा दिया होगा।

चि. मदु व बेबी खुश हैं, श्री. जानकीदेवी व पू. मां अभी सीकर से नहीं आये हैं।

क्या चि. इन्दु आपके साथ यहां आने वाली है?

गो-सेवा-संघ की कान्फरेंस ता. १, २, ३, ४ फरवरी को रखी गई है। सरदार दातारसिंह भी उस समय आवेंगे ही। और भी कुछ व्यक्तियों को बुलवा रहा हूं।

मुझे अपने काम में, गो-सेवा-संघ में व पू. विनोबा के साथ या अकेले ही देहातों में घूमने से ठीक शांति व उत्साह मिलता जा रहा है। मेरी गाड़ी ठीक चल रही है। मेरा पत्र तो श्री. मौलाना सा. को समय पर मिल ही गया होगा।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

: २६२ :

बारडोली, २४-१२-४१

चि. जमनालाल,

मैं कैसा बेवकूफ और स्वार्थी भी हूं। तुम्हारी तबीयत का कुछ खयाल नहीं किया। सिर्फ मेरा ही किया। तुम्हारी इजाजत मांगी और मैंने राह भी न देखी। और कमिटी से आग्रह किया कि मीटिंग वर्धा में रखी जाय। उसमें मैंने हिंसा की और वह भी मामूली नहीं। मित्रता का, तुम्हारी उदारता का

---

१. श्री पूनमचन्द रांका और श्री ब्रिजलाल बियाणी उस समय क्रमशः नागपुर और विदर्भ कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे।

दुरुपयोग किया। तुम्हारे पास माफी मांगने से प्रायश्चित्त नहीं होता है। सच्चा प्रायश्चित्त तो वही होगा जिसे मैंने तुम्हारे प्रति जो निर्दयता बताई है, ऐसी कभी न दुबारा तुम्हारे प्रति या अन्य कोई के प्रति बताऊं।

तुम्हारे प्रति तो धन्यवाद ही है। अपने दिल की बात कहने की तुमने हिम्मत बताई, और अपनी मर्यादा को स्वीकार किया, यह छोटी बात नहीं है। जरा-सी भी चिन्ता न की जाय। तुम्हारे इन्कार से मेरा आदर और प्रेम बढ़ा है——अगर वृद्धि की गुंजायश थी तो।[1] बापू के आशीर्वाद

: २६३ :

बारडोली, २७-१२-४१

चि. जमनालाल,

तुम्हारा खत मिला। मैंने पूनमचन्दजी का कहना इस भरोसे पर कबूल किया है कि तुमको वह कुछ भी तकलीफ नहीं देंगे और उनमें इस काम को अंजाम देने की शक्ति है।[2] तुम्हें इस बारे में कुछ भी तकलीफ उठाना मेरे खयाल के बाहर है।

---

१. यह पत्र जमनालालजी को २७–१२–४१ को वर्धा में मिला और उसे पढ़कर उन्हें बड़ी मानसिक वेदना हुई। इस संबंध में निम्न नोट उनकी डायरी में मिलती है —

२७–१२–४१ पू. बापूजी का २४ का लिखा हुआ पत्र मिला। उससे मुझे दुःख ही पहुंचा। मैंने इसका जवाब तो लिखा परन्तु संतोष नहीं हुआ। इसलिए भेजा नहीं। किशोरलालभाई से सेवाग्राम में मिलकर भेजना निश्चय किया।"

"२८–१२–४१—किशोरलालभाई को बापू का पत्र दिखाया। उनको महादेवभाई ने टेलिफोन से बापू के दुःख के समाचार कहे थे। उन्होंने बापू को पत्र लिखा। उसीमें मैंने थोड़ा-सा लिख दिया। मैंने जो दो पत्र लिख कर रखे थे, वे फाड़ डाले।"

२. अन्त में ए. आई. सी. सी. की सभा वर्धा में ही १५ जनवरी को रखी गई। उसकी पूरी जिम्मेदारी नागपुर-कांग्रेस के अध्यक्ष श्री पूनमचंद रांका ने अपने ऊपर लेली थी।

इंदु ए. आई. सी. सी. के मौके पर आयगी तो सही। यहां खुश रहती है।

स्टेट्स पीपल कान्फेरेंस के बारे में जैसे हमारी बात हुई थी, मैंने तो अभिप्राय दिया है कि आफिस वर्धा आनी चाहिए।[1]

इसे बापू खतम नहीं कर सके हैं तो भी जितना लिखा है, उतना भेज देने को कहते हैं।

जल्दी में, अमृत कुंवर

: २६४ :

बारडोली, २८-१२-४१

पूज्य जमनालाल जी की पवित्र सेवा में,

परम पूज्य बापूजी की आज्ञा से इसके साथ एक पुर्जा भेजता हूं। प. पू. बापूजी ने तो इसे नहीं पढ़ा था। कल शाम को टहलते-टहलते प्रताप सेठ ने यह पुर्जा पढ़कर घबराते-घबराते आपकी तबीयत के विषय में खबर पूछी। बापूजी तो कुछ जानते ही नहीं थे। प्रताप सेठ ने कहा कि यह खबर 'जन्मभूमि' में निकली है।[1] इससे बापू ने वह अखबार मंगाकर पढ़ा। बापूजी ने इस शीर्षक से समाचार छापने का क्या हेतु है, कल्पना कर ही ली है। पर आप इसे पढ़कर यदि कुछ कल्पना कर सकें, तो बापूजी को लिखें। यदि कल्पना न कर सकें तो बापूजी के वहां आवें तब उनको याद दिलाइएगा। जिससे वे आपको बताएंगे।

परम पूज्य बापू जी को काम तो बहुत ही रहता है। तबीयत ठीक कही जा सकती है।

आपकी तबीयत ठीक होगी। लि. सेवक,

कनू के दंडवत् प्रणाम

---

१. यहांतक गांधीजी ने खुद ने लिखा है। किसी वजह से इस पत्र को वह पूरा नहीं कर सके।

१. 'जन्मभूमि' के २७-११-४१ के अंक में श्री जमनालालजी का फ़ोटो, "श्री जमनालाल बजाज की गंभीर बीमारी" शीर्षक के अन्तर्गत छापा गया था।

: २६५ :

वर्धा, ३०-१२-४१

पू. बापूजी,

आपका ता. २७-१२ का पत्र व कनुभाई का पत्र आज मिला।

श्री पूनमचन्द रांका ठीक कोशिश कर रहे हैं। मुझसे तो मामूली सलाह-मसलहत ले लिया करते हैं। मेरे मन पर मैंने कोई बोझ नहीं डाला है। आपके आशीर्वाद से सब काम ठीक हो जायगा।

स्टेट्स पीपल्स के बारे में श्री हरिभाऊजी ने मुझे थोड़ा कहा है। अगर जबाबदार, पूरा समय देकर काम करनेवाला मंत्री मिलना संभव हो तो ही आफिस सेवाग्राम में या वर्धा में रक्खा जाय, अन्यथा नहीं। श्री हरिभाऊजी ने तो चर्खा-संघ के विद्यालय का काम करने का निश्चय कर लिया है। पू. जाजूजी, देशपांडे, राधाकृष्ण की सलाह से मैंने भी मेरी स्वीकृति दे दी है। मेरी तो साफ राय है कि क्या तो आपको व सरदारजी को पूरी तौर से जंच जाय तो श्री बलवंन्तराय को यहां आपके पास रखकर उनसे काम लें।····मेरी खुद की राय तो अब यह होती है कि श्री बहन राजकुमारीजी को जनरल सेक्रेटरी बनाया जाय। सहायक बलवन्त-राय या और कोई प्यारेलाल सरीखे को बनाया जाय तो शायद काम ठीक तौर से, याने आपके संतोषकारक तौर से चलना सम्भव है। मैं तो कोई पद लेना नहीं चाहता। हां, वर्धा या सेवाग्राम में कार्यालय रहने का निश्चय हो जायगा तो मैं सलाह-मसलत में व थोड़ी आर्थिक व्यवस्था में भाग ले सकूंगा। अन्यथा वह भी लेने का उत्साह वर्तमान स्थिति में तो बिल्कुल है ही नहीं।

'जन्मभूमि' वाले ने क्यों मेरे बारे में इस प्रकार छापा, इस बारे में भली प्रकार से तो समझ नहीं सका। पहले तो मेरी समझ हो गई थी कि मामूली सुनी-सुनाई बात पर या मेरा वर्किंग कमेटी की मीटिंग में आना नहीं हुआ, वगैरह के कारण मन-गढ़न्त कल्पना से ऐसा किया हो। परन्तु मैंने श्री केशव-देवजी को बम्बई लिखा है कि वह इसका पता लगाकर मुझे लिखें। मेरा खयाल तो उन्हें नोटिस देने का भी हो रहा था; कई जगह से फोन आदि भी आये। बिना कारण मित्र-परिवार में चिन्ता पैदा हो गई। मैंने सुना है कि

६७८

उन्होंने कल के पत्र में क्षमा या खेद प्रकट किया है। मैंने अभी नहीं देखा। मेरा मन स्वस्थऔर काम ठीक चल रहा है।

जमनालाल वजाज के प्रणाम

: २६६ :

वारडोली, २-१-४२

चि. जमनालाल,

तुम्हारा खत मिला। भाई हरिभाऊ से कहो, उनका निश्चय मुझे पसंद है। अब खादी-विद्यालय से न हटें।

देशी संस्थाओं के वारे में मेरे आने पर वातें करेंगे।

पूनमचन्दजी को बहुत खर्च करने से रोका जाय।

खाने में ठीक खबरदार रहते होंगे।

जवाहरलाल एक दिन पहले पहुंचेंगे।

बापू के आशीर्वाद

: २६७ :

२५-१-४२

चि. जमनालाल,

मैं सब पढ़ गया। आफिस यहां आने के पहले ऐसी कोई रकम नहीं दीखती जो आज देनी चाहिए। मेनन का दरमाह हर हालत में देना चाहिए। ऐसे ही वझे का और आर्यभूषण का बिल। वझे का तो बंद होगा न? मेरी राय है कि मेनन को लिख दिया जाय कि सामान भेज देवें। वर्धा ही भेजेगा। वहां से तो गड्डे में यहां आयगा।

वार्षिक बजट के वारे में विचार करने की बात है। और रु० १५०० के वारे म भी। ये तो वाद में करेंगे।

वलवन्तराय को लिखूंगा। वापू के आशीर्वाद

दुवारा नहीं पढ़ा

: २६८ :

सेवाग्राम, २-२-४२

चि. जमनालाल,

तुम्हारा प्रश्न विचारणीय है। गो-सेवा संघ हिन्दू-धर्म की संस्था

है कि सार्वजनिक ? सार्वजनिक है तो गो-सेवा को सब धर्मी कबूल करते हैं, करेंगे ? अगर धर्म-संस्था नहीं है, तो सब धर्मों को खींचने का प्रयत्न करें।

तुम्हारी नामावली में अन्य प्रांत के कोई देखे नहीं जाते। दक्षिण में गो-सेवा का नाम नहीं; नहीं बंगाल में या पंजाब में। वहांसे किसीको नहीं लेना है ?

•• महाराज के संबंध में आजकल नहीं आया हूं। लेकिन मेरा अनुभव कुछ अच्छा नहीं है। उनके साथ एक-दो आदमी हैं, वे अच्छे हैं। मेरी वृत्ति तो यह है कि वे जितनी सहायता दे सकें हम लें। उनके पास अपनी संस्था है। इसमें हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। एक दूसरे से हम सीखें—भ्रातृभाव रखें।

हां, कोई भी स्त्री तो होनी चाहिए। मणीबहन को अवश्य लो। राजकुमारी के लिए बड़ी मुश्किल है। अपने घर में वह गाय के बारे में नियम पालन नहीं कर सकेगी। सहायक या मित्र-वर्ग निकाले, उसमें रा० कु० जैसे आ सकेंगे। पुराने संघ के पैसे के बारे में देख लूंगा।[1]

बापू के आशीर्वाद

: २६९ :

निमंत्रण

सेवाग्राम, १४-२-४२

प्रिय भाई। बहन,

आप जानते हैं कि जमनालाल और मेरे बीच कितना घनिष्ट सम्बन्ध था। कोई काम मैंने नहीं किया जिसमें उनका पूरा सहयोग तन, मन और धन

---

१. इस पत्र के बारे में जमनालालजी की डायरी में निम्न नोट है—

"२ फरवरी, ४२, गोपुरी, वर्धा, सुबह पू. बापू को गो-सेवा-संघ के बारे में पत्र लिखकर सेवाग्राम भेजा। जवाब मिला समझ में नहीं आया।"

गांधीजी को जमनालाल द्वारा लिखा गया यह अन्तिम पत्र है। ११-२-४२ को जमनालालजी का देहान्त हुआ।

से न रहा हो। जिसको राजकाज कहते हैं, वह न मेरा शौक था न उनका। वह उसमें पड़े क्योंकि मैं उसमें था। लेकिन मेरा सच्चा राजकाज तो था रचनात्मक कार्य। और उनका भी राजकाज यही था। मेरी आशा थी कि मेरे बाद जो मेरे खास काम माने जायं, उन्हें वह संपूर्णतया चलावेंगे। उन्होंने मुझे ऐसा आश्वासन भी दे रखा था। लेकिन मनुष्य की इच्छा की पूर्त्ति तो ईश्वर ही करता है। हमारी इच्छा सफल न हुई। मेरी श्रद्धा मुझे सिखाती है कि इस निष्फलता में ही सफलता मिलेगी। जो भी हो, अब मुझे सोचना है कि जमनालालजी के बदले में उनके कार्य कौन करेंगे और कैसे? इस प्रश्न की चर्चा, और हो सके तो उसे हल करने के लिए आपको कष्ट दिया जाता है। किसी को आने का आग्रह तो इसमें हो नहीं सकता है। जिन कामों में जमनालालजी ने खास दिलचस्पी ली है उसकी फेहरिस्त वक्त के क्रम से इसके साथ है। इन कामों में आप हिस्सा लेना चाहते हैं और आप आ सकते हैं तो अवश्य आइए। नहीं आ सकते हैं तो भी विवेक के खातिर आना चाहिए ऐसी कोई बात नहीं है।

आपकी दिलचस्पी होते हुए भी आप किसी कारणवश नहीं आ सकते हों तो आप लिखें कि किस काम में किस तरह आप सक्रिय हिस्सा लेंगे। चर्चा और मंत्रणा ता. २०-२-४२ शुक्रवार को दिन के २ बजे होगी। यदि आसकें तो कृपया तार से खबर देंगे तो सुविधा होगी। जिनको निमंत्रण भेजा है, उनकी फेहरिस्त भी इसके साथ है। जिनके नाम का स्मरण हम लोगों को आया उनके नाम दिये हैं। कोई रह गए हों तो भूल से ही रहे हैं, ऐसा समझकर वे निमंत्रण मंगवा सकते हैं।[१]

आपका,
मो. क. गांधी

---

१. जमनालालजी के देहान्त के बाद चौथे दिन ही उनके मित्र-समुदाय को गांधीजी ने यह निमंत्रण भिजवाया था। यह नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखा गया था।

जमनालालजी के कार्य—वक्त के क्रम से

१. गो-सेवा
२. नई तालीम
३. ग्रामोद्योग
४. महिला-सेवा
५. हरिजन-सेवा
६. गांधी-सेवा
७. खादी
८. देशी राज्य
९. राष्ट्रभाषा (हिन्दी और उर्दू का संयुक्त प्रचार)
१०. सत्याग्रह-आश्रम तथा ग्राम-सेवा
११. मारवाड़ी-शिक्षा-मंडल, सन १९१०—नव भारत विद्यालय तथा कालेज।

: २७० :

चि. जानकीबहन,

पंचगनी, ३१-७-४८

ईश्वर की कृपा होगी तो तुम्हारी खबर लेने के लिए तीसरी तारीख को पहुंच रहा हूं। 'कृपा' तो भूल से लिख गया। ईश्वर की तो हमेशा कृपा ही होती है। हम उस कृपा को न पहचान सकें, यह हमारी मूर्खता है। पर उसकी इच्छा के तो हम अपनी इच्छा या अनिच्छा से अधीन हैं ही। अर्थात् उसकी इच्छा होगी, तो तीसरी को मिलेंगे। मदालसा और ओम् वहां होंगी, यह ठीक है। सावित्री की अनुपस्थिति खलेगी। कमला का तो कहना ही क्या ? वह तो बहुत जंजाली है। अब और नाम भरने लगूंगा तो दूसरी चिट्ठी लेनी पड़ेगी और फिर वक्त ?

बापू के आशीर्वाद

: २७१ :

चि. जानकीमैया,

शिमला, १०-७-४५

अब तो रामकृष्ण छूट गया और राधाकिशन भी। तुम्हारा और दादीजी का दिल शान्त हुआ न ? देखता हूं, अब गोसेवा कैसी करती हो ?

बापू के आशीर्वाद

दूसरा भाग

: २७२ :

वर्धा, १८-१२-२६

भाई केशवदेवजी,

चि. कमला और चि. रामेश्वर की शादी सावरमती में करना मुझको ज्यादा अच्छी प्रतीत होता है। दूसरों पर असर डालने के प्रलोभन से मैंने वम्बई में शादी करने की सम्मति चार मास पूर्व दी थी। परन्तु विचारने के वाद मुझे ऐसा लगता है कि हमें केवल वर-कन्या के भले की दृष्टि से ही ऐसी वातों का निर्णय करना चाहिए। विवाह धार्मिक विधि है। वर-कन्या के लिए एक नया जन्म है। उसको जितनी शान्ति से और जितनी धार्मिक वायु में किया जाय, इतना उनके लिए वेहतर है। ऐसा वायु तो जव हम आडम्वर को छोड़ें और शान्तिमय रहें, तव ही पैदा हो सकता है। संभव है कि स्त्रीव 'को कुछ 'क्लेश हो। इस क्लेश को क्षणिक समझकर जो उचित है, उसीको करना हमारा कर्त्तव्य है, ऐसी मेरी मति है। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप भी सावरमती में विवाह करने में सम्मति दें। मुझको वहां विवाह होने में न कोई उपाधि है, न कष्ट है।

आपका,
मोहनदास गांधी

: २७३ :

यं. मं. ४-१-३१

चि. राधाकृष्ण,

खत लिखते रहना। उसमें जो खवरें मैं चाहता हूं मिल जाती हैं। जानकीवहन के आ जाने से लिखने को कहो।

विनोवा को पकड़ना चाहें तो भले पकड़ें। छोटेलाल की कुछ खवर है? उसकी तवीयत कैसे है?

वापू के आशीर्वाद

: २७४ :

यरवड़ा-मंदिर, २५-१-३१

चि. राधाकृष्ण,

छोटेलालजी को कागज लिखने की इजाजत मिले तो लिखने का कहो। शायद १६० में वह भी छूट गए? आवश्यक रेशम का अर्थ खद्दर में किनार इ. में चाहिए, वह या ऐसा कोई हिस्सा जिसके सिवाय खद्दर भी न बिक जाय। सिद्धान्त का प्रश्न हल होने से बाकी के बारे में संजोग के अनुकूल किया जा सकता है। बापू के आशीर्वाद

: २७५ :

यरवड़ा-मंदिर, २४-१-३३

चि. राधाकृष्ण,

जमनालालजी के नाम का पत्र मैं पढ़ गया हूं। महिलाश्रम या महिला-विद्यालय अथवा वनिता-विश्राम या वनिता-विद्यालय को आश्रम के नीचे रखा नहीं जा सकता, क्योंकि वह अभी हरिजन-बालिकाओं को लेने के लिए तैयार न होगा। उसपर यह बोझ नहीं लादा जा सकता। बाहर से हरिजन-बालिका आये उसे पढ़ाये, फिलहाल इतना ही बस मान लिया जाय; परन्तु ऐसी संस्था को आश्रम का आश्रय भी नहीं मिल सकता। विनोबा का अभिप्राय मुझे ठीक लगता है और महिला-विद्यालय के लिए भी मर्यादा अनिवार्य लगती है।

जानकीबहन को कहना है कि जमनालालजी की डा. मोदी के पास जांच करवाने की फिलहाल कोई आवश्यकता मैं नहीं देखता। शरीर ठीक है, कान अच्छा है, खुराक ठीक है—हजम होती है। वजन बढ़ा है, फिर किसी भी प्रकार की चिन्ता का कारण नहीं है। मोदी अभी भी नई (बात) कह सके या कर सके, ऐसा भी नहीं लगता। जरा भी आवश्यकता मालूम होगी अथवा जमनालालजी स्वयं इच्छा करेंगे तो बन्दोबस्त करने में अड़चन नहीं आयेगी, और ढील भी न होगी। इस समय उन्हें बम्बई ले जाना भी मुझे अच्छा नहीं लगता। यहां की हवा अनुकूल आगई है, उसमें फिर थोड़े दिन के लिए बदली क्यों की जाय?

मुझे माताजी[1] के काते हुए सूत के दो थान मिले हैं। उनकी ओर की प्रसादी मानकर उनका उपयोग करूंगा।

कमलनयन आया, फिर भी मुझसे मिलकर नहीं गया। मिलकर जाना चाहिए था। मुझसे मिल सकता था। अब जब आ े तब मिले। उसके अभ्यास का क्या हुआ? वह फिर क्यों नहीं लिखता? वापू के आशीर्वाद

: २७६ :

चि. रावाकिसन,

एक पत्र महिलाश्रम के विषय में लिखा है, वह मिला होगा। जमनालाल से मिलता रहता हूं। उनकी तबीयत ठीक रहती है। कल सुना कि लक्ष्मीनारायण मन्दिर में[2] दर्शन करने आने वालों की संख्या घट गई है। क्या यह ठीक है? हाजिरी का कोई हिसाब रखा जाता है? हरिजनों के लिए खोले गए दूसरे मंदिरों के विषय में भी जानकारी ले लेना। वापू

: २७७ :

चि. रावाकिसन, २२-१०-३६

विनय की खवर सुनी।[3] कमला से मिलने का मेरा वहुत मन है। वह यहां आये तो अच्छा हो। कल मैं यहां ठेठ पांच वजे तक काम में लगा रहूंगा। इसलिए वहां आऊं, तो भी दो-चार मिनट में ही भाग जाना पड़ेगा। कमला को अब वहां छुटी रहने की ज़रूरत नहीं है। यह पत्र तुम्हें ठीक लगे तो कमला को पढ़ा देना और (उसे) भेजना अथवा ले आना।

वापू के आशीर्वाद

---

१. जमनालालजी की माताजी।

२. वर्धा का लक्ष्मीनारायण-मंदिर, जिसे जमनालालजी के दादाजी ने वनवाया था, १९-७-२८ को आचार्य विनोवाजी के हाथों हरिजनों के लिए खोला गया था। देश में हरिजनों के लिए खोले गए मंदिरों में यह पहला था।

३. श्री कमला नेवटिया के लड़के विनय के गुज़र जाने पर।

: २७८ :

सेगांव, ७-१२-३६

चि. रावाकिसन,

यह ज्वर मुझे विलकुल अच्छा नहीं लगता। न तुम्हें वीमार होना चाहिए न अनुसूया को। वुखार होते हुए भी वाथ ले सकते हैं। पानी गरम नहीं, ठंडा ही होना चाहिए। मैंने मिट्टी की पट्टी लगाने को भी कहा है। यदि कल वुखार न आवे तो मेरे पास आकर समझ जाओ।

वापू के आशीर्वाद

: २७९ :

७-८-३८

चि. रावाकृष्ण,

कल सोमवार को १२ वजे मुझे मोटर चाहिए, अगर वारिश न हो तो। वालकृष्ण को नागपुर भेजना है।

कल मोटर सारा दिन रही, उसमें अपराव मेरा ही है। कल किशोरलाल न आये, उसका विपाद हुआ। हृदय रोया और मुझे स्मृतिभ्रंश हुआ। क्या करूं?

वापू के आशीर्वाद

: २८० :

एवटावाद, १२-७-३९

चि. रावाकृष्ण,

तुम्हारा खत मिला है। जमनालालजी को जेल अनुकूल तो नहीं है, लेकिन जो हो सो वहीं दुरुस्त होना है। अपने आप छोड़ देवें तो ठीक ही है। मेरा लेख देखोगे। खाने-पीने में कुछ कहना नहीं है। हजम हो सके, इतना दूव फल लेवे। स्टार्च कम। सोडा जिस चीज में जितना ले सके अच्छा ही है। ६० ग्रेन तक जा सकते हैं।

मुसलमानों का समझा।

वापू के आशीर्वाद

: २८१ :

सेगांव-वर्धा, ८-८-३९

चि. राधाकिसन,

तुम्हारा खत मिला है। मेरा लेख तो देखो।[१] कमलनयन ने मुझको थोड़े कागज दिये हैं, उनमें हिंस्र जानवरों का आधा वर्णन है। आधा बाकी है। मुझे पूरा चाहिए।

अब जमनालाल की तबीयत कैसी है?

कमलनयन सावित्री की प्रसूति नजदीक होने के कारण कलकत्ता गया है।

बापू के आशीर्वाद

: २८२ :

२९-३-३६

चि. गोदावरी,

तुम्हारा खत मिला। तू कब उठती है, यह नहीं बताया। शक्कर अनावश्यक वस्तु है और ज्यादा खाने से हानिकर है। उसके बदले में मौसम में गंडेरी चूसना अच्छा है। शक्कर से गुड़ अच्छा।

बापू के आशीर्वाद

: २८३ :

वर्धा, ११-११-३४

भाई श्री रामेश्वरदासजी,

चि. पू. बापूजी ने नीचे लिखे अनुसार लिखवाया है —

अब्दुलगफ्फारखां साहब के भाई डा. खान के पुत्र गनी अमेरिका से शक्कर (चीनी) का काम सीख कर आये हैं। इन्हें अब हिन्दुस्तान में थोड़ा सीखकर अनुभव प्राप्त करना है। उन्हें आपके यहां भेजने का विचार किया है। अभी उन्हें कुछ देना नहीं है। अपना खर्च भी वह खुद ही करेंगे, सिर्फ इतना

---

१. गांधीजी ने जयपुर व जमनालालजी के बारे में ता. १७-७-३९ को 'हरिजन' में लेख लिखा था। संभवतः यहां उसीका उल्लेख है।

है कि आपका विशेपज्ञ उन्हें सभी वातों की जानकारी करा दे और मन लगा कर सिखावे। जो काम यह कर सकें वह लिया जाय, ऐसी अपेक्षा है। आप इन्हें भाई-जैसा समझकर इनमें दिलचस्पी लें। प्रसंगवश ये भले ही आपके साथ खा लें, पर सामान्यतः कोई मुसलमान कुटुम्व या रसोइया अथवा अच्छा होटल हो तो उसमें इनके खाने की व्यवस्था कर देनी है। उसने शान्ति-निकेतन में निरामिष भोजन करने का प्रयत्न किया था, पर उससे इसकी तवीयत ठीक नहीं रही, इसलिए इसे मुसलमानी मांसाहार मिले, यह व्यवस्था आवश्यक है।

अगर इसे इस तरह लेने में आपको कोई कठिनाई न प्रतीत हो तो और आपकी तैयारी हो तो वापू को तार से समाचार देवें जिससे वह उसे भेज देंगे। ये भाई अभी यहीं हैं। श्री जमनालालजी ने सीधे आपको लिखने का सूचित किया है, इसलिए आप ही को लिखा है। इतना ही, लि.

किशोरलाल के वन्देमातरम्

: २८४ :

वर्धा, ६-१२-३४

प्रिय रामेश्वरदासजी,

वंदे। एक भाई ने गुड़ के प्रथक्करण का व्योरा भेजा है, वह इसके साथ भेजता हूं। पू. वापूजी ने कहलाया है कि आप अपने विशेपज्ञ से पूछ देखें कि यह ठीक है या नहीं। उसका परिमाणात्मक प्रथक्करण हुआ है या हो सकता है क्या? भिन्न-भिन्न प्रकार के नमूने प्राप्त करके उसका परिमाणात्मक प्रथक्करण हो सकता हो तो निकालकर उसकी रिपोर्ट भेज सको तो ठीक।

इस सम्वन्ध में देशी तथा मिल की सवसे शुद्ध शक्कर में, इसी तरह, शुद्ध और अशुद्ध शक्करों में क्या अन्तर होता है यह भी जानने की इच्छा है।

शक्कर वनाने के वाद जो शीरा या चोटा वच रहता है उसमें क्या पदार्थ रहते हैं?

ग्लूकोस और फ्रूटोस वनाने की कोई घरेलू या काम-चलाऊ पद्धति है? उसके लिए क्या क्रिया करनी पड़ती है?

यदि ये सब बातें किन्हीं पुस्तकों में मिलती हों तो उनके नाम भी लिखें। आप कुशल होंगे। यहां सब मजे में हैं। किशोरलाल के वंदेमातरम्

: २८५ :

वर्धा, १०-१२-३४

चि. रामेश्वर,

मुझे गनी के बारे में सब खबर दे दो। उसको रु. ३० तो दे ही देना। कल ज्यादा लिखा जायगा। गनी के खाने का क्या प्रबन्ध है? कोई स्वच्छ मुसलमान नहीं मिल सकता है? ख्रिस्ती पकानेवाला मिले तो भी चलेगा। यदि कोई बड़ा रेलवे स्टेशन नजदीक है तो वहां जाकर एक वक्त का खाना खा सकता है। वहां की आबोहवा कैसी है? आबादी कितनी है?

बापू के आशीर्वाद

: २८६ :

दिल्ली, ३१-१२-३४

चि. रामेश्वर,

तुम्हारा खत मिला था। विस्तारपूर्वक लिखा सो अच्छा किया। ऐसे ही मुझे लिखा करो। यथासम्भव सादगी का पाठ भाई गनी को दिया करो। अगर वह यहां आना चाहता है तो आने दो। उसके टानसिल डा. अन्सारी को दिखा देंगे। स्वामी के मार्फत मैंने एक खत शक्कर की मिल के मजदूरों के बारे में भेजा है; उसका उत्तर भेज दो। तारीख २० तक मैं दिल्ली में हूंगा। बिरला मिल्स ठिकाना करो। मैं जो नई जमीन हरिजनों के लिए ली गई है उसपर रहता हूं।

बापू के आशीर्वाद

: २८७ :

यरवड़ा-मंदिर, १८-९-३०

चि. कमला (रामेश्वरदास)

आखिर तेरा पत्र मिला। मेरा पत्र लिखने का तकाजा तू ठीक समझ गई। अब आलस्य न करना। तेरा शरीर कैसा रहता है? मुझे लिखा

करना। मेरे लिखने के निमित्त भी तू आलस दूर कर सकेगी। कराची में कीकीबहन, गंगाबहन वगैरह को मिली थी क्या? बापू के आशीर्वाद

: २८८ :

यरवड़ा-मंदिर, २-८-३०

चि. कमलनयन,

तेरा पत्र मिला। मेरे गुजराती अक्षर पढ़ सकते हो क्या? न पढ़ सको तो हिन्दी में लिखूंगा। जैसे इस बार पत्र लिखा है उसी तरह लिखा करना। पिताजी को मिलने जाय तो कहना कि वजन बढ़ाकर बाहर निकलें।

तुम्हें अक्षर सुन्दर और स्पष्ट लिखना चाहिए। अपना शरीर खूब सुधारना।

काकासाहब का आशीर्वाद।

ओम् कहां है? मदालसा को कहना कि लिखे। कमला और रामेश्वर को पत्र लिखने के लिए लिखना।

राधाकिसन कहां है? कैसे है? बापू के आशीर्वाद

: २८९ :

चि. कमलनयन,

तेरे अक्षर सुन्दर तो लगते हैं लेकिन स्पष्ट नहीं हैं। 'द' और 'ह' एक जैसे होते हैं। 'अच्छा' में 'अ' अधूरा है। और 'च्छा' में 'च' अलग पड़ गया है और 'ट' पढ़ा जाता है। 'छा' 'व्य' पढ़ा जाता है।[1]

: २९० :

यरवड़ा-मंदिर, १२-८-३०

चि. कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला है। अभी तुम्हारा धर्म शरीर (सुदृढ़) बनाना है।

---

१. यह पत्र नकल पर से लिया गया है। नकल अधूरी है। पत्र की तारीख भी नहीं मालूम हो सकी।

खुराक ठीक है। कसरत बराबर करना। जितना हो सके खादी का काम करना। मुझे पत्र लिखते रहना। कमला कैसी है? मदालसा क्या करती है? जानकीबहन को कहना कि पत्र लिखें। पिताजी की खुराक क्या है? तुम रोज कितना कातते हो? कुछ पढ़ने का समय मिलता है?

बापू के आशीर्वाद

काकासाहब आशीर्वाद भेजते हैं।

: २९१ :

यरवड़ा-मंदिर, ६-९-३०

चि. कमलनयन,

तेरा खत मिला। अच्छा लिखा गया है। यदि वहीं काफी काम है तो अजमेर जाने की आवश्यकता मुझे प्रतीत नहीं होती है। अजमेर में ज्यादा जरूरत किसीकी है तो जाना चाहिए सही। यहां से निश्चयपूर्वक अभिप्राय देना मुश्किल है। माताजी क्या कहती हैं? धार्मिक निर्णय तो टुकड़ी का सरदार ही दे सकता है। आजकल सुरेन्द्रजी हैं उनसे पूछना।

मराठी में खत लिखना मेरे लिए प्रायः अबतक तो असम्भवित है। पढ़ने का मुझको समय भी कम मिलता है। जानकीबहन को कहो मुझे लिखे।

का. सा. के आ.[1]

बापू के आशीर्वाद

: २९२ :

यरवड़ा-मंदिर, २२-९-३०

चि. कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें अक्षर साफ लिखना चाहिए। गठे हुए हैं पर स्पष्ट नहीं। आज से न सुधारोगे तो पीछे सुधरनेवाले नहीं हैं। तुम अजमेर खुशी से जाओ। वहां से भी पत्र लिखते रहना। शरीर को बिगड़ने न देना।

बापू के आशीर्वाद

---

१. काकासाहब के आशीर्वाद।

: २९३ :

शिमला, १९-७-३१

चि. कमलनयन,

तुम्हारे बारे में काकासाहब से बातें की थीं। तुम बिल्कुल अव्यवस्थित हो गए हो। प्राइवेट शिक्षक रखने की बात तो हममें से किसीके गले नहीं उतरती। अगर विद्यापीठ में शिक्षण का वातावरण न मालूम दे तो पूना में एक स्कूल है जहां तुम्हें भेजा जा सकता है। तेरा विचार हो तो तजवीज करूं। काकासाहब से चर्चा करना। मेरा अपना अनुभव यह है कि जिसे सचमुच पढ़ने का शौक होता है, वह चाहे जहां अपनी इच्छा पूरी कर सकता है। यह होते हुए भी तुझे रोकने का विचार बिल्कुल नहीं है। जहांतक हो सके, तुझे अनुकूलता देनी है। बापू के आशीर्वाद

: २९४ :

२१-८-३२

चि. कमलनयन,

तुम्हारा धर्म मुझको जेल से निकलते ही लिखने का था। मैंने खत लिखा था वह मिला था? तुमने तो खूब अनुभव लिये। विलायत जाने के पहले तुम्हारा पत्र था, ऐसा कुछ स्मरण आता है। मैंने प्रश्न का उत्तर दिया था, ऐसा भी कुछ खयाल रह गया है। अब तो प्रश्न भूल गया हूं। मुझे दुबारा लिखो।

नर्मदा बेडौल चित्र देकर ठीक निकल गई। यह आलस्य की निशानी है।

बापू के आशीर्वाद

: २९५ :

फरवरी, १९३४

चि. कमलनयन,

पिताजी का भेजा अंग्रेजी पत्र कल मिला और उसका जवाब भी भेज दिया। तेरा पत्र आज मिला।

मैंने यह सलाह दी है कि तुम्हें हिन्दी में उत्तमा परीक्षा देनी चाहिए

और अंग्रेजी पर अच्छा अधिकार प्राप्त कर लेना चाहिए। इस प्रकार तुम परिपक्व हो जाओ और अभ्यासी बन जाओ। उसके बाद फिर पश्चिम की तरफ जाओ तो पूरा लाभ उठा सकोगे। जब जाने का समय आवे तो मेरी सिफारिश है कि पहले अमेरिका जाओ। उसके बाद इंग्लैंड और फिर यूरोप के दूसरे प्रदेश। अन्त में जापान और चीन।

यह मुझे अच्छा लगता है कि तुम्हें परीक्षा का लोभ नहीं है। अमेरिका में तुम एक साल रहकर सूक्ष्म अनुभव प्राप्त करो, अंग्रेजी का अभ्यास बढ़ाओ, और फिर दूसरी जगह इच्छानुसार रहो। सब मिलाकर बाहर दो वर्ष रहो। इस प्रकार तुम्हें खूब अनुभव मिल जायगा और अपना भविष्य बना सकोगे। इस विचार में अनुभव के आधार पर जो परिवर्तन करना पड़े वह किया जा सकता है। मुख्य बात यह है कि तुरन्त तो पश्चिम की ओर जाने का विचार छोड़ना चाहिए। हिन्दी पूर्ण करने और अंग्रेजी पक्की करने के लिए मैं चार वर्ष जरूरी समझता हूं। हिन्दी के लिए ही संस्कृत अभ्यास की आवश्यकता भी जरूरी समझता हूं। चार वर्ष तक राह देखना मैं अधिक नहीं समझता। रामकृष्ण को आशीर्वाद। उसे संभालते होगे। बापू के आशीर्वाद

: २९६ :

वर्धा, ३-६-३५

चि. कमल,

१. कम बोलना।
२. सबकी सुनना लेकिन, शुद्ध हो वही करना।
३. हर मिनिट का हिसाब रखना और जिस क्षण का काम उसी क्षण करना।
४. गरीब के समान रहना। धन का अभिमान कभी मत करना।
५. पाई-पाई का हिसाब रखना।
६. अभ्यास ध्यानपूर्वक करना।
७. इसी प्रकार कसरत करना।
८. मिताहारी रहना।
९. डायरी लिखना।

१०. बुद्धि की तीव्रता की अपेक्षा हृदय का बल करोड़ों गुना कीमती है, अतः उसका विकास करना। उसके विकास के लिए गीता का, तुलसीदास का मनन आवश्यक है। भजनावली रोज पढ़ना। प्रार्थना रोज दोनों समय करना।

११. अब सगाई की है तो तू खूंटे से बंध गया है। मन को दूसरी स्त्री की तरफ कभी न जाने देना।

१२. मुझे अपने कार्य के हिसाब का एक पत्र हर हफ्ते लिखा करेगा, तो तेरा कल्याण है।[1] बापू के आशीर्वाद

: २९७ :

वर्धा, १२-६-३५

प्रिय कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने सोमसुन्दरम् और बर्नार्ड को तार भेजे सो ठीक किया। तार में 'काइंडली' (कृपया) या 'प्लीज' (मेहरबानी करके) न मिलना, यह तेरा मारवाड़ीपन है या अज्ञान है? तुम्हें रीतिभांति ठीक तौर से सीखनी चाहिए। 'थैंक्स' (धन्यवाद) और प्लीज का उपयोग तुम जितना करते हो उससे अधिक करना चाहिए और 'इफ यू प्लीज' (यदि आप चाहें) का भी। यह नोट कर रखो।

सोमसुन्दरम् और बर्नार्ड के पत्र मेरे पास आये हैं, जो तुम्हें देखने को भेजता हूं। बर्नार्ड ने जिस पुस्तक के अनुवाद की बात की है वह मेरी बापू के जीवन-चरित्र की संक्षिप्त आवृत्ति है, जो मैंने तुम्हें पूना में दी थी। इस पुस्तक का तुम वहां विद्यार्थियों में प्रचार करना, गांधिज्म (गांधीवाद) का प्रचार करना और बापू का और जमनालालजी का योग्य प्रतिनिधि बनकर लौटना। यह तुम्हें मेरे आशीर्वाद हैं। लि.

महादेव

बर्नार्ड की पत्नी बीमार है। शायद वह अपने पिता को देखने विलायत

---

१. अध्ययन के लिए लंका जाने के पहले श्री. कमलनयन गांधीजी के पास उनके आशीर्वाद लेने गए थे। उस दिन गांधीजी का मौन था। इसलिए गांधीजी ने उसको उपरोक्त पत्र के रूप में अपने आशीर्वाद लिख दिये।

जाने वाली होगी। बर्नार्ड की स्थिति कैसी है, यह भी तुम्हें उनके पत्र में देखने को मिलेगा; इसलिए सब समझकर तू व्यवहार करना।

: २९८ :

वर्धा, १६-७-३५

चि. कमलनयन,

पिताजी से सुना कि·········अब तुमसे शादी नहीं करना चाहती, इस कारण कल उसे मुक्ति दे दी। हमें यही शोभा देता है। तुम स्वस्थ होगे। तेरे नसीब अच्छे ही हैं। इस कारण तुम्हें योग्य स्त्री ही मिलेगी। अभी तो तुम अपने अध्ययन और अपने चरित्र के गठन की तरफ ही सबकुछ छोड़-छाड़कर लग जाओ। मुझे पत्र लिखना तो बाकी है ही। अपनी अंग्रेजी का सुधार करना। रसपूर्वक अध्ययन करना, शरीर मजबूत बनाना। मजदूरी करने में आलस्य मत करना। उसमें शर्म की तो बात ही क्या है? बापू के आशीर्वाद

: २९९ :

वर्धा, २५-७-३५

चि. कमलनयन,

तुम्हारा स्वच्छ खत मुझे मिला है। अपने दोषों को स्वीकार कर लेता है, सो तो बहुत अच्छा है। अब (एक) कदम आगे जाओ। दोषों को दूर करने का बड़ा प्रयत्न करो। रोजनिशी में नित्य-कर्म दे सकता है। प्रार्थना दोबार तो कर ही सकता है। रामधुन तो है ही। आलस्य छोड़ने के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि नित्य के नियम बना लेना और उसपर कायम रहना। भले कम काम हो। व्यायाम को नित्य कर्म का अनिवार्य हिस्सा माना जाय।

बापू के आशीर्वाद

: ३०० :

वर्धा, ४-९-३५

चि. कमलनयन,

तुम्हारा पत्र देरी से ही सही; पर मिला यह ठीक हुआ।

अरे रामजपन भी अचूक करेगा तो तेरा भला ही होगा।

वहां तू हाथ-कागज इस्तेमाल नहीं कर सकता इसकी चिन्ता नहीं। इसके लिए तेरे अन्दर उत्साह और गरीबों के प्रति अत्यन्त अनुकम्पा होनी चाहिए। यह तुम्हारे स्वभाव में पैदा हो जाय तब अपने-आप तुम यह सब कर लोगे। जो वस्तु तुम अपने मन के उत्साह से करोगे वही ठीक है, वही तुम्हें फलेगी।

तुम वहां बैठे-बैठे ब्रिटिश और अन्य विदेशी के भेद में मत पड़ना।

कपड़े के बारे में भी एक बात कह दूं। वहां खादी का आग्रह स्वेच्छा से नहीं रख सकते हो तो उसे छोड़ देना। जिसमें तुम्हें सुविधा हो वह पोशाक पहनना और जिसकी सुविधा हो उस कपड़े की बनाना। मैं समझता हूं कि इनमें तुम्हारे सारे प्रश्नों का उत्तर आ जाता है।

अर्थात् विदेशी या मिल के कपड़े का ओवर-कोट पहन सकते हो। मोजे पहन सकते हो, कसरत का बनियान पहन सकते हो। ये सब चीजें हाथ की ही प्राप्त करने का प्रयत्न करना बुरा नहीं है। लेकिन ऐसा न करो तो पाप नहीं माना जायगा।

वहां तुम्हारा मुख्य काम अपना अध्ययन पक्का करना है। निर्भयता, वीरता, दृढ़ता, उद्यम, उदारता, दया, प्रेम इन सबका विकास करना है। सादगी और नम्रता बढ़ानी है। वहां के जीवन का निरीक्षण करना। क्षण-क्षण का सदुपयोग करना। डायरी लिखना।

तेरा पत्र लौटाता हूं। कोई बात रह जाती हो तो पूछ लेना।

बापू के आशीर्वाद

: ३०१ :

सेगांव, ६-७-३६

चि. कमलनयन,

इसके साथ तीन पत्र भेजता हूं। ये तीस का काम करेंगे। वुडब्रुक बरमिंघम में है। वह अच्छी संस्था है। उनके सम्पर्क में जल्दी ही आ जाना। यह लिखते-लिखते लगा कि प्रोफेसर होरेस एलेक्जेंडर को भी पत्र भेजूं, अर्थात् चार पत्र हो गए। वह वुडब्रुक के हैं। मुझे नियमित रूप से लिखना। सुनना सबकी लेकिन करना अपने मन की। और तुमसे जो आशाएं बंधती जाती हैं

उसके अनुसार ही। वहां के प्रलोभनों की सीमा नहीं है। अपना नाम शोभित करना और उसके गुण याद करके 'कमल' के समान कीचड़ में रहकर भी अलिप्त रहना। इससे सबकुछ कुशल ही होगा। अपनी शक्ति के अनुसार ही डुबकियां लगाना। किसीकी प्रतिस्पर्धा मत करना। प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करेगा तो तेरी शक्तियां जितनी विकसित होनी होंगी, हो जायंगी। रामायण और गीता का गहरा अभ्यास करना। रोज अध्ययन करना। मूल गीता तो पढ़ोगे ही, लेकिन एडविन अरनोल्ड का 'सांग सेलेशियल' भी पास रखना।

बापू के आशीर्वाद

: ३०२ :

वर्धा, ७-७-३६

प्रिय कमलनयन,

इसके साथ पूज्य बापू का लिखा पत्र और उसके साथ के अन्य खत भेजता हूं। म्यूरिल के नाम तथा अन्य पत्र मैंने घर भेजे थे, वे तुझे दूसरी डाक से मिलेंगे।

आखिर तुम चले। एक दिन तो तुमने मेरे साथ लम्बी बातें कीं, पर फिर तो तुमने मुझसे कोई बात ही नहीं की। बाद में तो तू अपने आप कलकत्ते गया। वहां बहू की पसन्दगी कर आया; और सबकुछ तय हो गया, तबतक तुमने तो मुझे कोई खबर दी ही नहीं। खैर, मुझे जबर्दस्ती तुम्हारा मुरब्बी नहीं बनना है। मुझे जितनी खबर देनी योग्य हो उतनी ही देना। तुझमें दिलचस्पी लेना मैं नहीं छोड़ूंगा। वहां भी तुम्हारी प्रगति की शुभेच्छा रखूंगा, और तुम अपनी सभी मनोकामनाएं पूरी कर आओ, यह देखना चाहूंगा।

सीलोन में था तब तो तेरे अंग्रेजी पत्र कभी-कभी सुधारकर भेजता था। अब तो शायद तू मेरे पत्र विलायत से सुधार कर भेजेगा। तो भी मुझे तुम्हारी ईर्ष्या नहीं होगी। इतनी प्रगति कर आओ, ऐसा मैं चाहूंगा। पर अंग्रेजी तो ठीक, अंग्रेजी के अलावा विलायत में बहुत अधिक सीखने का है, और वह भी जल में कमलवत, अथवा बापू के कथनानुसार कीचड़ में कमलवत् रहकर

सीखना हो वह सीख आओ और बापू से सवाया कमाओ और कीर्ति प्राप्त करो।

पोलक लन्दन में है। यह आदमी बड़ा ही व्यवहार-कुशल है। भारतीय राजनीति में 'लिबरल' जैसा है; पर बापू का भक्त है। उसकी पत्नी बड़ी अच्छी बहन है। अभ्यास (पढ़ाई) के सम्बन्ध में अगर वह प्रो. लास्की से परिचय करा दे तो उनकी सलाह तुम अक्षरशः मान सकते हो। होरेस अलैग्जैंडर बहुत भला आदमी है। ऐसा है कि तुरन्त मित्र बनने जैसा; उसे बर्नार्ड अच्छी तरह जानते हैं। उसके पास तो हरेक डिटेल (विवरण) में सलाह मिल सकती है—कौन-से नाटक देखे जायं—कौन-कौन-से सिनेमा में जाना। कौन-सी संस्थाएं देखना। क्या-क्या पढ़ना, कौन-कौन-से अखबार, साप्ताहिक पढ़ना, किस तरह के आदमियों से सावधान रहना आदि-आदि। उनसे भी तुम यथाशीघ्र मिल लेना।

अब पत्र पूरा करूं। तुम्हें तो रवाना होने के पहले बहुत-से पत्र मिलेंगे और बहुत लिखने होंगे, इसलिए इसे भी लम्बा क्यों करूं?

मैं कभी पुस्तकें मंगाऊं तो भेजोगे क्या?

और कुछ नहीं तो इस पत्र की पहुंच तो लिखना ही।

लि. शुभेच्छुक,
महादेव

: २०३ :

१९३६

१. चार वर्ष, अथवा कमलनयन का अध्ययन पूरा हो तबतक, विवाह न करना।

२. सावित्री को अब जो शिक्षा लेनी हो वह हिन्दुस्तान में ही ले। विवाह के बाद दोनों प्रवास के लिए या और कोई काम से जहां इच्छा हो जायं।

३. कमलनयन-सावित्री के बीच पत्र-व्यवहार की खुली छूट होनी

४. सावित्री को विवाह से पहले भी समय-समय पर वर्धा या जानकी-बहन वगैरा जहां हो आते-जाते रहना चाहिए।[1]

बापू

: ३०४ :

सेगाव, २६-२-३७

चि. कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम गहरे उतर रहे हो और यहां सब तुम्हें जल्दी बुलाने की बात कर रहे हैं। तुम्हारे श्वसुर भी जल्दी मचा रहे हैं। जानकीबहन की भी यही इच्छा है। पिताजी का भी लगभग यही अभिप्राय है। मैं खुद तटस्थ हूं। यद्यपि मैं मानता कि तुम वहाँ से बहुत-कुछ ले आनेवाले हो, परन्तु जबतक वहां रहने का मोह हो तबतक तुम्हें यहां बुलाना मुझे ठीक नहीं लगता। अगर तुम्हें व्यापार में लगना हो तो डिग्री का मोह छोड़ना चाहिए। बैरिस्टर होकर क्या करोगे? ग्रेज्यूएट होकर क्या करोगे? जहांतक मैं तुम्हें समझता हूं तुम्हें कमाई करनी है, पिता के धन पर नहीं रहना। साधू भी नहीं बनना है। यह ठीक हो तो व्यापार में ही तुम्हारा पुरुषार्थ है। इतना स्वीकार करो तो तुम बैरिस्टरी अथवा डिग्री का लोभ छोड़ो। तुम्हारी अंग्रेजी अब ठीक-ठीक हो जानी चाहिए। परन्तु अगर तुम्हें डिग्री लेनी ही हो, कैम्ब्रिज या आक्सफोर्ड में रहना हो, तो दीनबन्धु एंडरूज से मिलना। आक्सफोर्ड या कैम्ब्रिज में जिन्हें जानता हूं उन्हें एंडरूज के द्वारा ही पहचानता हूं। इसलिए तुम उनसे मिल लो। वह तुम्हारी उचित व्यवस्था करा देंगे। वह कैम्ब्रिज में रहते हैं। उन्हें तो तुम पहचानते ही हो। फिर भी मैं उनको लिखता हूं। इसलिए जब तुम उनको लिखोगे तब उन्हें याद आ जायगी। उनका पता पेमब्रोक कालेज, मास्टर्स लॉज, कैम्ब्रिज है। जो कुछ करो पूर्ण विचार करके करना। मुझे लिखते रहना। लिखने में तुम कुछ आलस्य करते मालूम होते हो।

बापू के आशीर्वाद

---

१. कमलनयन की सगाई के बाद उनके विवाह के संबंध में जमनालालजी को दी गईं गांधीजी की सूचनाएं।

: ३०५ :

२५-६-३७

चि. कमलनयन,

मि. केलनबेक मुझे परेशान कर रहे हैं कि विवाह-प्रसंग पर तुम्हें कोई भेंट भेजें। वह सौ से अधिक रुपये खर्च करना चाहते हैं। उन्होंने तो २५ पौंड कहा। मैंने साफ ना कर दी। मुझे पूछा कि क्या देना चाहिए। मैंने कहा, 'पुस्तकें'। उन्होंने पूछा कि कौन-कौन-सी पुस्तकें; मैं निश्चय न कर सका। तुम्हीं बताओ, तुम्हें कौन-सी किताबें अच्छी लगेंगी ?

जवाब वापसी डाक से भेजना। बापू के आशीर्वाद

: ३०६ :

सेवाग्राम, १५-६-४२

चि. कमलनयन,

फूल[1] गंगा में पधरा (प्रवाहित कर) दिये; अच्छा हुआ; माताजी का चित्त शांत हुआ। हरिद्वार में दिल लगे तबतक रहें।

मदन को भेजने में कोई हरज नहीं है। आना चाहे तो आवे।

बापू के आशीर्वाद

: ३०७ :

सेवाग्राम २२-११-४५

चि. कमलनयन,

मैं जाऊं तबतक तुम यहां नहीं पहुंचोगे, ऐसा समझकर यह पत्र लिख रहा हूं। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि नागपुर बैंक जमनालालजी की है; उन्होंने इसे परोपकार के लिए खोली थी। गरीबों के लिए यह सेविंग्स बैंक बन सके, यह उनकी कल्पना थी और आज भी यही होना चाहिए। इसलिए, यह बैंक टूटनी नहीं चाहिए। यानी बैंक आफ इंग्लैंड, इम्पीरियल बैंक जब टूटे और यहां कोई उल्कापात हो तो ही नागपुर बैंक टूटे, अर्थात् वह अन्त में

---

१. जमनालालजी की अस्थियां।

टूटे शुरू में नहीं। उसकी ऐसी साख वन जानी चाहिए। तुम जमनालालजी के वारिस हो। उसका सच्चा अर्थ तो यही है कि तुम उस साख के वारिस हो और यह समझकर ही मैंने जलियांवाला ट्रस्ट को सलाह दी कि वहां के पैसे वहीं रखें और अधिक भेजने की चेष्टा करें। यही सलाह मैंने कुमारप्पा को दी है कि ग्रामोद्योग के पैसे वहीं रखें। यह विश्वास गलत सावित नहीं होना चाहिए। फिर भी कल आते ही स्टेशन के ऊपर मुझे भारतन ने दूसरी ही वात वताई। उसने तो प्रेमपूर्वक वात की और मैं उसका प्रमुख हूं इस हैसियत से उसने पूछा। कुमारप्पा ने मुझे पूछा था कि ····· वैंक में ग्रामोद्योग के पैसे रखें या नहीं ? वैकुंठभाई ने यह सलाह दी थी, इसलिए उन्होंने यह मान लिया था कि मैं स्वीकार कर ही लूंगा। परन्तु मैंने तो शंका उठाई और स्वीकार नहीं किया। और कुमारप्पा उस वैंक में पैसे जमा करा चुके थे। लेकिन अव वहां से पैसे वापस निकाल ही लेने चाहिए। पर उस हालत में व्याज खोना पड़ेगा। व्याज खोते हुए भी न निकाल सकें तो ? इसलिए भारतन ने मेरी सलाह मांगी। कुमारप्पा अभी यहां नहीं हैं। परन्तु मैंने कहा कि अगर वे लोग आपत्ति करें तो झगड़ा करके भी पैसे निकाल ही लेने चाहिए। नहीं तो मैं मानूंगा कि वह रकम जोखिम में है। और यह वाघरी के लिए भैंस को मारने जैसा होगा। ···वैंक की स्थिति क्या है, यह तो मैं आज भी ठीक से नहीं जानता। अस्पष्ट खयाल जरूर है। नई बैंकों के प्रति मेरे मन में अरुचि और अविश्वास है। इसलिए जल्दी से उनमें पैसा रखने के लिए मैं तैयार होता ही नहीं। फिर सवाल यह पैदा हुआ कि ··· वैंक में नहीं रखते तो नागपुर बैंक में क्यों ? अपेक्षाकृत वह भी नई ही कहलायगी न ? यह भी एक प्रकार से सच ही है और भारतन ने साथ ही यह भी कहा कि नागपुर वैंक के तो एक-दो महीने में ही वन्द होने की वात सुनी जा रही है। कारण कि उसे नुकसान हुआ है और लोगों के पैसे डूवने का अन्देशा है; इसलिए पहले से ही क्यों न निपटा लें। मैंने यह वात नहीं मानी और मन में दृढ़ रहा। पर इस अफवाह का मूल जानने की इच्छा हुई। उस समय राधाकृष्ण पास था। उससे मैंने पूछा। उसने मुझे समझाया। मुझे धीरज आई और मैंने भारतन से कहा कि पैसे नागपुर वैंक में ही रखने हैं। फिर भी मुझे लगा कि तुमको यह बात बतानी ; इसलिए यह पत्र लिखा है। तुम विचार करना और सावधान रहना।

जमनालाल का वारिस होना कोई ऐसी वैसी बात नहीं है। तुम उनके पुत्र के तौर से वारिस हो। मैं उनके दत्तक यानी माने हुए पिता के रूप में वारिस हूं। मेरा स्वार्थ, उनका नाम अखंडित रहे, इसमें है। उनका उठाया हुआ काम किसी प्रकार चलता रहे, इतना ही नहीं, परन्तु अधिक शोभित हो तभी तुम और मैं उनके सच्चे वारिस माने जायंगे।

तुम पैसे कमाओगे और बड़े सेठ माने जाओगे यह सम्भव है। परन्तु उनके उत्तर जीवन के पारमार्थिक काम का क्या होगा, उत्तर जीवन में खोली गई बैंक का क्या होगा? गरीब गाय का क्या, खादी का क्या, ग्रामोद्योग का क्या? उनकी इच्छा से मैं वर्धा में आकर बसा हूं ना—वह भी सरदार का मीठा क्रोध सहकर। वह मुझे एक की जगह दस बगीचे बिना परिश्रम के दिला सकते थे। लेकिन वह जमनालाल नहीं दिला सकते थे। इसलिए मैंने दस बगीचे छोड़ दिये। परन्तु अब मैं जमनालाल को खो बैठा हूं, ऐसा जरा भी आभास अपने मन में नहीं होने देना चाहता। उसकी कुंजी तुम्हारे हाथ में है, राधाकृष्ण के हाथ में है, और जानकीदेवी के हाथ में है। जानकीदेवी तो निरक्षर हैं। और उससे जिस विकास की मैंने आशा रखी थी वह तो जमनालाल के जाने के बाद सूख ही गई। इस कारण बैंक के सम्बन्ध में म उसे समझा भी नहीं सकता। समझाने की जरा कोशिश भी नहीं की। राधाकृष्ण बहुत चतुर है। वह गुना है, परन्तु पढ़ा-लिखा तो नहीं ही कहलायगा न? तुम तो विलायत हो आये हो। व्यापारी के रूप में थोड़ा नाम भी कमाया है। तुम्हारे अन्दर आत्मविश्वास तो आवश्यकता से अधिक है। जो भी हो वारिस के तौर पर और गद्दीनशीन होने की हैसियत से तो मुझे तुम्हारी ओर ही देखना होगा। इसलिए कहता हूं कि तुम अपने पिता का नाम परोपकारी के रूप में उज्ज्वल करने के लिए मर मिटना। ऐसा करने की शक्ति तुम अपने में न समझते हो तो नम्रतापूर्वक मुझे चेतावनी दे देना। सब लड़के अपने परोपकारी पिता के पीछे-पीछे भला कहां चल सकते या चलते भी हैं? इस कारण तुम यह न करो तो कोई तुम्हारी ओर उंगली नहीं उठा सकता। फिर मैं तो उंगली उठानेवाला कौन होता हूं? परन्तु दादा की हैसियत से तुझे सलाह तो दूं, चेतावनी तो दूं। फिर तुम जो कुछ करोगे उसे चुपचाप स्वीकार कर लूंगा। इसमें तो मैंने तुमको बहुत-कुछ लिख दिया है। उसपर पुख्ता विचार करना। और

नागपुर बैंक के सम्बन्ध में मैंने भारतन को जो सलाह दी है वह ठीक है या नहीं, इसका जवाव तो मुझे पहुंचा ही देना। वापू के आशीर्वाद

: ३०८ :

सेवाग्राम, २६-५-४१

चि० सावित्री,

तू प्रथम विभाग[1] में आई है इसलिए तुझे तो वहुत मुवारकवादियां मिली होंगी। मेरे तरफ से चाहिए तो ले सकती है। तेरे प्रथम विभाग में आने से मुझे कोई आश्चर्य नहीं है। क्योंकि जो विपय सीखने के थे वे तेरी वुद्धि के लिए कठिन नहीं थे। कठिन परीक्षा और हमारे मुल्क के लिए काम की तो चर्खा-संघ की है। उसमें सर्वांगीणता चाहिए। और मैं जिस परीक्षा का उल्लेख करता हूं वह प्रथमा परीक्षा है। रसपूर्ण तो है ही। तू वचन का पालन करती होगी।[2]

यहां तो अंगार झरता है। वापू के आशीर्वाद

: ३०९ :

मार्च-अप्रैल, १९४२

मुझे तो ऐसी दवा वच्चों को देना अच्छा नहीं लगता है। वच्चे योंही अच्छे हो जाते हैं, लेकिन मैं दखल नहीं देना चाहता हूं। खून आया उसका अर्थ तो यह हुआ कि डिसेंटरी है। मैं तो थोड़ा एरंडी का तेल दूं। डाक्टर को वुला लो। मैं उनसे वात करूंगा। वाद में जो देना हो सो देंगे। घवराहट की कोई जरूरत नहीं है। अच्छी हो जायगी।[3]

: ३१० :

सेगांव, २५-९-३६

भाई श्रीमन,

'नये युग का राग'[4] मैं पढ़ गया हूं। कविताएं मुझको अच्छी लगी

---

१. इंटरमीडियेट की परीक्षा में। २. खादी पहनने के वारे में।

३. श्री कमलनयन की लड़की सुमन को पेचिश होने पर गांधीजी ने मौनवार होने पर सावित्रीदेवी को यह लिखकर दिया था।

४. श्रीमन्जी की कविताओं की पुस्तक।

हैं। हेतु स्पष्ट और निर्मल है। काव्य की दृष्टि से मैं कुछ भी अभिप्राय देने योग्य अपनेको नहीं मानता हूं। तुम्हारी कृति को प्रगट करने के बारे में तो कवि लोग ही अभिप्राय दे सकते हैं। वापू के आशीर्वाद

इतना लिखने में मैंने कितना समय लिया ? क्योंकि मैं जानता ही नहीं था, क्या लिखूं।

: ३११ :

सेगांव, २०-१२-३६

चि. श्रीमन्,

तुम्हारा लेख पढ़ गया हूं। 'हरिजन' में नहीं छप सकता है। कहीं छपने लायक नहीं है। तुम्हारे पास जो योजना है उसे प्रगट करो। तुम्हारा प्रस्ताव तो सर्वमान्य है। लेकिन लिटरेसी का अर्थ क्या किया जाय ? यह प्रश्न वहुत विवादग्रस्त है। वापू के आशीर्वाद

: ३१२ :

सेगांव, १०-१०-३७

चि. श्रीमन्,

कल ही सुना कि तुमको चार दिन से अविच्छिन्न वुखार आ रहा है। यह सव कैसे ? क्या शादी की इसलिए ? मैंने ऐसे ही मान रक्खा था कि तुम्हें वीमारी हो ही नहीं सकती। यह सव वात कहां गई ? आशा करता हूं कि आज ही अच्छी खवर मिलेगी। यह खत तो प्रातःकाल की प्रार्थना के वाद पांच वजे लिखवा रहा हूं। याद रक्खो कि तुम्हारी प्रेरणा से तुम्हारे पर विश्वास रखकर मैंने परिषद[1] भरने दी है और मैंने सभापतित्व का स्वीकार किया है।

इतना वड़ा वोझ उठाने की मेरी शक्ति विल्कुल नहीं थी, लेकिन तुम्हारे उत्साह से उत्साहित होकर मैंने स्वीकार किया। अव मुझको धोखा नहीं दोगे। निश्चित होकर जल्दी अच्छे हो जाओ। क्या परिषद के वोझ ने तो

१. अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्, जिसमें वुनियादी तालीम का जन्म हुआ।

तुम्हें बीमार नहीं कर दिया है ? यदि यही कारण है तो गीता-माता का आश्रय लेकर अनासक्त और निश्चिंत बनो। अन्त में जो कुछ होता है वह ईश्वर से ही।

बापू के आशीर्वाद

: ३१३ :

सेवाग्राम, २८-४-४१

भाई श्रीमन्,

तुम्हारी सूचना[1] अच्छी है। आज राजेंद्रबाबू आते हैं। देखूंगा क्या शक्य है। जानते होगे कि मदालसा खूब आगे बढ़ रही है। काफी चलती है; आशा तो है कि बिल्कुल अच्छी हो जायगी।

बापू के आशीर्वाद

: ३१४ :

मौनवार, १६-१०-४४

चि० श्रीमन्,

यह मेरी प्रस्तावना[2] या जो कुछ माना जाय। अगर इसके अलावा कुछ चाहते हो तो कहो। बहुत मेहनत की लेकिन पूरी पुस्तिका नहीं पढ़ सका। कम-से-कम चार घंटे चाहिए। कहां से निकालूं ?

बापू के आशीर्वाद

: ३१५ :

सेवाग्राम, ३०-११-४४

चि० श्रीमन्,

तुम्हारा खत मिला। टंडनजी को लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं। मुझे प्रस्ताव मिल गया है।

केदारबाबू की नोंध अच्छी है। इसके साथ एक नकल भेजता हूं। मैं

---

१. पाकिस्तान-सम्बन्धी समस्या के बारे में कांग्रेस की भूमिका स्पष्ट करने के लिए एक विस्तृत वक्तव्य तैयार करने के बारे में श्रीमन्‌जी ने गांधीजी को लिखा था।

२. 'गांधियन प्लेन' नामक श्रीमन्‌जी की पुस्तक की प्रस्तावना।

चाहता हूं इस बारे में मदालसा को दोरो। शांताबहन से बात करना है तो करो। मुझको खत[1] अच्छा लगा है। कुछ-न-कुछ तो होना ही चाहिए। सब अध्यापकों को मिलने के लिए भी मैं तैयार हूं। लेकिन यह बोझ मुझ पर नहीं होना चाहिए। थकान के कारण ३ तारीख से ३१ तक काम छोड़ना चाहता हूं।

बापू के आशीर्वाद

: ३१६ :

सेवाग्राम, १-१२-४४

चि० श्रीमन्,

तुम्हारा खत बहुत स्पष्ट और अच्छा है।[2] मेरा व्रत[3] खतम होने पर हम सब चर्चा करेंगे। तुम्हारे कालेज-कार्य का महत्व मैं बराबर समझता हूं। उसमें विद्यार्थी-संगठन और महिला-आश्रम का बोझ तुम्हारा सब समय ले लेगा। इसलिए जहांतक हो सके हिन्दुस्तानी प्रचार-कार्य से तुमको मुक्त करने में मदद दूंगा। देखता हूं क्या हो सकता है।

तुम्हारा स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा होना चाहिए। सेवा-कार्य के लिए शरीर-रक्षा का धर्म नहीं भूलोगे।

बापू के आशीर्वाद

: ३१७ :

चि० श्रीमन्, ३-१२-४४

तुम्हारा खत अभी मिला।[4] उसमें तुम दोनों का प्रेम भरा है। लेकिन

---

१. वर्धा के महिलाश्रम के बारे में गांधीजी को लिखा गया वहां के अध्यापकों का पत्र।

२. इस पत्र में श्रीमन्जी ने इच्छा प्रकट की थी कि उन्हें हिन्दुस्तानी प्रचार-कार्य से मुक्त कर दिया जाय।

३. थकावट के कारण कुछ दिन काम न करने का व्रत गांधीजी ने लिया था।

४. श्रीमन्जी व मदालसा ने गांधीजी को आराम के लिए वर्धा में अपने मकान जीवन-कुटीर में कुछ दिन रहने के लिए आमंत्रित किया था।

इसी समय स्थानान्तर की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। देखता हूं व्रत-दरमियान क्या होता है। तुम्हारे साथ थोड़ा समय भी रहना मुझे प्रिय लगेगा। तुम अच्छे होगे। बापू के आशीर्वाद

: ३१८ :

सेवाग्राम, २५-१-४५

चि० श्रीमन्,

तुम दोनों का प्रेम अवर्णनीय है। प्रेम के खातर भी तुम्हारे यहां जाने का दिल होता है। शिविर चलता है तबतक तो यहां से छूट नहीं सकता। मौन तो रुचिकर है, मैं बच जाता हूं। काम पर तो चढ़ गया हूं, ऐसा मानो तो भी तुम्हारे यहां जाने का दिल रहेगा ही। बापू के आशीर्वाद

: ३१९ :

सेवाग्राम, ७-२-४५

चि० श्रीमन्,

महिला-आश्रम के बारे में जो तुमने लिखा है पढ़ गया। अच्छा है। उद्देश दो-तीन लाइन में लिख सकते हो, लिखो।

इसमें जमनालालजी के दिये हुए वचन का खयाल करना। हो सके वहांतक हम उसका विचार व अमल करें। बापू के आशीर्वाद

: ३२० :

मुझको यह सब पसन्द है। महिलाश्रम के विभाग कर लेना अच्छा है। मैं नहीं जानता कि सब विभाग का एक कोई ऊपरी रहेगा या रहेगी या नहीं। अगर सब विभाग तुम्हारे मातहत रहें और शान्ताबहन को तुम जिम्मेदार रहो तो मेरा खयाल है सब ठीक हो जायगा। तीन की कमिटी भले रहे लेकिन शान्ताबहन तो तुमको ही पूछे और तुम ही सब जिम्मेदारी ले लो तो सब सरल हो जायगा।[1]

---

१. महिलाश्रम-संबंधी श्रीमनजी की योजना के बारे में मौनवार को लिखा गया गांधीजी का जवाब।

: ३२१ :

सेवाग्राम, ६-३-४५

चि० श्रीमन्नारायण,

मैंने कुछ सुधारणा की है।[1] उसे समझाने की जरूरत नहीं है। ११वीं कलम निकाल दी है। उसे देना पड़ेगा तो अलग देंगे। इतना याद रखो कि हमने तय कर लिया है हम एक कौम बनने की कोशिश करेंगे। लेकिन न बन सके वहांतक स्वराज आन्दोलन रुका नहीं रहेगा। भाषा के प्रश्न को उस क्षेत्र से हटाना है। दोनों रूप मिल जाने से ऐक्य बढ़ेगा, वह ठीक है।

बापू के आशीर्वाद

: ३२२ :

महाबलेश्वर,
२३-४-४५

चि० श्रीमन्नारायण,

साथ में डॉ० ताराचंद का खत है।[2] उसे पढ़ो और अपना अभिप्राय भेजो।

मुझे लगता है कि खर्च पश्चिमी ढंग का बहुत है।

अगर वर्धा में करें तो हमारे पास सब सरंजाम है।

छपाई तो नवजीवन प्रेस अपने आप ही कर सकता है।

मुझे स्वतंत्र रूप से तो कुछ करने का अखत्यार नहीं है? अपनी कार्यकारिणी के सामने रखना होगा ना?

बापू के आशीर्वाद

: ३२३ :

महाबलेश्वर, १-५-४५

चि० श्रीमन्नारायण,

हुमायूं कबीर के 'इंडिया' के मार्च अंक में सिंकन्दर चौधरी ने तुम्हारी

---

१. श्रीमन्जी ने गांधीजी को हिन्दुस्तानी प्रचार-सम्बन्धी एक योजना बनाकर दी थी।

२. हिन्दुस्तानी कोष-योजना-सम्बन्धी।

पुस्तिका[१] की जो टीका की है, उसे देख लेना।

मदालसा मजे में होगी।

यह (पत्र) गुजराती में ही चल पड़ा, इसलिए चलने दिया।

बापू के आशीर्वाद[२]

: ३२४ :

महाबलेश्वर, ८-५-४५

चि० श्रीमन्,

तुम्हारी सूचना सही है। हम कैसे निकलें सोचने की बात है।[३] तुमको आवश्यकता होगी तो बताऊंगा।

मदालसा ने कटि-स्नान छोड़ा है सो अच्छा नहीं है। दरिया का पानी 'टब में' भर कर ले सकती है।

सबको आशीर्वाद। रसगुल्ला[४] को मीठी बुची।

बापू के आशीर्वाद

: ३२५ :

२४-७-४५

चि० श्रीमन्,

खत भेज दिया लगता है। मैंने सोचा था कि मसविदा बताओगे। कैसा भी हो। मेरा मत है कि पद[५] छोड़ने का एक ही कारण बताना था। हिन्दुस्तानी शब्द-प्रयोग गौण वस्तु है। राष्ट्रभाषा का अर्थ बड़ी बात है। सुधारणा करके भी भेजना ठीक होगा। ऐसा करना है तो मसविदा बताकर ही बाद में भेजो।

बापू के आशीर्वाद

---

१. 'गांधियन प्लेन'।

२. पत्र भूल में गुजराती में होते हुए भी दस्तखत हिन्दी में ही किये हैं।

३. श्रीमन्जी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन से हट जाने के बारे में लिखा था।

४. श्रीमन्जी का बड़ा लड़का, भरत।

५. वर्धा की राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति का मन्त्री-पद।

: ३२६ :

कलकत्ता जाते ट्रेन में, १-१२-४५

भाई श्रीमन्,

आज तुम्हारी पुस्तिका[1] और मेरे दो शब्द भेजता हूं।

मैंने कल रात के ९-३० बजे सब खतम किया। बीच में खाने की और कातने की ही फुरसत ली। दो शब्द के बारे में कुछ सुधारणा की दरकार है तो कहो।

पुस्तिका में मैंने जो दुरुस्ती की है सो ठीक न लगे तो पूछो।

तुम देखोगे कि तालुका, जिल्ला वि. पंचायतों को मैंने अनिश्चित कर दिया है। वे सलाहकार ही हैं। ऐसे मंडल को कानूनी प्रबंध में स्थान क्यों दें? उसकी आवश्यकता के बारे में शक है। जब ग्राम सचमुच जिन्दा हो जाते हैं तब सलाहकार-मंडलों की आवश्यकता कम रहनी चाहिए। प्रान्त की पंचायत यह सब काम कर लेगी और जो तालुका व जिला के मार्फत करवाना होगा, करवा लेगी। इसमें कुछ विचार दोष है तो मुझे बताओ। मैंने तो शीघ्रता से पढ़ सकता था वैसे पढ़ लिया।

पाकिस्तान और राजाओं के बारे में मेरी कल्पना में स्थान हो सकता है या नहीं, विचार योग्य है। याद रखो कि गांधी-योजना तब ही शक्य हो सकती है जब अहिंसा के मार्फत वहांतक पहुंचे।

बापू के आशीर्वाद

पुस्तिका व प्रस्तावना अलग रजिस्टर बुक पोस्ट से भेजे हैं।

: ३२७ :

सोदपुर, ९-१२-४५

चि० श्रीमन्,

तुम्हारा खत आज मिला। मैंने थोड़ा ही फेरफार किया है। वापस करता हूं।

मदालसा अच्छी है सुनकर बहुत खुश हुआ। उसे कहो रोज उसका खयाल करता हूं।

---

१. 'गांधियन कांस्टिट्यूशन'।

मेरी सरदी की बात निकम्मी समजो। थोड़ी थी लेकिन मैं 'महात्मा' हूँ न?

बापू के आशीर्वाद

: ३२८ :

सोदपुर जाते जहाज पर से, ३-१-४६

चि० श्रीमन्,

तुम्हारा खत मिला। मैंने तो जिस रोज तुम्हारा खत मिला उसी रोज़ सफाई करके भेज दिया था। आज ३०-१२-४५ के खत का जवाब दे रहा हूं। ज़हाज पर हूँ। सोदपुर जा रहा हूं।

मेरे आने की तारीख मुकर्रर करना दुश्वार है। पूना पहले जाऊँ या वर्धा यह सवाल थोड़ा विचारणीय होगया है। तब भी ८ फरवरी को मैं वर्धा पहुंचने की भरसक कोशिश करूंगा। १२ तारीख को अगर सोमवार नहीं है तो वह रखो, नहीं तो ११ तारीख २ बजे रखो।[1] स्थल सेवाग्राम ही रखा जाय।

प्रान्तीय एसेम्बली के बारे में मेरी उदासीनता समझो। लेकिन झुकाव उसी ओर है, योग्यता है और सब राजी हैं तो अवश्य जाओ।

बापू के आशीर्वाद

: ३२९ :

सोदपुर, १३-८-४७

चि० श्रीमन्,

तुम्हारा स्वच्छ खत मिला। मैंने काका सा० और नाणावटी से बातें की हैं। तुम्हारे लिखने के मुताबिक तुम्हारा मंत्री-पद [2] छोड़ना ही अच्छा होगा। कार्यकारिणी में तो रहना ही और जो कर सको किया करो।

मेरी दृष्टि से हमारा काम किसीके विरोध में नहीं है, पूर्ति में है। हमें क्या, कोई हमारा काम पसन्द करे या नहीं। अगर हमारी बात सही होगी तो वही चलेगी। उर्दू कभी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती न हिन्दी। भले हिन्दी

१. हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा की बैठक।

२. हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा का।

पर यूनियन की मुहर भी लगे। राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो दोनों कौम लिख सकें और बोल सकें।

मदालसा अच्छी रहे और रसगुल्ला बिल्कुल अच्छा हो जाय।

सभा दिल्ली में करो, मेरा पहुंचना मुश्किल है।

बापू के आशीर्वाद

: ३३० :

यरवडा-मंदिर, २१-३-३२

चि० मदालसा,

वत्सला के पत्र में मुझे भी थोड़ा जवाब मिल जाता है। दूध यहां मुझे सधता नहीं लग रहा था, इसलिए मैंने लिखा। शान्त जीवन में दूध की आवश्यकता न होने की सम्भावना है।

सब अनाज कच्चे नहीं खाये जाते। हरे पत्ते, गाजर वगैरह कच्चे खाये जा सकते हैं। उन्हें पकाने से उनमें का एक प्रकार का सत्त नष्ट हो जाता है।

बापू के आशीर्वाद

: ३३१ :

यरवडा-मन्दिर, १७-७-३२

चि० मदालसा,

अभिमान खराब अर्थ में प्रयुक्त होता है, स्वाभिमान अच्छे अर्थ में। तुम बड़े आदमी की लड़की हो यह समझकर फूल जाओ तो तुम अभिमानी कहलाओगी। परन्तु कोई तुम्हारा अपमान करे और उससे तुम डरो नहीं तो यह माना जायगा कि तुमने अपने स्वाभिमान या स्वमान की रक्षा की। ओम् पत्र क्यों नहीं लिखती ?

कमला तो लिखेगी ही क्यों ?

बाबू[1] अब तो बहुत बड़ा हो गया होगा। अभी भी उसे मिठाई बहुत चाहिए क्या ?

पत्र लिखने में आलस्य न करना। बालकृष्ण से लिखने को कहना।

बापू

---

१. मदालसा का छोटा भाई रामकृष्ण।

: ३३२ :

यरवड़ा-मंदिर, २०-८-३२

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम भले ही मानो कि तुम्हारे अन्दर ईर्ष्या, अभिमान वगैरा भरे पड़े हैं,पर मैं नहीं मानता। ये दोष तुमने कहां से लिये होंगे? जमनालाल में तो ये हैं ही नहीं, जानकीवहन में भी नहीं हैं। न तुमको कोई कुसंग हुआ, न तुम्हें किसी प्रकार की कोई कमी है। क्रोध है यह तो मैं भी देखता था। वह जानकीवहन में भी है। फिर तुम्हारा शरीर भी कमजोर है; लेकिन तुम समझदार हो, इस कारण विचारपूर्वक इस क्रोध को निकाल डालो। जैसे हम हैं वैसे ही सब हैं। सबमें एक ही जीव-आत्मा है। इसलिए किसी और पर क्रोध करना अपने ऊपर ही क्रोध करने के समान है। और जिस के अन्दर जीवमात्र की सेवा-वृत्ति की लगन पैदा होती है उसमें दोष रह ही नहीं सकते। तुम अपनी सेवा-वृत्ति बढ़ाना।

मुझे नियमित रूप से लिखो तो ठीक। वापू के आशीर्वाद

: ३३३ :

यरवड़ा-मंदिर, २२-११-३२

चि० मदालसा,

तुम्हारे अक्षर तो बहुत सुधरते जा रहे हैं। तुम्हारा अभ्यास-क्रम भी अच्छा है। शक्ति से ज्यादा मेहनत मत करना। शरीर बिगाड़कर अध्ययन करने से दोनों बिगड़ेंगे। यह तुम जानती हो कि क्रोध बुरा है, अतः धीरे-धीरे वह निकल ही जायगा। इसी प्रकार अभिमान का समझो। चलते-फिरते रोना आ जाता है। यह कमजोरी का कारण है। तुम अगर खेल-कूद में लग जाओ तो रोना बंद हो जायगा। जरा रोने जैसा मालूम हो कि ऊंचे स्वर से गीता पाठ करने लग जाओ तो रोना सूझेगा ही नहीं। यह करके देखना।

तुम कैसे कहती हो कि मंदिर में[1] रात-दिन कोई नहीं रहता? मन्दिर के पुजारी तो रहते ही हैं। वापू के आशीर्वाद

१. मतलब जेल से है।

: ३३४ :

यरवड़ा-मंदिर, ११-१-३३

चि. मदालसा,

मालूम होता है कि तुम्हारी गाड़ी ठीक चल रही है। यही क्रम रहा तो थोड़े ही समय में तुम्हारा क्रोध और रुदन शांत हो जायगा। जो खुराक लेती हो वह हजम हो जाती हो तो ठीक है।

जो प्रश्न तुम्हारे मन में उठते हैं वे सब जिज्ञासु को उठते हैं। वाचन और विचार से ये हल हो जाते हैं। जगत हम ही हैं। हम उसके अंदर हैं, वह हमारे अंदर है। ईश्वर भी हमारे अंदर है। हमारे अंदर हवा भरी हुई है, यह हम आंखों से तो नहीं देखते, लेकिन उसे जानने की इन्द्रिय हमारे पास है। ईश्वर को जानने की इंद्रिय का विकास किया जा सकता है। उसका विकास कर लें तो उसे भी पहचान लेंगे। यह तुम्हें विनोबा सिखा रहे हैं। धीरज रखना।

जानकीमैया से कहना कि जमनालाल से अकसर मिलता हूं।[1] तबीयत अच्छी है।

बापू

: ३३५ :

६-९-३३

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। यह डर नहीं रखना चाहिए कि विनोबा के लिए तुम भाररूप हो जाओगी। शिक्षक का कार्य है कि वह शिष्य की अपूर्णताओं को दूर करे। अगर तुम सम्पूर्ण होती तो तुम्हें शिक्षक की मदद की क्या जरूरत रहती ?

बाल काट डालने का इतना डर क्यों ? बाल तो घास के समान उगते ही रहते हैं। यह मैंने देखा कि बहुत-सी लड़कियों के बाल काट डाले और बाद में वे पहले से भी ज्यादा लम्बे हो गए। इस कारण बालों का मोह न हो तो उनको काट डालो।[2] पोशाक में चड्डी के अलावा और कोई दूसरा परिवर्तन

---

१. जमनालालजी उन दिनों यरवड़ा-जेल में थे।

२. बाल रखने, न रखने के बारे में गांधीजी की यह दलील मदालसा

करने की जरूरत नहीं। तुम्हारे समान बालिका का पोशाक सहज ही सहूलियत वाला बनाया जा सकता है। पर अब तो हम थोड़े समय में ही मिलेंगे।

बापू के आशीर्वाद

: ३३६ :

२२-१-३४

चि. मदालसा,

मैं न लिखूं तबतक मुझे न लिखने का नियम कर लिया है क्या ? ऐसा करके मेरी परीक्षा लेती है, या मुझपर दया करती है ?

अपनी मानसिक और शारीरिक हालत जताना। वत्सला को लिखने के लिए कहना। अभ्यास (पढ़ाई) क्या चल रहा है ? खाने-पीने का वक्त संभालती है क्या ?

ओम् मौज करती है ? मुटाती जा रही है ?

बापू के आशीर्वाद

: ३३७ :

१६-१-३५

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। वजन नहीं बढ़ता, यह आश्चर्य है। परन्तु हर्ज नहीं और सब तरह से ठीक है, इसलिए भले ही चलता रहे। तुमने गाय दुहना शुरू किया है, यह तो बहुत अच्छा काम है। दुहने के साथ ही पी जाती है न ?

बर्तन खूब साफ रहते हैं ? थन पहले लाल पानी[1] से और फिर साफ पानी से धो लेती है क्या ? अपना हाथ बिलकुल साफ़ रखती है क्या ?

गाय के शरीर पर साफ गोनपाट (बोरे से कपड़े) से खरेरा करती

को जंच गई और शीघ्र ही रूप चौदस के दिन गांधीजी के हाथों उसने अपने बाल कटा लिये।

१. कीटाणुनाशक पोटाशियम परमैंगनेट मिला पानी।

है ? उसे अपने हाथ से खिलाती है ? तुम्हारा यह आरम्भ बहुत सुन्दर है। मुझे फिर लिखना।

बापू का आशीर्वाद

: ३३८ :

वर्धा, १४-२-३५

चि. मदालसा,

तुम ठीक पत्र लिख रही हो। वहां रह गई हो, यह तो मुझे अच्छा लगता ही है। मुझे तो तेरा शरीर सुवर्णमय देखना है। शरीर और मन के बीच ऐसा निकट सम्बन्ध है कि एक की शुद्धता के साथ दूसरे का सम्बन्ध ज्यादातर जुड़ा होता है। अंग्रेजी में इसके समर्थन में एक कहावत भी है। उपनिषद् में खुराक के सम्बन्ध में है। मनुष्य जो खाता है वैसा ही बनता है। अन्न से भूत (पंच भूत) बनते हैं। गीता का यह वाक्य भी यही सूचित करता है। इसलिए तू बिल्कुल नीरोगी हो जा सकती है। इसे भी अपने अभ्यास (पढ़ाई) का एक क्रम समझ।

ओम् सोती है मेरे पास और दिन कन्याश्रम में बिताती है।

बापू के आशीर्वाद

: ३३९ :

बोरसद, २३-५-३५

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र लम्बा भले हो, मुझे सब खबर मिलनी ही चाहिए। जानकीबहन को कहना, वह घोड़े पर न बैठे। वह गिर पड़ी तो अच्छी होने में देर लगेगी। तेरी इतनी दहशत नहीं रहेगी। और घोड़े पर चढ़नेवाला गिरता है, ऐसा रिवाज तो है ही न ?

तेरे फोड़े का इलाज ढूंढ़ना ही होगा। नमक जरूर खाकर देखना, हालांकि मैं नहीं मानता कि उसके साथ उसका कुछ सम्बन्ध होता है। तुम नीम का सेवन कर देखना। मैं उसके प्रयोग कर रहा हूं। दो बार, खाने के बाद आधा तोला (नीम की) पत्ती चबाकर देखना। इससे भूख ज्यादा

लगेगी और रक्त शुद्ध होगा। परिणाम सूचित करना।

बापू के आशीर्वाद

: ३४० :

वर्धा, २१-७-३५

चि. मदालसा,

तेरे पत्र में कुछ अघटित नहीं है। तेरा कार्यक्रम मुझे पसन्द है। पढ़ना भले छोड़ा। तुझे जो अच्छा लगे, बिना संकोच खाने का नियम ठीक है। उसमें से उचित खुराक खोज सकेगी।

जानकीबहन के गुस्से से घबड़ाना नहीं। उसमें तथ्य हो तो, उस ओर ध्यान देना।

शरीर गरम रहना ही चाहिए। प्रार्थना के वक्त पढ़ते वक्त, लिखते वक्त सीधे तनकर ही बैठना चाहिए। कभी भी सिर झुकाने की जरूरत नहीं है। वहां के लिए आवश्यक कपड़े पहनने चाहिए।

इन सभी बातों पर ध्यान देना। अब तो न्याय मिला न ? रणजीत से पढ़ती है, यह ठीक है। अच्छा लगे वहीं रहना। बापू के आशीर्वाद

: ३४१ :

वर्धा, २१-८-३५

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र बहुत दिनों पर मिला। तुम बीमार न पड़ो, इस शर्त पर जो मर्जी हो वह खाना। जो संयम-पालन करना हो वह स्वाभाविक रीति से पालन करना चाहिए। कोई जल्दी नहीं है। क्रोध त्याग देना। बालक बनकर रहना। आश्रम का जीवन व्यतीत करने से स्वतन्त्रता आती है; उद्दंडता, अविनय, अभिमान कभी नहीं। बापू के आशीर्वाद

: ३४२ :

अक्तूबर, १९३६

चि. मदालसा,

तुम घबराना नहीं। जिस-तिस की दवा नहीं करानी चाहिए। डाक्टर

कहे वैसा ही करना।

खुराक नहीं दी जा सकती। फलों का रस, ग्लूकोस, (ग्लिसरीन की) पिचकारी, मिट्टी की पट्टी, सम्पूर्ण शान्ति, इतना ही हो तो रोगी स्वस्थ होगा ही। कल आने की आशा रखता हूं। बापू के आशीर्वाद

: ३४३ :

सेगांव, ३-१२-३९

चि. मदालसा,

तुमने छोटा पर सुन्दर पत्र लिखा है। जानकीवहन का भय छोड़ दिया, यह ठीक किया। खूब आनन्द में रहकर अपना शरीर अच्छा बनाना। श्रीमन् जैसा पति पाकर तुम्हें उनको और जमनालाल को शोभित करना है। अनेक पुण्य करने पर ही श्रीमन् जैसा पति मिलता है। ईश्वर तुम्हें जल्दी अच्छा करे।[1] बापू के आशीर्वाद

: ३४४ :

सेगांव, १३-२-४०

चि. मदालसा,

तुम फिर से बुखार में फंस गई हो क्या? हिम्मत न हारना। जल्द स्वस्थ हो जाना। बीमारी का अच्छे-से-अच्छा उपयोग यह है कि भगवान पर आस्था बढ़ाना और स्वभाव काबू में रखना। इस तरह से शीघ्र स्वस्थ भी हुआ जाता है। बापू के आशीर्वाद

: ३४५ :

१४-८-४१

तुम दोनों ही कवि हो। वह भी ऐसे खरे कि वह तो कवि होकर भी धरती से सटा हुआ है, इसलिए अपने काम में मस्त रहता है। तू गगनगामिनी है, इसलिए विचारों में मस्त रहती है। इसीलिए तुम्हारा नौकरों से असन्तोष

---

१. यह पत्र मौलिक रूप में गुजराती भाषा, किन्तु नागरी लिपि में लिखा गया था।

रहता है। जब तक यह (असन्तोष) रहेगा तबतक तू गृहिणी के रूप में घर को प्रकाशित कैसे कर सकेगी ? ले इतना लम्बा (आशीर्वाद)।[१]

बापू के आशीर्वाद

: ३४६ :

नई दिल्ली, १७-८-४१

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। पहले भी तुम्हारा पत्र मिला था। पर मैं बीमार थी, इसलिए नहीं लिख सकी थी।

तुम भले ही मेरे कमरे में रहो। मेरा घर है तो तेरा ही है न ? तुम्हें मेरे साथ रहना है तो अब मैं तीन-चार दिन में रवाना होने वाली हूं। अब मेरी तबीयत अच्छी है।

जमनालालजी की बीमारी के समाचार अखबार में पढ़कर चिन्ता होती है। भगवान् उन्हें अच्छा कर दे, बस। तुम्हारी मां को मेरे आशीर्वाद।

लि०

बा के शुभ आशीर्वाद

: ३४७ :

२-१०-४१

चि. मदालसा,

तुम मजे में होगी। घबड़ाती हो तो मुझे लिखना। डा. दास वहां आवें और उपयोगी हों, यह होना सम्भव नहीं दीखता। आशा तो है कि अब अधिक करने जैसा नहीं रहता। खाने में पूरी सावधानी रखना। दाल, मसाला, और घी में तली चीजें न खाना। स्वाद पीछे करती रहना। अभी तो बालक के लिए संयम-पालन करना ही।

बापू के आशीर्वाद

---

१. मदालसा इन दिनों गर्भवती थी और गांधीजी की देखरेख में सेवाग्राम में रहती थी। उसने गांधीजी से आशीर्वाद मांगा तो उन्होंने यह आशीर्वाद दिया।

: ३४८ :

दुवारा नहीं पढ़ा।

१५-१०-४१

चि. मदालसा,

तेरे वारे में सोचता ही रहता हूं इस कारण मुझे, जिसे कि सपने शायद ही कभी आते हैं, तुम्हारे वारे में आया। इस वजह से लिखने को प्रेरित हुआ हूं। सपना तीन दिन पहले आया। पर लिखने का समय आज ही मिला है।

वालक को पेट में रखते हुए जितनी सावधानी रखनी पड़ती है उतनी ही उसका पालन-पोषण करने में। तुम्हारे दूध का गुण तुम्हारी खुराक और तुम्हारे रहन-सहन के ऊपर आधारित है। जैसे तुम्हारी खुराक का असर तुम्हारे दूध पर पड़ता है उसी प्रकार तुम्हारे स्वभाव और विचार का भी। यह वात अनुभव से लिखता हूं, इसलिए इसे मानना। अतः जो कुछ तुम खाओ औषधि समझकर खाना। स्वाद के लिए नहीं। औषधि में से जो स्वाद निकलता है वह सच्चा स्वाद है और पोषक है। औषधि को रूढ़ अर्थ में लेकर उसकी घिन न रखना। दूध औषधि के रूप में लिया जा सकता है और स्वाद के लिए भी। एक से शरीर वढ़ता है, दूसरे से घटता है। वालक को कसरत, हवा, मालिश वगैरा वरावर मिलनी चाहिए। इस संवंध में किसीकी वात न सुनना। लाड़-प्यार करने वाले तो वहुत आ जायंगे, लेकिन कुछ भी हो तुम अपने मन के मुताविक करती रहना।

मेरे सपने का मतलव पूरा हुआ। तुम मजे में होगी। वालक वढ़ रहा होगा। मां-वेटी झगड़ती नहीं होंगी, तुम रोती भी नहीं होगी। खटिया छोड़ने के वाद तुम कुछ महीने यहां रह जाओ तो शायद अच्छा हो।

वापू के आशीर्वाद

: ३४९ :

२५-१०-४१

चि. मदालसा,

राधाकृष्ण को कहने के वाद इसकी जरूरत नहीं। यह तो सिर्फ तुम्हें हंसाने के लिए ही है। पापड़ भेजूं?

तू रोती क्यों है ? तुम्हारे रोने का असर भी बालक पर पड़ता है, यह तुम जानती हो ?

यहां कब आती हो ?

बापू के आशीर्वाद

: ३५० :

१२-११-४१

चि. मदालसा,

यह तो तुझे बहलाने के लिए। तुम्हारे समाचार तो मिलते ही रहते हैं। मेरी सूचनाएं मिलती होंगी। अब कुछ घूमती है या नहीं ? घूमने के लिए निकलना चाहिए। परन्तु डाक्टर कहे तो।

दवा-दारू जितनी ही कम लो उतना ही अच्छा।

बच्चा बढ़ रहा है न ? डा. दास आज आने वाले थे।

बापू के आशीर्वाद

: ३५१ :

सेवाग्राम, २१-११-४१

चि. मदु,

तू पागल है और पागल ही रहेगी क्या ? जल्दी से जल्दी यहां आजा। रहने के लिए नहीं पर मिलने के लिए तो सही। फिर जितना तुम्हारे दिल में हो सब उंड़ेल देना और जी भरकर रो लेना। तुम्हें रोने का इतना सुन्दर मौका दे रहा हूं, इसलिए वहाँ रोना बंन्द रखना। बाकी जो नियम बताये हैं उनका पालन करती रहना तो सदा सुखी रहेगी।

तुम दोनोंको
बापू के आशीर्वाद

: ३५२ :

बारडोली, २-१-४२

चि. मदालसा,

तेरा पत्र मिला। बहुत खुश हुआ। इसमें तेरा आनन्द छलकता है।

तुम्हारा श्रेय ही है। संयम में ही सुख है। इतना याद रखना। सभी बहनें साथ हों और इतने आनन्द से रहती हों, यह अत्यन्त खुशी की बात है।

बापू के आशीर्वाद

: २५३ :

सेवाग्राम, १५-६-४२

चि. मदालसा,

सुरेन्द्रनारायण की बात जानकर दुःख हुआ। अभी तो सादी खुराक ही ले रहे होंगे। दूध, दही, फलों का रस, सब्जी का रस, खा सकते हैं। बीज या छिलके पेट में न जायं। पेडू पर मिट्टी की पट्टी लाभ करेगी। कराहना नहीं चाहिए। बिना जोर लगाये दस्त न आता हो तो हलकी पिचकारी लें। मौका मिलते ही बम्बई जाना चाहिए। वहां जाने पर डाक्टर लोग जो कहें वही करना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि मेरे बताये अनुसार खुराक वगैरा लेने से अगर केवल सूजन होगी तो दर्द शायद बन्द भी हो जाय। रोटी खूब चबाकर ले सकते हैं। दाल छोड़नी चाहिए। जोर डालने वाले व्यायाम न करें। कटि-स्नान बहुत लाभ करेगा। घर्षण-स्नान भी।

बच्चे को कोई दवाई मत खिलाना। उसे सब्जी का पानी, फलों का रस, दवारूप होगा। कसरत तो करे ही। शेष यहां आने पर। श्रीमन् इलाहाबाद जावें और सब निबटा आवें।

बापू के आशीर्वाद

: २५४ :

सेवाग्राम, २३-७-४५

चि. मदालसा,

'जीवन-कुटीर'[1] नाम तो तब सार्थक होगा, जब बाहर से मरी-सी आकर वहां मीठा जीवन पाती रहेगी। तुम अच्छी हो, यह जानकर बहुत खुश हुआ हूं। और अब तो विनोबा हैं और राम[2]। फिर क्या चाहिए। खबरदार अब फिर निराशा-कूप में पड़ी तो।

बापू के आशीर्वाद

---

१. मदालसा के घर का नाम।

२. मदालसा का छोटा भाई रामकृष्ण।

: ३५५ :

पूना, ८-१०-४५

चि. मदालसा,

तुम्हें लिखे बिना कैसे चलेगा ? निराशा की बात ही मन में से निकाल डालना। निराशा केवल अपनी कल्पना में बसती है।

मुझे बुखार दो ही दिन आकर गया। अब ठीक हूं। रसगुल्ला तो मैं आऊंगा तभी चखा सकूंगा। अब तो खूब बड़ा दीखता होगा।

तुम तीनों को,
बापू का आशीर्वाद

इस महीने के अन्तिम सप्ताह में वहां आने की आशा है।

: ३५६ :

२३-११-४५

चि. गांडी[1] मदालसा,

तेरा पत्र मिला। अब श्रीमन्‌जी आ गए हैं तो अब जो वह कहें सो करना। तुम्हारे सलाहकार बहुत हैं। यह खराब है। जिसपर भरोसा बैठे, उसीकी बात सुनो और उसीके अनुसार चलो। दूसरे की बात सुनो ही मत। और कोई कहने आवे तो कान बन्द कर लो। तब तुम सपाटे से ठीक हो जाओगी। चिन्ता तो करो ही मत। बालक को जन्म दिया है तो अब उसका अच्छी तरह पालन-पोषण करना ही है। उसके खातिर ही सही, पागल मिटकर ज्ञानी न हो सको तो भी, समझदार बनो तो काफी है। बापू के आशीर्वाद

: ३५७ :

सोदपुर, ६-१२-४५

चि. मदालसा,

तुझे तो जवाब की जरूरत नहीं है, पर मुझे है। तुम्हें फिर लौटकर बुखार आ गया, यह अच्छा नहीं लगता। धूप में सोने की आदत डालना।

---

१. नादान-अनसमझ

भले ही धीरे-धीरे बढ़ाना। पहले ही से धूप में ओढ़कर सोना और ज्यों-ज्यों धूप गर्म लगती जाय त्यों-त्यों ओढ़ा हुआ कपड़ा उतारती जाना। यह इस हद तक कि आखिर में बिना वस्त्र के (नग्न) सोया जा सके। इससे छाती (की तकलीफ) तो ठीक हो ही जायगी; लेकिन मेरे अभिप्राय से शरीर भी रोगमुक्त हो जायगा। बापू के आशीर्वाद

: ३५८ :

फिर से नहीं पढ़ता हूं

चि. मद्दु, सेवाग्राम, २४-८-४६

तुझ पर दया आती है और झुंझलाहट भी। दया आने जैसी बातें तुमने कीं, झुंझलाहट इसलिए कि इतने दिनों तक तुमने उन्हें अपने मन में दबा रखा।

हम दूसरों के दोष न देखें, अपने ही देखें, इसीसे जीवन सुखी होता है और हम स्वच्छ रहते हैं। मैंने तुमको कहा है कि तुम्हें कोई ऐसा काम खोज लेना चाहिए जिसमें तुम्हें अपने बारे में सोचने-विचारने का मौका ही न मिले। ऐसा काम महिलाश्रम तो था ही। वह ठीक जमा नहीं। तो अब तुमको अकेले या किसी खास व्यक्ति के साथ अन्य सेवा-कार्य खोज निकालना चाहिए। कोई न सूझे तो चर्खे की सारी क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। नैसर्गिक उपचार की पुस्तकें पढ़ जानी चाहिए। गुजराती में हैं। हिन्दी में भी हैं।

मुझे हर मंगलवार को जरूर लिखो।[1] और विस्तार से लिखो। गुस्सा तो किसीपर करना नहीं चाहिए, अपने खुद के ऊपर भी नहीं। भजन ऊंचे स्वर से गाना सीख लेना।

बापू के आशीर्वाद

---

१. मदालसा को इन दिनों काफी मानसिक अशांति रहती थी। २३-८-४६ को गांधीजी से उसने खूब बातें कीं और अपने मन का भार हल्का किया। इससे उसे बहुत शान्ति व समाधान मिला। उसी समय गांधीजी ने मदालसा को कहा था कि वह उनको हर मंगलवार को नियमित रूप से पत्र लिखा करे।

: ३५९ :

नई दिल्ली, १-९-४६

चि. मदु,

तेरा पत्र मिला। जैसा उत्साह इस पत्र में झलकता है वह हमेशा रहे। मंगलवार को लिखना नहीं चूकना। मेरा जवाव आया हो या न आया हो। उत्साह टिकाने में एक ही वस्तु का काम है। ईश्वर पर सजीव श्रद्धा (विश्वास)। श्रीमन् के साथ आजादी से पर शान्त चित्त होकर विनयपूर्वक वातें करना। उसी तरह मां के साथ भी। सबके साथ खुला रहना और किसीका वुरा न मानना।

मुझे यहां १०वीं तारीख तक तो रहना ही पड़ेगा।

रसगुल्लों को पुच्ची (प्यार)।

तुम दोनों को
बापू के आशीर्वाद

: ३६० :

चि. मदु,

नई दिल्ली, ११-९-४६

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम अपने दोष और दूसरों के गुण ही देखोगी तो सपाटे से आगे वढ़ोगी, और सुख अनुभव करोगी। दुःख जैसी कोई वात नहीं मालूम होगी। हमें क़िसीसे कोई आशा रखने का कोई अधिकार नहीं है। हम देनदार हैं, इसी कारण जन्म लेते हैं। लेनदार तो हैं ही नहीं। यह वात यदि तुम्हारी समझ में आजाय तो सारा जगत तुम्हें सरल मालूम होगा। यह ज्ञानवार्ता नहीं है, परन्तु जीवन-प्रवाह सरलता से वहाने का सही मार्ग है।

रसगुल्लों को वहुत-वहुत प्यार।

बापू के आशीर्वाद

: ३६१ :

नई दिल्ली, १६-९-४६

चि. घेली[1] मदु,

तुम्हारा पागल पत्र मिला। फिर भी मुझे मीठा लगता है। तू पगली जो

१. अव्यवस्थित—पागल

ठहरी। तेरा कारोबार सब श्रीमन् चलाता है, फिर तू सयानी कैसे होगी ? कमलनयन तो लाखों के व्यापार में पड़ गया। बहनें अपने-अपने संसार (घर-बार) में। इसलिए अगर वह अपने में (मस्त) पड़ा हो तो उसमें ताज्जुब की क्या बात है ? सावित्री भले ही गई। तुम मौज करना और खुश रहना। सबकुछ रामजी के गोद में डाल देना। कमलनयन को भी। उसे भगवान् बचायगा, तबतक कुछ भी होने वाला नहीं है। कोई चिन्ता न करना।

बापू के आशीर्वाद

: ३६२ :

नई दिल्ली, २२-९-४६

चि. मदु,

तेरा पत्र मिला। इस बार का अच्छा लगता है। तुम अबतक सचमुच लेती ही रही हो तब तो तुम्हें दुगना कर्ज चुकाना रहता है, इसलिए तुम्हें तो कर्ज चुकाते जाना और हर्षित होते रहना चाहिए। मेरे वर्धा पहुंचने के अर्से में तू आ जायगी क्या ?

बापू के आशीर्वाद

: ३६३ :

नई दिल्ली, १६-१०-४६

चि. मदु,

मैं यह चाहता हूं कि तुम अपनी प्रतिज्ञा न तोड़ो।[१] काम से फुर्सत न मिले तो खाली पोस्टकार्ड ही डालो।

रजत अच्छा होगया, यह ईश्वर की कृपा।

पति-पत्नी में गाढ़ मित्रों के समान प्रेम हो और वह सर्वथा निर्विकार हो। वे सुख-दुःख के साथी हों। दोनों में एक-दूसरे को सहन करने की शक्ति होनी चाहिए। एक दूसरे के प्रति उदारता होनी चाहिए। दोनों के बीच पूर्ण स्वच्छता होनी चाहिए। वहम कभी नहीं, एक-दूसरे से कोई छिपाव नहीं।

मैं समझता हूं कि इतना काफी है। दृष्टांत जब मिलें, तब पूछना।

तुम सबको,
बापू के आशीर्वाद

---

१. मदालसा के एक मंगलवार को पत्र न भेज सकने पर।

: ३६४ :

रेल में २८-१०-४६

चि. मदु,

मुझे तो खयाल है कि मैंने तेरे लम्बे पत्र का जवाब तुरन्त दे दिया था। पर डाक की सूची में तेरा नाम नहीं मिलता। अब कल तुम्हारा दूसरा पत्र नए वर्ष का मिला।

अपना नया वर्ष आये, तब सही।

तूने राम के विषय में लिखा है।[1] बात मैंने तो नहीं की, पर जानकी-बहन ने अपना विचार बताया, मेरे पूछने से। सब राम के ऊपर छोड़ना चाहिए। वह बालक नहीं है। उसे जैसा जंचे, वही करना चाहिए।

तू मजे में होगी। यह नहीं जानता कि बंगाल से कब लौटूंगा। आज इतना ही।

बापू के आशीर्वाद

: ३६५ :

हीरापुर, २६-१-४७

चि. मदु,

तुम्हारे पत्र अनियमित हो गए हैं। वे तुम्हारी अनियमितता के प्रतीक तो नहीं हैं न? जो हो, तुम आनन्द करो और शांत-चित्त होओ। तुम्हें और राम को यहां आने देना अच्छा तो लगता है, पर इसे गलत प्रलोभन मानता हूं। अखबारों में जो आता है, उसमें कम-से-कम ५० फीसदी कम करके पढ़ोगी, तो यहां की हालत कुछ समझ सकोगी। 'दूर के ढोल सुहावने' वाली कहावत सुनी है ना? और जहां रोज गांव बदलने पड़ते हों, वहां तो तमाशबीन लोग भी भाररूप मालूम होते हैं। बहुतों को इन्कार करता हूं। तो तुम दो को कैसे इजाजत दूं? मैं जानता हूं कि तुम लोग किसी भी प्रकार भार रूप नहीं बनोगे। फिर भी संयम का पालन करो। वहाँ बैठे-बैठे जो सेवा-कार्य तुम करोगे, यहां के यज्ञ में उतने अंशों में तुमने भाग लिया है, यह मान लूंगा। बच्चों को संभालना। अपना शरीर ठीक रखना। राम मजे में होगा। उसने अपने बारे में कुछ निर्णय किया क्या?

बापू के आशीर्वाद

---

१. रामकृष्ण के विवाह के बारे में।

: ३६६ :

रायपुर, १५-२-४७

चि. मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने तो मुझसे पत्र नहीं चाहा था। परन्तु मैं तो लिखूंगा, क्योंकि अभी तुम बहुत प्रपंच में पड़ी हो। तुम्हें श्रीमन् में समा जाना चाहिए। मैंने तो देखा है कि श्रीमन् तुम्हारी पूजा करता है। तुम उसे पूजती हो, परन्तु श्रीमन् के पास जो ज्ञान है, वह तुममें नहीं। वासन्ती को सबकुछ कहो इसमें मैं कोई दोष नहीं देखता। वह समझदार है। परन्तु मैं यह नहीं मानता कि वासन्ती में इतनी शक्ति है कि वह तुम्हें रास्ता दिखा सके। तुम्हारा सुख श्रीमन् के अन्दर समा जाने में ही है, इस बारे में मुझे शंका नहीं है। अगर तुम ज्ञानी होतीं तो मैं कहता कि श्रीमन् के साथ लड़ना। तुम यह मानती हो कि ऐसा ज्ञान तुम्हारे अन्दर नहीं है। अगर यह बात तुम्हारी समझ में आजाय तो मैं जो कहता हूं उसका पूरा अनुभव करना। अगर जरा-सी भी शंका हो तो विनोबा को यह पत्र बताना। वह जैसा कहें, वैसा करना। फिर भी विनोबा को यह पत्र बता ही देना। वासन्ती को भी दिखाना। राम की सगाई के बारे में समझा। इस संबंध में मैंने अधिक ध्यान नहीं दिया। दोनों सुखी हों और शुद्ध सेवा करके पिताजी के नाम की उज्ज्वलता में वृद्धि करें, यही मेरी कामना है। राम को इतना कह देना।

तुम्हारा दूसरा पत्र मिल गया। बापू के आशीर्वाद

: ३६७ :

पटना, २१-४-४७

चि. मदु,

तेरा पत्र मिला। राधाकिसन, जाजूजी यहां हैं। चर्खा-संघ की सभा थी न!

अपनी अस्थिरता और पागलपन कतई निकाल डालना। श्रीमन् में तू तुझको देखेगी। इसके सिवा तेरे लिए और कोई है ही नहीं। जिसने कोरे कागज पर सही कर दी, उसे तू पहचानती है? बापू का आशीर्वाद

: ३६८ :

चि. मदालसा,

नई दिल्ली, ९-६-४७

तुम्हारा पत्र मिला। श्रीमन् १२ तारीख को यहां आ रहे हैं। अब मैं 'हरिजन' के लिए लिखने लगा हूं, इसलिए अपनी उलझनें उसके द्वारा सुलझा लेना। तुम्हारा कथन मैं ठीक-ठीक समझ न सका। मेरे किसी लेख या आचरण से छिटक जाने का बहाना मत खोजना। जहां कठिनाई हो, उसे दूर करना चाहिए। मेरे लेख में स्वच्छंदता को स्थान होता ही नहीं। मेरा जीवन संयम के लिए है। यह हो सकता है कि उसमें पार न उतरूं परन्तु उसमें स्वेच्छाचार के लिए दरवाज़े कभी नहीं खोजूंगा ऐसा मुझे विश्वास है।

बापू के आशीर्वाद

: ३६९ :

नई दिल्ली, ७-७-४७

चि. मदु,

तेरा पत्र मिला। मेरा तार तुझे मिला होगा। अब तो भरत घोड़े-जैसा हो गया होगा। उसे भटकने न देना।

मैं तो चाहता हूं कि तुम महिलाश्रम में गुलतान (तल्लीन) हो जाओ। यह जमनालाल के अनेक कामों में बड़ा काम है। तुझे उसके पड़ोस में बसाया, इसमें आशा की गई कि तू उसमें मशगूल हो जायगी। अब तुम दोनों संयम रख सको तो बच्चे पैदा करना बन्द रखना कि जिससे तू दोनों पर ध्यान दे सके और महिलाश्रम का काम संभाल सके। महिलाश्रम को तुम्हारी-जैसी सेविका की जरूरत तो है ही। तू उसमें पड़ेगी तो श्रीमन् उसमें अधिक दिलचस्पी लेगा।

सुशीला आज वर्धा से आई है।

बापू के आशीर्वाद

: ३७० :

जगतपुर, ११-७-४७

चि. मदु,

तेरे दो पत्र मिले। सवेरे तीन बजे का उठा हूं, इसलिए यह पत्र तो तुम्हें

लिखा दूं। तू बिल्कुल शांत हो जा और अपने काम में जुट जा। दूसरे का विचार छोड़कर अपना ही करना चाहिए। और अपना विचार करते समय हवा में नहीं उड़ना चाहिए। छोटा-बड़ा जो भी काम हाथ में आया हो, उसका पालन करके शान्त रहना चाहिए। बापू के आशीर्वाद

: ३७१ :

३-२-३१

चि. ओम्,

इतना गुजराती जानती थी, सब भूल गई क्या? तुम्हारे लिए तो हिन्दी, गुजराती, मराठी, मारवाड़ी सब एक-सा होना चाहिए। अबकी बार गुजराती या मराठी में लिखो और कहो कितना कातती है, कितना धुनती है और तकली पर कितनी गति है। खाने का बहुत लेकर छोड़ देती है कि गरीबों के जैसे जितना चाहिए, इतना ही लेकर थाली साफ करती है। गीताजी पढ़ती है? बापू के आशीर्वाद

: ३७२ :

यरवड़ा-मंदिर, २०-८-३२

चि. ओम्,

तेरा पत्र मिला। तुम्हारे अक्षर तो खूब सुधर गए। तुम्हारा वज़न गठे हुए शरीर की वजह से हो तो उसे घटाने की क्या जरूरत है? तू कद्दावर और ताकतवर हो जाय तो अधिक सेवा करने योग्य बनेगी; यदि उसके साथ-साथ मन भी ताकतवर होगा तो। अगर रोग के कारण शरीर फूला होगा तो वजन कम करने की कोशिश जरूर करनी चाहिए। कोई रोग है? मुझे पत्र लिखा करना। बापू के आशीर्वाद

: ३७३ :

चि. ओम्, २७-११-३२

तू बड़ी ठगोरी छोरी जान पड़ती है। बारीक कातना नहीं और मोटे सूत को परोपकार में गिना देना। ये सब तुम्हें विनोबा सिखाते हैं या जानकीमैया? बापू

: ३७४ :

१९-८-३४

चि. ओम्,

तेरे पत्र मिले हैं। तू आलस न करना। रोज पत्र लिखने का अमुक समय निश्चित रखना और तभी लिखना। इसलिए उस वक्त और कोई काम हो ही नहीं। धीरज रखकर सुन्दर अक्षरों में लिखना। क्या खाते हैं, क्या पीते हैं, कितनी नींद आती है? दुख कितना होता है? जख्म (घाव) कैसे भर रहा है, कौन-कौन मिलने आते हैं, यह सब विस्तार के साथ लिखना। बातें न करना, न दूसरों को करने देना। ऐसे नियमों का पालन करने से घाव (जख्म) जल्द भरेगा।[1]

अपने समय का हिसाब देना। तुम सब सोते कहां हो? अस्पताल का वर्णन करना। और कौन बीमार हैं?

गोपी अभी यहीं है। बीमार-जैसी रहती है। उसे पत्र लिखना। मदालसा रोज सेवा का समय पूरा करती है। तुम्हारा पत्र उसे देता हूं।

अब सवेरे चार बजने का समय होने आया है। दतौन करके यह लिखने बैठा।

जानकीमैया का पत्र पढ़कर प्रसन्न हुआ। अब तो खुश होंगी।

बापू के आशीर्वाद

: ३७५ :

चि. ओम्,

२०-८-३४

चाहे जैसे अक्षर बनाकर केवल वचन का पालन करने के खातिर बेगार टालने को तुम पत्र लिखो, तो मुझे तुम्हारे पत्र नहीं चाहिए। वचन का पालन करो तो मन और कर्म से। मन से तो वचन पालन करने से जी चुराओ, और कर्म से पालन करने का पुण्य प्राप्त करो, यह असंभव बात है। मुझे यह जरा भी पसंद नहीं। मैंने क्या यह नहीं सिखाया कि जो करो, वह ठीक से करो और

---

१. जमनालालजी के कान का ऑपरेशन बम्बई में हुआ था, उस बारे में गांधीजी ने पूछा था।

से करो ? छोटे या बड़े किसी काम में बेगार न टालो।
पल भी व्यर्थ न जाने दो। वापू के आशीर्वाद

: ३७६ :

२३-८-३४

उर्फ सोती सुन्दरी,[1]

ने ठीक पत्र भेजा, ऐसा कहा जायगा। अक्षर अभी और अच्छे होने तुम सोने से सीने की ओर जा रही हो, इसलिए बेचारे दर्जी अब क्या पर उन्हें डर का कारण नहीं रहेगा, क्योंकि थोड़े ही दिनों में तुम ी मशीन पर ही सोती नजर आओगी।

ारे समय की पूर्ति अभी भी मदालसा रोज करती है। और दूसरा अब क्या हो, इसलिए मक्खियां उड़ाती है।

बराबर लिखा करना। अभी बातें अधिक न करने देना। जो आये, नकीबहन बातें करें। उनका काम बातें किये बिना तो चल ही नहीं ार उसमें तू सहज ही शामिल हो सकती है—फिर काकाजी के साथ ने की क्या जरूरत ?

ा वजन आज राधाकिसन ने लिया —९८ पौंड हुआ। ऐसे बढ़ता ा कहांतक ले जायेगा, यह तो कौन जाने ?

ामायण ठीक गाती है क्या ? सुमित्रा-लक्ष्मण का संवाद तो सचमुच ाक है। पर ऐसे संवाद तो रामायण में खूब भरे हैं।

कितने बजे उठती है ?

ो आज रक्षा-बन्धन के लिए जबलपुर गई। बाद में जल्दी आ जाने ती है। गजानन के पत्र भी आते रहते हैं।

बापू के आशीर्वाद

१९३३ में गांधीजी के हरिजन-दौरे के समय ओम् उनके साथ समय उसकी उम्र १३ वर्ष के लगभग थी। स्वभाव व शरीर से ोजी) होने के कारण यात्रा में जब कभी समय मिल जाता, तो वह ो जाती। इसीलिए गांधीजी ने उसका नाम 'सोती सुन्दरी' रख ।

: ३७७ :

२९-८-३४

चि. ओम्,

तू जबर्दस्त है। मालूम होता है कि मारवाड़ी तो अच्छा लिख लेती है। मारवाड़ी में और गुजराती में बहुत फर्क नहीं है। कोई तो कहते हैं कि गुजराती मारवाड़ी में से ही निकली है और अब तो वह मारवाड़ी से भी चढ़ जाती है। इसी कारण तुमने मुझे 'दत्तक बाप' बनाया है न ?[1] यहां मदालसा खड़ी-खड़ी तुम्हारी टीका कर रही है कि तुमने मारवाड़ी शुद्ध नहीं लिखी। लेकिन जैसा परीक्षक होगा, वैसी ही परीक्षा होगी न ? और फिर मदालसा कहां से मारवाड़ी शिक्षिका या परीक्षिका बन गई ? इस कारण तुम मारवाड़ी में पास हो।

बापू के आशीर्वाद

: ३७८ :

२-९-३४

चि. पंडिता[2] ओम्,

इस बार के पत्र में तो तुमने अच्छा बोध दिया है। पर अपने बोध के अनुसार तुम खुद चलती भी हो ? अगर मैं आराम न करता होऊं, जतन न करता होऊं, तो हर रोज आधे पौंड के हिसाब से कैसे बढ़ सकता हूं ? तुमने मुझे जिस

---

१. गांधीजी ओम् से खूब मजाक किया करते। ओम् भी गांधीजी के साथ बिना किसी झिझक के मजाक करती। ऐसे ही मजाक में ओम् ने कहा था कि गुजराती मारवाड़ी में से निकली है और इसीलिए गांधीजी को अपना 'दत्तक बाप' भी बनाया था।

२. 'परोपदेशे पांडित्यम्' के अर्थ में गांधीजी ने ओम् को यह पदवी दी है। उसने गांधीजी को लिखा था कि पूरा आराम लेना चाहिए, वजन बढ़ाना चाहिए, आदि आदि। गांधीजी बच्चों की भी सलाह कई बातों में लिया करते थे और अपनी अक्ल के मुताबिक सलाह देने में ओम् कभी आगा-पीछा नहीं करती थी। इसलिए भी गांधीजी ओम् को 'पंडिता' कहा करते थे।

तरह काम करते देखा है, उससे आज की तुलना करोगी तो तुम मुझे आलसी और अधिक सोनेवाला मानोगी। अच्छा ही है न कि तुम वहां बैठी-बैठी हैंगिंग गार्डन में चक्कर काटती हो और शेखी बघार रही हो और बदले में काकाजी की थोड़ी सेवा कर लेती हो। हैंगिंग गार्डन की कथा तुम जानती हो। मेरा अभिप्राय यह है कि हमारे जैसे गरीबों के घूमने जाने की जगह वह नहीं है। वहां तो फक्कड़ लोग जाते हैं। अगर अब तुम जाओ तो देखना और मुझे लिखना कि कितने गरीब लोगों को तुमने वहां देखा। मैं तो वहां एक या दो बार जाकर तृप्त होगया।

भले मेरे पास तुमने अपना ज्ञान उंडेला। दत्तक बाप के ऐसे ही हाल होते हैं। पर काकाजी को तो नहीं भड़काया न?

तुम्हारे लिखने में भूल है। काकाजी का वजन १०४ बताती है। उसको तो शायद मैं चार दिन में हीं लांघ जाऊंगा। २०४ से तो तुम्हारा मतलब नहीं है? रामायण पढ़ती है?

बापू के आशीर्वाद

: ३७९ :

७-११-३४

चि. ओम्,

तेरे पत्र की आशा रखना व्यर्थ है। मैंने तुम्हें लिखा नहीं पर तुम्हारी याद मुझे बराबर रहती ही है। इस बार का तुम्हारा आचरण मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगा। तेरा पत्र भी अच्छा नहीं लगा। उसमें गलत बचाव था। मेरे साथ इतने महीने घूमने के बाद तुमने क्या सीखा? इसका हिसाब लगायगी? मुझे लिखेगी? कांग्रेस के समय में एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाते हुए तुम मुझे दिखाई दीं। उस दिन का तुम्हारा वह पहिनावा? मेरे दुख और क्रोध का पार न था। अपने दिये हुए वचन का तू पालन करना। कृत्रिम कभी मत बनना। जैसी हो वैसी ही दिखना। तेरी सगाई की बातें चल रही हैं। उस बारे में स्वतन्त्रता से अपने विचार बताना। सच्ची रहना, सच्चा विचारना, सच्चा बोलना। यदि यह तुम्हारी शक्ति के बाहर हो तो मेरा त्याग करना।

साफ अक्षरों में लिखे हुए तुम्हारे सविस्तर पत्र की राह देखूंगा।

बापू के आशीर्वाद

: ३८० :

चि. ओम्, ११-१-३५

तेरा आलस्य कब दूर करेगी ? तेरे पत्र में मोती के दाने के समान अक्षर नहीं हैं। लम्बे पत्र में खबर तो कुछ भी नहीं दी। अब ऐसा लगता है कि बम्बई जाकर एक बार कान दिखा लिया जाय तो अच्छा हो। यहां ठंड ठीक पड़ती है। हमें तो ऐसा लगता है जैसे जंगल में पड़े हैं। अच्छा है। लोगों से मिलना बहुत रहता है, इसलिए काम पूरा नहीं हो पाता।

मदालसा को कहना कि लिखे। उसकी खुराक क्या चलती है ? वजन कितना है ?

बापू के आशीर्वाद

मेहरताज तुझे मुझे सबको भूल गई है। डा० अन्सारी के घर मौज करती है।

: ३८१ :

चि. ओम्,

यह खाते-खाते लिख रहा हूं, इस कारण पेंसिल से। खाते हुए लिखना कुटेव है। पेंसिल से लिखना भी कुटेव है। इसकी नकल मत करना।

अभी भी तेरा कान दुखता लगता है। तुझे बम्बई जाना चाहिए।

तार देने की सोचता हूं। मदालसा के भी हाल लिखना।

बापू के आशीर्वाद

: ३८२ :

वर्धा, ८-११-३५

चि. ओम्,

बहुत दिनों राह देखने के बाद तुम्हारा पत्र आया सही। तुझे उलहना थोड़े ही दिया जा सकता है ! जितना तुम दोगी, उतना स्वीकार कर लेता हूं। उतने से आनन्द मानना चाहिए। अम्बुजम्मा भी तेरी बार-बार खबर देती है।[१] वहां तुझे अच्छा अनुभव मिल रहा है। उससे पूरा-पूरा लाभ उठाना। अंग्रेजी तो अच्छी करेगी ही। वहां का संगीत भी बहुत ही अच्छा माना

---

१. दक्षिण भारत में मदनपल्ली में ओम् विद्योदय स्कूल में पढ़ने गई थी। श्री अम्बुजम्मा वहां की मुख्य अध्यापिका थीं।

जाता है। उसे अच्छी तरह सीख लेना। तामिल तो सीखेगी ही ऐसी आशा है। और यह भी आशा रखता हूं कि वहां हिन्दी का प्रचार भी करेगी। चरवी भी कम करना। संक्षेप में इतना ही कि इतनी दूर जाकर बैठी हो और एक अक्षर का इतना वड़ा नाम रखा है, उसको शोभित करना। जिसके नाम से कल्याण होता है, ऐसा शास्त्र कहते हैं, वह नाम लेकर तुम बैठी हो, तो उसका कोई मतलब होगा न ? यानी मेरी इच्छा है कि उस अर्थ को तुम सार्थक करो। इसके लिए आवश्यक कुछ गुण तो तुम्हारे अन्दर हैं ही। कुछ और आ जायं तो पार उतरे समझो। तुम्हें मालूम न हो तो एक और खबर देता हूं। महाराष्ट्र के समान तामिलनाड़ में भी संस्कृत के उच्चारण वहुत शुद्ध किये जाते हैं। महाराष्ट्र में उच्चार तो है पर उतना उत्तम संगीत नहीं है। तामिलनाड़ में तो मंत्रादि मधुर आवाज और सुर में गाये जाते हैं। अम्बुजम्मा के द्वारा यह तू सीख सकेगी। यह सव सहज में ही मिल सकता है। इसके लिए वहुत समय देने की जरूरत नहीं है। यह वर्ष तुम्हारे लिए मंगलदायक हो। आरम्भ किया है सो समय-समय पर पत्र लिखती रहना। वापू के आशीर्वाद

: ३८३ :

वर्धा, २७-११-३५

चि. ओम्,

तेरा पत्र मिला। शिक्षिकाएं लड़की के साथ अंग्रेजी के सिवा वोल ही नहीं सकें, यह मुझे तो असह्य ही लगता है। इसके वारे में विनयपूर्वक तुम्हें संचालकों से कुछ निवेदन करना चाहिए। ऐसा किसलिए करते हैं वे लोग ? तेरा पत्र ठीक है। तुम्हें तो ऐसी वातों से अभ्यस्त होने में देर नहीं लगती। वहां जो कुछ अच्छा हो, उसका संग्रह करना, जो त्याज्य है, उसका त्याग करने की आदत डालना। वापू के आशीर्वाद

: ३८४ :

लखनऊ, ३०-३-३६

चि. ओम्,

मैं जानता हूं कि मेरी वीमारी तुम्हारे पत्र न लिखने का अच्छा वहाना

बन गई हैं। पर तुम यह जानती हो कि तुम्हारे पत्र मुझे बोझरूप कतई नहीं होते। पर यों पत्र लिखने लगो तो तुम 'सोती सुन्दरी' मिट जाओगी न ?

यह पत्र लिखने का कारण तो यह है कि वहां तुम खुश नहीं रहती, घर की याद आया करती है और कभी-कभी आंसू भी बहाती हो। ऐसी नाजुक तुम कब से बन गई ? अपने लिए तो जहां रहें, उसे ही घर समझना चाहिए। आखिर तो इस जग में हम लोग 'चन्द रोजा' मुसाफिर ही हैं न ? मैंने तो वह भाग देखा नहीं है, पर कहते हैं कि हवा वहाँ की बहुत अच्छी है और उसी प्रकार सुन्दर भी है। श्री डंकन से मिली होगी। वहां का वर्णन लिखना।

लखनऊ में काकाजी, मदालसा, हम सब साथ ही हैं। तीसरी तारीख को इलाहाबाद जायंगे और बहुत करके आठवीं को लौट आयंगे। पंद्रहवीं के आस-पास वर्धा पहुंचने की आशा है।

मेरी तबीयत अब ठीक मानी जा सकती है। 'हरिजन सेवक' गंगाती हो क्या ? अब तो अंग्रेजी में भी बराबर समझती होगी।

बापू के आशीर्वाद

:: ३८५ ::

वर्धा, ११-७-३६

चि. ओम्,

मुझे यहां छोटा-सा पुस्तकालय बनाना है। उसमें मराठी पुस्तकें चाहिए। तेरे पास या मदालसा या और किसीके पास छोटी-छोटी मराठी पुस्तकें हों जिनकी अभी वहां जरूरत न हो, तो मुझे यहां भेज देना। सीखने की और पढ़ने की। यहां का काम नहीं चला तो वे पुस्तकें जिनकी होंगी, उनको वापस मिल जायंगी। काम चल निकला तो अमुक समय के बाद वे वापस कर दी जायंगी। इसकी कम-से-कम मियाद छः महीने की है। जो पुस्तकें सदा के लिए दी जा सकती हैं, वे दे देनी हैं। ऐसी पुस्तकों की यादी मुझे भेज दो। दस रुपये से ज्यादा का पुस्तकालय मुझे नहीं बनाना है। इससे तुम्हें अन्दाज हो जायगा कि मुझे किस तरह की पुस्तकों की जरूरत है। मराठी अखबार भी किसीके पास हों तो वे भी। वहां उपयोग हो चुकने के बाद, चाहिए। इसमें बड़े दान की बात नहीं है। इसके लिए बड़ों को परेशान करने की भी बात नहीं है।

परन्तु तुम्हारे-जैसे लोग गांववालों की ओर जरा निगाह रखें तो ऐसे-ऐसे काम सहज ही कर सकते हैं। इतना तो पीछे लगकर करना। इसमें रस न आवे तो बेधड़क होकर इन्कार लिख-भेजना, ताकि दूसरे ठिकाने आजिजी करूं।
बापू के आशीर्वाद

: ३८६ :

सेवाग्राम, १-११-४०

चि. ओम् उर्फ सोती सुन्दरी,

खत लिखकर बड़ी मेहरबानी की? मेरे नाम से भी नन्दादेवी इ. को प्रणाम करना। अब तो तू पहाड़ों में रहने वाली बनी! [1] हम लोगों को याद करती है, यह कुछ छोटी बात नहीं है; तुम सब खुश रहो।

बापू के आशीर्वाद

: ३८७ :

सेवाग्राम, २-९-४१

चि. ओम्,

आखिर में खत लिखने की तकलीफ उठाई सही। अब तो काकाजी आ ही जायंगे। और कितना और कैसा नया अनुभव लेकर। तेरी जगह का ऐसा वर्णन देती है कि दिल चाहता है कि मेरे सब मरीजों को तेरे पास भेज दूं। सिर्फ जानकीदेवी और मदालसा नहीं? क्यों? दोनों को,

बापू के आशीर्वाद

: ३८८ :

पूना, १२-१०-४५

चि० ओम्

तेरा पत्र मिला। अक्षर अस्वच्छ खराब लिख कर माफी क्या मांगनी? अक्षर खराब लिखना ही नहीं चाहिए।

---

१. ओम् शादी के बाद इन दिनों नैनीताल में रहने लगी थी।

बेबी का मूक सन्देश मिला। 'उनका' कौन ? नाम लेने में शर्म रखो उसे तो अबलापन की हद ही कहूं न ? नाम तू भेजे तो कोई पसन्द करूं।

सुशीला बहन आ गई है। उसका काम सुन्दर हुआ।

बापू का आशीर्वाद

: ३८९ :

सेवाग्राम, ८-७-४२

चि. जगदीश और चि. चन्द्रमुखी,

चि. कमलनयन ने जानकीबहन के मार्फत तुम्हारे लिए आशीर्वाद मांगे हैं। मैं कैसे इन्कार करूं ? मैं सुनता हूं कि तुम्हारे विवाह में अमर्यादित खर्च हुआ है। मुझे तो यह पसन्द नहीं है। बहुत जीओ, सुखी हो और साथ-साथ हर कार्य में गरीबों का ख्याल करो और उनकी सेवा करो।

बापू के आशीर्वाद

: ३९० :

सेगांव, २२-९-३९

चि. रामकृष्ण,

दीर्घायु होना और पिताजी का नाम रखना।[1]

बापू के आशीर्वाद

: ३९१ :

सेवाग्राम, १२-४-४१

प्रिय महाशय,

श्री रामकृष्ण बजाज, जो एक भूतपूर्व विद्यार्थी और सेठ जमनालाल बजाज के बेटा है, मंगलवार १५ अप्रैल को सुबह ८ बजे गांधी-चौक, वर्धा से युद्ध-विरोधी आम नारे लगाकर सत्याग्रह करेगा।[2]

आपका मो. क. गांधी

डिप्टी कमिश्नर, वर्धा,

---

१. सोलहवें जन्मदिन पर आशीर्वाद।

२. श्री रामकृष्ण ने १९४१ में व्यक्तिगत-सत्याग्रह में भाग लेने के लिए

: ३९२ :

प्रिय महोदय, वर्धा २१-६-४१

आपके १६ जून के पत्र के जवाब में निवेदन है कि मेरे बेटे अब मेरे

गांधी जी से इजाजत मांगी थी। उसकी उम्र १८ वर्ष से कम होने के कारण से गांधी जी ने तीन दिन तक उसकी पूरी परीक्षा ली और उसके बाद सत्याग्रह करने के लिए विशेष अनुमति दी। इसी से उसके बारे में वह बराबर दिलचस्पी लेते रहे। वर्धा के डि. कमिश्नर को भी उपरोक्त पत्र उन्होंने खुद ही लिख भेजा। सत्याग्रह करने के पहले दिन उन्होंने रामकृष्ण को अपने पास सेवाग्राम में सुलाया। सोने के पहले उन्होंने उसे बुलाया और उसके पकड़े जाने पर कोर्ट में देने के लिए एक वक्तव्य, जो उन्होंने खुद ही तैयार किया था, पढ़ कर सुनाया और विस्तार से समझाया। बाद में यह भी कहा कि यदि तुम इसमें से कोई बात नहीं समझे हो या किसी बात से सहमत नहीं हो तो बताओ, जिससे उसे बदल दूं। गांधी जी द्वारा लिखा गया वह वक्तव्य नीचे दिया जाता है :—

"महाशय,

मेरा मामला कुछ असामान्य है। मैं एक भूतपूर्व विद्यार्थी हूँ। विद्यार्थी-जगत् में आज जो अराजकता फैली हुई है यहां उसके बारे में तथ्य प्रकट करना जरूरी है। यद्यपि मेरी उम्र १८ साल से कम की है, मैं विद्यार्थी-जगत् और बाहरी संसार के बारे में काफी जानकारी रखता हूँ कि जिससे मैं हर चीज में अनुशासन की आवश्यकता का अनुभव करता हूँ। इसलिए मैंने जो कदम उठाया है, उसमें मुझे अपने माता-पिता और अन्य बड़ों का आशीर्वाद तो मिला ही है। मैंने अपने माता-पिता की देख-रेख में जीवन के हर क्षेत्र में अहिंसा का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। मैंने अपनी मैट्रिकुलेशन-परीक्षा अभी-अभी समाप्त की है। मैंने अपने जीवन में स्कूल की पढ़ाई विलम्ब से शुरू की। १९२० के असहयोग-आन्दोलन के दिनों में जबकि मेरा जन्म भी नहीं हुआ था, मेरे माता-पिता ने नियमित रूप से हमारा सरकारी स्कूलों में जाना बन्द कर दिया था। हमारा लालन-पालन स्वतंत्र वातावरण में हुआ। और जब मैंने स्कूल जाने और सामान्य शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की,

संयुक्त परिवार के सदस्य नहीं रहे हैं। उनमें से हरएक के पास अपना साधन है। किन्तु चूंकि मेरे पास रामकृष्ण की रकम जमा है, इसलिए मैं इस पत्र के साथ ३००) के नोट भेजता हूं जो इसपर किये गए जुर्माने की पूर्ति के रूप में हैं।[1]

तो मुझे उसकी इजाजत मिल गई। लेकिन जब वर्तमान संघर्ष शुरू हुआ तो मेरा मन अस्थिर होने लगा और मैंने महसूस किया कि स्वतंत्रता की प्रवृत्ति में मैं जो क्रियात्मक अनुभव प्राप्त करूंगा, वह शासकों के हित में दी जाने वाली व हर बच्चे को मिलने वाली आम सामूहिक शिक्षा से अधिक मूल्यवान होगी। इस जानकारी के बावजूद भी अगर हम शिक्षा के उस मार्ग से चल रहे हैं तो इसका कारण यही है कि यह वर्षों से प्रचलित है और इसके द्वारा जीवन में एक दर्जा प्राप्त करने का ध्येय पूरा हो जाता है। विदेशी शासन के द्वारा अपना भाग्य इस स्थिति को पहुंच गया है। मैं वर्तमान आन्दोलन की ओर उसके राजनीतिक मूल्य के कारण नहीं, बल्कि नैतिक महत्व के कारण आकर्षित हुआ हूं। मैं जानता हूं कि अगर भारत अहिंसा का परिपूर्ण उदाहरण पेश कर सके तो वह मानव-जाति की गति में अद्वितीय सहायता कर सकेगा। मेरे नवयुवक मन का यह एक स्वप्न है और ऐसे उच्च एवं गौरवपूर्ण ध्येय की प्राप्ति के लिए मैं बड़े-से-बड़े कष्ट को भी तुच्छ समझूंगा।"

१. यह पत्र वर्धा के जिला मजिस्ट्रेट के जमनालालजी को लिखे १६-६-४१ के पत्र का उत्तर है। जिला मजिस्ट्रेट ने लिखा था कि रामकृष्ण को डिफेन्स आफ इंडिया एक्ट के मातहत ३०० रुपये जुर्माने की सजा हुई है। इसकी वसूली के लिए दुकान पर से कुछ सामान उठा लिया गया था। पर यह कहे जाने पर कि वह सामान रामकृष्ण का नहीं है, सरकार ने उसे लौटा दिया। अन्त में यह चाहा गया था कि जमानत का रुपया अदा कर दिया जाय। उपरोक्त पत्र का मजमून जमनालालजी के लिए गांधीजी ने स्वयं बनाया था। मजमून बनाने के बाद उसके हासिये पर गांधीजी ने शंका प्रकट करते हुए यह लिखा—

"यह पैसे भेजने का परिणाम यह तो नहीं होगा कि रामकृष्ण छूट जायगा।"

: ३९३ :

सेवाग्राम, २३-३-४५

चि. रामकृष्ण

तुम्हारी माताजी पर खत आते हैं, वाज दफा पढ़ लेता हूं। तुम्हारी प्रगति के समाचार तो मिलते ही रहते हैं। मुझे आनंद होता है। आज समझा कि मैं भी तुमको लिख सकता हूं। इसलिए लिख रहा हूं। तुम्हारे खत से मैंने देखा तुमने अंडरवेयर मंगाया है। मेरी सलाह है उसे त्यागो। उसकी हमारी हवा में कोई जरूरत नहीं है। लेकिन आदत हो गई है और छूट नहीं सकती है तो अवश्य रखो[1]। हमारा धर्म तो है न कि हम इच्छा पूर्वक कम-से-कम खर्च करें और जीवन उच्चतम रखें। तुम्हारा सर्व प्रकार से विकास किया करो।

बापू के आशीर्वाद (मो. क. गांधी)[2]

: ३९४ :

शिमला, १०-७-४५

चि. रामकृष्ण,

किसीके छूटने से मेरे अन्तर में हर्ष नहीं होता। तेरे छूटने से हुआ है। तुझे तो लाभ ही हुआ है। जेल सबसे ज्यादा तुझे ही सधी (माफिक) है। जो अभ्यास तुम जेल में कर सके हो, वह बाहर तो शायद ही कर सकते। मेरा हर्ष तो जानकीबहन और दादी के लिए है। वे तुम्हारे और राधाकिसन के विना तड़प रही थीं। मुझे सारा विवरण साफ अक्षरों में लिखना।

बापू के आशीर्वाद

---

१. रामकृष्ण उस समय नागपुर-जेल में था। वहां वह ऊपर का वस्त्र न पहनकर सिर्फ अंडरवेयर ही पहनता था।

२. गांधीजी ने सही के नीचे ब्रेकेट में अपना पूरा नाम भी लिखा था; क्योंकि वह चाहते थे कि जेल-अधिकारी रामकृष्ण को यह पत्र पूरी जानकारी के बाद ही दें कि यह उनका (गांधीजी का) लिखा हुआ है।

: ३९५ :

सेवाग्राम, १६-५-४६

चि. रामकृष्ण,

तुम लोग पश्चिम में जा रहे हो।[१] उसका लाभ मुझे स्पष्ट नहीं है। लेकिन धोघ (प्रवाह) चल रहा है, उससे कौन बच सकता है? सोचो यहां से क्या ले जाओगे और वहां से क्या लाओगे। विद्यार्थी जीवनकाल विचार-विकास का है।

बापू के आशीर्वाद

: ३९६ :

नवाखाली यात्रा में, १-१२-४६

चि. राम,

तू तो खूब अनुभव लेकर आया है।[१] अब उसका लाभ मुल्क को दे और निजी काम को भी दे। मैं यहां से मुक्त हुआ तो मिलेंगे। यहां आने से कुछ लाभ नहीं है। माताजी को भी मैं नहीं बुलाना चाहता हूं। मैं अंधेरे में से प्रकाश में आ जाऊंगा तब माताजी को बुला सकता हूं। वह बिल्कुल अच्छी होगी और सावित्री भी।

बापू के आशीर्वाद

: ३९७ :

नई देहली, २७-१२-४७

प्रिय भाई रामकृष्ण,

तुम्हारा पत्र बापू अभी सुबह की प्रार्थना के बाद पढ़ सके। पीछे मुझे जवाब लिखने को कहा। वह कहते हैं अब पूछ-पूछकर कहांतक चलोगे। जिस समय जैसे हृदय कहे वही उस वक्त का धर्म है। विलायती कपड़े उन्हें तो खटकेंगे। जो खादी का अर्थ और महत्व समझते हैं वे तो न विलायती इस्तेमाल करेंगे, न मिल या अप्रमाणित खादी। मगर हरेक व्यक्ति अपने

---

१. श्री रामकृष्ण के अखिल भारतीय विद्यार्थी-कांग्रेस की तरफ से प्रतिनिधि होकर अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी-कांग्रेस में भाग लेने के लिए ाग, चेकोस्लोवेकिया, जाते समय।

१. विलायत से लौटने पर।

लिए खुद सोचे। माता-पिता का धर्म भी लड़कों का धर्म होना आवश्यक नहीं।[1]

तुम और विमला कुशल होंगे। बहुत शक्कर नहीं खाना।

दोनों को मेरा स्नेह स्मरण।

सुशीला

---

१. आजादी के बाद राष्ट्रीय सरकार खुद विलायती कपड़ा मंगाती है, ऐसी हालत में खादी, अप्रमाणित खादी, मिल व विलायती कपड़ों में क्या अन्तर है यह पूछने पर। गांधीजी ने इस पत्र का जवाब ११-१-४८ के 'हरिजन' में भी दिया है।

: ३९८ :

वर्धा, १५-१२-२५

प्रिय मित्र,

मुझे आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि महात्माजी यहां आगए हैं और आपकी इच्छा के अनुसार पूरा विश्राम कर रहे हैं। वह यहां २१ दिसम्बर तक ठहरने का विचार कर रहे हैं और इसके बाद वे कांग्रेस के लिए रवाना हो जायंगे। मुझे आशा है कि यहां रहकर शायद वह और किसी जगह की अपेक्षा अधिक लाभ उठा सकेंगे।

मुझे यह महसूस होने लगा है कि कांग्रेस-अधिवेशन के बाद महात्माजी के लिए साबरमती-आश्रम में ६ महीने या साल भर ठहरना निम्नलिखित कारणों से अत्यावश्यक है :—

(१) उन्हें अपने बिगड़े हुए स्वास्थ्य को अवश्य ही दुरुस्त कर लेना चाहिए। मेरा दृढ़ मत है कि जबतक वह कुछ दिन आराम करने और स्वास्थ्य को पूर्णतः ठीक कर लेने के लिए न बैठें तबतक देश को उनसे कोई काम नहीं लेना चाहिए। मैं व्यक्तिगत रूप में यह आग्रह करना चाहूंगा कि वह वर्धा तीन महीने और रहें और यहां से अखिल भारत-चरखा-संघ का काम पत्र-व्यवहार और सलाह-मशविरा के द्वारा संचालित करें। इसके बाद अगर आवश्यक हुआ तो वह साबरमती जा सकते हैं।

(२) साबरमती में उनका ठहरना स्पष्ट करणों से जरूरी है। अ. भा. चरखा-संघ अभी अपनी शैशवावस्था में है और मेरा विश्वास है कि महात्माजी का प्रत्यक्ष मार्ग-दर्शन संघ के कुशलतापूर्ण संगठन के लिए अत्यावश्यक है। उस (संघ) के प्रधान कार्यालय में बैठकर महात्माजी इस काम को सबसे अच्छी तरह कर सकते हैं।

(३) निस्सन्देह देश के विभिन्न प्रान्तों में महात्माजी के दौरे अपना महत्व रखते हैं, पर हमें इस साधन-स्रोत का उपयोग और फिक्र नहीं करनी चाहिए। नहीं तो हम अपनी अधिक भलाई किये बगैर इस (साधनस्रोत)

को शायद समाप्त कर देंगे। हमें याद रखना चाहिए कि आज हमारे सामने जो कार्यक्रम है वह बड़े पैमाने पर खद्दर के उत्पादन और बिक्री का है, जो एकजान होकर कार्य किये बिना सम्भव नहीं है। मेरा विचार है कि हम कार्यकर्त्ताओं को यह कार्यक्रम अधिक गम्भीरता के साथ अपनाना चाहिए और महात्माजी को प्रान्तों में दौरा करने के लिए कहने से पहले इसमें से कुछ ठोस परिणाम प्राप्त कर लेना चाहिए। एकाग्रतापूर्वक किये प्रयासों का नतीजा देखने के लिए प्रान्तों में निरीक्षण करने को उन्हें आमंत्रित किया जाना चाहिए; जिससे, अगर जरूरी हो तो, आगे के लिए मार्गदर्शन करें। एकाग्रतापूर्वक किये जा रहे कार्य के दरम्यान हम साबरमती से संवाद-परिवहन द्वारा उनके सुझाव प्राप्त कर सकते हैं।

(४) देशबन्धु (चित्तरंजनदास) के स्मारक का महत्वपूर्ण विचार बाकी रहता है। मैं कह सकता हूं कि स्मारक के लिए महात्माजी के दौरे से अन्य किसी भी उपाय की अपेक्षा कोष एकत्रित हो सकता है। लेकिन इसके बारे में भी हमारे लिए यह अच्छा होगा कि हम अपने आपपर निर्भर होना सीखें। महात्माजी अवश्य ही इस स्मारक के बारे में सदा चिन्तित रहते हैं, पर हम उन्हें यह आश्वासन दे दें कि हम अधिक-से-अधिक धन एकत्रित करने के लिए कोई भी कोशिश बाकी नहीं रखेंगे। कांग्रेस (अधिवेशन) के बाद नीचे लिखे व्यक्तियों को, जिनमें मैं भी शामिल होऊं, इस काम में दिलोजान से तत्काल लग जाना चाहिए:—

(१) श्री राजगोपालाचारी,
(२) श्री वल्लभभाई पटेल,
(३) श्री मणिलाल कोठारी,
(४) श्री गंगाधरराव देशपांडे,
(५) श्री शंकरलाल बैंकर,
(६) बाबू राजेन्द्रप्रसाद,
(७) पं. जवाहरलाल नेहरू

इन प्रश्नों पर मैंने महात्माजी से बातचीत की थी और वह आश्रम में ठहरने के लिए मान चुके हैं, बशर्त्ते कि वह कार्यकर्त्ताओं से स्वीकृति प्राप्त कर लें।

आप कृपया इसका जवाब जल्द भेजने का कष्ट करें, जिससे महात्माजी भावी कार्यक्रम का निश्चय कर सकें और कांग्रेस (अधिवेशन) के बाद उसकी घोषणा कर सकें ।[1]

आपका
जमनालाल बजाज

: ३९९ :

साबरमती, १८-१-२६

प्रिय भाई श्री,

(चूंकि हमारे पिता एक हैं, आप अपने को मुझे भाई कहने की इजाजत देंगे ?)

आपके पोस्टकार्ड के लिए अनेक धन्यवाद । मैं आपको पखवारे में एक दिन खुशी से लिखूंगी और बापू के समाचार दूंगी, पर अभी आप मुझे हिन्दी में लिखने को न कहें । मैं हिन्दी में पत्र उतनी जल्दी नहीं लिख सकती, जितनी जल्दी अंग्रेजी में लिख सकती हूँ और चूंकि मेरे पास समय बहुत कम बचता है इसलिए मेरे लिए शीघ्रता से लिखना उत्तम है ।

मुझे खुशी है कि बापू अब बहुत अच्छे हैं । जब हम पहले यहां आये तो उन्हें जोर का जुकाम हुआ था और पहले हफ्ते में उनकी तन्दुरुस्ती में बहुत कम प्रगति हुई । पर यह दूसरा सप्ताह बहुत अच्छा रहा । पहले सप्ताह में वह सिर्फ आधा पौंड वजन बढ़ा सके; पर इस हफ्ते वह करीब २ पौंड वजन बढ़ा सके हैं ।

अब हमारे यहां लौट आने पर वह मेरे साथ बड़ी सख्ती करते हैं और मुझे अपने चर्खे की देखरेख करने के अलावा अपना निजी कुछ भी काम नहीं करने देते । वह कहते हैं कि मुझे मेरे अपने काम में जल्द-से-जल्द तरक्की कर लेनी चाहिए और मुझे उनकी मदद करने की इजाजत तबतक नहीं मिलेगी जबतक कि हिन्दी, कताई, रसोई बनाना आदि अच्छी तरह न सीख लूं । अवश्य ही इसके लिए मुझसे जितना हो सकता है उतना कठिन परिश्रम मैं

---

१. यह गश्ती चिट्ठी जमनालालजी ने कानपुर-कांग्रेस (१९२५) के पहले सभी साथी कार्यकर्त्ताओं को भेजी थी ।

कर सकती हूं, कर रही हूं। अब मैं अपना पूरा खाना खुद पकाने लगी हूं इसलिए आप सोच सकते हैं मैं कितनी व्यस्त हूं।

विनोबा का यहां होना बहुत अच्छा है, और मुझे निश्चय है कि यह बापू के लिए एक मदद है। देवदास और कृष्णदास दोनों ही बाहर हैं इसीसे हमारे पास काम करनेवालों की कमी हो गई है। विनोबा बापू को कताई का अभ्यास करा रहे हैं और उनकी कताई की गति आधे घंटे में १२१ गज तक पहुंच गई है। मैं भी (कताई) सीख रही हूं और इसलिए इसके फलस्वरूप मुझमें सुधार हो रहा है।

मुझे आशा है कि आप अच्छी तरह होंगे और आपका जल्द ही यहां इन्तजार कर रही हूं। कृपया आश्रम के सभी प्रिय मित्रों को मेरा नमस्कार कहें और अपनी पत्नी से मेरा आदरपूर्ण अभिवादन। आपकी,

मीरा

: ४०० :

इलाहाबाद, ७-१२-२६

ज़मनालाल बजाज,
वर्धा

आपका तार। कृपया कांग्रेस को बचाइए। महात्माजी को समझाइए और आप, राजगोपालाचारी तथा अन्य दोस्तों के साथ जिस रास्ते से भी हो सके (कांग्रेस अधिवेशन) में अवश्य पधारिए। मोतीलाल नेहरू

: ४०१ :

एस. एस. रानपुरा १९२६-२७

प्रिय महात्माजी,

सेठ जमनालाल से मेरी लम्बी बातचीत हुई। मैं इस बात को कबूल करता हूं कि मैं समय-समय पर दुखी हुआ हूं और आपसे अपने मतभेदों को बेढंगी भाषा में प्रकट किया है। आप मेरी त्रुटियों को अच्छी तरह जानते हैं और मैं भी अच्छी तरह जानता हूं। फिर भी यह बात अक्षरशः सत्य है कि भारत में जितने भी सार्वजनिक कार्य करने वाले हैं उनमें मैं आपकी सबसे ज्यादा इज्जत और प्रेम करता हूं। मुझे आपके मित्रतापूर्ण प्रेम में पूरी श्रद्धा

है और जैसा विश्वास आपके प्रति रखता हूं वैसा और किसीके प्रति नहीं रखता। दरअसल अगर आप मौके-मौके पर मुझे मेरी गलतियों और त्रुटियों के लिए धमकाते रहेंगे तो मैं इसे अपना सम्मान समझूंगा। मैं कभी उसे मित्रतापूर्ण भाव के अलावा और किसी रूप में नहीं लूंगा। मुझे जो दो दिन बम्बई में मिले, मैं बड़ा दुखी रहा। मैं अब भी बेहद थकान महसूस करता हूं। यहां स्टीमर पर भयानक गर्मी है। मैं कोई काम नहीं कर रहा हूं। मैं आराम ले रहा हूं। प्रेम के साथ।

आपका
लाजपतराय

: ४०२ :

बैंगलौर, ९-८-१९२७

प्रिय मित्र,[1]

मुझे आपका पत्र मिला। मैं इसे सेठ जमनालालजी के पास भेजता हूं और उन्हें लिख रहा हूं कि इस मामले पर सावधानी के साथ विचार करें और जो कुछ उचित और सम्भव समझें, करें। इससे अधिक मुझे उन्हें प्रभावित नहीं करना चाहिए।

आपका,
मो. क. गांधी

नकल सेठ जमनालालजी के पास असल पत्र के साथ कार्रवाई के लिए भेजी गई।

ए. सुब्बय्या

: ४०३ :

मार्सेल्स, १०-९-३१

पूज्य वल्लभभाई,

शौकत पोर्ट सय्यद से साथ होगया। उसके साथ बहुत-सी बातें हुईं, पर उसका परिणाम नहीं के समान है। इस आदमी ने तो सरकार को पूरे

---

१. नागपुर तिलक-विद्यालय को सहायता देने के लिए, उसके अध्यक्ष श्री ई. एस. पटवर्धन ने जमनालालजी को लिखा था। पर उनके पास सफलता न मिलने पर श्री पटवर्धन ने गांधीजी को लिखा कि वह जमनालालजी को इस विषय में कहें। यह पत्र उक्त पत्र के उत्तर में लिखा गया है।

तौर से अपने हाथ कटा दिये हैं, यह बापू को स्पष्ट होगया है। अमुक बात तो आपसे नहीं मांगी जा सकती; अमुक सेफगार्डस (संरक्षण) तो स्वीकार करने ही चाहिए। ..... स्वतन्त्रता की तो बात ही नहीं करनी चाहिए। नहीं तो मुसलमान आपका साथ नहीं देंगे, आदि-आदि बातें उसने बापूको सुनाईं। और बापू से कहने लगा—आपने तथा मोतीलाल और जवाहरलाल ने हमें तो कुछ गिना ही नहीं.....हमारे बिना काम चला लेंगे, ऐसी बातें की हैं और ऐसा भी कहा है कि अली-बन्धु न आयं और कोई भी दो मुसलमान मेरे साथ होंगे तो भी चलेगा। उसकी वहमों और शंकाओं की हद नहीं है। इसलिए सिंधु सरिता में कैसे समावेगा—किस तरह काम पूरा होगा, यह पता नहीं चलता।

इजिप्ट (मिस्र) वालों ने बड़ा सम्मान किया। यं. इं.[1] में लम्बी चिट्ठी लिखी है। 'न. जी.'[2] में अनुवाद ठीक हो तो अच्छा। मुझे 'न. जी.' के लिए स्वतन्त्र लिखने का समय नहीं रहता।

कल मार्सेल्स। वहां कोई ब्रिटिश जनरल बापू के लिए स्वागत का खरीता लेकर आने वाला है, ऐसा सुना है।

लन्दन से ज्यादा विवरण सोमवार को भेजूंगा। यह पत्र जमनालालजी को भेज देंगे। अलग नहीं लिखता। लि. से.

महादेव का प्रणाम

: ४०४ :

वर्धा, १६-१०-३३

प्रिय जवाहरलाल,

इस पत्र के साथ जमनालालजी का इस्तीफा भेज रहा हूं।[2] अगर

---

१. यंग इंडिया। २. नवजीवन।

२. जमनालालजी ने १६ अक्तूबर, १९२३ को कांग्रेस के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के नाम, कार्यसमिति से अपना नीचे लिखा त्यागपत्र गांधीजी के पास भेज दिया था। गांधीजी ने यह त्यागपत्र उपरोक्त पत्र के साथ श्री जवाहरलालजी के पास भेजा।

"हाल में मुझे इस बात से बड़ी परेशानी हुई है कि मैं जेल में नहीं हूं।

आप समझते हैं कि इसे नहीं भेजना चाहिए और यह परेशानी का कारण बनेगा तो आपको इसपर कोई कार्रवाई नहीं करनी चाहिए। उसके बाद शादी के इन्तजामों से छुट्टी पाकर आप इसे अपने कारणों-सहित लिखकर वापस कर सकते हैं। लेकिन अगर आप समझते हैं कि इस्तीफा स्वीकार किया जा सकता है तो आप इसे फौरन प्रकाशित कर सकते हैं। मैं मानता हूं कि कोषाध्यक्ष की नियुक्ति केवल अ. भा. कांग्रेस-कमिटी कर सकती है। इसलिए कोषाध्यक्ष का पद भले ही फिलहाल जमनालालजी के ही हाथ में रहे। मुख्य बात तो यह है कि वह कार्यकारिणी के सदस्य नहीं रह जाते। मैं समझता हूं कि यह कदम बुद्धिमत्तापूर्ण और जरूरी है। उनके शरीर की जैसी दशा है उसे देखते हुए उनके जेल जाने के लिए प्रयत्न करने में जोखिम हैं, और वह भी विशेषज्ञ जितना जरूरी समझें उतना आराम लिय बगैर। लेकिन जमनालालजी का जितना संघर्षशील स्वभाव है, उस हदतक, साधारणतया लड़वैये अपने स्वास्थ्य की परवाह नहीं किया करते। सविनय अवज्ञा करनेवाले के कर्त्तव्य के प्रति उनके भी वही विचार हैं जो मेरे ह; इसलिए वह जबतक कांग्रेस-संगठन के जिम्मेदार पद पर हैं तबतक उन्हें ठीक नहीं लगेगा।

मेरा विश्वास है कि बिलकुल अलग होने के अलावा कोई भी व्यक्ति जो मेरे समान सविनय-अवज्ञा और कांग्रेस-कार्यक्रम में विश्वास रखता है अगर जेल से बचता है तो उसे किसी जिम्मेदार पद पर नहीं रहना चाहिए और मेरी तरह स्वास्थ्य-सुधारने मात्र के लिए तो हर्गिज ऐसा नहीं करना चाहिए। मैं महसूस करता हूं कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य-सुधार के लिए मुझे अभी कुछ और समय की आवश्यकता है। खजांची और कार्यकारिणी के सदस्य के नाते मुझे यह शोभा नहीं देता। इसीलिए मुझे दोनों ही पदों से इस्तीफा दे देना चाहिए और मैं इस पत्र के द्वारा दे रहा हूं। लेकिन अगर अभी दूसरा कोषाध्यक्ष नियुक्त करना सम्भव न हो तो मैं कार्यकारिणी का सदस्य रहे बिना उस जिम्मेदारी को निभा दूंगा। पर इस इस्तीफे के द्वारा मैं कांग्रेस के कार्यक्रम को अपनी योग्यता के अनुसार पूरा करने के फर्ज से बरी नहीं होता। फिर भी इससे मेरे मन का बोझ उतर जायगा।"

मैंने अपनी दलील पेश कर दी है, जिसके अनुसार मैं जमनालालजी के इस्तीफा देने के प्रस्ताव को स्वीकार करने के पक्ष में हूं।

मो. क. गांधी

: ४०५ :

कलकत्ता, २१ अक्तूबर, १९३८

मैंने बम्बई में और फिर वर्धा में जमनालालजी से उनके इस्तीफे के बारे में लम्बी बातचीत की। मैंने उन्हें बार-बार कहा कि मैं अनेक कारणों से उनके इस्तीफा देने की बात से सहमत नहीं हो सकता। दूसरे, जहांतक मैं समझ सका हूं, कार्यकारिणी के सदस्य मेरे विचारों से सहमत हैं। मेरे तर्क इस प्रकार हैं—

(१) मैं इस बात से तो सहमत हूं कि जमनालालजी को कुछ समय के लिए पूर्ण विश्राम करना चाहिए; पर आराम पाने के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह इस्तीफा दें। जब सदस्य बीमार पड़ते हैं तो वह आवश्यक विश्राम करते हैं; पर इस्तीफा नहीं देते।

(२) उनके बदले दूसरा अनुकूल व्यक्ति प्राप्त करना बहुत ही कठिन होगा।

(३) आठ महीने तो बीत चुके हैं, केवल चार मास बाकी हैं। सो ऐसे समय में इस्तीफा क्यों दिया जाय।

(४) इस मौके पर इस्तीफा देने से सभी तरह की अफवाहें और बनावटी बातें फैलेंगी, जिनमें से कुछ कार्यकारिणी की परेशानी का कारण बन सकती हैं।

वर्धा में जमनालालजी ने मुझे बताया कि नागपुर के एक अखबार ने पहले ही लिख मारा है कि जमनालालजी कार्यकारिणी से इस्तीफा इसलिए दे रहे हैं कि मध्यप्रदेश का मंत्रिमंडल सन्तोषजनक ढंग से नहीं चल रहा है और जमनालालजी का मुख्यमंत्री के रूप में लिया जाना जरूरी हो गया है।

इस रिपोर्ट से मेरे पूर्ववर्ती भय की पुष्टि होती है। मैंने जमनालालजी को यह भी बताया कि ऐसी अफवाहों और किस्सों को ध्यान में रखते हुए

कार्यकारिणी को बाध्य होकर वक्तव्य देना होगा और यह बताना होगा कि वह क्यों इस्तीफा दे रहे हैं। इस वक्तव्य में हम क्या कहेंगे ? यह कहना पूरी सच्चाई नहीं होगी कि वह शारीरिक और मानसिक थकावट के कारण लम्बा विश्राम लेने के लिए इस्तीफा दे रहे हैं। उत्सुक जनता फौरन कह उठेगी कि जवाहरलाल तो पांच महीने बाहर थे, लेकिन उन्होंने इस्तीफा नहीं दिया था।

वर्धा में हमारी बातचीत के अन्त में जमनालालजी ने मेरे तर्कों की शक्ति को समझा है। मैंने उन्हें कहा है कि उन्हें इस्तीफा देने का आग्रह करके हमें परेशान नहीं करना चाहिए। उन्होंने अनुभव किया कि वह मुझे आखिरी जवाब देने के पहले आपसे बात करना चाहेंगे। इसलिए मैंने उन्हें कहा कि आप जबतक वर्धा न लौट आयं तबतक वह पद पर कायम रहें।

यदि आप उन्हें यह सुझा सकेंगे तो मुझे खुशी होगी कि वर्तमान परिस्थितियों में उनके लिए यह जरूरी नहीं है कि वह इस्तीफा देने का आग्रह करें।

स-प्रणाम—[1]

आपका,
सुभाषचन्द्र बोस,

: ४०६ :

वर्धा, १४-११-४०

प्रिय भाई,

कल पूज्य बापूजी ने कुछ महत्वपूर्ण बातें सुनाई। वह आपकी और आप जिन्हें योग्य समझें, उन कार्यकर्त्ताओं की जानकारी के लिए लिखता हूं। यह अखबार वगैरह में प्रकट करने के लिए नहीं है। इसमें भाषा बापूजी की नहीं है। उनके कहने का भावार्थ ही है।

"जैसा कि मैं लिख चुका हूं, मेरे दिल में यह बात उठ रही है कि मेरे नसीब में एक बड़ा अनशन लिखा ही गया है। वर्तमान युद्ध, देश की पराधीन स्थिति और अहिंसा द्वारा हिन्दुस्तान की आजादी होजाय तो सारे जगत के लिए उसका महत्त्व, इत्यादि बातें मेरे बलिदान की अनिवार्यता मेरे मन में सिद्ध कर रही हैं। पर साथ ही मेरा जी उसकी संभावना से कुछ घबड़ा भी रहा है। मैं चाहता हूं वह टल सके। उसके प्रति

१. यह पत्र श्री सुभाषबाबू ने गांधीजी को लिखा था।

बढ़ने की मैं कोशिश नहीं कर रहा हूं। लेकिन उसकी ओर मैं खिंचा जा रहा हूं।

"यह एक तरह से ठीक ही है। क्योंकि जो समय मेरे दिल की तैयारी होने में जा रहा है, वह समय जनता और तुम सबको अनशन की परिस्थिति के लिए तैयार भी कर रहा है। न मालूम लोग इतने तैयार हो जायं कि अभी मुझे पूछने लग जायं कि अभी अनशन क्यों शुरू नहीं करते ?

"अनशन किस रूप में आयगा, यह मैं नहीं बता सकता। अगर वह मेरे बाहर रहते हुए हुआ, तब तो उस वक्त तुम्हें क्या करना चाहिए, वह मैं बता सकूंगा। जबतक मुझमें ताकत होगी, तबतक मैं सूचनाएं देता रहूंगा। संभवतः अनशन के पहले ही अपना निवेदन भी प्रकट करूं। पर मुमकिन है कि सरकार मुझे गिरफ्तार कर ले और जेल से अनशन करना पड़े। तब न मैं निवेदन निकाल सकूंगा, न सूचनाएं दे सकूंगा। और मैं कह चुका हूं कि मैं अपने पीछे किसीको मेरा उत्तराधिकारी करने वाला नहीं हूं। तब तुम्हें अपनी-अपनी विवेक-बुद्धि से ही चलना होगा। उस अवस्था में अगर कोई मार्गदर्शन हो गया तो वह अपने ही प्रभाव से होगा।

"'जेल में अनशन करना पड़े' इसका मतलब यह नहीं कि उस अवस्था में मेरा अनशन करने का निर्णय है ही। एक संभावना ही मान लीजिए। मुझे जेल मिले और बाहर की स्थिति समाधानकारक हो, तो मैं जेल ही काट लूं।

"जहांतक मैं सोच सकता हूं, यह अनशन शर्तिया ही हो सकता है, वह मुक्ति के लिए नहीं होगा। बाह्य सिद्धि के लिए होगा। आध्यात्मिक दृष्टि से यह उत्तम पंक्ति का नहीं माना जा सकता, फिर भी वह सिद्धि इतनी शुद्ध तो है ही कि उसपर एक जन्म न्योछावर किया जा सकता है। पर सिद्धि मिले तो अनशन छूट जा सकता है। यानी एक विशेष सिद्धि के लिए अनशन के रूप में वह एक तपश्चर्या होगी।

"लेकिन शर्तिया अनशन होते हुए भी अंग्रेज-सरकार की जो आज परिस्थिति और विचारधारा है, उसकी ओर देखते हुए यह संभव नहीं कि वह मेरी मृत्यु टालने के लिए अपनी राजनीति में परिवर्तन करे। उसके लिए अपने ही जीवन-मरण का सवाल इतने महत्व का है कि पचास गांधी के प्राणों को

कुर्बान करने में उसे हिचकिचाहट न होगी। और दूसरी नीति यानी अहिंसा और आत्मशुद्धि से अपना सवाल हल करने की उसे वुद्धि उत्पन्न होना भी मुश्किल है। इसलिए वह मेरे प्रति क्रोध से नहीं पर अपनी लाचारी समझकर भी मुझे अपना वलिदान करने देगी। मैं अनशन करूं, उसके पहले या उसके साथ ही दूसरे साथीदारों को भी उस वलिदान में हिस्सा लेने दिया जाय ऐसी भी सूचना मेरे पास आई है। अव जवतक मैं जिन्दा हूं, तवतक यह वात विवेकपूर्ण न होगी। इस अनशन का उद्देश्य एक स्थानिक समस्या नहीं है। अखिल भारतीय से वढ़कर दुनिया भर की है। उसमें छोटे पचास व्यक्तियों का वलिदान एक जगत-प्रसिद्ध वलिदान की वरावरी का नहीं हो सकता। और अगर उससे समस्या को मिटना है तो मेरा ही वलिदान सम्पूर्ण हो सकता है। लेकिन मेरे अनशन के दरमियान मेरी मृत्यु हो तो उसके वाद तुम क्या कर सकते हो, यह समझने की वात है।

"रचनात्मक कार्यक्रम की वैसे तो तेरह वातें वताई गई हैं। उसमें और भी वढ़ाई जा सकती हैं। लेकिन उसमें तीन महत्व की हैं। हमारे जीवन की वे क्रांति करने वाली हैं। खादी, अस्पृश्यता-निवारण और हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य। हरिजन और मुसलमान का स्थान यत्किंचित भी हमसे अलग रखने का मानसिक भाव ही मेकडोनॉल्ड-निर्णय और पाकिस्तान है। याद रखें, भिन्नता उन्होंने पहले मांगी नहीं है। हमने ही उन्हें दी है और मांगने को मजवूर किया है। तव सवर्ण-अवर्ण और हिन्दू-मुसलमान ऐक्य तथा खादी हमारे समग्र जीवन की ही क्रांति है। इन्हें सिद्ध करने के लिए अपनी सव शक्ति और जव जरूरत हो जाय तव फूलसिंह भक्त और अमतुलसलाम की तरह अपना प्राण खर्च करने के लिए तुम तैयार रहो।

"इस वक्त जव कानून-भंग का कार्यक्रम चल रहा है, तव जिन्हें रचनात्मक कार्यक्रम में लगे रहने के कारण जेल नहीं जाना है, वे अपने-अपने काम दिलचस्पी के साथ करते रहेंगे ही। लेकिन जव दूसरे कार्यकर्त्ता जेल जाने के आन्दोलन पर जोर दे रहे हैं, उसी समय तुम्हारा रचनात्मक कार्यक्रम के लिए जोशीला आन्दोलन मचाना ठीक न होगा। जनता की मनोवृत्ति इस समय जेल की ओर झुकी हुई है। इसलिए उसे वहीं एकाग्र होने दिया जाय।

"पर जव ऐसी परिस्थिति पैदा होजाय कि जितने लोगों को जेल में

जाना या भेजना है, अथवा मैं अनशन कर रहा हूं, अथवा कोई स्थानिक परिस्थिति, जैसी आज सिंध में है, पैदा हुई, तो तब तुम्हें अपना कर्त्तव्य और स्थान पूरी तरह संभालना होगा। उस वक्त जैसी प्रेरणा तुम्हारा अन्तःकरण करे, उस तरह तुम आन्दोलन करो और अपने प्राण गंवाओ। मेरे मरने पर वैसी ही तुम्हारे अन्तःकरण की प्रेरणा हो तो अनशन की परंपरा चलावें। लेकिन मैं यह नहीं कहता कि चलाना जरूरी होगा।

"एक दूसरी परिस्थिति में भी तुम्हें अपने प्राणों का बलिदान देने की नौबत आ सकती है। यह संभव है कि जनता को मजबूर करने के लिए अंग्रेज-सरकार अथवा यह हार जाय तो दूसरे विजेता हिन्दुस्तान में भीषण दमन-नीति चलावें। चन्द भाग का निकन्दन भी किया जा सकता है। पर निकन्दन से तो कुछ अंश में काम सरल हो जाता है। लेकिन बहुत जनता का निकन्दन नहीं किया जायगा। उदाहरणार्थ---जबतक लोग विजेता की शर्त मंजूर न कर लें, कई देहातों को चारों ओर से घेर लिया जायगा, कुओं पर पहरा बिठाया जायगा, उसके आस-पास की खेती को विध्वंस किया जायगा, इस तरह लोगों को भूख-प्यास से तंग किया जायगा। उसके सामने जनता का झुक जाना मुमकिन है। उस वक्त तुम्हें झुक नहीं जाना है। लोगों को हिम्मत देनी होगी। खुद भूखे-प्यासे मरकर लोगों को भूख-प्यास सहन करके मर जाने और विजेता से असहयोग करने की सलाह देना होगा।

"यदि ऐसा कोई अवसर मिल जाय कि इस प्रकार के मिशन की मनोवृत्ति रखनेवाले कार्यकर्त्ताओं के साथ बैठकर मैं अपना दिल खोलकर मशविरा करूं तो मुझे खुशी होगी। लेकिन आज मैं उसकी योजना करना नहीं चाहता।"

यह पूज्य बापूजी की बातों का सारांश है। मैं सोचता हूं कि इस प्रकार की मनोवृत्ति रखनेवाले व्यक्तियों की नामावली किसी एक जगह संग्रह कर दी जाय तो अच्छा होगा। अपने-अपने प्रांत के ऐसे कार्यकर्त्ताओं की सूची बनाकर अगर गांधी-सेवा-संघ के दफ्तर में भेज दें तो ?[1] आपका,

जमनालाल बजाज

---

१. यह मसविदा जमनालालजी ने कुछ मित्रों को भेजने के लिए बनाया था।

: ४०७

य. मं. १५-६-३२

ठीक है, रामायण के चित्रों के संबंध में मुझे गलतफहमी हुई है। काल्पनिक चित्र चाहें जैसा बनाया गया हो, और उसका ध्यान किया गया हो तो उसमें मैं दोष नहीं मानता। लेकिन गीता-माता के ही ध्यान से संतोष हो जाय फिर क्या बात ? गीता का ध्यान दो तरह हो सकता है। एक तो यह कि उसे माता के रूप में मानें। यानी अगर ध्यान करने में सामने माता के चित्र की आवश्यकता पड़े, तो या तो अपनी ही माता (और अगर उसका देहांत हो गया हो तो) उसमें कामधेनु का आरोपण करके गीता-रूप मान करके ध्यान करना चाहिए या किसी मनपसंद काल्पनिक चित्र में मन को एकाग्र करना चाहिए। उसे गोमाता का रूप भी दिया जा सकता है। दूसरी रीति हो सके तो अधिक अच्छा। हम नित्य जिस अध्याय का पाठ करते हों उसका, अथवा किसी अध्याय के किसी भी एक श्लोक अथवा उसके किसी भी शब्द का ध्यान करें, चिन्तन करें। गीता में जितने शब्द हैं, उतने ही उसके आभूषण हैं। किसी प्रियजन के किसी आभूषण का ध्यान करना भी उस प्रियजन का ध्यान करने-जैसा ही है। यही बात गीता के संबंध में है। लेकिन इसके अलावा किसीको कोई और तरीका मिल जाय तो वह उसके अनुसार भले ध्यान करे। जितने दिमाग होते हैं, उतनी ही विविधता होती है। कोई दो व्यक्ति एक साथ ही एक वस्तु पर ध्यान नहीं धरते। दोनों के वर्णन और कल्पना में कुछ-न-कुछ भेद तो होगा ही।

छठे अध्याय के अनुसार थोड़ी-सी भी साधना की गई हो तो वह निरर्थक नहीं जाती। और जहां से वह रह गई हो वहीं से अगले जन्म में वह आगे बढ़ती है। इस प्रकार जिसे कल्याण-मार्ग की ओर मुड़ने की इच्छा तो है, पर आचरण की शक्ति नहीं है, उसकी इच्छा दूसरे जीवन में अधिक दृढ़ हो, इस प्रकार के अवसर उसे प्राप्त होंगे ही। इस बारे में मुझे कोई शंका नहीं है।

इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं करें कि इस जन्म में शिथिल रहें तो कोई बात नहीं। ऐसी इच्छा इच्छा नहीं कही जाती। वह बौद्धिक इच्छा हो सकती है, हार्दिक नहीं। बौद्धिक इच्छा के लिए कोई स्थान ही नहीं होता। मृत्यु के बाद तो वह रहती ही नहीं। जो इच्छा हृदय में उतर गई है, उसके पीछे प्रयत्न तो होना ही चाहिए। अगर संयोगों के कारण या शारीरिक असमर्थता के कारण वह इच्छा इस जन्म में पार न पड़े, यह बिल्कुल संभव है। हमें रोज इस प्रकार के अनुभव मिलते हैं। लेकिन अपनी उस इच्छा को लेकर ही जीव देह को छोड़ता है। दूसरे जन्म में इस जन्म की व्याधियां कम हो जाती हैं और उसकी इच्छा फलित होती है या अधिक दृढ़ तो होती ही है। इस प्रकार कल्याण-कृत् उत्तरोत्तर आगे बढ़ता जाता है।

ज्ञानेश्वर महाराज ने निवृत्तिनाथ की जीवितावस्था में ही उनका ध्यान किया तो भले किया, लेकिन हमारे लिए वह अनुकरणीय नहीं है, यह मेरा दृढ़ अभिप्राय है। जिसका ध्यान करना हो, वह पूर्णता को प्राप्त व्यक्ति होना चाहिए। जीवित व्यक्ति के बारे में यह आरोपण करना बिल्कुल ठीक नहीं है, बल्कि अनावश्यक है। यह हो सकता है कि ज्ञानेश्वर महाराज ने शरीरधारी जीवित निवृत्तिनाथ का ध्यान न किया हो बल्कि अपनी कल्पना के निवृत्ति-नाथ का ध्यान किया हो। लेकिन ऐसे प्रपंचों में हम क्यों पड़ें। जब जीवित मूर्ति के ध्यान करने का प्रश्न उठे, उस समय कल्पना की मूर्ति का स्थान नहीं है, यह उल्लेख करके उत्तर देने से बुद्धि-भ्रंश होने की संभावना है।

पहले अध्याय में जो नाम दिये गए हैं, वे सब, मेरे मतानुसार, विशेष नामों के बजाय गुणवाचक अधिक हैं। और दैवी तथा आसुरी वृत्ति के बीच के संग्राम का वर्णन करते हुए कवि ने उन वृत्तियों को मूर्तिमंत किया है। पांडव और कौरवों के बीच हस्तिनापुर के पास सचमुच युद्ध हुआ होगा इस कल्पना में उसका निषेध नहीं है। यह मेरी कल्पना है कि उस युग का एक प्रसिद्ध दृष्टांत लेकर कवि ने एक महान् धर्म-ग्रंथ रचा है। इसमें मेरी भूल हो सकती है। ये सब सचमुच ऐतिहासिक नाम हों तो इतिहास के आरम्भ के लिए इन नामों का देना अनुचित नहीं माना जा सकता। अतः विषय-विचार की दृष्टि से पहला अध्याय आवश्यक है। अर्थात् गीता-पाठ के समय उसे पढ़ना भी आव-श्यक है।

किसी और की बनाई पूनी से कातना अवश्य अपूर्ण यज्ञ है। परंतु अपंग होने के कारण से मेरे-जैसा आजकल पूनी न बना सके यह संभव है। लेकिन जिसमें शक्ति है, उसे तो अपनी पूनी बनानी ही चाहिए।

तकली को पूर्णता से सीख लेना मैं आवश्यक समझता हूं। यह मुझे मालूम है कि विनोबा उसे यज्ञ के लिए बहुत अच्छा साधन मानते हैं। मैंने उस संबंध में निश्चय नहीं किया है और विनोबा के साथ बिना विचार किये निर्णय करनेवाला भी नहीं हूं। इसलिए मैं उदासीन हूं। लेकिन तुमको इस समस्या के बारे में नारायणदास से चर्चा कर लेनी चाहिए। मैं भी चर्चा करूंगा।[1]

बापू

: ४०८ :

य. मं. १०-१०-३२

चि. जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। तुम्हें वह लम्बा लगता है, हमें नहीं। उसमें भी जब भिक्षुक के भिक्षा शुरू करने की बात हो, तब तो कहना ही क्या? भिक्षुक को कहना कि उसका पत्र मिल गया है। यह कह सकते हैं कि उसने मुझे निर्भय कर दिया है। इसलिए इसमें उसका समावेश भी कर लेता हूं। मेरा शरीर लगभग ठीक हो गया है। दूध, नारंगी, मोसंबी, अंगूर अथवा अनार और लौकी तथा टमाटर आदि की सब्जी ले रहा हूं। कभी-कभी एक-दो दिन के लिए दूध छोड़ देता हूं। पत्र खूब लिखता हूं। पहले-जैसा रोज कम-से-कम २०० तार, ४५ से ज्यादा नम्बर के, कातता हूं। इससे सबोंको संतोष होना चाहिए। उपवास के दिनों में शारीरिक व्यथा काफी थी, लेकिन मानसिक शांति बहुत थी। उपवास लम्बा चलता तो थकान या अरुचि हो जाती, ऐसा नहीं था। लेकिन उपवास लंबा या छोटा करना

---

१. जमनालालजी की जेल-जीवन की एक कापी में यह पत्र उनके हाथ से नकल किया हुआ मिला है। इसमें शुरू का संबोधन न होने से यह नहीं मालूम हो सका कि यह पत्र गांधीजी ने किसे लिखा था। पर पत्र की भाषा और विषय से यह अन्दाज होता है कि यह जमनालालजी को ही लिखा होगा।

तो उस परमात्मा के ही हाथ में था जिसने मुझे उपवास करने को प्रेरित किया। बा अभी मेरे पास सारे दिन रह सकती हैं, पर अब यह शायद बंद हो जाय। देवदास कुछ समय के लिए मिल जाता है। रोज यहां नहीं आता। सरदार और महादेव तो साथ हैं ही। तुम्हारी तबीयत तो ठीक ही मानता हूं। वजन कुछ कम हुआ है, सो ठीक ही हुआ है। अब और नहीं घटना चाहिए। विनोबा के संग से परमात्मा पर आस्था दृढ़ हुई है, इसे मैं बड़ा लाभ मानता हूं। विनोबा का काम सुंदर है ही। गुलजारीलाल का साथ भी अच्छा हुआ। प्राकृतिक उपचार और सादे भोजन पर आस्था जमने की भी जरूरत थी। इन दो बातों से अनेक शारीरिक व्याधियों से बचा जा सकता है। तुम्हारी दिनचर्या अच्छी है। भले तुम 'क' वर्ग में रहे। मुझे तो शुरू से ही 'अ' 'ब' वर्ग अच्छे नहीं लगे। 'क' वर्ग में रहते हुए शरीर की रक्षा के योग्य सुविधाएं प्राप्त की जा सकती हैं। गुलजारीलाल का शरीर अब ठीक हो गया ऐसा मान सकते हैं। माधवजी अच्छे हैं? सरदार का संस्कृत अध्ययन तेज गति से चल रहा था। वह उपवास के कारण जरा मन्द हो गया था। अब फिर उसे जोर-शोर से शुरू करने की तैयारी में वह हैं। अभीतक तो हमारा कार्यक्रम ठीक चल रहा है। खाना, पीना, सोना, अखबार पढ़ना, चक्कर काटना, इच्छानुसार अध्ययन करना और कातने-पींजने का ठेका महादेव का है। पर आजकल यह काम जरा बंद है। क्योंकि पूनियों का भंडार भरा हुआ है, और छक्कड़दास सुन्दर पूनियां भेज दिया करते हैं। वर्धा से पत्र आते रहते हैं। सबोंको हम लोगों की ओर से यथायोग्य—

बापू के आशीर्वाद

: ४०१ :

धूलिया, ३-११-३२

महात्मा गांधी।
यरवड़ा।

आपका तार मिला। पिछले नवम्बर से कान की तकलीफ का इलाज नियमित हो रहा है। रोग में बढ़ोतरी नहीं है। कभी-कभी थोड़ा मवाद निकलता रहता है। कान में छेद (perforation) के कारण दवा गले में उतर आती है। डाक्टर मोदी को टी. बी. (mastoid) का शक है।

सुपरिन्टेंडेंट डाक्टर कन्ट्रेक्टर उनसे सहमत नहीं हैं। पिछले पन्द्रह दिनों से मौसम के कारण खांसी और गले की कुछ खरावी है। वजन कोई ४० पौंड कम हुआ है, लेकिन साधारण स्वास्थ्य में कोई गिरावट नहीं है। भोजन तथा दूसरी व्यवस्था से संतुष्ट हूं। लंबे चलते कान के दर्द के अलावा चिन्ता की और कोई वात नहीं है।

जमनालाल

: ४१० :

धुलिया, १४-११-३२

पूज्य श्री बापूजी,

आपका तारीख ८ का लिखा हुआ आशीर्वाद व उपदेश भरा हुआ सुन्दर पत्र ता० १० को ठीक समय पर मिल गया था। उसी रोज श्री जानकी, केशर, मदालसा, राधाकिसन, कमलनयन वगैरे मिलने आये थे। आशा है कि आपके आशीर्वाद व उपदेश का मेरे भावी जीवन में ठीक उपयोग होगा। अपना स्वास्थ्य और हालत तो पहले लिख चुका हूं। जुकाम-खांसी अभी तक मिटी नहीं है। छाती में दर्द (जुकाम के कारण डा. कन्ट्रेक्टर साहव कहते हैं) था, वह थोड़ा कम हुआ है। आशा है मिट जायगा। इस कारण व्यायाम आदि वरावर नहीं हो पाता। इस मास में थोड़ी कमजोरी मालूम होती है। खुराक के वारे में मैंने तारीख ४ को आपको पत्र में लिखा था। उसके वाद डा० कन्ट्रेक्टर साहव ने एक रतल दूध, व एक नींवू व जवार की जगह गेहूं के अलावा और कुछ मुझे लेने की विल्कुल जरूरत नहीं बताई। उनका दूध व फल में विश्वास नहीं है। इसलिए खुराक के वारे में अव मैं उनसे क्या चर्चा करूं? 'मक्खन' को छोड़कर अभी तक तो हिस्ट्री टिकट में जो लिखा हुआ है वही खुराक ले रहा हूं, यानी दो रतल दूध पीता हूं, गुड़, गेहूं कम लेता हूं। मक्खन हि.टि. में लिखा नहीं गया। इससे लेना बन्द कर दिया है। जैसा मैंने ऊपर लिखा है, भविष्य में दूध आदि कम या वन्द होना संभव मालूम होता है। फल का तो प्रश्न ही नहीं रहता। यह ठीक भी है, जव डाक्टरसाहव का दूध-फल पर विश्वास ही नहीं है तो फिर वह ज्यादा छूट दें भी किस कारण? अस्पृश्यता-निवारण के वारे में आपने लिखा सो मुझे अखवार तो कोई मिलता नहीं है। इधर-उधर से जो थोड़ा-वहुत हाल मालूम होता है उसपर से तो आपको व विड़ला-कमेटी व अन्य मित्रों

से,जो अस्पृश्यता-निवारण के काम में प्रेम रखते हैं, व उनसे पत्र-व्यवहार करने की तथा बिड़ला-कमेटी व अन्य मित्रों और कार्यकर्त्ताओं से इसके बारे में मिलने की आपको छूट मिल गई, इससे मन को थोड़ा सन्तोष रहेगा। ईश्वर की इच्छा है, वही होवेगा। श्री माधवजीभाई की गाड़ी जैसी-तैसी चलती जा रही है। वह आनन्द में हैं। हम सबोंका आप व सरदारजी, महादेवभाई को प्रणाम व वन्देमातरम् स्वीकार करें। जमनालाल का प्रणाम

: ४११ :

यरवड़ा-मंदिर, १४-११-३२

जमनालाल बजाज,
कैदी, जेल, धूलिया।

डाक्टर मोदी से पूरी रिपोर्ट लो। तुम्हारी जांच के लिए वह तुरन्त बुलाये जावें ताकि निश्चित निदान कर सकें। खांसी के क्या हाल हैं?

बापू

: ४१२ :

धुलिया, डि. जे. १५-११-३२

पूज्य बापूजी,

आपका तार कल सायंकाल को मिला।..........

मेरी खुद की व मित्रों की समझ तो यह है कि एक बार डाक्टर मोदी भली प्रकार तपास लेवें। (यहां एक्सरे, बिजली, इत्यादि की व्यवस्था नहीं है) फिर अगर कान का बराबर इलाज करवाना हो तो मुझे सरकार किसी अच्छे अस्पताल में बम्बई या पूना में रक्खे। और वहां ठीक तौर से इलाज का प्रबन्ध करावे। तभी इलाज बराबर होना संभव है। हम लोगों की यह राय आपको मालूम हो जाय, इसलिए लिख भेजी है। आय. जी. पी. का क्या जवाब आता है, वह मालूम होने पर आपको सूचना भिजवाने का प्रयत्न करूंगा। मोदी को यहां बुलाने में ४००)-५००) रुपये भी खर्च हो जायंगे व यहां साधन भी पूरे नहीं हैं। फिर डा. मोदी एक रोज से ज्यादा तो यहां ठहर भी नहीं सकते, इसलिए थोड़े रोज वह या स्पेशलिस्ट अपने चार्ज में रखकर बराबर देख-भाल करें तो ही ठीक हाल मालूम हो सकता है।

जमनालाल का प्रणाम

: ४१३ :

धूलिया, १५-११-३२

महात्मा गांधी
राजनैतिक बन्दी, यरवड़ा।

मिला। साधारण हालत वही है। खांसी और मवाद का निकलना जारी है। आज इंस्पेक्टर जनरल को ऐक्सरे तथा बम्बई या पूना के, जहां सरकार को सुविधाजनक हो, स्पेशलिस्ट से जांच कराने के लिए तार दिया है।

जमनालाल

: ४१४ :

धूलिया, २१-११-३२

महात्मा गांधी
स्टेट प्रिजनर, यरवड़ा।

साधारणतः ठीक महसूस करता हूं। वैसे हालत पहले जैसी ही है। इंस्पेक्टर जनरल के तार की राह देख रहा हूं।

जमनालाल

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

गांधी-साहित्य

प्रार्थना-प्रवचन (खंड १, २)—वे संकलित प्रवचन जो गांधीजी ने दिल्ली की प्रार्थना-सभाओं में दिये थे। ३), २॥)

गीता माता—गीता के बारे में गांधी जी द्वारा लिखित अनासक्ति योग, गीताबोध, गीता-प्रवेशिका, गीता-पदार्थ-कोष तथा गीता-संबंधी लेखों का संकलन।

पन्द्रह अगस्त के बाद—भारत के स्वतंत्र होने के दिन से लेकर अन्तिम समय तक के गांधीजी के लेखों का संग्रह। अ० १॥), स० २)

धर्म-नीति—नीति-धर्म, मंगल-प्रभात, सर्वोदय और आश्रमवासियों से, इन चार पुस्तकों का संग्रह। अ० १॥), स० २)

दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास—दक्षिण अफ्रीका में मानवीय अधिकारों के लिए किये गये अहिंसात्मक संग्राम का विस्तृत इतिहास। ३॥)

मेरे समकालीन—समसामयिक नेताओं एवं जन-सेवकों के गांधीजी द्वारा लिखे हुए मार्मिक संस्मरण। ५)

आत्मकथा—पढ़ने में उपन्यास-जैसी रोचक तथा शिक्षा व ज्ञान में उपनिषदों की भांति पवित्र गांधीजी की आत्मकथा। ५)

आत्म-संयम—संयम एवं ब्रह्मचर्य की महत्ता तथा भोग की हानियों पर प्रकाश डालनेवाले महत्वपूर्ण लेख। ४)

गीता-बोध	॥)	हमारी मांग	१)
अनासक्ति-योग	॥।)	एक सत्यवीर की कथा	।)
ग्राम-सेवा	।=)	संक्षिप्त आत्मकथा	१॥)
मंगल-प्रभात	।=)	हिन्द-स्वराज्य	॥।)
सर्वोदय	।=)	बापू की सीख	॥)
आश्रमवासियों से	।=)	आज का विचार (दो भाग)	॥।)
अनीति की राह पर	१)	गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	१=)
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	१॥।)		

विनोबा-साहित्य

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

विनोबा के विचार (दो भाग)—निबंधों व व्याख्यानों का महत्त्वपूर्ण संग्रह ३)

गीता-प्रवचन—गीता के प्रत्येक अध्याय का बड़ा ही सरल सुबोध शैली में विवेचन सजिल्द १।)

शांति-यात्रा—गांधीजी के देहावसान के बाद अनेक स्थानों में दिये गये प्रवचन १॥)

स्थितप्रज्ञ-दर्शन—स्थितप्रज्ञ के लक्षणों की व्याख्या १)

ईशावास्यवृत्ति—ईशोपनिषद की विस्तृत टीका ॥।)

ईशावास्योपनिषद्—मूल श्लोकों सहित ईशोपनिषद का सरल अनुवाद =)

सर्वोदय-विचार—सर्वोदय-विषयक लेखों व प्रवचनों का संग्रह १=)

स्वराज्य-शास्त्र—स्वराज्य की परिभाषा, अहिंसात्मक राज्य-पद्धति एवं आदर्श-राज्य-व्यवस्था का प्रश्नोत्तर रूप में विवेचन ॥)

भू-दान-यज्ञ—भूमिहीनों को भूमि के समवितरणार्थ दिये गये प्रवचन ।)

राजघाट की सन्निधि में—भू-दान-यज्ञ के बारे में दिल्ली में दिये गये प्रवचन ॥)

गांधीजी को श्रद्धांजलि—गांधीजी के निधन के बाद वर्धा में दिये गये प्रवचन ।=)

विचार-पोथी—विनोबा जी के चुने हुए मूल्यवान विचार १)

अ० भा० सर्व सेवा संघ, काशी द्वारा प्रकाशित

सर्वोदय की ओर—अहिंसक समाज-निर्माण तथा समन्वय संबंधी भाषण ।)

भूदान-प्रश्नोत्तरी—भूदान संबंधी प्रश्नोत्तर ≡)

धर्म-चक्र-प्रवर्तन—भूदान-आंदोलन संबंधी प्रवचन ।)

भगवान् के दरबार में—जगन्नाथ पुरी में मंदिर-प्रवेश संबंधी दिये गये प्रवचन =)

साहित्यिकों से—साहित्यिकों के बीच दिये गये प्रवचनों, प्रश्नोत्तरों का संकलन ॥)

विनोबा-प्रवचन—पूर्णियां (विहार) जिले में किये गये प्रवचनों का संकलन ॥।)

●